श्री-जिनेन्द्रभक्तिप्रकाश

भाग पहेलो

सा संग्रह करनार--

शाह. शिवनाथ लुंबाजी पोरवाल.

वेताळ पेठ, नंबर ५५६ मु० पुना सिटी

सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कपूरविजयजी
महाराज साहेबनी योग्य प्रेरणाथी
बिकानेर निवासी
शेठ बहादरमल अभयराज कोचरनी आर्थिक
सहायथी नकल ६०० तथा बाबु सुमेरमलजी
सुराणानी आर्थिक सहायथी तेमना सदगत
पिताश्री सिवचंदजी सुराणा चालु वर्षमा
श्रीसिद्ध क्षेत्रमा काळधर्म पाम्या तेमना
पुन्य स्मरणार्थे भेट नकल ४००

किंमत सात आना
(पो.ए पेकिंग खर्च त्रण आना जुदु)

भेट मंगावनारे आना पाछळना पान उपर
लखेली सूचना वांची पछी मंगाववी

पुस्तक मंगावनारने सूचना.

१ आ पुस्तक साधु साध्वी तथा श्री जिनमंदिर, पाठशाला, उपाश्रय, जाहेर लायेब्रेरी विगेरे संस्थामां खपी जनोने लाभ लेवा माटे द्रव्य सहाय आपनार सद्ग्रहस्थो तरफथी भेट आपवानी छे.

२ परगामथी भेट मंगावनारे दरेक पुस्तकना पोष्ट पेकींग खर्च वास्ते त्रण आनानी पोष्ट टीकीटो निच्चेना सरनामे मोकलवी एटले एक नकल भेट तरीके मोकलवामा आवशे.

३ बीजाओए दरेक पुस्तकनी किमतना सात आना तथा पोष्ट पेकींग खर्च त्रण आना मळी दस आनानी पोष्ट टीकीटो मोकलवी.

४ सद्गुणानुरागी मु० श्री कर्पूरविजयजी महाराज साहेबने रुबरु मळवाथी पण मळशे.

५ जुबाव मंगावनारे रीप्लाय क्याट अथवा अथवा पोष्ट टीकीटो मोकलवी.

१ पोरवाल एन्ड कंपनी—वेताळ पेठ, पुना सिटी.
२ श्रीजैन श्रेयस्कर मंडळनी ब्रांच आफीस मु० पालीताणा (काठीयावाड)
३ आर्थिक सहाय आपनार पासेथी. विकानेर.

खास अगत्यनी सूचना.

मद्दु कोइ भव्य आत्माओने पवित्र ज्ञानामृतनो अपूर्व लाभ अनुकूळतार्थी मळे एवा शुभ उद्देशथी भेट दाखल आपवामां आवतां कोइ पण पुस्तक उपर ममता बुद्धि राखी कोइ रीते पुस्तकनो दुरुपयोग करवो नहीं, पण प्रमाद रहित पुरती काळजी राखी तेनो जाते लाभ लेइ बीजा गमे ते जिज्ञासु भाइ बहेनोने ते भेट दाखल मळेला पुस्तकनो छूटथी लाभ लेवा देवो अने एवी रीते बमणो फायदो उपजावी भेट दाखल अपातां पुस्तकनो पवित्र उद्देश सफळ करवो ए रीते दरेक भाइ बहेनोने नम्रतापूर्वक खास भलामण करीये छीये ने उच्च उद्देशथी पुस्तको भेट दाखल आपवामां आवेले ते उद्देश सफळ थाय अने तेनी कोइ रीते आशातना थतां अटके एटलु मृचवी विरमिये छीये

सग्राहक

शाह शिवनाथ लुबाजी—पोरवाल.

बे बोल

आ पुस्तकनी बे हजार नकलो जे वखते छपावी ते वखते एक हजार नकलनुं बाइंडिंग करावी बाकीनी एक हजार नकलना छुटा फरमां शिल्लक राख्या हता. सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी माहाराज साहेबनी पालीताणाथी पत्रद्वारा सूचना प्रमाणें कांइक नवा विषयो नाखीने छेवटना परिशिष्ट पृष्ठ १ थी ४८ अने सरुआतमां टायटल विगेरेनां पेज १ थी ४ मळी एकंदर ५२ पृष्ठनो आ एक हजार नकलोमां वधारो कर्योछे. तेनी विषयानुक्रमणिका छेवटनां परिशिष्ट पृष्ठ ४८ मां छापेली छे.

संवत १९९१ श्रावण शु. १५
बुधवार तारीख १४ आगष्ट
सन १९३५ वीर सं. २४६१

प्रकाशक
पोरवाल एन्ड कंपनी,
वेताळ पेठ, नं. २५६ पुना सिटी.

श्री जिनरागाय नमः — परोपकाराय सतां विभूतयः

श्री जिनेन्द्रभक्ति प्रकाश.

भाग पहेलो-

चतुर्विध श्री संघने जिनमंदिरादिकमां हरहमेश
उपयोगमां लेवा निमित्ते अनेक चैत्यवंदनो
स्तुतिओ (थोयो) तथा स्तवनो तथा पूजा
विधि आदि अनेक विषयोनो संग्रह
अनेक पुस्तको अने लखेला पाना उपरथी
छुटी काढी संग्रह करनार

शाह जिननाथ लुनाजी पोरवाल
वेताळ पेठ, नंबर ३५०. मु० पुना सिटी

प्रथम आवृत्ति प्रत २०००
वीर संवत २४५९ विक्रम संवत १९८९
सन १९३३ शाके १८५४

किंमत छ आना

(पोष्ट पेकींग खर्च त्रण आना जुदु)

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता
पोरवाल एन्ड कंपनीना मालेक
शाह. शंकरलाल शिवनाथजी पोरवाल.
२५६ वेताळ पेठ, पुना-सिटी. नं० २

विज्ञप्ति

१ पुस्तकने ज्यां त्यां रखडतुं मुकी आशातना करवी नही.

२ पुस्तकमां सदगुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी महाराजश्रीना उपयोगी लेखो छे ते वांचो तेमानां हितबोधने वनती काळजीथी अनुसरवा लक्ष राखवुं.

३ पुस्तक मंगावनारे छेवटना पृष्ठ उपर लखेली सूचना वांचीने पुस्तक मंगाववुं.

मुद्रकः—
लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे,
"हनुमान प्रेस" घ. नं. ३०० सदाशिव पेठ, पुणें नं.२

अर्पण पत्रिका.

शांत मूर्ति सद्गुणानुरागी परमपूज्य मुनिराज श्री श्री १००८ श्री कर्पूरविजयजी माहाराज साहेबनी पवित्र सेवामा —

आपनो परिचय प्रथम संवत १९६९ नी सालमां पालिताणा (सिद्धक्षेत्र) मां थयो त्यारथी आपना सद्बोधथी अने द्रव्य सहायकोनी मददथी शत्रुंजय महातीर्थादि यात्राविचार तथा चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादिकना त्रण भाग उपरान्त बीजा पुस्तको शास्त्री (बाळबोध) टाइपमा छपावी प्रसिद्ध कर्या तेमां आप वखतो वखत योग्य सलाह आपी तेमज आ पुस्तकमां पण आप फरमा सुधारवा विगेरे बाबतमा आपनो अमूल्य वखत रोकी जे सहायता आपी छे ते सर्वे बातथी आकर्षाइ आ लघु पुस्तक आपने सादर-अर्पण करु छु

सेवक,

शाहा शिवनाथ लुबाजी पोरवाल

प्रस्तावना रूपे निवेदन



चैत्यवंदन थोयो स्तवनादिकोना बाबतमां आज सुधी अनेक संस्थाओ तथा मंडळो विगेरे तरफथी अनेक प्रकारना पुस्तको प्रसिद्ध थइ गया छे. अने ते घणा भागे गुजराती टाईपोमां प्रसिद्ध थया छे. शास्त्री (बाळबोध) टाईपमां थोडाज प्रसिद्ध थया छे. तेमां आ पुस्तकनो उमेरो थाय छे

संगीत आधि व्याधि भूलावी स्वपरने आनद आपनार तथा आरोग्यने सारी असर करनार वस्तु छे. गायक सुदर रीते सहृदयथी गाता होय त्यारे आसपासनुं वातावरण आनंदमय करी मूके छे. न्हानाथी ते म्होटा सुधी दरेकने संगीत गावु अगर सांभळवुं बहु प्रिय लागे छे. प्राय: स्थळे स्थळे माणसोनी एवी टोळीओ होय छे के जे पूजा भणाववती वखते तथा भावना भावती वखते अग्रभाग ल्ये छे. ते वखते तेओ सगीतनां पदो बोले छे. जैनशाळाओमां छोकरा छोकरीओ पण आवा पदो शिखी

प्रभु स्तुति करे छे तथा मेळावडाओ वखते अने देदे-
रासरोमां ए पदो बोले छे आथी सुंदर राग रागिणी
वाळी पद रचना अने सारा भावार्थवाळा संगीतोनो एक
संग्रह तेओने पूरो पाडवामां आवे तो उपयोगी थइ
पडे एम जणायाथी आ बुकनी योजना करी छे

जुना वखतमां अनेक मुनिओ तथा कविओए ते ते
वखते प्रचलित देशीओमां अनेक प्रकारना स्तवनादि-
कोनी रचना करी छे हालना वखतमां नाटकनी चालो
तथा कवालीओ गजलो आदी रागो गावानो शोख वध
वाथी हालना मुनिराजो तथा कविओए तेनी चालो
उपर स्तवनो पदो आदिकनी रचना करी छे अने करे छे

आ सर्व स्तवन पदादिको अनेक संस्था तथा अनेक
मंडळ तरफथी जुदा जुदा नामोथी पुस्तको छपाइ प्रसिद्ध
थया छे तेमांथी केटलाक पुस्तकोमांथी तेमज छूटेला
पाना उपरथी चुंटी काढी संग्रह करी अमोए आ
पुस्तक शार्दा (आत्मबोध) रूपमां छपाव्युं छे

जूनी देशी अने नाटकनी चाल प्रमाणनो विगेरेमां

घणी चाले छे. तेमाथी चुंटी काढी दरेक चाल उपर एकेक स्तवननी गोठवणी करी छे. फक्त छ सात चालो उपर बे बे स्तवन दाखल कर्या छे ते मळीने आ पुस्तकमां एकंदर स्तवनोनी संख्या १३६ नी थइ छे. हजु पण ए शिवायनो बीजी चालो उपर स्तवनोनो संग्रह मारी पासे छे. पण आ पुस्तकनुं कद वधी जवाथी ते दाखल कर्या नथी. जो आ पुस्तकनो बीजो भाग करवानो योग आवशे तो तेमां दाखल करीशुं.

स्तवनोनी बाबतमां कविओए जे जे देशमां प्रचलित देशीओ हती ते ते देशना कविओए तेवा देशीओमां स्तवनादिकोनी रचना करी छे तेथी मारा जोवामां आवेला पुस्तकोमाथी जे जे स्तवनोनो भावार्थ मने ठीक लाग्यो तेवा स्तवनोनी चुटणी करी छे.

आ पुस्तकमां बीज पांचम आठम आदी तीथीओ अने रोहिणी आदीना स्तवनादिको नांखेला नथी कारणके ए स्तवनादिको देहरासरमां तीर्थंकरोनां आगळ कहेवा ठीक लागता नथी. एथी आ पुस्तकमां दाखल कर्या नथी.

आ पुस्तकमा आवेली गायनो जे जे पुस्तकमांथी लीधी छे ते ते गायनोना कर्त्ताओ अने प्रसिद्ध कर्त्ता संस्था या मंडळनो आभार मानवामा आवे छे

आ पुस्तक छपाववानु काम चालती वखते परम-पूज्य सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री श्री १००८ श्री कर्पूरविजयजी माहाराज साहेबे वखतो वखत पत्रद्वारा योग्य सलाह आपी तेमज कोई गायनो लखी मोकली तथा प्रस्तावनादि लेख सुधारी मुक्या ते बदल उक्त माहाराजश्रीनो आभार मानवामा आवे छे

आ पुस्तकमां चैत्यवंदनो ४६ स्तुतिओ (थोयो) जोडा १५ छुटी थोयो २१ स्तवनो १३६ लावणीओ ५ छंदो ५ तथा नवअंग पूजा तथा अष्टप्रकारी पूजाना दोहा तथा महादेव स्तोत्रना गुजराती अनुवादना काव्यो तथा नवपद (सिद्धचक्र) जीना ओळीना खमासमण पदो सहीत तथा पच्चख्खाणो आरती मंगळदीवो प्रभु स्तुतिना काव्यो दोहायो चैत्यवंदन विधि सूत्रासहीत तथा बीजी पण उपयोगी अनेक बाबतोनो समावेश

करवामां आवेलो छे. ते अनुक्रमणिका जोवाथी मालम पडशे.

पुस्तक छपाती वखते प्रेस दोषथी कोई अक्षर कानो मात्रो विराम अनुस्वार विगेरे बराबर न उठ्या होय तथा प्रुफ तपासनारना नजरचुकथी कांइ भुल रही होय ते सज्जनोए सुधारी वांचवु. अने ते भुलो तथा वळी बीजी कांइ खामी जणाय तो अमने लखी जणाववा कृपा करवी जेथी तेमनो उपकार मानी बीजी आवृत्तिना प्रसंगे तेनो उपयोग करीशुं.

स. १९८९ वीर सं. २४५९
पोष सुदी १५ बुधवार
तां. ११ जानेवारी सन १९३३

संग्रह कर्ता.
शाह. शिवनाथ लुंबाजी
पोरवाल, वेताळ पेठ नं ३५६
मु० पुना सिटी.



यो० मुनिराज श्री शांतिविजयजी महाराज, आबु.



स० मु० श्री कर्पूरविजयजी महाराज.



जन्म संवत १९२५ पोष सुद ३ मु० वळा

प्रस्ताविक बोध वचनो.

(लेखक — सद्‌गुणानुरागी मुनिराज
श्री कर्पूर विजयजी महाराज)

श्री शत्रुंजय, गिरनार, अर्बुदाचल (आबु गढ) अने समेतशिखर प्रमुख उत्तम तीर्थोने भेटवा जतां तेमज गाम ते गाम, नगर, पुर, पाटण प्रमुख स्थळना भूषण रुप श्री जिनचैत्यो (जिन मंदिरो तेमज तेमां प्रतिष्ठित प्रभुना बिंबो) ने जुहारवा जतां तथा मुनि जनोने वंदन करवा जतां यथायोग्य प्रवचन सारोद्वार, पंचाशक अने देववंदन भाष्य प्रमुख पवित्र शास्त्रोमां फरमाव्या मुजब आपणे निसीहि प्रमुख दश त्रिको बराबर लक्ष राखीने साचववी जोईए. एटले के १ यथास्थाने त्रणवार निसीहि (तेनो परमार्थ समजी-धारी) कहेवी २ चैत्य फरती त्रणवार प्रदक्षिणा देवी. (प्रदक्षिणा देतां कंई आशातना जेवु नजरे पडे

तो ते टाळवा प्रथम ख्प करवो.) ३ त्रणवार पंचांग नमावीने प्रणाम करवा (प्रथम प्रभुजी नजरे पडे एटले तत्काल अंजलि (बे हाथ) जोडी प्रणाम करवो, पछी नजदीक आवता अर्धांग नमावी देवुं. अने छेवटे चैत्यवंदन करती वखते पंचांग प्रणाम करवा जोईए) ४ त्रण प्रकारनी पूजा (अंगपूजा, अग्रपूजा अने भावपूजा) करवी. ५ प्रभुनी त्रण अवस्था (छद्मस्थ अवस्था, केवळी अवस्था अने निर्वाण अवस्था) भाववी. ६ प्रभु प्रतिमा शिवायनी त्रणे दिशा तरफ जती दृष्टिने संयमी—नियममां राखी ते दृष्टि प्रभुनी सन्मुखज स्थापी राखवी ७ प्रभुने पंचांग प्रणाम करतां त्रणवार तटली भूमिनु प्रमार्जन करवुं. ८ चैत्यवंदन करतां उच्चारवामां आवता सूत्रादिक शब्दो शुद्ध बोलवा, तेना रहस्यार्थमां उपयोग राखवो अने प्रभुनी मुद्रा उपर सारी रीते लक्ष राखवुं. ९ नमुथ्थुणं कहेता योग मुद्रा करवी जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय कहेतां मुक्ताशुक्ति

मुद्रा अने काउस्सग्ग करता जिनमुद्रा करवी छेवटे
१० चैत्यवंदन समये जावंति चेइयाइं जावंत केवि साहू
अने जयवीयराय ए त्रण प्रणिधान बराबर लक्ष परो-
वी कहेवा, अ दशा चैत्यवंदन समये मन, वचन अने
कायानी एकाग्रता करवी ए दशे त्रिकोनु अधिक
स्वरूप मेसाणा श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ तरफथी
छपायेल "**चैत्यवंदनादि**" **भाष्यत्रय नामना अर्थ
सहित पुस्तकमांथी** पण जोई, जाणी, अविधि दोष
टाळी विधि—मार्ग आदरवा पुरतो खप करवो उक्त
पवित्र स्थळमां दाखल थतां (प्रवेश करता) पांच
अभिगम पाळवा पण पुरतु लक्ष राखवु १ निज
भोगमां लेवा योग्य सचित्त वस्तुनो त्याग करी देवो
२ शुद्ध वस्त्र, अलंकारादि अचित वस्तु साथेज राखी
लेवी ३ अखंड उत्तरासंग (जनोईना आकारे)
नाखीने प्रवेश करवो ४ मनने एकाग्र करी देवु अने
५ देव—गुरु नजरे पडताज बे हाथ जोडी मस्तके
लगाडी नमस्कार करवो वळी राज्य चिन्ह रूप ग-

णातां १ छत्र, २ चामर, ३ मुगट, ४ खड्ग, तेमज, ५ उपानह (मोजडी प्रमुख) बाहेर उतारी नाखीने ज अंदर प्रवेश करवो उचित छे. अन्यथा देवगुरुनी आशातना करी लेखाय.

देव-गुरुनां दर्शन पूजादिक करीने पाछां वळता (बाहेर निसरता) आपणा परम पूज्य देव-गुरुने पुंठ वाळीने (पुंट दइने) चालवुं नहिं. पण विवेकथी तेमने आपणी पुंठ न पडे एम उपयोग राखीने अदब-सर पाछा फरवुं. जूओ ! लौकिकमां कोइ शेहेनशाह प्रमुख मातबरनी सलामे गया होय तेमने पण सलामी लइ पाछा पगले चालवुं पडे छे. तेम छतां कोई जाणतां अजाणतां पुंठ दइने चाल्युं होय तो तेणे ते मातबरनुं अपमान कर्युं लेखाय छे. ज्यारे, आम छे त्यारे त्रण जगतना परम उपकारक प्रभुनो (शुद्ध देव-गुरुनो) आपणे केटलो बधो विनय साचववो जोईए ! आ बाबत खास करीने सहु कोइ सज्जनोए विशेषे संभाळ राखी व्यवहार शुद्धि साचववा पूरतो

रयाल्ने करवो जोईए. दरेक हित कार्य पण विवेक पूर्वक करवाथीज व्यवहार शुद्धि पळे छे. श्री शत्रुंजयादिक पवित्र तीर्थोनी स्पर्शना करतां वखते, अने गमे त्यां देवाधिदेव (वीतराग परमात्मा) ने जुहारतां वखते तेमज ब्रह्मचर्य, निःस्पृहता प्रमुख उत्तम गुणोथी अलंकृत आचार्यादिक पवित्र आत्माओना दर्शन करवा अर्थे तेओनी समीपे जतां, खुल्ला (अलवाणा) पगे barefooted चालीने जवु जोईए. चालतां जतां अने गया बाद हृदयमां तेमना पवित्र गुणोनुंज सतत स्मरण अने बनी शके तेटलुं तेवा सद्गुणोनुं अनुकरण करवुं जोइए. तीर्थादिक पवित्र स्थळे पुन्ययोगे आवी तेनी सारी रीते सेवा करवी, पण देहादिक जड वस्तुओ उपर मोह ममता राखवाने सुखशील थई केवळ वेषी थवानुं अथवा इन्द्रियादिकनी लगाम मोकळी मूकी दई स्वेच्छाए म्हालवानुं नथी. जे जीवो अहीं आवी लाभ लइ जवाने बदले अवळो व्यापार करीने उलटा तोटो बांध छे ते हतभाग्य ज

नोनो क्यांय छुटको थवानो नथी. एम दीलमां विचारी प्रमादाचरण तजी, पोतानुं लक्ष सुधारी सुकृत उपार्जन करवा जलदी सावधान थई जवुं जोईए. कुकर्मवशात् अवळे रस्ते चालेला छता श्री शत्रुंजय जेवा परम पवित्र तीर्थस्थळनो तन मनथी दृढ आश्रय करी, फरी धर्म सन्मुख थयेला पापी जीवो पण पावन थई जाय छे. जूओ ! कह्युं छे के "च्यार हत्यारा नर परदारा, देव गुरु द्रव्य-चोरी खावे; चैत्री कार्तकी पुनम जात्रा, तप जप ध्यानथी पाप जलावे. गिरिवर दर्शन विरला पावे." धर्मज एक अशरणने शरण आपनार अने अधर्मनो पण उद्धार करनार निष्कारण बंधु समान छे. ए प्रस्तावे **शत्रुंजय माहात्म्यमां** विस्तारथी वर्णवेलुं कहू ? जानुं चरित्र मनन पूर्वक वाची धडो लेवा योग्य छे. तेमा प्रसंगे कह्युं छे के ' धर्मनाज प्रभाव सुख साहेबी पामीने जे कृतघ्न, एज धर्मनो अनादर करे छे ते स्व स्वामी द्रोह करनार पापी प्राणीनुं भविष्य शीरीने सुधरी शकशे ? नहिज सुधरी

शके " आरा मार्मिक (ऊडी असर करनाग) वत्र नोथी कट्टराजा चमकी उठयो हतो, तेम भवभीरु जनोए ज गवु जोईए नहितो पछी " लग्न वेळा गई ऊघमा, पछी वर परणाय " एना जवु थवानु शाणा माणसने एटला शिखामण बस छे मत्परिक पाप भ र- भमा रगदोळायाथा मलीन थई गया छता छेवटे निर्मळ थवा इच्छता भव्य जनोए पवित्र तीर्थस्थळमा आवीने अदभूत वीर्योल्लासथी प्रभु प्रतिमानु अथवा निग्रथ साधु पुरुषादिकनु उत्तम आलबन लही स्थिर चित्तथी चपलता रहित प्रेम पूर्वक–रुचि बहुमान सहित प्रभुनो पावन मार्ग आदरवा जोईए अने अनादि काळथी दृढ-रूढ थयेला दोष जाळनो उच्छेद करवा प्रबळ पुरुषार्थ सेववो जोईए शत्रुजयादिक म गती- र्थना उच्च प्रदेशमा सद् गुरुना चरणमा आधान रही यथाशक्ति जप तप सयमवडे अनादि कर्म मळनो क्षय करवा उजमाळ थवु जोईए पूर्वे अनत आत्माओए पवित्र रत्नत्रयीनु यथार्थ आराधना करी जेम सकळ

कर्मनो क्षय करी शाश्वत सुख मेळव्युं छे तेम भाविक जनोए रत्नत्रयीनुं आराधन करवा अत्यारे पण लक्ष राखवुं जाइए. शाश्वत–मोक्ष सुख मेळववुं एज आपणुं लक्ष्य बिंदु होवुं जाईए.

शाश्वत–मोक्ष सुखनो उपाय.

तत्त्वार्थ सुत्रकार कहे छे तेम सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्र रूप रत्नत्रयीनुं सेवन करवु ए मोक्ष प्राप्तिनो अमोघ उपाय छे.

श्री जिनेश्वरे (सर्वज्ञ परमात्माए) भाखेलां तत्त्वोमां यथार्थ श्रद्धान ते सम्यग् दर्शन अथवा सम्यक्त्व, ते तत्त्वोनो निर्मळ [चोख्खो शंका रहित] अवबोध ते सम्यग् ज्ञान अने ए उभयना परिणामे तजवा योग्यनो त्याग अने आदरवा योग्यनो आदर ए सम्यक् चारित्र जाणवुं अथवा आत्माने अनंत विभुति (सत्तागत गुण समृद्धि) नी प्रतीति थवी ते सम्यक्त्व, तेनु यथार्थ भान थवु ते ज्ञान अने ए उभयना परिणामे स्वरुप स्थिरता कहो के निज गुणमांज रमणता थवी ते चारित्र, ए रीते

आत्मश्रद्धा, आत्मज्ञान अने आत्मरमणता रूप रत्न त्रयीनु सेवन करवु एज मोक्षनो खरो उपाय छे

शत्रुंजयादिक महातीर्थो देखवु सेवन पण एज हेतुथी करवनु छे ए पूर्वोक्त रत्नत्रयीरूप मोक्ष मार्ग पामवा माटेज अने एमांज आगळ वधवा माटेज शुद्ध देव गुरुना, सत्पुरुषोना, शत्रुंजयादिक पावन तीर्थोना, तेमज तेमा पावन थवा आवता अने आवेला शासन रसिक एवा श्री चतुर्विध संघना दर्शन वदन, बहुमानादिक सद्भावथी करवाना छे ए लक्ष भविक यात्रीकोए सदाय राखी रहेवानु छे भूलवानु नथी ए लक्ष वगरनी करणी एकडा वगरना मींडा जेवी जाणवी पवित्र तीर्थ स्थानेम पुन्ययोगे अनायासे अथवा अल्प श्रमे प्राप्त थत सत् समागमनो अपूर्व लाभ लईने तेटली तत्त्व गवेषणा करवी, तत्त्व शंकास्थळोनु समाधान मेळवी निःशंक थावु, अने एम तत्त्वज्ञान वडे आत्म श्रद्धा रूप समकित नो पायो मजबूत करवो ते उपर यथाशक्ति व्रत नियम अंगीकार करी लेवा रूप शुभ इमारतनु चणतर

+ •

करवुं बहुज हितकारी छे. पण आ बधुं जो काल्पित सुखनी इच्छा-कामना रहितज (निष्कामपणे) करवामां आवे तो परिणामे ते अक्षय-मोक्ष सुख आपवावाळुं थई शके. क्षणिक अने काल्पित सुखनी आशाथी धर्म करणी करवी ए तो बोरनी खातर चिंतामणिरत्न गुमाववा देवा जेवु जाणवुं. एम समजीनेज मोक्षना अर्थी मुमुक्षु जनो आ लोक संबंधी क्षणिक अने काल्पित सुखनी इच्छा के आशा राख्या वगरज केवळ निष्कामपणेज धर्म साधना करे छे अने एज रीति- नीति अख्त्यार करवी हरेक आत्मार्थी जीवने खरेखर हितकारक छे.

वेदादिक अन्य शास्त्रोमां पण मोक्षना उपाय तरीके कहेवामां आवेलुं अत्र प्रसंगागत जणाववामां आवे छे. तेमां कह्युं छे के 'मोक्ष-सुख मेळववानो उपाय, आत्मस्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थवुं एज छे." अत्र प्रसंगे 'प्रगुणी प्रभु ओळखीए, अमल विमल गुण धाम; साध्य दृष्टि साधक पणे, वंदे धन्य नर [illegible] नरनो तेनुं समर्थन करे छे.

" मननो लय करवो ए परमात्म स्वरूपनु ज्ञान थवानो उपाय छे " (योगी—योगनिष्ठ—वयमी पुरुषो एनो अनु-भव करी शके छे) ' शुद्ध—निष्कामपणे कर्म—उपासना करवी ए मनना लयनो उपाय छे " तेमज वळी

" आ सर्व जगत् विनाशी छे एम विचारपूर्वक जाणवु अने अनुभववु अने तेनो दृढ निश्चय करवो, ए निष्काम थवानो उपाय छे (शान्त सुधारस भावनामां पण एवोज उदार आशय समायेलो छे.) अने एज भावनु अनेक महाशयोए अनेक रीत्या समर्थन करेलु जणाय छे जेमके—

" ताहरुं ध्यान ते समकित रूप, तेहिज ज्ञान अने चारित्र तेह छे जी तेहथी जाये सघळा हो पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरूप होय पछे जी. " इत्यादिक अनेक आप्त पुरुषोना वचनो आ समर्थन करे छे

जे भव्यजनोने तारे अथवा तरवानु सामर्थ्य आपे, जेनाथी भव्यजनो भव सागर तरी पेले पार जई शके, ते ईश्वर [illegible] प्रकारना [illegible]

शत्रुंजयादिक स्थावर तीर्थ छे त्यारे शासनरसिक श्री गणधर प्रमुख चतुर्विध संघ जंगम तीर्थ गणाय छे. मोक्षार्थी जनोए ए उभय प्रकारना तीर्थनो यथायोग्य विनय सत्कार करवो अत्यंत हितरुप छे. परंतु बंने प्रकारना तीर्थमांथी कोईनो पण अनादर करवो योग्य नथी. विकथादिक प्रमादाचरणनो त्याग करी ते उभय प्रकारना तीर्थनो सर्व प्रकारे लाभ लेवा प्रयत्नशील थावुं ए आ मनुष्य जन्मादिक दुर्लभ सामग्री पाम्यानु उत्तमोत्तम फळ समजावनुं छे. आवुं उत्तमोत्तम फळ मेळववा आपणे क्यारे भाग्यशाळी थई शकिये ? ज्यारे आपणामां उक्त पवित्र तीर्थो प्रत्ये अविहड प्रीति-भक्ति जागे त्यारेज.

अविहड प्रीति-भक्ति केवी होय ?

प्रीति रीति कच्छु और हे, जाणे जाणणहार ॥
मुंगे गुड खाया तेनो, स्वाद कहे शुं बार ? ॥ १ ॥

अर्थ—खरी अंतरंग प्रीति (प्रेम-भक्ति) नी खुबी कंई विलक्षणज छे. ए तो जे जाणता होय तेज

जाणे पटले एवी अद्‌भुत प्रीति–भक्ति जेना हृदयमां जागृत थयेली छे, जेन तेनु अपूर्व रसास्वादन मळ्यु छे अने तेथी जेनामां नवु चैतन्य रेडायु छे, ए विगेरे चिन्होवडे तेवी प्रेम–भक्ति–नी खरी खुबी जेना जाण वाम–रूळरामा आवी होय छे तेज तेने पिछानी शके छे कोई मूगे माणसे गोळ खाधो होय–तेनो रसास्वाद लीधो होय ते तेनु स्वरूप बीजाने पोतानी शक्ति उपरात होवाथी शी रीते समजावी शके ? (१)

प्रीत मेह अरु मोरडी, आवत दे अति मान ॥
पुश्करिके जगमें कहत, आवत मेह महान ॥२॥

अर्थ– मेघ अने मोरलीने जेवी प्रीत लागेली छे, तेवी अकृत्रिम प्रीत होवी जोइए ज्यारे मेघ आवे छे– आववानी तैयारीमा होय छे त्यारे ते केकारव करी मुक्तीने जणावे छे के अमारा प्राणाधार अति व्हाला अने उपगारी महान् मित्र–मेघराज पधारे छे (२)

मेह पिछानत मोर नहीं, मोर करी तस प्रीत ॥
पूर्व जन्मके कर्मथे, होत प्रीत इस रीत ॥ ३ ॥

अर्थ– जो के मेघराज मोरने कई ओळखता पाळ-

खता नथी तेम तेने मोरनी तमा (दरकार) पण नथी, छतां जेम मोर मेघना मंगळकारी गुणोनो विछान करी तेनुं आवागमन हृदयना उमळकाथी वधावी ले छे अने मुक्त कंठथी तेना नामोत्कीर्तन पुर्वक गुण गाय छे; यावत् मेघने देखी देखी जेम ते नाचे माचे छे तेम पूर्वोपार्जित कर्मना सबंधथी एवा प्रकारनी गाढी प्रीति बंधाय छे के जे अंतरनी होवाथी अनुकूळ–प्रतिकूळ संयोगोमां पण कायम बनी रहे छे, अने परिणामे स्वपर उभयने अनेक जातना उत्तम लाभ समों छे (३)

प्रीत प्रीत सब जन कहै, जुदी प्रीतकी रीति ॥
लोह चमक जड दोउ पैं, देखत चलत सुनीति॥४॥

अर्थः—प्रीत प्रीत सहु कोई मुखथी पोकारे छे, पण प्रीतनी रीत कंई विलक्षणज छे. जुओ ! लोह [लोढु] अनें चमक उपल (लोहचुंबक पाषाण) ए बंने जड पदार्थ छतां एक बीजा तरफ केटलुं बधुं आकर्षण छे? खरी प्रीति–भक्ति एवी आकर्षणवाळी अने दंभ वगरनीज होवी जोइए अने एवी अकृत्रिम उल्लसनी प्रीति–भक्तिज भक्त जनोने बहु लाभकारी थाय छे. (४) **इति शम्**

॥श्रीनवपद अथवा सिद्धचक्र सेवन-आराधननी सादी समज ॥

लेखक—सद्गुणानुरागी मुनिराज श्री कर्पूरविजयजी माहाराज

॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणोरे ॥ तेह तणे आलंबने, आतम ध्यान प्रमाणोरे ॥ वीर जिनेश्वर उपदिशे ॥

नवपद प्रकरणमां कह्युं छे के " भो भो महानुभावो दश दृष्टांते दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने अने ते साथे वळी आर्य क्षेत्र, उत्तम कुळ विगेरे प्रधान सामग्री पुन्य जोगे पामीने महा अनर्थकारी पांच प्रकारनो प्रमाद (मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा) जलदी तजी दइ उत्तम धर्म करणी करवा पुरुषार्थ फोरवो ते धर्म सर्व जिनेश्वरोए दान, शील, तप अने भाव भेदे करी चार प्रकारनो उपदिश्यो छे" तेमां पण भावनी प्रधानता वखाणी छे भाव सहितज

करवामां आवती धर्म करणी दान शील, तप प्रमुख सफल कही छे. भाव वगरना ते करणी अलेखे जाय छे. " भाव पण मन संबद्ध छे अने आलंबन वगर मन अति दुर्जय छे, तेथी मनने नियममां राखवा माटे सालंबन (आलंबन वालुं) ध्यान कहेलुं छे.

जोके शास्त्रमां अनेक प्रकारनां आलंबन वखाण्यां छे तो पण ते सहुमां नवपद ध्यानज मुख्य छे एम जिनेश्वरो कहे छे. "

" १ अरिहंत, २ सिद्ध, ३ आचार्य, ४ उपाध्याय, ५ साधु, ६ दर्शन, ७ ज्ञान, ८ चारित्र, अने ९ तप ए नवपद वखाणेलां छे. "

ए नवपदनुं सविस्तर वर्णन नवपद प्रकरणमां करवामां आव्युं छे त्यांथी जाणी ते संबंधी श्रद्धा–प्रतीति करवा योग्य छे. ए नवपदज जगतमां सार छे तेथी तेनुंज आराधन करवा अधिक लक्ष राखवानी जरुर छे ए नवपदमां अरिहंतादिक पांच धर्मी (धर्मात्म) छे अने दर्शनादिक चार (प्रकारनो) धर्म छे. ए

दर्शन (सम्यक्त्व), ज्ञान, अने चारित्ररूप मार्गनु आराधन करवाथीज धर्मात्मा थइ शकाय छे जे ज अरिहंतादिक थाय छे ते सहु उक्त धर्मना आराधन (सेवन) वडेज थया छे अने भाविष्यमा पण जे जे अरिहंतादिक थशे तेओ पण पवित्र धर्मना आराधन वडेज थशे एम वर्तमान काळे पण भव्य जनोए एज पवित्र धर्मनु आराधन करवा उजमाळ रहेवु उचित छे धर्म धर्मी जनोमा निवसे छे तेथी धर्मनु आराधन करवा इच्छनारे उक्त अरिहंतादिक धर्मात्माओनु दृढ आलंबन लेवु अत्यंत जरुरनु छे

अरिहंतादिक पवित्र धर्मात्माओना नाम स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चारे निक्षेपा पूजनिक छे जेमना भाव पवित्र छे तेमनाज नाम, स्थापना अने द्रव्य पण पवित्र छे पण भाव नाजथी तेथी अरिहंतादिक पवित्र आत्माओनु (भाव मलिन) नाम एम ण करवु, तेमनी (नमस्कार-श्रवण) प्रतिमानां दर्शनादिक करवाथी, तेमज जिनागम तेमना आलंबने नवकारादि करवाथी आपणो आत्मा जागृत

थाय छे एटले ए अरिहंतादिकमां जेवा उत्तम गुणो छे तेवाज उत्तम गुणो प्राप्त करवा उजमाल थाय छे. जे गुणो अरिहंतादिकने व्यक्त (प्रगट) थयला छे तेवाज गुणो आपणा प्रत्येक आत्मामां शक्ति (सत्ता) रूपे तो रहेलाज छे. ते गुणो कर्मनां आवरणथी ढंकाई गयेला होवाथी प्रगट देखी शकाता नथी. परंतु जो प्रगट गुणी अरिहंत परमात्मादिकनुं दृढ आलंबन लई ए कर्मनां सघळां आवरण दूर करी देवामां आवे तो पछी स्वसत्तामां रहेला समस्त गुणो जेवाने तेवा झळहळता प्रगट थाय छेज. सूर्यादिक उपर आवी लागेलां वादळां दूर थतांज तेनी स्वाभाविक प्रभा शुं प्रगट थया वगर रहे छे ? एथीज अव्यक्त गुणी एवा आपणे व्यक्त गुणी एवा अरिहंतादिक परमेष्ठीनुं दृढ आलंबन लेवुं उचितज छे. जे जे कार्य उचित विवेक सहित विधि पूर्वक करवामां आवे छे ते अल्प श्रमे अद्भूत लाभ मेळवी आपे छे एटला माटे पवित्र धर्म करणीनुं सेवन करनारे यथोचित मर्यादारूप विधि साचववा अने

यद्वा तद्वा करवा रूप अविधि दोष टाळवा खास काळजी राखवी जोईए. ज्यारे श्री शत्रुंजय महातीर्थ जेवा पवित्र स्थळनी स्पर्शना-सेवना करवा जवा पुन्य-प्रयाग मळे त्यारे जे कंई विधि-सेवा करवी जोईए अने अविधि दोष टाळवा जोईए तेनुं दिग् दर्शन प्रसंगे प्रसंगे करावयामां आवतुं छे ते लक्षमां राखी प्रीतिथी हित मार्गना आदर करवा भव्यात्माओने खास भलामण छे. जूओ! खेती करनारा खहंत लोको तेमना क्षेत्रने यथाविध खेडी तेमां खातर प्रमुख नाखी यथाअवसरे वावणी करे छे अने तेना निरंतर थता न पाम पण प्रतिदिन तेना रक्षा-पुष्टि थया करे तेवी पुरती काळजी राखे छे तो परिणामे तेमाथी इच्छित लाभ मेळवी शके छे, एज रीते आपणे जे धर्म करणी करीए तेना यथार्थ लाभ लेवा जेय नी ए खेडूतनी पेरे आपणे पण पुरी सभाळ राखवा रहेवाना खास जरूर छेज. सुज्ञेषु किं बहुना इति शम्.

विषयानुक्रमणिका.

अ०नंबर	नाम		पृष्ठ
१	देवगुरु नमस्कार स्तुति.	श्री आदिश्वर शांति नेमी०	१
२	पच परमेष्ठी "	" अर्हन्तो भगवन्त इंद्र महिता०	२
३	प्रभुनी स्तुति करवाना काव्यो. १५		२ थी ८
४	प्रभु दर्शनना दोहा ७		८ थी ९
५	श्री सीमंधर स्वामीन दोहा ३		९
६	श्री सिद्धाचलजीना दोहा ११		१० थी ११
७	मांगळीक श्लोक दोहा ३		११

॥ चैत्यवंदनो तथा स्तुतिओ (थोयो ना जोडा अने छुटी थोयो नी अनुक्रमणिका ॥

१ श्री ऋषभदेव चैत्यवदन तथा थोय ४ नो जोडो					१२
२ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन तथा थोय १					१३—१४
३ श्री संभवनाथ	"	"	"	१	१४—१५
४ श्री अभिनंदन	"	"	"	१	१५—१६
५ श्री सुमतिनाथ	"	"	"	१	१६—१७

नम्बर	नाम				पृष्ठ
६ श्री पद्मप्रभ	,,	,,	,,	१	१७
७ श्री सुपार्श्वनाथ	,,	,	,,	१	१८
८ श्री चन्द्रप्रभ	,,	,,	,,	१	१९
९ श्री सुविधिनाथ	,,	,,	,,	१	२ १९–२०
१० श्री शीतलनाथ	,,	,,	,	१	२०–२१
११ श्री श्रेयांसनाथ	,,	,,	,,	१	२१– २
१२ श्री वासुपूज्य	,,	,,	,,	१	२२–२३
१३ श्री विमलनाथ	,,	,,	,,	१	२३
१४ श्री अनंतनाथ	,,	,,	,,	१	२४
१५ श्री धर्मनाथ	,,	,,	,,	१	२५
१६ श्री शान्तिनाथ	,,	,,	,,	४नो जोड़ो	२५–२६
१७ श्री कुंथुनाथ	,,	,,	,,	१	२७
१८ श्री अरनाथ	,,	,,	,,	१	२८
१९ श्री मल्लिनाथ	,,	,,	,,	१	२९
२० श्री मुनिसुव्रत	,,	,,	,,	१	२९–३०
२१ श्री नमिनाथ	,,	,,	,,	१	३०–३१

नंबर	नाम				पृष्ठ
२२	श्री नेमनाथ	,,	,,	,, ४नो जोडो	३१–३२
२३	श्री पार्श्वनाथ	,,	,,	,, ४ ,, ,,	३३
२४	श्री महावीर स्वामी		,,	,, ४ ,, ,,	३४–३५
२५	श्री सीमंधरजिन ,,		,,	,, ४ ,, ,,	३६–३७
२६	श्री सिद्धाचळजीनु		,,	,, ४ ,, ,,	३७–३८
२७	श्री सिद्धचक्रजीनु		,,	,, ४ ,, ,,	४०–४१
२८	पर्यूषण पर्वनु	,,	,,	,, ४ ,, ,,	४३–४५
२९	श्री दीवाळी पर्वनु		,,	,, ४ ,,	४६–४७
३०	चत्री पुनमनु	,,	,,	,४ तथा छुटीथोय	४९-५०
३१	श्री गिरनारजीनुं चैत्य० तथा थोय ४ नो जोडो				५१–५२
३२	श्री पंच तिर्थनु चैत्य० तथा थोय ४ नो जोडो				५३–५४
३३	श्री वीस विहरमान जिननुं ,, ४नो ,,				५६–५७
३४	श्री चोवीश तिर्थंकरनु चैत्यवंदन				५९
३५	श्री अतीत (गइ) चोवीशीनुं चैत्यवंदन				६०
३६	आवती चोवीशीनुं चैत्यवंदन				६०
३७	श्री समवसरण भाव गर्भित थोय ४नो जोडो				६३

नंबर	नाम				पृष्ठ
३८	श्री सिद्धाचळजीनी थोय १				६४
३९	श्री नवपदमां (१) अरिहंत पद चैत्य० तथा थोय			१	६५
४०	,, (२) सिद्धपद ,,	,,	,,	१	६६
४१	,, (३) आचार्य पद	,,	,,	१	६७
४२	,, (४) उपाध्याय पद	,,	,,	१	६८
४३	,, (५) साधु पद	,,	,,	१	६९
४४	,, (६) दर्शन पद	,,	,,	१	७०
४५	,, (७) ज्ञान पद	,,	,,	१	७१
४६	,, (८) चारित्र पद	,,	,,	१	७२
४७	,, (९) तप पद	,,	,,	१	७३
४८	श्री चोवीश तिर्थंकर [illegible] चैत्यवंदन				१०८
४९	श्री महावीर स्वामीनी थोय १				१६५

एकंदर चैत्यवंदन ४६ थोय जोडा १५ छुटी थोय ३१ आ प्रमाणे एकंदर ९२

॥ स्तवनो १२६नी अनुक्रमणिका ॥

॥ १ ॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन (१०)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	जगजीवन जग वाल्हो, मरुदेवीनो नंद लाल रे	७४
२	भरतजी कहे सुणो मावडी, प्रगट्या नवे निधान रे	१४०
३	श्री श्री आदिनाथ भगवान, भवोदधि पार लगानेवाले	२२४
४	आदिश्वर स्वामी, आप बीराजो पुना शहेरमां	२२७
५	सरणा तो ले चुका हुं, चाहे तारो यान तारो	२४८
६	प्रभुश्री आदि जिन स्वामी, करूं विनती मैं शिरनामी	२६५
७	उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाइये	२६७
८	प्रभु आदि जिनंदा, शिवसुख कंदा, तारक दिन दयाल	३८४
९	प्रभुजी ऋषभ जिनेश्वर देव. हृदयमां व्हाला लाग्या रे	३८५
१०	मैं अरज करूं शिर नामी. प्रभु कर जोड जोड जोड	३८६

॥ २ ॥ श्री अजितनाथ जिन स्तवन (२)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	अजित जिणंदशुं प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो०	७५
२	अजितनाथ रे अर्ज उचरुं, मुज वितकनी वात शुं०	२२९

॥ ३ ॥ श्री संभवनाथ जिन स्तवन (३)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	संभव जिनवर वीनति, अवधारो गुण ज्ञातारे	७६
२	साहिब सांभलोरे, संभव अरज हमारी	१३३
३	प्रभु संभव जिन सुखदाई चित्तमें लागी रहो	२६८

॥ ४ ॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन (४)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	दीठी हो प्रभु, दीठी जग गुरु तुझ, मूरति हो प्रभु०	७८
२	अभिनंदन जिन दरिसण तरसीए, दरिसण दुर्लभ०	१३५
३	संवर रायना नंदनारे लो, त्रिभुवन जन आनंदनारे लो	१४९
४	प्रभुजी अभिनंदन जगनाथ, शिवपुर साथ भलो मल्यो	१८९

॥ ५ ॥ श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन (१)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	सुमतिनाथ गुणशुं मिलीजी, वाधे मुझ मन प्रीती	८०

॥ ६ ॥ श्रीपद्मप्रभ जिन स्तवन (४)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	पद्मप्रभ जिन जइ अलगा रह्या, जिहांथी नावे लेखोजी	८१
२	श्री पद्मप्रभुजीने सेवियेरे, शिवसुंदरी भरतार, कमळ०	१५०
३	यशोछेरे अम मननो मनोरथ, ए जिन करवा सेव	२०४
४	पद्मप्रभु प्राणसे प्यारा, छोडावो कर्मनी धारा	३८८

+ ३

॥ ७ ॥ श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन (२)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	श्री सुपास जिनाराज, तु त्रिभुवन शिरताज, आज०	८२
२	मुझ मन भमरो प्रभु गुण फूलडे रे, रमण करे०	१५१

॥ ८ ॥ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन (१)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	चंद्रप्रभ जिन साहेबा रे, तुमे छो चतुर सुजाण, मन०	८३

॥ ९ ॥ श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन (२)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	लघु पण हुं तुम मन नवि मावुरे	८५
२	लाग्यो लाग्यो रे प्रभुशुं नेह, वर्सायो हइडामां	१३६

॥ १० ॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन (५)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	श्री शीतल जिन भेटियें, करी चोखु भक्ते चित्तहो	८६
२	शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम०	१३८
३	जीहो शीतल जिन जगनो धणी, जीहो शीतल०	१६५
४	शीतलनाथ सुणो अरदास, साहिब आपो पद०	१६६
५	शीतल जिन शीतल कारी प्रभुजी टारो भवपीर०	२६९

॥ ११ ॥ श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन (१)

नंबर नाम पृष्ठ
१ तुमे बहु मित्रीरे साहेबा, मारे तो मन एक ८७

॥ १२ ॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन (३)

१ स्वामी तुमे काई कामण कीधु, चितडु हमारु० ८८
२ कृपा वासुपूज्याची झाली, पापकर्म गेलें पाताळी २३०
३ मन मंदिर नाथ वसाओ रसिया मन मंदिर २४९

॥ १३ ॥ श्री विमलनाथ जिन स्तवन (२)

१ सेवो भविया विमल जिणेसर, दुल्लहा सज्जन संगाजी ९०
२ दुःख दोहग दूरे टल्या रे, सुख संपदशु भेट १४०

॥ १४ ॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तवन (२)

१ श्री अनंत जिनशु करो, साहेलडीया, चोल मजीठनो० ९१
२ ज्ञान अनंतु ताहरेरे, दर्शन ताहरे अनंत १६८

॥ १५ ॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन (५)

१ थाशु प्रेम बन्यो छे राज, निरवहेशो तो लेखे ९३
२ हांरे मारे धर्म जिणंदशु लागी पूरण प्रीत जो १४१
३ धर्म जिनेसर मुज मनडे वस्यो, रागउमंगेरे अंग सा० १६९
४ छोड जिनवर को दुर्गामे दील लगाकर क्या करूं ? २५०

नंबर	नाम	पृष्ठ
५	सेवो भविजन धर्म जिनंद	२५२

॥ १६ ॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन (६)

१	धन्य दिन वेला, धन्य घडी तेह, अचिरारो नंदन०	९४
२	शाति जिनेश्वर साहिबारे, शाति तणो दातार सलूणा	१४४
३	क्षण क्षण साभरो शाति सलूणा, ध्यान भुवन जिन०	१४५
४	शाति प्रभु विनति एक मोरी रे, तारी आंखडी०	१४७
५	शांति जिनरे, शी गति थाशे हमारी, मैं कर्म०	२३०
६	शांति जिन मूर्ति तोरी लागे मने प्यारीरे	३८१

॥ १७ ॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन (२)

१	साहेला हे कुंथु जिनेश्वर देव, रत्नदीपक अति०	९५
२	करुणा कुंथु जिणंदनी, त्रिभुवन मंडळ मांहि, ललना	१९०

॥ १८ ॥ श्री अरनाथ जिन स्तवन (१)

१	श्री अराजिन भवजलनो तारु, मुझ मन लागे वाहरे०	९७

॥ १९ ॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन (४)

१	तुज मुझ रीझनी रीत, अटपट एह खरीरी	९८

नंबर नाम पृष्ठ
२ कौन रमे चित्त कौन रमे, मल्लिनाथजी विना चित्त० १७१
३ मल्लि तणा गुण गायवाजी, उलट अंगे थाय १७२
४ प्रभु मल्ली जिनेश्वर आप, अरज मोरी दील धरोरे २३३

॥ २० ॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन (२)

१ मुनिसुव्रत जिन वंदता, अति उल्लसित तन मन थायरे ९९
२ श्री मुनिसुव्रत साहिबो, सेवो दिल एकत, मारालाल १९२

॥ २१ ॥ श्री नमिनाथ जिन स्तवन (१)

१ श्री नमि जिननी सेवा करतां, अलिय विघन सवि० १०१

॥ २२ ॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन (३)

१ तोरण आवी रथ फेरी गयारे हां, पशुआं देइ दोष० १०२
२ सामलीया लाल, तोरणथी रथ फेर्यो कारण कहोने १०३
३ आओ आओ नेम पिया, तोरी गति जानी रे २३५

॥ २३ ॥ श्री पार्श्वनाथना स्तवन. (१९)

१ परमातम जिनवर, मुनेमांह वसोरे के मुनिमांह० १०४
२ परमातम परमेसर, जगदीश्वर जिनराज १०५

नंबर	नाम	पृष्ठ
३	जिनजी गोडी मंडण पासके, विनति सांभलोरे लो	१५४
४	मनमोहन प्रभु पासजी, सुणो जगत आधारजी	२०७
५	प्यारी प्यारी निजानंद कारी हो, प्रभु पार्श्व०	२०८
६	मेरे तो चिंतामणि प्रभु पासजीका काम है जी	२०९
७	घन घटा भुवन रंग छाया, नवखंडा पार्श्वजिन पाया	२११
८	नव खंडाजी हो पास, मनडु लोभावी बेठा आप०	२३६
९	लाख चोराशी भवमाही भटक्यो, वार अनंति वेला	२३७
१०	सेवा करावी सार, प्रभुची सार सेवा करावी सार	२३९
११	अरज सुणो प्रभू माहरी, हांरे हुंतो चाहुं चाहु०	२५३
१२	हितकारी सुखकारी दुःखहारी, प्रभु पार्श्व अंतर०	२५५
१३	शिरपुर नगरमा शोभतारे, अतरीक्ष प्रभु पास	२५६
१४	येतो फलवर्धी पारसनाथ प्रभुको पूजो तो सही	२५८
१५	सब करम जार, जिन सरन धार, तुम नाम सार०	२५९
१६	मुखडा देखन देरे सुभागीआ, मुखडा देखन दे	२६०
१७	माता वामादे बोलावे जमवा पासने	२६१
१८	पास गोडी दरबार रे, आज खेलिए होरी	३९०

नंबर	नाम	पृष्ठ
१९	सलेश ! शिव सुख दिलाना होगा	३९१

॥२४॥ श्री महावीर स्वामीना स्तवन. (१८)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	गिरुआरे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनरायारे	१०५
२	वीरजी सुणो एक विनती मोरी, वात विचारो तुमे०	१५६
३	मेंतो हुकुम रहेजुजी, महारारे साहेबजी मेंतो०	१५८
४	वीर जिणेसर साहिब मेरा पार न लहु तेरा	१७५
५	तार हो तार प्रभु, मुज सेवक भणी, जगतमां एटलु०	१७७
६	पर्यासा रादेवा र के जो म्हारा नायनें वर्द्धमान०	१७९
७	महावीर मउमार्या मोक्ष, विभलो थावे रे	१८१
८	जिनवर वीर प्रभुना दर्शन कीजे रे, स्वामीने द्र ग०	१८३
९	दयाल वीर प्रभुने विनवुरे, प्रेमे प्राभु पाय हो लाल०	१८५
१०	मन मंदिर आवोरे, महावीर जयकारी	१८७
११	परम जिनेश्वर वीर प्रभु देव, परम जिनेश्वर देव	२०५
१२	... तार महावीर अंतरगा ... मनरमी रे,	२१०
१३	... म व ...मार, ...मा वीर जिनेश्वर	२४०
१४	त्रिशला ... वीर जिनन्द हो, वार जिनन्द आय०	२४२

नंबर	नाम	पृष्ठ
१५	वीर तोरे दर्शनकी बलीहारी, वारी जाउं वार०	२४३
१६	प्रभु महावीर दर्शनसे, हृदय आनंद पाता है	२४४
१७	हर लिया हर लिया हर लिया रे, मेरा मनडा महा०	२६४
१८	त्रिशलाना जाया रे, महावीर स्हाये आवजो जी	३९३

॥ श्री सामान्य जिनना स्तवन (८)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	मेरी अरजी उपर प्रभु ध्यान धरो, मेरे दिलके ये०	२२०
२	प्रभु मोहे अपना मनाना होगा, मनाना होगा०	२२२
३	प्रभुजी मन चाहे मिलवा काज, क्षिणमें जीव०	२२३
४	महाराज थारी पूजा प्यारी लागे हो जिनराज	२४५
५	है जगतमें नाम ये, रोशन सदा तेरा प्रभु	२७०
६	मुजने प्रभुनो आधार, लक्ष चौराशी माहे भमायो०	२७१
७	भक्ति जिनवरनी करीए रुडा भावथी रे	३९४
८	मारा राजरी वधाइ वाजे छे	३९५

॥ श्री सीमंधर जिननां स्तवन (२)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	श्री मंधरजीकुं वंदना नित होयजो हमारीरे	१०६
२	साहेबा श्री सीमंधर साहेबा, तुम प्रभु देवा०	१९३

॥ श्री सिद्धाचळजीना स्तवन (९)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	शोभा शी कहु रे शेत्रुजा तणी, जीहा वशीया छे०	१०८
२	सिद्धाचल सिद्ध सुहावे, अनत अनत कहावे	१९५
३	मनमा मनोरथ सवि फळया ए, सिध्या वछित०	१९८
४	गिरिराजकु सदा मेरी वदना	१९९
५	सिद्धाचळ गिरि भेटयारे, धन्य भाग्य हमारा	२००
६	अनतो पार भये हम साधो, श्री सिद्धाचल दरस०	२०२
७	आदिनाथ शेत्रुजे झुलालो मुसे	२७२
८	चाँरिये तीर्थ जुहार आजा आओ, मिलकर सव०	२७३
९	दुक फिरा जग सारा जग मारा, सिद्धगिरि०	३६२

॥ पर्व तिर्थादीकोना छुटक स्तवन (१४)

नंबर	नाम	पृष्ठ
१	(सिद्धचक्रजीनु) सिद्धचक्र वरसेवा कीजे, नरभव०	१०९
२	(पर्युषणनु) सुणजो साजन सन, पजुसण आव्या रे	११२
३	(दिवाळीनु) मारग देशक मोक्षनो रे, केवळ ज्ञान०	११४
४	(अष्टमीनु थी ज्ञरम परमेश्वरनी पुरवनी०	११६
५	(चैत्री पुनमनु) वीरजी आयारे, विमलाचलके०	११०

नंबर	नाम	पृष्ठ
६	(गिरनारजीनु) तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंतरे०	१२०
७	(आबुजीनुं आदि जिनेसर पूजता दुःख मेटोरे	१२२
८	(अष्टापदनुं) अष्टापद अरिहंनजी म्हारा वाहाला०	१२४
९	(समेतशिखरनुं) समेतशिखर जिन वंदीये, मोटुं०	१२६
१०	(तीर्थमालानुं) शेत्रुजे ऋषभ समोसर्या, भलागुण०	१२७
११	(सिद्ध भगवाननुं) श्री गौतम पृच्छा करे,	१६१
१२	(पोषदशमीनुं पार्श्वनाथ जन्मकल्याणकनुं) प्रभु पारसनाथ, जिनंद चंद मेरे, जनमतणी बलिहारी	२१२
१३	(सिद्ध परमात्मानु) प्रभुमारी अरज सुणोने हुकम०	२१८
१४	(युगमंधरजीनुं) काया पामी अति कूडी	२४७

आ प्रमाणे एकंदर स्तवनो १३६ छे.

॥ लावणी पांच नी अनुक्रमणिका. ॥

१	(आदिनाथजीनी) श्री आदिनाथ निर्वाणी, नमुं०	२७६
२	(शांतिनाथजीनी) श्री शांतिनाथ महाराज बिराजे०	२७८
३	(नेमनाथजीनी) नेमजीकी जान बनी भारी, देखन०	२७९

नंबर	नाम -	पृष्ठ
४	गोडीपारसनाथनी) जगत भविकजन महेर अनत०	२८२
५	(महावीर स्वामीजीनी) अनवर्ला जिनराज अग०	२८७

॥ छंदो पांच नी अनुक्रमणिका ॥

१ (वीतराग एक शिव शुद्ध बुद्ध पर विश्वनाथ ९०
२ (शांतिनाथजीनो) शांतिनाथको काजे जाप २९२
३ (पार्श्वनाथनो) आपग उर नेठा लाल करो २९५
४ (भीडभजन पार्श्वनाथनो) भीड भजन प्रभु भाड भज० २९६
५ गौतमस्वामीनो) जयो जयो गौतम गणधार २९८

॥छुटा उपयोगी विषयोनी अनुक्रम०॥

१ श्री जिन नव अंग पूजाना दूहा (जळभरी संपुट०) २९९
२ पंडित श्री कुंवरविजयजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ३००
३ पंडित श्री उत्तमविजयजीकृत अष्ट प्रकारी पूजा
मांथी दरेक पूजाना फल दुहानो संग्रह ३०८
४ श्री रायचंदजी (सिद्धचक्रजी आयंबिलनी ओळीमा
गणानगण वगरे बालवाना काव्यो तथा पदो ३१२

नंबर	नाम	पृष्ठ
५	पच्चख्खाण प्रभातना तथा साझना मळी (१६)	३२०
६	श्री महादेव स्तोत्रनो गुजराथी भाषामां अनुवाद का०	३३०
७	आरती एकंदर नव	३४४ थी ३५३
८	मंगळ दीवा एकंदर च्यार	३५३ थी ३५६
९	चैत्यवंदन करवानी विधि मुद्रासहित.	३५६ थी ३६६
१०	देहरासरना कार्य वाहके अमल करवानी सूचनाओ	३६६
११	जिनेश्वरना दर्शन पूजा करनार भाइ ब्हेनोने अगत्यनी सूचनाओ कलम (४४)	३६९ थी ३७७
१२	श्री अष्टप्रकारी पूजाना हेतु	३७७ थी ३८४
१३	श्री चोवीश तीर्थंकरोना नाम तथा लांछन,पिता,मातानां नाम,शरीरनुं मान,आयुना प्रमाणनुं कोष्टक	३९६थी ३९९
१४	श्री वीस विहरमान जिननां नाम	४००
१५	चार शाश्वता जिननां नाम	४००
१६	अतित (गई) चोवीशीना तीर्थंकरोनां नाम	४०१
१७	अनागत (आवती) चोवीशीना तीर्थंकरोनां नाम	४०२
१८	प्रभातमां भावनानी भावना	४०३



पुस्तक मंगावनारने सूचना.

१ कोइ साधु साध्वी ने तथा सार्वजनिक लायब्रेरी या पुस्तकालयमा राखवा माटे जरूर होय तो तेना व्यवस्थापकोए पोष्ट पेकींग खर्च वास्ते त्रण आनानी पोष्ट टीकटो मोकलवाथी एक नकल भेट तरीके मोकलवामा आवशे.

२ अन्य जनोए एक नकलनी किंमत छ आना अने पोष्ट पेकींग खर्च त्रण आना मळी नव आनानी टीकीटो मोकली पुस्तक मगाववु वीरटना टर वधवाथी एक नकल वी पी थी मगाववामा पाच आना खर्च वधे छे तथी पोष्ट टीकीटो मोकली मगाववु

३ पच्चीस अथवा तेथी वधारे नकलो मगावनारने दरेक नकलना पांच आना प्रमाणे आपीशु पोष्ट पेकींग विगेरे खर्च मगावनारे जुदु आपवु पडशे

४ कोई पण बाबतनो जुबाब मगावनारे रीप्लाय वधार या पोष्ट पत्रमा टीकीटो मोकली पोतानु

चोकस सरनामुं लखी मोकलवाथी जुवाब आपवामां आवशे. ते शिवाय जुबाब मळशे नहीं.

५ अमारो बुकसेलरनो अथवा पुस्तको प्रसिद्ध करी वेचवानो धंधो नथी अने तेमां अमारो संसारी स्वार्थ पण नथी परमार्थ हेतुथी खास ज्ञानखातानां रकममांथी अथवा सद्गृहस्थोना द्रव्यनां मददथी आवां पुस्तको छपाववामां अमो जाते मेहनत करीये छीये अने तेनो लाभ खपी जीवोने मळे छे.

६ जे जे पुस्तकोनी किंमत राखीये छीये ते किंमतना आवेला रकममांथी बीजा पुस्तको छपावीये छीये. अथवा बीजाना छपावेला पुस्तकोनी वधु नकलो वेचाती लेई खपी जीवोने तेनो लाभ आपीये छीये.

७ कोई पण सद्गृहस्थने आ पुस्तकनी गुजराती टाइपमां आवृत्ति छपाववी होय तो खुशीथी छपाववी. छपाववा पहेलां अमने पुछपाछ करवी. जेथी आ पुस्तकमां कांइ खामी रहेली जणाशे तो लखी मोकलीशुं ते प्रमाणे सुधारीनें पुस्तक छपाववुं.

८ आ पुस्तक शिवाय अमारी मारफते वळी बीजा केटलाक पुस्तको छापेला छे तेमांथी जे नमुना शिल्लक रहेला छे तेना नाम किमत विगेरे निचे मुजब जाणवा.

	नाम	किमत रु आ	पोष्टेज आना
१	चैत्यवदन स्तुति स्तवनादि संग्रह	०-१०	२ ६
२	" " भाग पेहलो	०-४	२ ०
३	दन्डकादि (४१) द्वार पाका पुठानी	० ६	३-०
४	सुक्त मुक्तावली पाका पुठानी	१-०	४-०
५	श्री शत्रुंजय महा तीर्थादि यात्रा विचार पाका पुठानी	० ४	२ ०
६	" " तथा चैत्यवदन स्तुति स्तवनादी संग्रह (गुजराथी टाइपनो)	०-४	२-०
७	अष्टप्रकारी तथा स्नात्र पूजा	०-३	१-०
८	गुहली संग्रह भाग पेहेलो	० १	०-६
९	सगीत स्तवनावली भाग पहेलो	०-२	०-६

शाह. शिवनाथ लुंबाजी–पोरवाल

श्री तीर्थाधिराजने नमस्कार.

ॐ नमः श्रीतीर्थराजाय, सर्वतीर्थमयात्मए;
अर्हते योगिनाथाय, रूपातीताय तायिने॥ १॥

भावार्थः— सर्व तीर्थमय जेनुं स्वरूप छे एवा श्री शत्रुंजय तीर्थराजने तेमज परम योगीश्वर, देहातीत अने विश्वत्राता एवा श्री अरिहंत परमात्माने अमारो नमस्कार थाओ! (१)

श्रीतीर्थपांथरजसा विरजी भवंति,
तीर्थेषु बंभ्रमणतो न भवे भ्रमंति;
द्रव्यव्ययादिह नराः स्थिरसंपदः स्युः
पूज्या भवन्ति जगदीशमथार्चयंतः ॥

भावार्थः— श्री तीर्थ भूमीना रज स्पर्शथी भव्यात्माओ कर्म रज रहित थाय छे. तीर्थोमां परिभ्रमण करवाथी भवमां भमता नथी [भव भ्रमणथी मुक्त थाय छे], अत्र दान देवाथी मनुष्यो अचळ लक्ष्मीवाळा थाय छे अने जिनेश्वरनी पुजा-अर्चा करता छता विश्वपूज्य थाय छे. २)



श्री जिनेंद्रभक्तिप्रकाश
भाग पहेलो.

मंगलाचरण.

॥ श्री देव गुरु नमस्कार स्तुति ॥

(शार्दूल विक्रीडित छंद)

॥ श्री आदिश्वर शांति नेमी जिनने, श्री पार्श्व वीर प्रभो । ए पांचे जिनराज आज प्रणमुं, देव धर्म हे विभो ॥ कल्याणे कमला सदैव विमला, वृद्धि पमाडो अति । एवा गौतमस्वामी लब्धि भरीया, आपो सदा सन्मति ॥ १ ॥

॥ पंच परमेष्ठी नमस्कार स्तुति ॥

(शार्दूल विक्रीडित छंद)

॥ अर्हन्तो भगवन्त इंद्रमहिता. सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता । आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा, पूज्या उपाध्यायका ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवर, रत्नत्रयाराधका । पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं. कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

प्रभुनी स्तुति करवानां काव्यो.

(शार्दूल विक्रीडित छंद)

॥ वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः । वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो । वीरे श्री धृति कीर्ति कान्ति निचयः, श्रीवीर भद्रं दिश ॥ २ ॥

(२)

॥ छे प्रतिमा मनोहारिणी दुःख हरी श्री वीर जिणंदनी । भक्तोने छे सर्वदा सुखकरी, जाणे खीली चंदनी ॥ आ प्रतिमाना गुण भाव धरीने, जे माणसो गाय छे । पामी सघळा सुख ते जगतना, मुक्ति भणी जाय छे. ॥ २ ॥

(३)

॥ नित्यानंद पद प्रयाण सरणी, श्रेयोवनी सारणी । संसारार्णव तारणैक तरणी, विश्वार्धि निस्तारिणी ॥ पुण्यांकूर भर प्ररोह धरणी, व्यामोह संहारिणी ॥ प्रीत्यै कस्यनते खिलाऽर्ति हरणी, मूर्ति मनोहारिणी ॥ ३ ॥

(४)

॥ पूर्णानंदमय महोदयमय, कैवल्यचिद्दृङ् मय ॥ रूपातीतमय स्वरूप रमण, स्वाभाविकी-

(४)

श्रीमयं ॥ ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं, स्याद्वाद विद्यालयं ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थराजमनिशं वंदे युगादीश्वरं ॥ ४ ॥

(५)

॥नेत्रानंद करी भवोदधितरी, श्रेयस्तरोर्मंजरी। श्रीमद् धर्म महानरेंद्र नगरी, व्यापुल्लता धुम्ररी॥ हर्षोत्कर्षशुभप्रभावलहरी, रागद्विषां जित्वरी। मूर्तिः श्रीजिनपुंगवस्य भवतु, श्रेयस्करी देहिनाम् ॥ ५ ॥

(६)

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं । किं चंद्र-रोचिर्मयं ॥ किं लावण्यमयं महामणिमयं । कारुण्यकेलिमयं ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं, शोभामयं चिन्मयं । शुक्लध्यानमयं वपु र्जिनपते, भूयाद् भवालंबनं ॥ ६ ॥

(७)

॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्य नमः क्षितितलामलभूषणाय;
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥ १ ॥

(८)

॥ अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि,
दिव्यध्वनिश्चामरमासनंच ॥
भामंडल दुंदुभिरातपत्र,
सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥

(९)

॥ अद्य मे सफल जन्म, अद्य मे सफला क्रिया;
अद्य मे सफल गात्र, जिनेंद्र तव दर्शनात्. ॥१॥
दर्शन देवदेवस्य, दर्शन पापनाशनम्,
दर्शन स्वर्गसोपान, दर्शन मोक्षसाधनम् ॥२॥

जिने भक्ति र्जिने भक्ति, र्जिने भक्ति र्दिने दिने॥
सदा मेस्तु सदा मेस्तु, सदा मेस्तु भवे भवे ॥३॥

(१०)

॥ प्रशमरसनिमग्नं, दृष्टियुग्मं प्रसन्नं;
वदनकमलमंकः, कामिनीसंग शून्यः ॥
कर युगमपि यत्ते, शस्त्रसबंधवंध्यं;
तदसि जगति देवो, वीतरागस्त्वमेव ॥१॥

(११)

सरसशांतिसुधारससागरं,
शुचितरं गुणरत्नमहागरं, ॥
भविक पंकजबोधदिवाकरं,
प्रतिदिनं प्रणमामि जिनेश्वरं ॥ १ ॥

(१२)

जेनो प्रबोध प्रसरे जगमां पवित्र,
जेनुं सदा परम मंगळ छे चरित्र ॥

जेनु जपाय जगमा शिवरूप नाम,
ते वीरने प्रणयथी करीए प्रणाम ॥ १ ॥

(१३)

सकळ करम वारी, मोक्षमार्गाधिकारी ॥
त्रिभुवन उपगारी, केवळज्ञान धारी ॥
भविजन नित सेवो, देव ए भक्ति भावे, ॥
इहज जिन भजता, सर्व संपत्ति आवे ॥१॥
जिनवर पद सेवा, सर्व संपत्ति दायी ॥
निशदिन सुखदायी, कल्पवल्ली सहायी ॥
नमि विनमि लहीजे सर्व विद्या वडाई ॥
ऋषभ जिनह सेवा, साधता तेह पाई. ॥२॥

(१४)

॥ एम नवपद ध्यावे परम आनंद पावे ॥
नवमे भव शिव जावे देव नर भव पावे ॥
ज्ञानविमल गुण गावे, सिद्धचक्र प्रभावे ॥

सवि दुरीत समावे, विश्व जयकार पावे ॥ १ ॥

(१५)

॥ आबु अष्टापद गढ गिरनार,
समेतशिखर शत्रुंजय सार ॥
पंचे तीरथ उत्तम ठाम,
सिद्धि वर्या तेने करु प्रणाम ॥ १ ॥

॥ प्रभु दर्शनना दोहा ॥

प्रभुदर्शन सुखसंपदा, प्रभुदर्शन नवनिध;
प्रभुदर्शनथी पामीए, सकळ पदारथ सिद्ध. १
भावे जिनवर पूजिए, भावे दीजे दान;
भावे भावना भावीए, भावे केवळज्ञान. २
जीवडा जिनवर पूजिए, पूजानां फळ होय;
राज नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय. ३
वाडी चंपो मोरीयो, सोवन पांखडीए;
पास जिनेश्वर पूजिए, पांचे आंगळीए. ४

फूलों केरा बागमा, बेठा श्री जिनराज,
जेम तारामा चद्रमा, तेम शोभे महाराज. ५
प्रभु नामनी औषधि, खरा भावथी खाय;
रोग शोक आवे नहिं, सवि सकट दूर थाय. ६
पचम काळे पामवो, दुल्हो प्रभु देदार,
तो पण तेना नामनो, छे मोटो आधार ७

॥ श्री सीमधर स्वामीना दोहा ॥

अनत चोवीशी जिन नमु, सिद्ध अनती कोड,
केवळधर मुक्ति गया, वदु बेकर जोड. १
बे क्रोडी केवळधरा, विहरमान जीन वीश,
सहस्र कोटी जुगल नमु, साधु नमु निश दिश २
जे चारित्रे निर्मळा, ते पचानन सिंह,
विषय कषायना गजीआ, ते प्रणमु निश दिश ३

॥ श्री सिद्धाचळजीना दोहा ॥

सिद्धाचळ समरुं सदा, सोरठ देश मोझार ॥
मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार. १
एकेकुं डगलुं भरे, गिरि सन्मुख उजमाळ ॥
कोडी सहस भवना कर्या, पाप खपे ततकाल २
शत्रुंजी नदी न्हाईने, मुख बांधी मुखकोश ॥
देव युगादि पूजीये, आणि मन संतोष. ३
सिद्धाचल सिद्धि वर्या, सिद्धा अनंती कोड ॥
ज्यां मुनिवर मुक्ति गया, वंदुं बेकर जोड ४
सिद्धाचल सिद्धी वर्या, गृहि मुनिलिंग अनंत ॥
आगे अनंता सिज्झशे, पूजो भवि भगवंत ५
द्राविडने वारि खिह्लजी, दश कोडी अणगार ॥
साथे सिद्धि वधू वर्या, वदूं वारंवार ६
राम भरत त्रण कोडिशुं, कोडी मुनि श्री सार ॥
कोडि साडि आठ शिव वर्या, सांब प्रद्युम्न कुमार ७

कदंब गणधर कोडिशुं, वळि मप्रति जिनराज ॥
थावच्चा तस गणधरु, सहमशु मिप्या काज ८
शत्रुंजय गिरि मंडणो, मरु देवानो नंद ॥
युगला धर्म निवारको, नमो युगादि जिणंद ९
सोरठ देशमा सचर्यो, न चढ्या गढ गिरनार ॥
शत्रुंजि नदी नाह्यो नहि, तेनोएळे गयो अवतार १०
जगमा तीरथ दोय वडा, शत्रुंजय गिरनार ॥
एक गढ ऋषभ समोसर्या, एक गढ नेम कुमार ११

अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार,
ते गुरु गौतम समरीए, वांछित फळ दातार ॥१॥
मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ॥
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥
प्रधानं सर्व धर्म्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥३॥

अथ श्री रुपविजयजी कृत चोवीश तिर्थंकरोनां चैत्यवंदनो तथा नंदसूरी कृत चोवीश तिर्थंकरोनी स्तुति(थोयो)

॥१ श्री ऋषभदेव चैत्यवंदन तथा थोय॥

॥ प्रथम नमुं श्रीआदीनाथ, शत्रुंजय गीरी सोहे ॥ नाभिराया मारुदेवी नंदन, त्रिभुवन मन मोहे ॥ १ ॥ लाख चोराशी पूर्व आय, सोवन मय काया ॥ राणी सुनंदा सुमंगला, तस कंत सोहाया ॥ २ ॥ लंछन वृषभ विराजतुए, धनुष पांचशे देह ॥ विनीता नगरीनो धणी, रूप कहे गुण गेह ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) कनक तिलक भाले, हार हइये निहालें । ऋषभ पाय पखालें, पापना पंक टालें ॥ अरचित वर माले, फुटरी फुल माले ।

नरभर अल्लुआले, रागने रोप टाले ॥ १ ॥ दुरित दूर टकाला, पुण्य पाणी सुगाला । जस गुण नर बाळा, रंगे गाये रसाला ॥ भविक नर त्रिकाला, भावे वदु मयाला । जय जिनवर माला, न्याय लच्छी विशाला ॥ २ ॥ अमीअ रस समाणी, देव देवे वखाणी । वर गुणमणि खाणी, पाप नाठि कृपाणी ॥ सुण सुणने प्राणी, पुण्यकि पटराणी । जय जिनवर वाणी, सेवीये सार जाणी ॥ ३ ॥ रमझम झमकारा, नेउरीचा उदारा । कटि तटि खलकारा, मेखलाचा अपारा ॥ अमल कमल मारा, देह गोरीर धारा । सरस्वति जयकारा, होउ मे नाण धारा ॥ ४ ॥ (इति)

॥२श्रीअजितनाथचैत्य० तथा थोय॥

॥ अजित अयोध्यानो धणी गज लंछन

गाजे ॥ जितशत्रु विजया तणो, सुत अधिक दीवाजे ॥ १ ॥ साडा चारशे धनुष देह, हेम वरण वीराजे ॥ बहोत्तेर लाख पूर्व आयु, त्रिभुवन पति छाजे ॥ २ ॥ समेतशिखर अणसण करीए, पहोत्या मुक्ति मोझार ॥ रूपविजय कहे साहीबा, आवागमन निवार ॥ ३ ॥ (इति)
(थोय) अजित केणे न जित्यो, जेहने मान वित्यो । अवनि वर वदित्यो, मानीये मान वित्यो ॥ लहिश सुख निचितो, पुजरे मान विता ॥ जे जिन मत चित्तो, मूकिये मान-वीतो ॥ १ ॥ (इति)

॥३॥श्रीसंभवनाथ चैत्य० तथा थोय॥

॥ संभवनाथ सदा जयो, मन वंछीत पुरे॥ हय लंछन हेमवरण, टाले दुःख दुरे ॥ १ ॥ राय जितारी कुळ तिळो, सावथ्थी राया ॥

सेना माता जनमीयो, जग मुजश गवाया ॥२॥
धनुप चारसे देहडीए शाठ लाख पूर्व आय ॥
श्री विनयविजय उवज्झायनो, रुप नमे नित
पाय ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय समवसरण बेठा, चित्त मादरे
पेठा । अमुख अति अगीठा उपरा तेउ बेठा ॥
सुपर्गी करी गरिठा, सौख्य पाम्या अनीठा ।
भय हुअ सुख मिठा, समभव स्वामी दीठा
॥ १ ॥ (इति)

॥४॥श्रीअभिनंदन चैत्य०तथा थोय॥

॥ उच्चपणे ग्रणसे पचास, धनुष प्रभु देह॥
सवरराया सिद्धार्था, सुत मंगल नेह ॥ १ ॥
लाख पचास पूर्व आयु, अयोध्याना राणो ॥
सोवन वान जीनवरनो, कपी लछन जाणो ॥२॥
अभिनंदन प्रभु जिनराजए, अंतरजामी देव ॥

श्री विनयविजय उवज्झायनो, रूप नमे नित मेव ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) लहके सीर धजानो, ज्ञान केरो खजानो । जिनवर नहि नानो, स्वामी साचो प्रजानो ॥ जग जगे वखानो, छयल मांहि न छानो । सुत संवर मानो, मात सिद्धारथानो ॥ १ ॥ (इति)

॥५॥श्रीसुमतिनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ मेघराय अयोध्यानो धणी, मंगला पटराणी ॥ धनुष त्रणसें देहमान, लंछन क्रौंच जाणी ॥ १ ॥ हेमवरण वीराजतो, सुमति जिन सेवो ॥ लाख चालीश पूर्व आय, आपे शिव मेवो ॥ २ ॥ समेतशिखर मुक्ते गयाए, जगजीवन जगदीश ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुं मुज मलीयो ईश ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) विषम विषय वामी, केवलज्ञान पामी ॥ दुरगति दुःख गामी, जे हुआ सिद्धि गामी ॥ हृदये धरीने वामी, पूरव पुन्य कामी ॥ सकल सुमति स्वामी, सेवियें सीस नामी ॥ १ ॥ (इति)

॥६॥ श्री पद्मप्रभ चैत्य०तथा थोय ॥

॥ पद्मप्रभ छट्ठा जयो, वरणे प्रभु राता ॥ धरराय कौशंबी धणी, सुसीमा जस माता ॥ १ ॥ कमळ लंछन अढीसें धनुष, शिव संपत्ती दाता ॥ त्रीश लाख पूर्व आय, त्रिभुवननो त्राता ॥ २ ॥ चोंतीश अतिशय बीराजताए, सेवे सुर नर कोड ॥ श्री विनयविजय उवझायनो, रुप नमे कर जोड ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) सकरी अरथ माहारो, लोभनो छोड वारो ॥ भविक भव माहारो, पिंड पापे म भारो ॥ नरयगति नीवारो, चित्त चेति

सहचारो ॥ पद्मप्रभु जुहारो, सांभलो बोल सारो ॥ १ ॥ (इति)

॥७ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ जगतारण जिन सातमो, प्रतीष्ट रायानंद ॥ पृथ्वी माता उरे धर्यो, मुख पुनमचंद ॥ १ ॥ वीश लाख पूर्व आयु, बशे धनुष तनु दीपे ॥ स्वस्तिक लंछन श्री सुपास, अरीयणने झींपे ॥२॥ जन्मठाम वणारशीए, देह कनकनो वान ॥ रुपविजय कहे साहेबा, दीये शिवरमणी दान ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) कियो शिवपुर वासो, स्वामि लीला विलासो ॥ जय जगति सुपासो, जेहने देव दासो ॥ दलिय करम पासो, राग नाठो निरासो ॥ गीरुओ गुण निवासो, दोष दीसे न जासो ॥ १ ॥ (इति)

॥८॥ श्री चंद्रप्रभ चैत्य० तथा थोय॥

॥ महसेन मोटो राजीओ, सती लखमणा राणी ॥ चद सम उज्वल वदन काति, जनम्यो जयकारी ॥ १ ॥ चद्रा नयरी जेहनी, चद लछन कहीए ॥ चद्रप्रभ जिन आठमा, नामे गहगहीए ॥ २ ॥ धनुष्य दोढशे जिन तनुए, दश लख पूर्व आय ॥ रुपविजय प्रभु नामथी, दीन दीन वहु सुख थाय ॥ ३ ॥ (इती)

(थोय) मदन मदन माया, क्रोध योधा नमाया ॥ भव भमर भमाया, रोग सोग गमाया ॥ सकल गुण समाया, लक्ष्मणा जास माया ॥ प्रणमसु जिन पाया, चंद्र चग प्रभाया ॥१॥ (इती)

॥९श्री सुविधिनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ सुविधि भलीविध सेवता, भय भावट

भांजे ॥ सुग्रीव राय सुत सेवतां, दुस्मन नवी गांजे ॥ १ ॥ मगर लंछन मन मोहतु, नयरी काकंदी ॥ दोयलाख पूर्व आयु जिन, बोले जय वंदी ॥ २ ॥ एकसो धनुप वर देहडीए, उज्वल वर्ण उदार ॥ रुपविजय प्रभु भवी नमो रामा मात मल्हार ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) सुविधि सुविधि मांडी, पापना पुर छांडि ॥ मयण मदन भमाडि, चित्त चोखुं लगाडि ॥ कुगति गति समाडि, मुक्ति कन्या रमाडि ॥ सुणित सुणित माडि, देखवा तरु हाडि ॥ १ ॥ (इति)

।१०श्री शीतलनाथ चैत्य० तथा थोय।

॥ भद्दीलपुर दृढरथ राय, नंदा पटराणी ॥ शीतल जिनवर जन्मतां, जननी कीर्तीं गवाणी ॥ १ ॥ श्रीवच्छ लंछन नेवु धनुष, देह सोवन समाणी॥

एक लाख पूर्व आयु मान, कहे केवळनाणी ॥ २ ॥
सुखदायक दशमो मदाए, दे दोलत भरपुर ॥
रूपविजय कहे भवि नमो, प्रह उगमते सुर
॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) कनक वरण पीला, जेगे जीत्या प्रमीला ॥ शिर धरी सुशीला, दुर किया कुशीला ॥ प्रगट तप शीला शीतल स्वामि शिला ॥ मकरेश अराहिला, जेहनी लोल लीला ॥ १ ॥ (इति)

११ श्री श्रेयांसनाथ चेत्य० तथा थोय।

॥ विष्णुराय कुल केशरी, माता विष्णु जायो ॥ खडग लञ्छन एंसी धनुष, गरी सुवर्ण गायो ॥ १ ॥ लाख चोराशी वरस आयु, भविजन मन भायो ॥ श्री श्रेयांस जिनेश्वर, दीठे सुख पायो ॥ २ ॥ मोहन वरणी देहदीप, मोह-

पुरीए अवतार ॥ रुपविजय कहे मुज मल्यो, त्रिभुवन तारण हार ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) भविक नर भणीजे, सं भमो मार्ग चीजे ॥ अहनिश समरीजे, सेव श्रेयांस कीजे ॥ त्रिविध सुख वरीजे, पुन्य पियूष पीजे ॥ पय कमल नमीजे, लक्ष्मिनो लाहो लीजे ॥ १ ॥ (इति)

॥१२॥श्रीवासुपूज्य चैत्य०तथा थोय॥

॥ देवलोकथी दीपती, नयरी वर चंपा ॥ वासुपूज्य जिन जन्म ठाम, वसे लोक सुसंपा ॥१॥ वसुपूज राजा राजीयो, जया जस पटराणी ॥ सीत्तेर धनुष वर देह राती, महीष लंछन जाणी ॥ २ ॥ वरस वहोत्तेर लाखनुए, आयु

कहे जगनाथ ॥ रुपविजय कहे मुज मल्यो, शीव मार्गनो साथ ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) जस मुख अरविंदो, उगीओ के दिणदो ॥ करी अभिनव चंदो, पुनिमाने अमदो ॥ नयण अमिअ चदो, जास सेवे सुरिंदो ॥ पय नमीअ नरिंदो, वासुपूज्य जिणदो ॥ १ ॥ (इति)

॥१३ श्रीविमलनाथ चैत्य० तथा थोय॥

॥ वदो विमल जिनद चद, सुख सपत्ति दाता ॥ कपीलपुर कृतवर्म राय, श्यामा जस माता ॥ १ ॥ साठ धनुष वर देहमान, दीपे विख्याता ॥ सोवन वान विगजता, गुण सुर नर गाता ॥ २ ॥ साठ वरस लख आउखुए, शुकर लछन पाय ॥ श्री विनयविजय उवझायनो, रुपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) अमुख अति हणवा, मोरव्यना

लक्ष लेवा ॥ भवजल निधि तरेवा, पुण्य पोतु भरेवा ॥ सुगति वधु वरेवा, दुरगति दाह देवा ॥ विमल विमल सेवा, चित चोखुं करेवा ॥ १ ॥ (इति)

॥१४श्रीअनंतनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ अनंत जिनेश्वर चौदमां, अयोध्याए अवतरीया ॥ सींहसेन कुल केशरी, सुजशा उर धरीया ॥ १ ॥ देह धनुष पंचाश मान, गुणशुं भरीया ॥ वरस त्रीश लाख आउखु, श्री केवळ वरीया ॥ २ ॥ सींचाणा लंछन तनुए, कनक वर्ण देह ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुंजशुं अविहड नेह ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) अकल नवि कलायो, पार केणे न पायो ॥ त्रिभुवन समायो, जेहनो ज्ञान न मायो ॥ जस जिनवर जायो, रोगनो अंत आयो ॥

हृदय कमल ध्यायो, ते अनतो मोहायो॥१॥ (इति)

॥१५॥ श्रीधर्मनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ धर्म धुरधर धर्मनाथ, धन सुव्रता जायो भानु-राय सुत भानु जेम, सुरवधु हुलरायो ॥ १ ॥ धनुष पीस्तालीश देहमान, वज्र लंछन गायो ॥ वरस लाख दश आउखु, हेमवान सुहायो ॥ २ ॥ रतनपुरी नयरी धणीए, पधरमो भगवत ॥ रुप-विजयनो माहिनो, केवल कमला कंत ॥ ३ ॥(इति)

(थोय) धरम धरम भाखे, सुगतिनो मार्ग दाखे ॥ जगे जिनवर पाखे, पाप जाए न पासे ॥ धरम दिवस पाखे, जे प्रभु चित्त राखे ॥ पुरुष अणीअ आखे, मोख्य ते चग चाखे ॥ १ ॥ (इति)

॥१६श्रीशांतिनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ शातिकरण श्रीशांतिनाथ, गजपुर धणी

गाजे ॥ विश्वसेन अचिरा तणो, सुत केवळ दिवाजे ॥ १ ॥ धनुष चाळीस हेमवर्ण काय, मृग लंछन छाजे ॥ लाख वरसनुं आउखुं, अरीयण मद भांजे ॥ २ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पांचमा ए, शोळमां श्री जगदीश ॥ रुपविजय कहे मुझ मल्यो, पुरण सकल जगीश ॥ ३ ॥ (इति)
(थोय) मयगल घरबारी, नारी श्रृंगार भारी ॥ अरण कनक सारी, कोडि केति वीचारी ॥ प्रभु तस परिहारी, ज्ञान चारित्र धारी ॥ त्रिभुवन जयकारी, शांति सेवो सवारी ॥ १ ॥ जन जिन सहु पूजो, आपणो चित्त बुझो ॥ अवर सहन झूझो, धरम एहथी न दुजो ॥ भवि हृदय म मुझो, पापथी कां न ध्रूजो ॥ कलुष करम भुंजो, जेहने धरम सुझो ॥२॥ समय सरस वाणी, वीतरागे वखाणी ॥ अम्रत रस समाणी, चित्तमां

ंग जाणी ॥ चतुर सुगुण प्राणी, जे भणें भाव आणी ॥ तस घर धन खाणी, सार लहे राजा राणी ॥ ३ ॥ जिनपति पय सेवे, कामना सर्व देवे ॥ गरुड सुर वहेवे, शातिनी आण हेवे ॥ विघन सवि हरेवे, पूरव सार मेवे ॥ जस सुजस देवे, मघने सुख हेवे ॥ ४ ॥ (इति)

॥१७॥ श्रीकुंथुनाथ चैत्य०तथा थोय॥

सतरमां श्री कुंथुनाथ, श्री राणी जायो॥ गजपुर नयरी सुरी राय, जाडवायस पायो॥१॥ सहस पचाणु वरस आयु, छाग लछन धायो॥ धनुष पात्रीश वर देहडी, हेमवर्ण सुहायो॥२॥ चोमठ सहस वधु धणीए, पायक सख्या न पार ॥ रुपविजय कहे मोहना, तु तर्यो मुज तार॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) वर कनक घडारा, हार हीरे

जडाया ॥ मुकुट शीर चढाया, सुर तेजे भडाया ॥ तिवल तड तडाया, पाप पुंठे पडाया ॥ कुसम शीर चढाया, कुंथु पूजंति राया ॥ १ ॥ (इति)

॥१८॥श्रीअरनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ राय सुदर्शन गजपुरी, देवी पटराणी ॥ लंछन नंदावर्त जास, अर जिन गुणखाणी ॥१॥ त्रीश धनुष वर देहडी, हेमवर्ण जाणी ॥ सहस चोराशी वर्ष आयु, कहे केवळनाणी ॥२॥ चक्रवर्ती प्रभु सातमोए, अढारमो मुज देव ॥ रुप कहे भवि एहने नमो, करो निरंतर सेव ॥३॥ (इति)

(थोय) करम मरम जाली, पुन्यनी निक्र वाली ॥ रति अरति राली, केवलज्ञान पाली ॥ अखय सुख रसाली, सिद्धि पामी सुहाली ॥ अर अरवीस माली, आपिरे फूल टाली ॥ १ ॥ (इति)

॥१९॥श्रीमल्लिनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ मल्लिनाथ ओगणीशमा,मिथीलापती वंदो॥ प्रभावती माये जनमीयो, कुंभराय कुळ चंदो ॥ १ ॥ सहस पंचावन वरस आयु, नील वर्ण जिणंदा ॥ धनुष पचवीश प्रभु देहमान, टाळे भव फंदा ॥ २ ॥ लंछन कळश सोहामणुए, सेवे सुरनर वृंद ॥ श्री विनयविजय उवज्झायनो, रुप लहे आणंद ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) गुण गुणने वेल्लि, पुण्यनी पुर नेल्लि ॥ वर तरु अर वल्लि, पूत पूतिहि भल्लि ॥ नितु नवल नवल्लि, सुर भोगेहि फल्लि ॥ प्रणमे जिन मल्लि, तास कल्याण गल्लि ॥१॥ (इति)

॥२० श्रीमुनिसुव्रत चैत्य०तथा थोय॥

॥ जपो निरंतर नेहशु, वीशमो जिनराया ॥ मित्रराय पद्मावती, सुतमु गुज माया ॥ १ ॥

कछप लंछन धनुष वीश, श्यामवर्णी काया ॥ त्रीश सहस वरस आउखुं, हरीवंश दीपाया ॥ २ ॥ मुनिसुव्रत महिमा निलोए, जन्म राजग्रही जास ॥ रुपविजय कहे साहेबा, नामे लील विलास ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) वगति कलि कुरंगा, पामीया पुण्य तुंगा ॥ नवल गविल जंगा, दुःख दोष दुरंगा ॥ जब हुआ जिन संगा, सुव्रत सामि चंगा ॥करी तरल तुरंगा, आलसु माहे गंगा ॥१॥ (इति)

॥२१॥श्रीनेमिनाथ चैत्य०तथा थोय॥

॥ विजय राय विप्रा धणी, मीथिलानो राय ॥ धनुष पंधर हेमवर्ण देह, मेले शिव साथ ॥ १ ॥ लंछन नीलुं कमळ जास, तरीया भव पाथ ॥ नमी नमतां नेहसुं, हवे थया सनाथ ॥ २ ॥ दश हजार वरषनुं आउखुए, एकवीशमो मुनि

स्वामी ॥ रुप कहे प्रभु साभळो, मन मोह्युं तुमसु स्वामी ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) नमि नरक निवारे, मान माया निवारे ॥ भव जलधि अपारे, हेल हेला उतारे ॥ भगति जन सधारे, लोभ नाणे लगारे ॥ जन मुगति जुहारे, ते सवे काज सारे ॥१॥(इति)

॥२२॥श्रीनेमीनाथ चैत्य० तथा थोय॥

॥ राजुल वर श्री नेमीनाथ, शामलीओ सारो ॥ दश लछन दश धनुष देह, मन मोहनगारो ॥ १ ॥ समुद्रविजय राय कुळ तीलो, शिवादेवी सुत प्यारो ॥ सहस्र वरस प्रभु आउखु, पाम्यु सुखकार ॥ २ ॥ श्री गीरनारे मुक्ते गयाए, सौरीपुर अवतार ॥ रुपविजय मन वालहो, जगजीवन जीनराज ॥३॥ (इति)

(थोय ; कुगति कुमति छोडी, पापनी पाल फोडी ॥ टलिय सयल खोडी, मोहनि वेल त्रोडी ॥ जीणे शीव वहु लोडि, को नही नेम जोडि ॥ प्रणमे सुर कोडी, नाथ वे हाथ जोडी ॥ १ ॥ भव भ्रमण पाया, एक एके सवाया ॥ प्रणमुं जिन राया, आद आदे सखाया ॥ सुणिने सुजन भाया, पाप दुर गमाया ॥ तस निरमल काया, जे नमे जिन पाया ॥ २ ॥ समय वचन सारा, देव भाखे उदारा ॥ हरति भव प्रचारा, मान माया विदारा ॥ भव जल निधि पारा, जे भणे चित्त हारा ॥ अनुदीन परीवारा, ते लहे सुख अपारा ॥ ३ ॥ प्रभु पय युग सेवा, अंबिका चारु हेवा ॥ सकल फल वरेवा, भावे पुजो सदेवा ॥ दुरीत सवि हरेवा, धरमनो सार लेवा ॥ सुगण गरुड देवा, नेमि सेवो सुहेवा ॥४॥ (इति)

॥२३॥श्रीपार्श्वनाथ चैत्य० तथा थोय॥

॥ जयो जयो श्री पार्श्वनाथ, सुख संपत्ती-
कारी॥अश्वसेन वामा तणो, नंदन मनोहारी ॥ १ ॥
नील वर्ण नव हाथ देह, अहि लंछन धारी ॥
एकसो वरसनु आउखु, वरीया शिवनारी ॥२॥
जन्म ठाम वणारसीए, प्रत्यक्ष परचयो
देव ॥ सानिध्यकारी साहीबा, रुप कहे नित-
मेव ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) जल जलण नियोगा, नाग संग्राम
सोगा ॥ हरे भयगल भोगा, वाय चोरारी
रोगा ॥ सवि भय हर लोगा, पामिये पास योगा ॥
नर नहिं कहि योगा, पूजता भूरि भोगा ॥ १ ॥
पेहरी वर माला, चारु चोली रसाला ॥ सरस
कुसुम माला, जाई जुइ गुलाला ॥ निज कर

लेई वाला, भावे उठी सकाला ॥ सवि जिन-
वर माला, पूजरे तुं विसाला ॥ २ ॥ नरय
गति निवारे, दुःखना दाह ठारे ॥ सवि जन
साधा रे, मान माया विदारे ॥ भवजल निधि-
तारे, जैन वाणि संभारे ॥ तस घर अधिकारे,
सार लच्छि समारे ॥ ३ ॥ जस पय धरणंदो,
भावे पूजो सुरंदो ॥ दुरित तम मरिंदो, सुखनि
वेल कंदो ॥ हरत कलुष दंदो, पास सेवे अमंदो ॥
अभिनव सुर चंदो, जाणे अमृत वंदो ॥ ४ ॥

॥ २४ ॥ श्री महावीर (वर्ध्धमान) स्वामीजीनुं चैत्यवंदन तथा थोय ॥

॥ वर्धमान चोवीशमा, क्षत्रीकुंडे जाणो ॥ सिद्धार्थ
त्रिशला तणो, नंदन सुर राणो ॥ १ ॥ सोवन
वरणी सात हाथ, सींह लंछन सोहे ॥ वरस बहों-

तेर आयु जास, भवियणना मन मोहे ॥२॥ अपापाये शीवपुर गयाए, वीर जिनेश्वर राय ॥ श्री विनयविजय उवझायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) कठिन करम मेहेली, काठीआ तेर टेलि ॥ निमल विनय वेली, भाव भोले गहेली ॥ निसुणो हरख हेली, भेटि पामे दुहेली ॥ भवि सहोय पेहली, वीर वादु वहेली ॥१ ॥ परम पुरुष स्वामी वंदिए मुगति गामी ॥ शुभ सयोग पामी, स्वामी सेवा सुकामी ॥ वर चपक दामी, लावंग फुल रामी ॥ प्रभु पूजे सुधामी, मानुषो जन्म पामी ॥ २ ॥ चरम जिन भाखे, शुद्ध ते चित्त राखे ॥ वीर चित्त सचामाखे, रोकमा धम्म दाखे ॥ दुरगति रज नाखे, स्वर्गना सुख चाखे ॥ मधुर रस द्राखे, नार

नहि जेह पाखे ॥ ३ ॥ मन वचन निहाळे,
वीरनी शीखे चाले ॥ अशुभने महाले, दुःखना
साग जाले ॥ शुभ घन निहाळे. देव सातंग
लाले ॥ भगति विघन टाळे, संघना कोड
पाळे ॥ ४ ॥ (इति)

॥श्री सीमंधरजिन चैत्य० तथा थोय॥

॥ श्री सीमंधर विचरता, सोहे विजय
मोझार ॥ समवसरण देवे रच्युं, बेसे परखदा
चार ॥ १ ॥ नव तत्त्व दीये देशना, सांभळे
सुरनर कोड ॥ षट द्रव्यादिक वरणवे, ले सम-
कित कर जोड ॥ २ ॥ इहां थकी जिन वेगळा,
सहस तेत्रीश शत एक ॥ सत्तावन जोजन वळि,
सत्तर कळा विवेक ॥ ३ ॥ द्रव्यथकी प्रभु वेगळा,
भावथी हृदय मोझार ॥ त्रण काळ वंदन करुं,
श्वास मांहे सोवार ॥ ४ ॥ श्री सीमंधर जिनवर

ए, पुरे वंछित कोड ॥ क्रांतिविजय प्रभु प्रणमता, भक्ते बेकर जोड ॥ ५ ॥ (इति)

(थोय) सीमंधर स्वामी निर्मला, तुम ज्ञान उपन्नु केवला ॥ सीमंधर स्वामी तार तार, मुझ आवागमन निवार वार ॥ १ ॥ वीशे जिनवर वंदीये, जस नामें पाप निकंदीयें ॥ सांप्रत जिन मोहे वीश सार, ते भवियण वंदो वारवार ॥ २ ॥ जिनवाणी साकर सेलडी, पीता जाणे अमृत वेलडी ॥ जिन आगम सागर मनवता, लहा विद्या रयण सोहावता ॥ ३ ॥ सीमंधर जिनपद अनुसरी, श्री संघ प्रत्ये बहु सुख करी ॥ कनका मासा शासन सुरि, द्यो वंछित देवी पतजरी ॥ ४ ॥ (इति)

॥श्रीसिद्धचक्रजीनुं चैत्य०तथा थोय॥

॥ नमो आदि देव नमो आदि देव, करे सुर

असुर भक्तिथी जास सेवं ॥ चिदानंद संदोह लीला निधानं, नमो विमलगिरी तिर्थनाथं प्रधानं ॥१॥ नमो सिद्धक्षेत्रं नमो पुंडरीकं, नमो हिमाचलं सिद्धागिरि भक्ति छेकं ॥ नमो पूण्यराशि नमो पर्वतेन्द्रं, शत्रुंजय देव सयलं नतेन्द्रम् ॥ २ ॥ नमो मुक्तिगेहं सुभद्रं नगेद्रं, दृढशक्ति महातीर्थ हेर कर्मवृन्दं ॥ नमो पुष्पदन्तं महापद्म नामं, धरा पीट कैलास नमो मुक्ति धामं ॥३॥ पाताल मूलं नमो शाश्वतंच, नमो सर्व कामितप्रदं मुक्तिदंच ॥ नमो सर्व तीर्थावतारं सुतारं, नमो मुक्ति श्रीमन्त निर्वाण हारं ॥ ४ ॥ जीको उठी प्रभात जिननाम जपे ॥ गिरिराज नामे सयल पाप कंपे ॥ जिनराज उत्तम पद पद्म ध्यावे, चिदानंद निजरूप ते शुद्ध पावे ॥ ५ ॥ (इति)

(थोय) सकल मंगल लीला मुनि ध्याने,

परभव घृतनु दिधु दान, भविजन एह प्रधान ॥ मरुदेवाए जनमज दीधो, इद्र सेलडी आगम कीधो, वंस इख्वाग ते सीधो ॥ सुनदा सुमगला राणी, पूरव प्रीत भली पटराणी, परणावे इंद्र इद्राणी ॥ सुरा निलमे रस अमीरस गुजे, पूरव नवाणु वार शेत्रुजे, प्रभु जइ पगले पूजे ॥ १ ॥ आदि नही अतर कोइ एहनो, केम वर्णवीजे मगी गुण एनो, मोटो महिमा तेनो ॥ अनता तीर्थंकर इण गिरि आवे, विहरमान व्याख्यान सुणावे, दिलभगी दिल समजावे ॥ सकल तीर्थनुं एहीज ठाम, सर्वे धर्मनु एहीज ध्यान, ए मज आतमराम ॥ रे रे गूरख मनमु मुंज, पूजीये देव घणा शेत्रुजे, ज्ञाननी सुखडी गुजे ॥ २ ॥ सोनन व्यार टुक रुपानी, अनोपम माणेक टुक सोनानी, दीसे देरा दघानी ॥ एक टुके मुनि

अणसण करता, एक टुंके मुनि व्रत तप करता, एक टुंके उतरता ॥ सूरजकुंड जलधिप लगावो, महीपालनो कोट गमावो, तेने ते समुद्र निपावो ॥ सवालाख शेत्रुंजय महातम, पापतणी तिहां न रहे रातम, सुणतां पवित्र थाय आतम ॥ ३ ॥ रसणिक सुइरु गढ रढीयालो, नवखंड कुमर तीर्थ निहालो, भविजन पाप पखालो ॥ चोखा खाणने वाघण पोळ. चंदन तलावडी ओलखाजार, कंचन भरोरे अंघोल ॥ मोक्षबारीनो जग जस मोटो, सिद्धसिला उपर जइ लोटो, समकित सुखडी बोटो ॥ सोना गभारे सोवन जाली, जुहारो जिननी मूर्ति रसाली, चक्केसरी रखवाली ॥ ४ ॥ (इति)

॥श्रीसिद्धचक्रजीनुं चैत्य०तथा थोय॥

॥ पेहले पद अरिहंतना, गुण गाउ नित्ये ॥

बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥ १ ॥ आचार्य त्रिजे पदे, प्रणमो निहु कर जोडी ॥ नमीये श्री उवझायने, चोथे मद मोडी ॥ २ ॥ पंचम पद सर्व साधुनु ए, नमता नाणो लाज ॥ ए परमेष्टी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥ दसण शंकादिक रहित, पदे छठे धारो ॥ सर्व नाण पद सातमे, खिण एक नवि विसारो ॥ ४ ॥ चारित्र चोखु चित्तथी, पद अष्टमे जपीए ॥ सकल भेद विचे दान फल, तप नवमे तपीये ॥ ५ ॥ ए सिद्धचक्र आराधता पुरे वंछित कोड ॥ सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे करजोड ॥ ६ ॥ (इति)

(थोय) वीर जिणेसर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरियाजी ॥ एक दिन वीरनी

आणा लेइने, राजग्रही संचरीयाजी ॥ श्रेणिक राजा वंदण आवे, उलट मनमें आणीजी ॥ परखदां बार मांहे विराजे, सूणो भविक तुमे प्राणीजी ॥ १ ॥ मानव भव तुमे पुन्ये लाधो, सिद्धचक्र आराधोजी ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया, साधु देखी गुण वांदोजी ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र तप जाणो, नवपद जाप जपीजेजी ॥ धुर आसुथी करिये आंबिल, सुख संपदा पामीजेजी ॥ २ ॥ श्रेणिक गौतमने इम पूछे, ए तप प्रभु केणे कीधोजी ॥ नव आंबिल स्वामी विधिस्युं करता, सुख संपद केणे लीधोजी ॥ मधुरी वाणी बोल्या गौतम, सुणो श्रेणिक तुमे वयणाजी ॥ रोग गयो ने संपदा पामी, श्री श्रीपालने मयणाजी ॥ ३ ॥ रमझम करतां चरणे नेपूर, देवी दीसे रूपा-

लीजी ॥ नाम चक्केसरी ने सिधाई आदि वीर खगालीजी ॥ विघन कोड हरे सहु सघना जे सेवे ए पायोजी ॥ नयविजय शिष्य भाण-विजयने, सांनिध्य करजो मायोजी ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री पर्यूषण पर्वनुं चैत्य०तथा थोय ॥

॥ सकल पर्व शृंगार हार, पर्यूषण कहीए ॥ मंत्रमांहि नवकार मंत्र, महिमा जग लहीए ॥ १ ॥ आठ दिवस अमार सार, अट्ठाई पालो ॥ आर-भादिक परिहरी, नरभव अजुआलो ॥ २ ॥ चैत्य परिपाटी शुद्ध साधू, विधि वंदन जाने ॥ अट्ठम तप संवच्छरी, पडिकमणुं माने ॥ ३ ॥ साधर्मिक जन खामणा ए, त्रिविधिशुं कीजे ॥ साधू मुख सिद्धांत कांत, वचनामृत रस पीजे ॥ ४ ॥ नव व्याख्याने कल्पसूत्र, विधि

पूर्वक सूणीए ॥ पूजा नव प्रभावना, निज पातिक हणीए ॥ ५ ॥ प्रथम वीरचरित्र बीज, पार्श्वचरित्र अंकूर ॥ नेमिचरित्र प्रबंध स्वंध, सुख संपति पूर ॥ ६ ॥ रूषभचरित्र पवित्र पत्र, शाखा समुदाय ॥ स्थविरावलि बहु कुसुम पूर, सरिखो कहेवाय ॥ ७ ॥ समाचारी शुद्धता ए, वर गंध वखाणो ॥ शिवसुख प्राप्ति फल सही, सुरतरु सम जाणो ॥ ८ ॥ चौद पुर्वधर श्री भद्रबाहु, जिणे कल्प उद्धारिओ ॥ नवमा पुर्वथी युगप्रधान, आगम जल दरिओ ॥९॥ सात वार श्री कल्पसूत्र, जे सुणे भवि प्राणी ॥ गौतमनें कहे वीर जिन, परणे शिवराणी ॥ १० ॥ कालिकासूरि कारणे ए, पज्जूसण कीधां ॥ भाद्रवा शुदि चोथमां, निज कारज सिध्यां ॥११॥ पंचमी करणी चोथमां, जिनवर वचन प्रमाणे ॥

वीर थकी नवमे एशी, वरसे ते आणे ॥ १२ ॥ श्रीलक्ष्मीसागर सूरीश्वरू ए, प्रमोदसागर सुखकार ॥ पर्व पजूसण पालता, होवे जय जयकार ॥ १३ ॥ (इति.)

(थोय) मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार ॥ पर्युषण केरो, महिमा अगम अपार ॥ निज मुखथी दाखी, साखी सुरनर वृंद ॥ ए पर्व पर्वमा, जिम तारामा चंद ॥ १ ॥ नाग केतुनी परे, कल्प साधना कीजे ॥ व्रत नियम आखडी, गुरु मुख अधिकी लीजे ॥ दोय भेदे पूजा, दान पांच प्रकार ॥ कर पडिक्कमणा धर, शीयल अखंडित धार ॥ २ ॥ जे त्रिकरण शुद्धे, आराधे नव वार ॥ भव सात आठ अव, शेष ताम संसार ॥ सहु सूत्र शिरोमणि, कल्पसूत्र सुखकार ॥ ते श्रवण सुणीने, सफल करो अवतार

॥ ३ ॥ सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणां कीजे ॥ करी साहमीवत्सल, कुगतिद्वार पट दीजे ॥ अठाइ महोत्सव, चिदानंद चित्त लाइ ॥ इम करतां संघने, शासन देवी सहाइ ॥ ४ ॥ (इति)

॥श्री दीवाळी पर्वनुं चैत्य०तथा थोय॥

॥ मगधदेश पावापुरी, प्रभु वीर पधार्या ॥ सोळ पोहोर देइ देशना, भवि जीवने तार्या ॥१॥ भूप अढार भावे सुणे, अमृत जीसी वाणी ॥ देशना दीये रयणीये, परण्या शिवराणी ॥ २ ॥ राय उठी दीवा करे, अजवाळाने हेते ॥ अमावाश्या ते कही, वळी दीवाळी काजे ॥ ३ ॥ मेरु थकी आव्या इंद्र, हाते लेइ दीवी ॥ मेराइया दिन सफळ करी, लोक कहे सवी जीवी ॥ ४ ॥ कल्याणक जाणी करी, दीवा ते कीजे ॥

जाप जपो जिनराजनो, पातिक सवि छीजे ॥ ५ ॥
वीने दीन गोतम सुणी, पाम्या केवळज्ञान ॥
चार सहस गुणणु गणो, घर होसे कोड कल्याण
॥ ६ ॥ सुरनर किन्नर मह मिली, गोतमने
आपे ॥ भट्टारक पदवी देई, सहु साखे थापे
॥ ७ ॥ जवार भट्टारक थक्रा, लोक करे जुहार ॥
वेन भाइ जिमाडीया, नदीवर्द्धन सार ॥ ८ ॥ भाइ-
बीज तिहा थकीए, वीर तणो अधिकार ॥ जय-
विजय गुरु सपदा, मुजने दीयो मनोहार
॥ ९ ॥ (इति)

(योत्र) सिद्धारथ ताता, जगत विख्याता,
त्रिशलादेवी माय ॥ तिहा जग गुरु जनम्या,
सवि दु ख विरम्या, महावीर जिनराय ॥ प्रभु
लेई दिक्षा, करे हित शिक्षा, देई संवच्छरी
दान ॥ बहु कर्म खपेवा, शिवसुख लेवा,

कीधो तप शुभ ध्यान ॥ १ ॥ वर केवल पामी, अंतर जामी, वदि काती शुभ दीस ॥ अमावस जाते, पाछली राते, सुगति गया जगदीस ॥ वलि गौतम गणधर, मोटा मुनिवर, पाम्या पंचम ज्ञान ॥ थया तत्त्व प्रकासी, शील विलासी, पहोता सुगति निदान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया, रतन उधरिया, रात थई तिहां काली ॥ जन दीवा कीधा, कारज सीधा, निसा थई उजवाली ॥ सहु लोके हरखी, नजरे निरखी, परव कियो दीवाली ॥ वलि भोजन भगतें, निज निज सगतें, जीमें सेव सुहाली ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी, विघन हरेवी, वंछित दे निरधारी ॥ करे संघने साता, जिम जग माता, एहवी शक्ति अपारी ॥ जिनगुण इम गावे, शिवसुख पावे, सुणज्यो भविजन प्राणी ॥ जिनचंद्र जतीसर, महा मुनिसर,

जपे एहची वाणी ॥ ४ ॥ (इति)

॥चैत्री पुनमनुं चैत्यवंदन तथा थोय॥

॥ चैत्री पुनमनो अखड, शशीधर जिम दीपे ॥ अगारक आदि अनेक, ग्रह गणने झीपे ॥ १ ॥ तिम पर तीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनत, दीपत दीवाजे ॥ २ ॥ चैत्री पुनमने दीने ए, भजो एह भगवत ॥ श्री विजयराज सुरिंदनो, दान सकल सुख हुत ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) श्री शत्रुजय मडण, रिसह जिणेसर देव ॥ सुर नर विद्याधर, मारि जेहनी सेव ॥ सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर श्रृगार ॥ श्री नाभि नरेसर, मरुदेवीनो मल्हार ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेम विना

सवि, समवसर्या सुखकार ॥ गिरी कंडणे आवी, पहोता गढ गिरनार ॥ चैत्रीपुनम दिने, ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्म कथांगे, अंतगड सूत्र मझार ॥ सिद्धाचल सिद्धा, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिण भेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥३॥ गोमुख चक्केसरी, शासननी रखवाली ॥ ए तीरथ केरी, सान्निध्य करे संभाली ॥ गिरुओ जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ (इति)

(बीजी थोय १) ॥ पुंडरीक मंडण पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिन चंदाजी ॥ नेमि विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरी चढिया आंणदाजी ॥ आगममांहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणं-

---

१ आ स्तुति (थोय) चार वखत पण कहेवाय छे.

दाजी ॥ चैत्री पूनम दिन देवी चकेसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥ १ ॥ (इति)

॥श्री गिरनारजीनुं चैत्य०तथा थोय॥

॥ नायक त्रिभुवन नाथजी, श्री नेमी जिनसार॥प्रभुपद प्रेमे पूजीये, गीरुओ गढ गिरनार ॥ १ ॥ ए गिरी उपर एहना, तीन कल्याणक तास ॥ अरिहंत भगती अनुसरो, आणी मन उल्लास ॥ २ ॥ जादवकुल दिनकर जिन्यो, ब्रह्मचारी सरदार ॥ सतिया माहे शीरोमणी, रुडी राजुल नार ॥ ३ ॥ सहसा वन संजम लीयो, गिरीपर केवलज्ञान ॥ कृपानाथ सरखी करी, भामनीने भगवान ॥ ४ ॥ माते टुक सोहामणी, ए तीरथ अहीठाण ॥ पचम टुके श्री प्रभु, पाम्या पद निरवाण॥५॥ गुणी अढारे गणधरा, गिरुआ बहु गुणवंत ॥

सहस अढारे श्रमणने, सेवो भविजन संत ॥६॥
आद भवानी अंबिका, ए तीरथ रखवाल ॥
सेवो भवी सुधे मने, जावे भवदुःख जाल ॥७॥
भविजन भावे भेटीये, आणी मन आणंद ॥
हंसविजय नमे हरखसुं, पामे परमानंद ॥ ८॥
इति ॥

(थोय) सुर असुर वंदित पायपंकज, [१]मयण-मल्ल अक्षोभितं, घन सुघनश्याम शरीर सुंदर, शंख लंछन शोभितं ॥ शिवादेवी नंदन त्रिजग वंदन, भविक कमल दिनेश्वरं ॥ गिरिनार गिरि-वर शिखर वंदु, श्री नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदि जिनवर, वीर पावापुरी वरु ॥ वासुपूज्य चंपा नयर सिद्धा, नेम रेवा गिरिवरु ॥

---

१ काम सुभट वडे नहि क्षोभायेला.

समेतशिखरें वीश जिनवर, मुक्ति पहोत्यां मुनिवरु ॥ चोवीश जिनवर नित्य वंदु, सयल संघ सुहकरु ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बार, दशपयन्ना जाणीए ॥ छ छेद ग्रंथ पसथ्थ सथ्थ, [1] चार मूळ वखाणीए ॥ अनुयोग द्वार नंदी, सूत्र जिनमत गाइए ॥ वृत्ति चूर्णि भाष्य पिस्तालीश आगम ध्याइए ॥ ३ ॥ दोय दिशि बालक दोय जेहने, सदा भवियण सुख करु॥ दु ख हरी अंबा लुंब सुंदर, दुरित दोहग अपहरु ॥ गिरिनार मंडण नेमि जिनवर, चरण पंकज सेविए ॥ श्रीसंघ सुप्रसन्न मंगल, करो ते अंबा देवीए ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री पंच तिर्थनुं चैत्य०तथा थोय ॥

॥ धुर समरु श्री आदि देव, विमलाचल

[1] प्रशस्त

मंडण ॥ नाभिराया कुल केसरी, मारुदेवी नंदन ॥ १ ॥ गिरनारे गिरुवो वांदशुं, स्वामी नेमकुमार ॥ वालपणे चारित्र लीयो, तारी राजुल नार ॥ २॥ वंमणवाडे वीर जिणंद, मन वांछित पुरे॥ सायण डायण भुत प्रेत, तेहना मद चूरे ॥ ३ ॥ श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथ, महिमाये महंतो ॥ गोडी दोडी जाइये, पुरे मननी खंतो ॥ ४ ॥ चक्रवर्ति पदवी तजी, लीधो संजम भार ॥ शांति जिणेसर सोलमां, नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ५ ॥ पंचे तीरथ जे नमे, प्रह उठी नरनार ॥ कमलविजय कवी एम कहे, तस घर जय जयकार ॥ ६ ॥ (इति)

(थोय) ॥ श्री शत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं, श्री नाभिराजांगजं ॥ वंदे रैवतशैलमौलिमुकुटं, श्री नेमिनाथं यथा ॥ तारंगेऽप्याजितं जिनं भृगुपुरे, श्रीसुव्रतं स्तंभने ॥ श्रीपार्श्वं प्रणामामि

मत्यनगरे, श्रीवर्धमानं त्रिधा ॥ १ ॥ वदेऽनुत्तर-
कल्पतल्पभुवने, ग्रैवेयकव्यंतर ॥ ज्योतिष्या-
मरमदराद्रिवसतौ, स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जम्बु-
पुष्करधातकीषु रुचके, नंदीश्वरे कुडले ॥ ये
चान्ये ऽपि जिना नमामि सतत, तान् कृत्रि-
माकृत्रिमान् ॥ २ ॥ श्रीमद्वीरजिनस्य पद्मह्रदतो,
निर्गम्य त गौतम ॥ गगावर्तनमेत्य या प्रवि-
भिदे, मिथ्यात्ववैताढयक ॥ उत्पत्तिस्थिति-
मह्रतित्रिपथगा, ज्ञानाम्बुदा वृद्धिगा ॥ सा मे
कर्ममल हरत्वविकल, श्रीद्वादशागी नदी ॥ ३ ॥
शक्रश्चद्ररविग्रहाश्चधरण,ब्रह्मेंद्रशात्यम्बिका॥ दिक्-
पालाः सकपर्दिगोमुखगणि, श्चक्रेश्वरी भारती ॥
येऽन्ये ज्ञानतप क्रियाव्रतविधि, श्रीतीर्थयात्रा-
दिषु ॥ श्री सघस्य तुग चतुर्विध सुरास्ते,
सन्तु भद्रकरा ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री वीस विहरमान जिननुं चैत्य-वंदन तथा थोय ॥

॥ पहेला श्रीमंधर नमो, बीजा जुगमंधर ॥ बाहुजिन त्रिजा नमो, सबाहु सुखकर ॥ १ ॥ सुजात जीन पंचमा, स्वयंप्रभु जिन छठा ॥ रुपभानन जिन सातमा, अनंतवीरज जिन दीठा ॥ २ ॥ सूरप्रभु नवमा नमो, दशमा देव-विसाल ॥ वज्रधर जिन इग्यारमा, चंद्रानन दयाल ॥ ३ ॥ चंद्रबाहु जिन तेरमा, चउदमा भुजंगनाथ ॥ इश्वरस्वामी पनरमा, नेमी प्रभुनो करो साथ ॥ ४ ॥ वीरसेन जिन सतरमा, महा-भद्र जिनराज ॥ देवजसा ओगणीसमा, अजि-तवीरज महाराज ॥ ५ ॥ जंबूद्वीपे च्यार जिन, धातकीखंडे आठ ॥ पुष्करार्द्धे आठ जिन, नमतां

होय नित ठाठ ॥ ६ ॥ ए वीसे जिन वदीए, विहरमान जगदीस ॥ पूजो प्रणमो प्रेमशुं, धरो ध्यान निस दीस ॥ ७ ॥ धन ते देश नगर पुरी, जिहा विचरे जिनराज ॥ भवि जीवने प्रतिबोधता, सारे आतम काज ॥ ८ ॥ अनुभव रसमयि देशना, स्याद्वाद समुदाय ॥ सत्ता धर्म प्रकासता, दुरगति दुःख पलाय ॥ ९ ॥ जिन उत्तम पाद रुपनी ए, निस दिन करो सेवा ॥ अमीकुमर एणीपरे भणे, मोक्ष तणा सुख लेवा ॥ १० ॥ (इति)

(थोय) श्री सीमधर सेवित सुरवर, जिनवर जग जयकारीजी ॥ धनुष्य पाचशे कचन वरणी, मूरति मोहन गारीजी ॥ विचरता प्रभु महाविदेहे, भवि जिनने हितकारीजी ॥ प्रह ऊठी निन्य नाम जपीजें, हृदय कमलमां धारीजी

॥ १ ॥ सीमंधर युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयं-
प्रभ नामजी ॥ अनंत सूर विशाल वज्रंधर,
चंद्रानन अभिरामजी ॥ चंद्र भुजंग इश्वर नेमि
प्रभ, वीरसेन गुणधामजी ॥ महाभद्रने देव-
यशा वली, अजित करुं प्रणामजी ॥ २ ॥ प्रभु-
मुख वाणी बहु गुण खाणी, मीठी अमीय
समाणीजी ॥ सूत्र अने अर्थे गुंथाणी, गणधरथी
वीरवाणीजी॥केवळनाणी बीज वखाणी,शिवपुरनी
नीशाणीजी ॥ उलट आणी दिलमांहें जाणी, व्रत
करो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ पहेरी पटोली चरणां
चोली, चाली चाल मरालीजी ॥ अति रूपाली
अधर प्रवाली, आंखडली अणीयालीजी ॥ विघ्न
निवारी सान्निध्यकारी, शासननी रखवालीजी ॥
धीरविमल कविरायनो सेवक, बोले नय निहा-
लीजी ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री चोवीश तिर्थकरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषभ अजित संभव नमो, अभिनंदन जिनराज ॥ सुमति पद्म सुपास जिन, चंद्रप्रभु महाराज ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य सुखधाम ॥ विमल अनंत श्री धर्म जिन, शांतिनाथ पूरे आश ॥२॥ कुंथु अर मल्लि जिन, मुनीसुव्रत जगनाथ ॥ नमी नेमी पारस वीर, ए साचो शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ द्रव्य भावथी सेवीये, आणि मन उल्लास ॥ आतम निर्मल कीजीये, जिम पामीजे शिववास ॥ ४ ॥ एम चोवीस जिन समरता ए, पोचे मननी आश ॥ अमीकुमर एणी परे भणे, पामे लील वीलास ॥ ५ ॥ (इति)

॥श्रीअतीत(गइ)चौवीशीनुं चैत्यवंदन

॥ अतीत चोवीशी प्रथम देव, जिन [१]केवळज्ञानी ॥ [२]निर्वाणी [३]सागर [४]महाजस, [५]विमळ अभिधानी ॥१॥ [६] सर्वानुभूति [७] श्रीधर [८] सुदत्त, [९] दामोदर [१०] सुतेजा ॥ [११] स्वामी [१२] सुव्रत [१३] सुमति ने, [१४] शिवगति [१५] सुहेजा ॥ २ ॥ [१६] अस्ताघ [१७] नेमिश्वर [१८] अनिल, [१९] यशोधर [२०] कृतार्थ जिनेश [२१] शुद्धमतिने [२२] शिवंकरो, [२३] स्यंदन [२४] संप्रति कहेश ॥३॥ (इति)

॥ आवती चोवीशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥श्री पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणीक नृपजीव ॥ सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक

जीव ॥ १ ॥ श्री सुपार्श्व त्रीजा वळी, जीव कोणिक उदायी ॥ स्वयप्रभु चोथा जिणंद, पोटिल मुनि भाई ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पचमाए, दृढायु श्रावक जाण ॥ देवश्रुत छठ्ठा जिणद, श्री कार्तिक शेठ वखाण ॥ ३ ॥ श्री-उदय जिन सातमाए, शख श्रावक जीव ॥ श्री पेढाल जिन आठमा, आणद मुनि जीव ॥ ४ ॥ पोटिल नवमा वंदिएए, जीव जेह सुनद ॥ शतकीरति दशमा जिणद, सत्य श्रावक आणद ॥ ५ ॥ सुव्रत जिन अगियारमाए, देवकी राणी जीव ॥ श्री अममजिन बारमा, जीव केशव गुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कषाय जिन तेरमाए, सत्यकी विद्याधर ॥ निपुलाक जिन चौदमा, बलभद्र सुहकर ॥ ७ ॥ निर्मम

जिन पंदरमाए, जीव सुळसा भावी ॥ चित्र-गुप्त जिन सोळमा, श्री रोहिणी जीव भावि ॥८॥ समाधि जिन सत्तरमा, रेवती श्राविका जाण॥ श्री संवर जिन अढारमा, जीव शतानिक वखाण ॥ ९ ॥ श्री यशोधर ओगणीसमा, जीव कृष्ण द्वीपायन॥ विजयनाम जिन वीसमा, जीव करण साहेण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्री मल्लनाम, जीव नारदनो कहिये ॥ अंबड श्रावक जीव देव, बावीसमा लहीए॥ ११ ॥ अनंतवीर्य तेवीसमा, जीव अमरनो जेह ॥ भद्रंकर जिन-चोवीशमा, स्वाति वुद्धि गुणगेह ॥ १२ ॥ ए चोवीसे जिनवरा, होशे आवंते काले॥ भाव सहित जे वांदशे, कर जोडीने भाळे ॥ १३ ॥ लंछन वर्ण प्रमाण आयुष, अंतर सवि सरखा॥ सांप्रत जिन चोविस परे, चढते सवि निरख्या

॥ १४ ॥ पचकल्याणक तेहना, होगे एहज दिनम ॥ वीरविमळ पडित तणो, ज्ञानविमल सूरीश ॥ १५ ॥ (इति)

॥श्री समवसरण भाव गर्भित स्तुति॥

॥ मिल चौविह सुरवर, विरचे त्रिगडो सार ॥ अढी गाऊ उचे, पहुलो जोयण चार ॥ बिच कनक सिहासन, पदमासन सुखकार ॥ श्री तीरथ नायक, बेसे चौमुख धार ॥ १ ॥ तीन छत्र शिरोपरी, चामर ढाले इंद ॥ देव दुंदुभि वाजे, गाजे दुर्मति फंद ॥ भामडल पूठ, झलके ज्ञाण दिणद ॥ तिहुअण जन मन, मोहे सयल जिणद ॥ २ ॥ द्रव्य भावसु ठवणा, नाम निक्षेपा च्यार ॥ जिण गणहर भाख्या,

सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा, जिन सरिखी सुखकार ॥ सुभ भावे वंदो, पूजो जग जयकार ॥ ३ ॥ दुःख हरणी मंगल, करणी जिनवर वाणी ॥ भवच्छेद् कृपाणी, मीठी अमिय समाणी ॥ मन सुद्धे आणी, प्रति बूझो भवि प्राणि ॥ सुयदेवी पसायें, पामें जयति सुनांणी ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुत्ति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरी आदीजिन आव्या, पुर्व नवाणुं वारजी ॥ अनंत लाभ तिहां जिनवर जाणी, समोसर्या निरधारजी ॥ विमल गिरीवर महिमा मोहोटो, सिद्धाचलने ठामजी ॥ कांकेर कांकेर अनंता सिद्धा, एकसोने आठ गिरी नामजी ॥ १ ॥ (इति)

॥ श्री नवपदना चैत्यवंदनो तथा थोयो ॥

॥१ श्रीअरिहंत पद चैत्य०तथा थोय॥

॥ जय जय श्री अरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी ॥ लोका लोक अरूपि रूपि, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घात शुभ केवल, भव हव मल राशी ॥ शुद्ध चमर शुचि पादमें, भया वर अविनाशी ॥ २ ॥ अतरग रिपु गण हणीए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पकजमें रहित, हीर धर्म नित संत ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक स्वरूपाजी ॥ केवलज्ञानना ज्योति प्रकाशक, अनत गुणे करी पूराजी ॥ त्रीजे भव

थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ बारे गुणे करी एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी ॥ १ ॥ (इति)

॥२॥ श्री सिद्धपद चैत्य०तथा थोय॥

॥ श्री शैलेशी पूर्वप्रांत, तनु हिनत भागी ॥ पुव्वपआग पसंगसें, ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकनें लोकप्रांत, गये निगण निरागी ॥ चेतन भूपें आत्मरूप, सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दसंण नाणथीए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वंदे धरी शुभ भाव ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) अष्ट करमकुं दमन करीने, गमन कीयो शिववाशीजी ॥ अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिद्राशीजी ॥ परमातम पद पूरण विलासी, अघघन दान विनाशीजी ॥ अनंत

चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवळज्ञानी भाषीजी ॥ १ ॥ (इति)

॥३॥श्रीआचार्यपद चैत्य०तथा थोय॥

॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल, मितरस गुणधारी ॥ अनल सनल घन मोहकी, जिण ते चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्यादिक जिनराज गीत, नय तन निस्तारी ॥ भव कूप पापें पडत, जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पचाचारी जीवके, आचारज पद सार ॥ तिनकु वंदे हीर धर्म, अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) पंचाचारकु पाले उजवाले, दोष रहित गुण धारीजी ॥ गुण छत्तीस आगम धारी, द्वादश अंग विचारीजी ॥ प्रबल सबल घन मोह हरणकु, अनिल समागुण वाणीजी ॥

क्षमासहित जे संयम पाले, आचारज गुण ध्यानीजी ॥ १ ॥ (इति)

॥४श्रीउपाध्यायपद चैत्य०तथा थोय॥

॥ धन घन श्री उवझाय राय, शठता घन भंजन ॥ जिनवर दिसत दुवालसंग, कर कृत जनरंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद, सुय शणि कियगंजण ॥ कुणागंध लोय लोयणें, जथ्थ य सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणसें जिन लह्यो ए, आगमसें पद तुर्य ॥ तिनपे अहनिश हीरधर्म, वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) अंग अग्यारे चउदे पूरण, गुण पंचवीशना धारीजी ॥ सूत्र अर्थधर पाठक कहीए, जोग समाधि विचारीजी ॥ तप गुण सूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी ॥ मुनि

गुण धारी बुध निस्तारी, पाठक पूजो अवि-
कारीजी ॥ १ ॥ (इति)

॥५॥ श्रीसाधु पद चैत्य०तथा थोय॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद
गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चकर्मे, आदिम स्वय
कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्तते, भये अतर-
जामी ॥ मानस इंद्रिय दमनमृत, शम दम
अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुण गण भर्यो
ए, पचम पद मुनिराज ॥ तत्पद पकज नमत
है, हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) सुमति गुपति कर सजम पाले, दोष
ययालीस टालेजी ॥ षट काया गोकुल रखवाले,
नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी पच महाव्रत सुधा पाले,
धर्म शुक्ल अजवालेजी ॥ क्षपक श्रेणि करी कर्म
खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥४॥ (इति)

॥६॥ दर्शन पद चैत्य० तथा थोय ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परामित संसार ॥ गंठिभेद् तब करी लहै, सब गुण आधार ॥१ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उपशम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकुं गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) जिनपन्नत्त तत्त सुधारसें, समकित गुण उजवालजी ॥ भेद् छेद करी आतम नीरखी, पशु टाली शूर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने समतुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंत सूराजी ॥ ए दरशन पद नित्य नित्य वंदो, भव सागरको तीराजी ॥ १ ॥ (इति

॥ ७ ॥ ज्ञान पद चैत्य० तथा थोय ॥

॥ क्षिप्रादिक स्म राम नन्हि, मित आठम नाण ॥ भाव मिलापमें जिन जनित, सुय वीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पञ्जव ओहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण, इक केवल माण ॥ २ ॥ नाणावरणी नामथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीर धर्म, नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) मति श्रुत इंद्रिय जनित काहिए, लहीए गुण गंभीरोजी ॥ आतम धारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारोजी ॥ अवधी मनःपर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी॥ ए पांच ज्ञानकु वंदो पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ १ ॥ (इति)

॥ ८ ॥ चारित्र पद चैत्य० तथा थोय ॥

॥ जस्स पसायें साहु पाय, जुग जुग समितेंद ॥ नमन करै शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंत राय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कषायथीए, रहित लेश सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) कर्म अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावेजी ॥ वारे भावना सूधी भावे, सागर पार उतारेजी ॥ षट् खंड राजकुं दूर तजीने, चक्री संजम धारेजी ॥ एहवो चारित्रपद नित वंदो, आतम गुण हीतकारेजी ॥ १ ॥ (इति)

॥ तप पद चैत्यवंदन तथा थोय ॥

॥ श्री ऋषभादिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण ॥ निहिअंत तपि बाह्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु कर मित आमो सही, आदिक लब्धि निदान ॥ भेद समतायुत खिणें, दग्धन कर्म निमान ॥ २ ॥ नवमो श्री तप पद भलोण, इच्छारोध सरूप ॥ वदनमें नित हीर धर्म, दूर भजतु भवरूप ॥ ३ ॥ (इति)

(थोय) इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहनो साखीजी ॥ द्रव्य भावसें द्वादश दाखी, जोग समाधि राखीजी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी, तेहीज तपगुण दाखीजी ॥ लब्धी सकलनो कारण देखी, ईश्वरसें मुझ भाखीजी ॥ १ ॥ (इति)

॥ श्री मद् महोपाध्याय श्री यशो-विजयजी कृत चोवीशीना स्तवनो

॥ १ ॥ श्री ऋषभदेव स्तवन ॥

(महाविदेह क्षेत्र सोहामणो–ए देशी)

जगजीवन जग वालहो, मरुदेवीनो नंद लाल रे ॥ मुख दीठे सुख उपजे, दर्शन अतिहि आनंद लालरे ॥ जग ०॥ १ ॥ आंखडी अंबुज पांखडी,[१] अष्टमी शशि सम भाल[२] लाल रे ॥ वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिही रसाल लालरे ॥ जग ० ॥ २ ॥ लक्षण अंगे विराजतां, अडहीय सहस[३] उदार लाल रे ॥ रेखाकर चरणादिके, अभ्यंतर नहि पार लालरे ॥ जग० ॥३॥

---

१ कमळना पत्र जेवी. २ ललाट. ३ [१००८]

इंद्र चंद्र रवि गिरि तणा, गुण लइ घडियुं अंग लालरे ॥ भाग्य किहा थकी आवियुं, अचरिज एह उत्तंग लाल रे जग० ॥ ४ ॥ गुण सघळा अंगी कर्या, दूर कर्या सवि दोष लालरे ॥ वाचक यशविजये थुण्यो, देजो सुखनो पोष लाल रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ २ ॥ श्री अजितनाथ स्तवन ॥

(निंदरडी वेरण होइ रही–ए देशी)

॥ अजित जिणदशु प्रीतडी, मुज न गमे हो बीजानो संगके ॥ मालती फुले मोहियो, किम बेसे हो बावळ तरु भृगके ॥ अजि० ॥ १ ॥ गंगाजळमां जे रम्या, किम छिल्लर हो रति पामे मराल के १ ॥ सरोवर जळधर जळ विना, नवि चाहे हो जग चातक बाळ के ॥ अजि० ॥ २ ॥

१ हंस छिल्लर खाबोचीयाना पाणीमां केम रति पामे

कोकिल कल कूजित [१] करे, पामी मंजरी हो पंजरी सहकारके ॥ ओछां [२] तरुवर नवि गमे, गिरुआशुं हो होये गुणनो प्यार के ॥ अजि० ॥ ३ ॥ कमलिनी दिनकर कर [३] ग्रहे, वळी कुमुदिनी हो धरे चंदशुं प्रीतके ॥ गौरीगिरीश [४] गिरिधर विना, नवि चाहे हो कमला [५] निज चित्तके ॥ अजि० ॥ ४ ॥ तिम प्रभुशुं मुझ मन रम्युं, बीजाशुं हो नवि आवे दायके ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, वाचक यश हो नित नित गुण गायके ॥ अजि० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ ३ ॥ श्री संभवनाथ स्तवन ॥

(मन मधुकर मोही रह्यो–ए देशी)

॥ संभव जिनवर वीनति, अवधारो गुण

---

१ मनोहर टौका. २ हलका. ३ सूर्यना किरण ४ शकर. ५, लक्ष्मी.

धातारे ॥ सामी नेंही मुज सिजमते [१], कदीय होगा फळ दातारे ॥ संभव० ॥ १ ॥ कर-जोडी उभो रहुं, रात दिवस तुम ध्यानेरे ॥ जो मनमा आणो नहीं, तोशु कहीए छानेरे ॥ समव० ॥ २ ॥ खोट खजाने को नहिं, दीजीए वंछित दानेरे ॥ करुणा नजर प्रभुजी तणी, वाधे सेवक वानेरे ॥ समव० ॥ ३ ॥ काल-लब्धि नहि मति गणो, भाव लब्धि तुम हाथेरे ॥ लडथडतु पण गज बच्चु, गाजे गजवर साथे रे ॥ समव० ॥ ४ ॥ देशो तो तुमहि भलु बीजा तो नवि (बीजा आगल) जाचुरे ॥ वाचक यश कहे [२] साहेबु, फलशे [३] ए मुज साचुरे ॥ समव० ॥ ५ ॥ (इति)

---

१ सेवा थी रीझो २ पुन्य माहेर

॥४॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

(सुणजो हो प्रभुण–ए देशी·)

॥ दीठी हो प्रभु, दीठी जग गुरु तुझ ॥ मूरति हो प्रभु, मूरति मोहन वेलडीजी ॥ मीठी हो प्रभु, मीठी ताहरी वाणी ॥ लागे हो प्रभु, लागे जेसी सेलडीजी ॥ १ ॥ जाणुं हो प्रभु, जाणुं जन्म कयथ्य [1] ॥ जोउं हो प्रभु, जोउं तुम साथ मिल्योजी ॥ सुरमणि [2] हो प्रभु, सुरमणि पाम्यो हथ्य ॥ आंगणे हो प्रभु, आंगणे मुझ सुरतरु फल्योजी ॥ २ ॥ जाग्यां हो प्रभु, जाग्यां पुण्य अंकूर ॥ माग्यां हो प्रभु, मुह मांग्या पासा ढल्याजी ॥ वुठ्या हो प्रभु, वूठ्या [3] अमिरस मेह [4] ॥ नाठा

---

१ कृतार्थ. २ देवमणि (चिंतामणि) ३ वरश्या. ४ अमृत रसना वरसाद.

हो प्रभु, नाठा अशुभ शुभ दिन वल्याजी ॥ ३ ॥ भूख्या हो प्रभु, भूख्या मल्या घृत-पूर[1] ॥ तरस्या हो प्रभु, तरस्या दिव्य उदक[2] मिलयाजी ॥ थाक्या हो प्रभु, थाक्या मिल्या सुखपाल ॥ चाहता हो प्रभु, चाहता सज्जन हेजे हल्याजी ॥ ४ ॥ दीवो हो प्रभु, दीवो निशा वन गेह ॥ साथी हो प्रभु, साथी थले जल नौका मलीजी ॥ कलिजुगे हो प्रभु, कलिजुगे दुलहो मुज ॥ दरिसन हो प्रभु, दरिसन लहु आशा फलीजी ॥ ५ ॥ वाचक हो प्रभु, वाचक यश तुम दास ॥ विनवे हो प्रभु, विनवे अभि-नंदन सुणोजी ॥ कहिये हो प्रभु, कहीये म देशो छेह ॥ देजो हो प्रभु, देजो सुख दरि-सण तणोजी ॥ ६ ॥

१ घेवर. २ अमृत

॥ ५ ॥ श्री सुमतिनाथ स्तवन ॥

(झांझरीया मुनिवर धन धन तुम अवतार ए देशी.)

॥ सुमतिनाथ गणशुं, मिलीजी, वाधे मुझ मन प्रीती ॥ तेल बिंदु जिम विस्तरेजी, जल मांहे भली रीति ॥ सोभागी जिनशुं लाग्यो अविहड रंग ॥ १ ॥ सज्जनशुं जे प्रीतडीजी, छानी ते न रखाय ॥ परिमल कस्तुरी तणोजी, मही मांहे महकाय ॥ सोभागी० ॥ २ ॥ आंगलिये नवि मेरु ढंकाये, छाबडिये रवि तेज ॥ अंजलीमां जिम गंग न माये, मुज मन तिम प्रभु हेज ॥ सोभागी० ॥ ३ ॥ हुओ छिपे नहि अधर [1] अरुण [2] जिम, खातां पान सुरंग ॥ पीवत भर भर प्रभु गुण प्याला, तिम मुझ प्रेम अभंग ॥ सोभागी० ॥ ४ ॥ ढांकी इक्षु पला-

---

१ होठ. २ लाल.

रुगुंजी, न रहे लहि विस्तार ॥ वाचक यश कहे प्रभुतणोजी, तिम मुझ प्रेम प्रकार ॥ सोभागी० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ ६ ॥ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवन ॥

(सहज सलुणा हो साधुजी (अथवा) अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी–ए देशी)

॥ पद्मप्रभ जिन जइ अलगा रह्या, जिहाथी नावे लेखोजी ॥ कागलने मशि तिहां नवि संपजे, न चले वाट विशेषोजी ॥ सुगुण सनेहारे कदिय न विसरे ॥ (ए आकणी) ॥ १ ॥ इहांथी तिहा जइ कोइ आवे नहीं, जेह कहे संदेशोजी ॥ जेहनु मिलवु रे दोहिलु तेहशु, नेह ते आपे किलेशोजी ॥ सुगुण० ॥ २ ॥ वीतरागशुं राग ते एक पखो, कीजे कवण प्रका-

रोजी ॥ घोडो दोडे रे साहेब वाजमां, मन नाणे असवारोजी ॥ सुगुण० ॥ ३ ॥ सांची भक्तिरे भावन रस कह्यो, रस होय तिहां दोय रीझेजी॥ होडा होडेरे बिहुं रस रीझथी, मनना मनोरथ सीझेजी ॥ सुगुण० ॥ ४ ॥ पण गुणवंतारे गोठे गाजिये, मोहोटा ते विश्रामजी ॥ वाचक यश कहे एहज आसरे, सुख लहुं ठामोठामजी सुगुण०॥ ५ ॥ (इति)

॥ ७॥ श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(लाछलदे मात मलार–ए देशी.)

॥ श्रीसुपास जिनराज, तुं त्रिभुवन शिरताज ॥ आजहो छाजेरे ठकुराइ, प्रभु तुझ पद तणीजी ॥ १ ॥ दिव्य ध्वनि सुर फूल, चामर छत्र असूल ॥ आज हो राजेरे भामंडल, गाजे

दुंदुभिजी ॥ २ ॥ अतिशय सहजना चार, कर्म खप्याथी अग्यार ॥ आज हो कीधारे ओगणीसे, सुरगण भासुरजी ॥३॥ वाणी गुण पांत्रीस, प्रातिहारज जगदीस ॥ आज हो राजरे दीवाजे, छाजे आठशुजी ॥ ४ ॥ सिंहासन अशोक, बेठा मोहे लोक ॥ आज हो स्वामीरे शिवगामी, वाचक यश थुण्योजी ॥ ५ ॥ (इति)

॥ ८ ॥ श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

(धणरा ढोला (अथवा) साहेब शित्रु [illegible])

चंद्रप्रभ जिन साहिबारे, तुमे छो चतुरसुजाण॥ मनना मान्या ॥ सेवा जाणी दासनी रे, देशो पद निरवाण ॥ मनना मान्या ॥ आवो आविर [illegible] गुन गाया, कीजे पाप पखाल [illegible]

गुण गोठे प्रगटे प्रेम, ॥ मनना मान्या ॥ १ ॥
(ए आंकणी) ओछुं अधिकु पण कहेरे, आसंगायत
[1] जेह ॥ म० ॥ आपे फल जे अण कहेरे,
गिरुओ साहेब तेह ॥ म० ॥ ॥ २ ॥ दीन कह्या
विण दानथीरे, दातानी वाधे माम ॥ म० ॥
जल दीये चातक खीजवीरे, मेघ हुओ तिणे
श्याम ॥ म० ॥ ३ ॥ पीउ पीउ करी तुमने
जपुरे, हुं चातक तुमे मेह ॥ म० ॥ एक लहे-
रमां दुःख हरोरे; वाधे बमणो नेह ॥ म० ॥ ४ ॥
मोडुं वहेलुं आपवुं रे, तो शी ढील कराय ॥ म० ॥
वाचक यश कहे जगधणीरे, तुम तूठे सुख
थाय ॥ म० ५ ॥ (इति)

---

१ प्रेमभावे आश्रय लेनारा सेवक.

॥९॥ श्री सुवधिनाथ जिन स्तवन॥

(सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे–ए देशी)

॥ लघु पण हु तुम मन नवि मावुरे, जग-गुरु तुमने दिलमा लावुरे ॥ कुणने ए दीजे शाबाशीरे, कहो श्री सुविधि जिणंद विमासीरे ॥ लघु० ॥ १ ॥ मुझ मन अणुमाहे भक्तिछे झाझीरे, तेह दरीनो तु छे माझीरे ॥ योगी पण जे वात न जाणेरे, तेह अचरिज कुणथी हुओ टाणेरे ॥ लघु० ॥ २ ॥ अथवा थिर माही अथिर न मावेरे, महोटो गज दर्पणमा आवेरे ॥ जेहने तेजे बुद्धि प्रकाशीरे, तेहने दीजे ए साबाशीरे ॥ लघु० ॥ ॥ ३ ॥ उर्ध्व मूल तरुअर अध शाखारे, छंद पुराणे एहवी छे भाखारे ॥ अचरिज वाले अचरिज कीधुंरे, भक्ते सेवक कारज सीधुरे ॥ लघु० ॥ ४ ॥ लाड करी जे बालक

बोलेरे, मात पिता मन अमियने[१] तोलेरे ॥ श्री नयविजय विबुधनो शीशोरे, यश कहे इम जाणो जगदीशोरे ॥ लघु० ॥ ५ ॥ (-इति)

॥१०॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

(साहेब बाहु जिनेश्वर विनवु— ए देशी)

॥ श्री शीतलजिन भेटिये, करी चोखुं भक्ते चित्त हो ॥ तेहथी कहो छानुं किस्युं, जेहने सोंप्या-तनमन वित्त हो ॥ श्री शीतलजिन० ॥ १ ॥ दायक नामे छे घणा, पण तुं सायर ते कूप हो ॥ ते बहु खजवा तगतगे, तुं दिनकर तेज सरूप हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ मोहोटो जाणी आदर्यो, दालिद्र भांजो जग तातहो ॥ तुं करुणावंत शिरोमणि, हुं करुणापात्र विख्यात

---

१ अमृत.

हो ॥ श्री० ॥ ३॥ अंतरजामी सवि लहो, अम मननी जे छे वात हो ॥ मा आगल मोसालना, स्या वरणववा अवदात हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ ताणो तो ताणो किस्युं, सेवा फल दीजे देव हो ॥ वाचक यश कहे ढालनी, ए न गमे मुझ मन टेव हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ (इति)

॥११॥ श्री श्रेयांसनाथ जिन स्तवन ॥

[कर्म न छुटेरे प्राणीया—ए देशी]

॥ तुमे बहु मित्रीरे साहेबा, मारे तो मन एक ॥ तुम विण बीजोरे नवि गमे, ए मुझ मोहोटी रे टेक ॥ श्री श्रेयांस कृपा करो ॥१॥ (ए आकणी) मन राखो तुमे सवि तणा, पण किहां एक मलि जाओ ॥ ललचावो लख लोकने, साथी सहज न थाओ ॥ श्री ० ॥२॥

राग भरे जन मन रहो, पण तिहुं काल वैराग ॥ चित्त तुमारारे समुद्रनो, कोय न पामेरेताग ॥ श्री० ॥ ३ ॥ एवा शुं चित्त मेलव्युं, केळव्युं पहेलां न कांइ ॥ सेवक निपट[1] अबुज छे, निर्वहेशो तुमे सांइ ॥ श्री० ॥ ४ ॥ निरागी शुं रे किम मले, पण मलवानो एकांत ॥ वाचक यश कहे मुझ मिल्यो, भक्ति ए कामण तंत ॥ श्री० ॥ ५ ॥ (इति)

॥१२॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन॥

[साहेबा मोतीडो हमारो—ए देशी.]

॥ स्वामी तुमे कांइ कामण कीधुं, चितडुं हमारूं चोरी लीधुं ॥ साहेबा वासुपूज्य जिणंदा, मोहना वासुपूज्य० (ए आंकणी)

---

1 अत्यंत.

अमे पण तुमशु कामण करशु, भक्ते[1] ग्रही मन घरमा धरशु ॥ साहेबा० ॥ १ ॥ मन घरमां धरीया घर शोभा, देखत नित्य रहीशु थिर थोभा ॥ मन वैकुंठ अकुंठित भक्ते, योगी भाखे अनुभव युक्ते ॥ सा० ॥ २ ॥ क्लेशे वासित मन संसार, क्लेश रहित मन ते भवपार ॥ जो विशुद्ध मन घर तुमे आव्या, प्रभु तो अमे नव निधि ऋद्धि पाव्या[2] ॥ सा० ॥ ३ ॥ सात राज अळगा जइ बेठा, पण भगते अम मनमांहे पेठा ॥ अळगाने वळग्या जे रहेवु, ते भाणा खडखड दुःख सहेवु ॥ सा० ॥ ४ ॥ ध्यायक ध्येय ध्यान गुण एके, भेद छेद करशु हवे टेके ॥ क्षीर नीर परे

---

१ भक्तिवडे २ पाम्या

तुमशुं मलशुं, वाचक यश कहे हेजे हलशुं ॥
॥ सा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥१३॥ श्री विमलनाथ जिन स्तवन॥

(नमोरे नमो श्री शेत्रुंजा गिरिवर (अथवा)
पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी— ए देशी.)

॥ सेवो भविया विमल जिणेसर, दुल्लहा सज्जन संगाजी ॥ एवा प्रभुनुं दरिसन लेवुं, ते आळसमांहे गंगाजी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ अवसर पामी आळस करशे, ते मुरखमां पहेलोजी ॥ भूख्याने जेम घेवर देतां, हाथ न मांडे घेलोजी ॥ से० ॥ २ ॥ भव अनंतमां दर्शन दीठुं, प्रभु एहवा देखाडेजी ॥ विकट ग्रंथ जे पोळी पोळीयो, कर्म विवर उघाडेजी ॥ से० ॥ ३ ॥ तत्व प्रीतिकरि पाणी पाए, विमला

छेके आजिजी॥ लोयण गुरु परमान्न दिए तय, भ्रम नासे सवि भाजीजी ॥ से० ॥ ४ ॥ भ्रम भाग्यो तव प्रभुशु प्रेमे, वात करू मन खोलीजी ॥ सरळ तणे जे हइडे आवे, तेह जणावे बोलीजी ॥ से० ॥ ५ ॥ श्री नयविजय विबुध पय सेवक, वाचक यश कहे साचुजी ॥ कोडि कपट जो कोइ दिखावे, तोही प्रभु विण नवि राचुजी ॥ से० ॥ ६ ॥ (इति)

॥१४॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तवन॥

(साहेलडीया-ए देशी)

॥ श्री अनन्त जिनशु करो ॥ साहेलडीया ॥ चोळ मजीठनो रंग ॥ गुन वेल्डीयां ॥ साचो रंग ते धर्मनो साहेलडीया ॥ बीजो रंग पतंग गुन वेल्डीयां ॥ १ ॥ धर्म रंग जीरण नहीं ॥

सा० ॥ देह ते जीरण थायरे ॥ गु० ॥ सोनुं ते विणसे नहीं ॥ सा० ॥ घाट घडामण जायरे ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रांबु जे रस वेधियुं ॥ सा० ॥ ते होय जाचुं हेमरे ॥ गु० ॥ फरी त्रांबु ते नवि हुए ॥ सा० ॥ एहवो जग गुरु प्रेमरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ उत्तम गुण अनुरागथी ॥ सा० ॥ लहिये उत्तम ठामरे ॥ गु० ॥ उत्तम निज महिमा वधे ॥ सा० ॥ दीपे उत्तम धामरे ॥ गु० ॥ ४ ॥ उदक बिंदु सायर भल्यो ॥सा०॥ जिम होय अखय अभंगरे ॥ गु० ॥ वाचक यश कहे प्रभु गुणे ॥ सा० ॥ तिम मुझ प्रेम प्रसंगरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ (इति)

॥१५॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(पेहले भार घणो छे राज, वाता केम करोछो
(अथवा) सेवक अरज करे छे राज, अमने
शिवसुख आपो-ए देशी

॥ [1]थाशु प्रेम बन्यो छे राज, निरवहेशो तो लेखे ॥ में रागी थें [2] छो निरागी, अण जुगते होय हासी ॥ एक पखो जे नेह निर्वहिए, तेह मांही [3] शाबाशी ॥ थाशु० ॥ १ ॥ नीरागी सेवे काइ होवे, इम मनमां नवि आणु ॥ फले अचेतन पण जिम सुरमणि, तिम तुम भक्ति प्रमाणु ॥ था० ॥ २ ॥ चंदन शीतलता उपजावे, अग्नि ते शीत मिटावे ॥ सेवकना तिम दुःख गमावे, प्रभु गुण प्रेम स्वभावे ॥ था०

---

1 थांशुं-तमारी साथे 2 थें-तमे 3 शाबाशी-तारीफ (मारवाडी भाषा)

॥ ३ ॥ व्यसन[1] उदय जे जलधि[2] अनुहरे, शशीने तेज[3] संबंधे ॥ अणुं संबंधे कुमुद अनुहरे, शुद्ध स्वभाव प्रबंधे ॥ था० ॥ ४ ॥ देव अनेरा तुमथी छोटा, थे[4] जगमां अधिकेरा ॥ यश कहे धर्म जिनेश्वर थांशु,[5] दिल मान्या हे मेरा ॥ था० ॥ ५ ॥ (इति)

॥१६॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

[म्हारे आंवास दुवार—ए देशी.]

॥ धन्य दिन वेला, धन्य घडि तेह, अचिराशे नंदन जिन जदि[6] भेटशुंजी ॥ लहिशु रे सुख देखी मुखचंद, विरह व्यथानां दुःख सवि मेटशुंजी ॥ १ ॥ जाण्योरे जेणे तुज गुण लेश,

---

१ कष्ट. २ समुद्र. ३ प्रकाश. ४ तमे. ५ तमारी संगाते ६ ज्यारे.

थीजारे रस तेहने मन नवि गमेजी ॥ चाख्योरे जेणे अमि लवलेश, बाकस बुकस तस न रुचे किमेजी ॥ २ ॥ तुज समकित रस स्वादनो जाण, पाप कुभक्ते बहु दिन सेवीयुजी ॥ सेवे जो कर्मने जोगे तोहि, वांछे ते समकित अमृत धुरे लिख्युजी ॥ ३ ॥ ताहरु ध्यान ते समकित-रूप, तेहज ज्ञानने चारित्र तेहज छेजी ॥ तेह-थीरे जाए सघला पाप, ध्याताेरे ध्येय स्वरूप होये पछेजी ॥ ४ ॥ देखीरे अद्भुत ताहरु रूप, अचरिज भविक अरूपी पद वरेजी ॥ ताहरी गति तुं जाणे हो देव, स्मरण भजन ते वाचक यश करेजी ॥ ५ ॥ (इति)

॥१७॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन॥

(साहेलां हे–ए देशी)

॥ साहेलां हे कुंथुजिनेश्वर देव, रत्नदीपक

अति दीपतो हो लाल ॥ सा० मुज मन मंदिर मांहि, आवे जो अखिल जीपतो हो लाल ॥ १ ॥ सा० मिटे तो मोह अंधार, अनुभव तेजे झलहले हो लाल ॥ सा० धूम कषाय न रेख,[1] चरण चित्रामण नवि चले हो लाल ॥ २ ॥ सा० पात्र करे नहि हेठ, सूरज तेजे नवि छिपे हो लाल ॥ सा० सर्व तेजनुं तेज, पहेलांथी वाधे पछे हो लाल ॥ ३ ॥ सा० जेह न मरुतने[2] गम्य, चंचलता जे नवि लहे हो लाल ॥ सा० जेह सदा छे रम्य, पुष्ट गुणे नवि कृश रहे हो लाल ॥ ४ ॥ सा० पुद्गल तेल न खेय,[3] तेह न शुद्ध दशा[4] दहे हो लाल ॥ सा०

---

१ कषाय रूप धुमाडो काळाश लगारे लागे नहि. २ समीरने. ३ क्षेप. ४ दीवेट—वाट्य.

नयविजय सुशिष्य, वाचक यश इणीपरे कहे हो लाल ॥ ५ ॥ (इति)

॥१८॥ श्री अरनाथ जिन स्तवन ॥

(आसणरा जोगी (अथवा) धन धन जिनवाणी-ए देशी)

॥ श्री अरजिन भवजलनो तारु, मुज मन लागे वारुरे ॥ मनमोहन स्वामी ॥ बाय ग्रही भविजनने तारे, आणे शिवपुर आरे रे ॥ मन० ॥ १ ॥ तप जप मोह महा तोफाने, नाव न चाले मानेरे ॥ मन० ॥ पण नवि भय मुज हाथो हाथ, तारे ते छे साथे रे ॥ मन० ॥२॥ भगतने स्वर्ग स्वर्गथी अधिकुं, ज्ञानीने फल देइरे ॥ मन० ॥ काया कष्ट विना फल लहिये, मनमां ध्यान धरेइरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ जे उपाय

वहुविधनी रचना, योगमाया ते जाणो रे ॥ मन० ॥ शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय ध्याने, शिव दिये प्रभु सपराणोरे[१] ॥ मन० ॥ ४ ॥ प्रभु-पद वळग्या ते रह्या ताजा, अळगा अंग न साजारे ॥ मन० ॥ वाचक यश कहे अवर न ध्याउं, ए प्रभुना गुण गाउंरे ॥ मन मोहन स्वामी ॥ ५ ॥ (इति)

॥१९॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

(नाभिरायांके बाग, चांपो मोही रह्योरी–ए देशी.)

॥ तुज मुझ रीझनी रीत, अटपट[२] एह खरीरी ॥ लटपट नावे काम, खटपट भांज परीरी ॥ १ ॥ मल्लिनाथ तुज रीझ, जन रिझे न हुवेरी ॥ दोय रीझणनो उपाय, साहुं कांइ न

---

१ सपराणो–पराणे. २ अवरी-कठण.

जूएगी ॥ २ ॥ दुराराध्य छे लोक, सहुने सम न शशीगी[1] ॥ एक कहवाए गाढ, एक जो बोले ह्मीगी ॥ ३ ॥ लोक लोकोत्तर वात, रीझ छे दोय जुदी ॥ तात चक्रधुर[2] पूज्य, चिंता एह हदी ॥ ४ ॥ रीझवनो एक साइं, लोक ते वात करेगी ॥ श्रीनयविजय सुशिष्य, एहीज चित्त धरेगी ॥ ५ ॥ (इति)

॥२०॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन॥

(पाटण पाने थम्बा ए देशी)

॥ मुनिसुव्रत जिन वंदना, अति उल्लसित तन मन थायरे ॥ वदन अनोपम निरखता, मारा भव भवना दुःख जायरे ॥१॥ मारा भव भवना दुःख जाय जगत गुरु जागतो सुखकंदरे ॥ सुखकंद

[1] ... ...

असंद आणंद, परमगुरु दीपतो सुखकंदरे (ए आंकणी) निशिदिन [1] सूता जागतां, हइडाथी न रहे दूर रे॥ जब उपगार संभारीये, तब उपजे आनंद पूर रे ॥ तव ० जगत० सुख० ॥ २ ॥ प्रभु उपकार गुणे भर्या, मन अवगुण एक न समायरे ॥ गुण गुण अनुबंधी हूआ, ते तो अक्षय भाव कहाय रे ॥ तेतो० जग० सुख० ॥ ३ ॥ अक्षय पद दीये प्रेम जे, प्रभुनुं ते अनुभव रूपरे ॥ अक्षर स्वर गोचर नहि, एतो अकळ अमाप्य अरुपरे ॥ एतो० जगत० ॥ सुख०॥४॥ अक्षर थोडा गुण घणा, सज्जननां (प्रभुजीना) ते न लिखाय (कहेवाय) रे ॥ वाचक यश कहे प्रेमथी, पण मन मांहे परखायरे ॥ पण० जगत० सुख० ॥ ५ ॥ (इति)

---

१ सदा सर्वदा.

॥२१॥ श्री नमिनाथ जिननुं स्तवन॥

॥ श्री नमि जिननी सेवा करतां, अलिय[1] विघन सवि दूरे नासेजी ॥ अष्ट महासिद्धि नव-निधि लीला, आवे सहु सहमूर[2] पासेजी ॥ श्री नमि० ॥१॥ मयमत्ता[3] अंगण गज गाजे, राज तेजी तुखार[4] ते चंगाजी ॥ बेटा बेटी बंधव जोडी, लहिये बहु अधिकार उमंगाजी ॥ श्री नमि० ॥२॥ वल्लभ[5] संगम रंग लहीजे, अणवल्हा होय दूर सहेजेजी ॥ वांछा तणो विलंब न दुजो, कारण सीझे सुख[7] लहेजेजी[8] ॥ श्री० ॥३॥ चंद्र किरण उज्ज्वल यश उलसे, सूरज तुल्य प्रतापी दीपेजी ॥ जे प्रभु भक्ति करे नित्य विनय, ते

१ खोटां २ [illegible] ३ मदोन्मत्त ४ घोडा [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible]

अरियण[1] बहु प्रतापी झीपेजी ॥ श्री नमि० ॥ ४ ॥ मंगलमाला लच्छि विशाला, बाला[2] बहुले प्रेम रंगेजी ॥ श्री नयविजय विबुध पय-सेवक, कहे लहीए सुख प्रेम अंगेजी ॥ श्री नमि० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ २२ ॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(आटला दिन हुं जाणतोरे हां–ए देशी.)

॥ तोरण आवी रथ फेरी गयारे हां, पशु-आं देइ दोष ॥ मेरे वालमा ॥ नव भव नेह निवारियोरे हां, शो जोइ आव्या जोश ॥ मेरे वालमा ॥ तोरण० ॥ १ ॥ चंद्र कलंकी जेह-थीरे हां, रामने सीता वियोग ॥ मेरे० ॥ तेह

---

१ शत्रु. २ पत्नी–स्त्री.

फुरगने[१] चयणडेरे हा, पति[२] आने कुण लोग[३] ॥ मेरे० तोरण० ॥ २ ॥ उतारी हू चित्तथीरे हा, मुक्ति धुतारी हेत ॥ मेरे० ॥ सिद्ध अनंते भोगवीरे हा, तेहशु करण संकेत[४] ॥ मेरे० तोर० ॥ ३ ॥ प्रीत करंता सोहीलीरे हा, निरवहेवा जंजाळ ॥ मेरे० ॥ जहनो व्याल खेलावनोरे हा, जेहनी अगननी झाळ ॥ मेरे० तोरण० ॥४॥ जो विवाह अवसर दीजोरे हा, हाथ उपर नवि हाथ ॥ मेरे० ॥ दीक्षा अवसर दीजीएरे हा, शिर उपर जगनाथ ॥ मेरे० तोर० ॥ ५ ॥ इम वलवल्ती गजुल गइरे हा, नेमि कने व्रत लीध ॥ मेरे० ॥ वाचक यश कहे प्रणमियेरे हा, ए दंपती[६] दोय सिद्ध ॥ मेरे० तोरण० ॥ ६ ॥ (इति)

[१] [illegible] [२] [illegible] [३] [illegible] [४] [illegible] [५] [illegible] [६] [illegible]

॥२३॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(देखी कामिनी दोय के कामे व्यापीयोरे के कामे व्यापीयो–ए देशी.)

॥ वामानंदन जिनवर, मुनिमांहे वडोरे के मुनिमांहे वडो ॥ जिम सुरमांहि सोहे, सुरपति परवडोरे के सुरपति० ॥ जिम गिरिमांहि सुराचल[१], मृग मांहे केशरीरे के मृग० ॥ जिम चंदन तरुमांहि, सुभटमांहि मुरअरीरे[२] के सुभट० ॥१॥ नदीयमांहि गंग, अनंग[३] सुरुपमांरे के अनंग०॥ फूलमांहि अरविंद[४], भरतपति भूपमारे भरत० ॥ ऐरावण[५] गजमांहि, गरुड खगमां[६] यथारे गरुड० ॥ तेजवंत मांहि भाण[७], वखाणमांहि जिन कथारे के वखाण० ॥२॥ मंत्रमांहि नवकार

---

१ मेरु पर्वत. २ मोरारि–वासुदेव. ३ कामदेव. ४ कमल पुष्प. ५ इंद्रनो हाथी. ६ पक्षी. ७ सूर्य.

रत्नमाहि सुरमणिरे[१] के रत्न० ॥ सायरमाहि स्वयम्भूरमण शिरोमणिरे के रमण० ॥ शुक्ल ध्यान जिम ध्यानमा, अति निर्मलपणेरे के अति० ॥ श्री नयविजय विबुधपय सेवक, इम भणेरे के सेवक० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ २८ ॥ श्री महावीर (वर्द्धमान) स्वामीनु स्तवन ॥

॥ गिरुओरे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिनरायारे ॥ सुणता श्रवणे अमीझरे, म्हारी निर्मल थाये कायारे ॥ गिरुआ० ॥ १ ॥ तुम गुण गण गंगाजले, हुं झीलीने निर्मल थाउंरे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निशिदिन तोरा

[१] चिन्तामणि रत्न

गुण गाऊं रे ॥ गिरु० ॥ २ ॥ झील्या जे गंगा जळे, ते छील्लर जळ किम पेसेरे ॥ जे मालती फूले मोहिया, ते बावळ जइ नवि बेसेरे॥ गिरुआ० ॥ ३ ॥ एम अमे तुम गुण गोठशुं, रंगे राच्याने वळी माच्यारे ॥ ते केम परसुर आदरे, जे परनारी वश राच्यारे ॥ गिरुआ० ॥४॥ तुं गति तुं मति आशरो, तुं आलंबन मुज प्यारोरे॥ वाचक यश कहे माहरे, तुं जीव जीवन[1] आधार रे ॥ गिरुआ० ॥ ५ ॥ (इति श्रीमद्‌-यशोविजयजी कृत चोवीशीना स्तवनो संपूर्ण)

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

॥ श्री मंधरजीकुं वंदना, नित होयजो हमारीरे ॥ मन वचन काया त्रिकरी, सेवा चाहुं

---

१ ' जीवन प्राण ' एवो पण पाठ छे.

तुमारीरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुमे तो विदेहमा जई वस्या, हम भरतमा बेठेरे ॥ मनडो चाहे इन घडी, जइ किम पद भेटेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इहा आगहे पाचमा, तिहां चोथा आरोरे ॥ उहा तुमे सुख भोगवो, हमकु न ममारोरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जघा विद्याचरणी, कोइ लब्धि न दिसेरे ॥ जयमे प्रभु पद भेटिये, मनडु घणु हींसेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ बीज तणा जे चदलो, तेनी गाथ हमारीरे ॥ आप पोचेगी वंदना, गुरु केहगो ममारीरे ॥ श्री० ॥५॥ नदन श्री श्रेयांगरो, अंगज सत्यकीनोरे ॥ रूपमणी राणीरो नाहलो, वृजो ऋषभ नगीनोरे ॥ श्री० ॥६॥ सुपनान्तर प्रभुजी मल्या, भयो परमानंदोरे ॥ सुख अगथंत सागर वडो, अडनिश मुनिंदोरे ॥ श्रीमंधर० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

(प्रीतडली बंधाणीरे अजित जिणंदस्यु—ए देशी.)

॥ शोभा शी कहुं रे शेत्रुंजा तणी, जीहां वसीयाछे प्रथम तीर्थंकर देवजो ॥ रुडीने रायण तळे रीखव समोसर्या, चोसठ सुरपती सारे प्रभुनी सेवजो ॥ शोभा० ॥ १ ॥ निरखो ते नाभीराय केरा पुत्रने, माता मारुदेवी केरा नंदजो, रुडीने विनीता नगरीनो धणी, मुखडु सोहिए सरद पुनमनो चंदजो ॥ शोभा० ॥ २ ॥ निरखोने नारी कंथने विनवे, पियुडा मुजने पालीताणुं देखाडजो ॥ ए गिरि पुरव नवाणु समोसर्या, माटे मुजने आदेश्वर भेटाबजो ॥ शोभा० ॥ ३ ॥ मारे मन जावानी घणी होंश छे, क्यारे जावुं ने क्यारे करुं दरीशन जो ॥ ते माटे मन मारुं तरसे घणुं, नयणे

नीहाळु तो ठरे मारा लोचन जो ॥ शोभा० ॥ ४ ॥ एवी ने अरज मलाये साभळो, हुकम करो तो आवु तमारी पास जो ॥ महेर करीने एक वार दरीशन दीजीए, (हुकम करीने दादा दरीशन दीजीए,) श्री शुभवीरने पहोचे मननी आशजो ॥ शोभा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ अथ श्री नवपद महिमा वर्णन श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन.

(सामलरे तु सजनी मोरी सजनी रजनी क्या रमी आवीजी–ए देशी)

॥ सिद्धचक्र वर सेवा कीजे, नरभव लाहो लीजेजी ॥ विधी पूर्वक आराधन करतां, भव भव पातिक छीजे ॥ भवीयण भजीयेजी ॥ अवर अनादीनी चाल, नित्य नित्य तजीयेजी

(ए आंकणी) ॥ १ ॥ देवना देव दयाकर ठाकर, चाकर सुरनर इंदाजी ॥ त्रिगडे त्रिभुवन नायक बेठा, प्रणमो श्री जिनचंदा ॥ भवी० ॥ २ ॥ अज अविनाशी अकल अजरामर, केवल दंसण नाणीजी ॥ अव्याबाध अनंतु वीरज, सिद्ध प्रणमो भवी प्राणी ॥ भवी० ॥३॥ विद्या सौभाग्य लक्ष्मी पीठ, मंत्र जोगराज पीठजी ॥ सुमेरु पीठ पंच प्रस्थानें, नमो आचारज इट ॥ भवी० ॥ ४ ॥ अंग उपांग नंदि अनुयोगा, छ छेदने मूल चारजी ॥ दस पयन्ना एम पणयालीस, पाठक तेहना धार ॥ भवी० ॥ ५ ॥ वेद त्रणनें हास्यादिक षट, मिथ्यात्व चार कषायजी ॥ चउद अभ्यंतर नवविध बाह्यनी, ग्रंथी त्यजे मुनिराज ॥ भवी० ॥ ६ ॥ उपशम क्षय उपशमने क्षायिक, दरशण त्रण

प्रकारेंजी ॥ श्रद्धा परणति आतम केरी, नमिये वारवार ॥ भवी० ॥ ७ ॥ अठावीस चौदने षट दुग एक, मत्यादिकना जाणजी ॥ एम एकावन भेदे प्रणमो, सातमुं पद वरनाण ॥ भवी० ॥ ८ ॥ निर्वृति अपवर्ति भेदे, चारित्र छे व्यवहारेंजी ॥ निज गुण थिरता चरण ते प्रणमो, निश्चय शुद्ध प्रकार ॥ भवी० ॥ ९ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप ते संवर, समता निर्ज्जरा हेतुजी ॥ ते तप नमिए भाव धरिने, भव सायरमां सेतु ॥ भवी० ॥ १० ॥ ए नवपदमां पण छे धर्मी, धर्म ते वरते चारजी ॥ देवगुरुने धर्म ते एहमां, दो तीन चार प्रकार ॥ भवी० ॥११॥ मारग देशक अविनाशी पणो, आचार विनय संकेतजी ॥ साधपदपू धरमा माइजी, प्रणमो [illegible] ॥ भवी० ॥ १२ ॥ विमलेश्वर [illegible]

सेवा सारे, उत्तम जे आराधेजी ॥ पद्मविजय कहे ते भवी प्राणी, निज आतम हित साधे ॥ भवी० ॥ १३ ॥ (इति)

॥ अथ श्रीपर्युषण पर्वनुं स्तवन ॥

(आंखडीयें अमें आज शेत्रुंजो दीठो रे – ए देशी.)

॥ सुणजो साजन संत, पजूसण आव्यां रे ॥ तुमें पुण्य करो पुण्यवंत, भविक मन भाव्यां रे ॥ वीर जिणेसर अतिअलवेशर ॥ वाला मारा ॥ परमेश्वर एम बोले रे ॥ पर्वमांहे पजूसण मोहोटां, अवर न आवे तस तोलें रे ॥ पजू० ॥ तुमें० ॥ भ० ॥ १ ॥ चौ पगमांहे जेम केशरी मोहोटो ॥ वा० ॥ [1]खगमां गरुड ते कहियें रे ॥ नदी मांहे जेम गंगा मोहोटी, [2]नगमां मेरु लहियें रे

---

१ आकाशमा उडता पक्षी. २ पर्वत.

॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥ २ ॥ १भूपतिमा भर-
तेसर भाख्यो ॥ वा० ॥ देवमाहे २सुरेंद्र रे ॥
तीरथमा शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रहगणमा जेम चंद्र रे
॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥ ३ ॥ दसरा दीवा-
ळीने वळी होळी ॥ वा० ॥ अखात्रीज दीवासो
रे ॥ बलेव प्रमुख ३बहुला छे ४बीजा, पण नहि
मुक्तिनो वासो रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥४॥
ते माटे तमे अमार पळावो ॥ वा० ॥ अठाइ
महोच्छव कीजे रे ॥ अठम तप अधिकाइये
करीने, नरभव लाहो लीजे रे ॥ पजु० ॥ तु०॥
भ० ॥५॥ ढोल ददामा भेरी न फेरी ॥ वा०॥
कल्पसूत्रने जगावो रे ॥ झांझरना झमकार करीने॥
गोरीना टोळी मळी आवो रे ॥ पजु० ॥ तु०

१ राजा. २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible]

॥ भ० ॥ ६ ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावो ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पुजो रे ॥ नव वखाण विधियें सांभलतां, पापसे वासी धूजो रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥ ७ ॥ एम अठाइनो महोत्सव करतां ॥ वा० ॥ बहु जीव जग उद्धरया रे ॥ विबुध-विमळ वर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि वऱ्या रे ॥ पजु० ॥ तु० ॥ भ० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री दीवाळी पर्वनुं स्तवन ॥

(सुत सिद्धारथ भुपनोरे–ए देशी.)

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवळज्ञान निधान॥ भाव दया सागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधान रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकळ आधार रे, हवे इण भरतमां ॥ कोण करशे उप-गार रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं

रे, वीर निहूणो रे जीव ॥ माथे कोण आधा-
रथी रे, परमानंद अभंग रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥
माता विहूणो बाळ ज्यु रे, अरहो परहो अथ-
डाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुळ व्याकुळ
थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वी-
रनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख
ऊपजे रे, ते विण केम रहेवाय रे ॥ वीर०
॥ ५ ॥ निर्यामक भव समुद्रनो रे, भव अटवी
सथ्थवाह ॥ ते परमेश्वर विण मळे रे, केम
वाधे उत्साह रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थका
पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां
श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सार रे ॥
वीर० ॥ ७ ॥ त्रण काळे सवि जीवने रे,
आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो भविजनो,
जिन पडिमा सुखकंद रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गण-

धर आचारज मुनि रे, सहुने इणि पेर सिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रें ॥ वीर० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्री आखात्रीजनुं स्तवन ॥

(सनेही संत ए गिरि सेवो–ए देशी.)

॥ श्री ऋषभ वरसोपवासी, पुरवनी प्रित प्रकाशी ॥ श्रेयांस बोले शाबासी ॥ बाबाजी० विनति अवधारो, महारे मंदरीये पधारो ॥ बाबाजी० ॥ १ ॥ (ए आंकणी) सेलडी रस सुजतो वोहोरो, नाथजी न करावो नोहोरो ॥ दरिशन फळ आपो दोरो ॥ बाबाजी० ॥ २ ॥ प्रभुए तव मांडी पसली, आहार लेवानी गति असली ॥ प्रगटी तव दुर्गति वसली ॥ बाबाजी० ॥ ३ ॥ अजुआली त्रीज वैशाखी, पंच दिव्य

थते सुर साखी ॥ एतो दान तणी गति दाखी ॥ नाभाजी० ॥ ४ ॥ युगादि परव ए जाणो, आखात्रीज नाम ए वखाणो ॥ सहु कोइ करे गलमाणो ॥ नाभाजी० ॥ ५ ॥ सहस वरसे केवल पायो, एक लाख पुरव अरचायो ॥ पछी परम महोदय पायो ॥ नाभाजी० ॥ ६ ॥ एम उदय वंद उवज्झाया, पूजो श्री ऋषभना पाया ॥ जिणे आदि धर्म उपाया ॥ नाभाजी० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री चैत्रीपुनम महिमानुं स्तवन ॥

॥ धीरजी आपार, विमलाचलके मेदान ॥ गुणगि भायारे, समवसरण मंडाण ॥ (ए आकणी) देशना देवे धीरजी स्याम, शत्रुंजय महिमा घर- वर नाम, साम्या आठ उपर सो नाम ॥ ते-

हमां भाख्युं रे, पुंडरगिरी अभिधान ॥ सोहम इंदो रे, तत्र पूछे बहुमान ॥ किम थयुं स्वामीरे भाखो तास निदान ॥ वीरजी० ॥ १ ॥ प्रभुजी भाखे सांभळे इंद्र, प्रथम जे हुवा ऋषभ जिणंद, तेहना पुत्र ते भरत नरिंद ॥ भरतना हुआरे, ऋषभसेन पुंडरीक ॥ ऋषभजी पासेरे, देशना सुणी तहकीक ॥ दीक्षा लीधीरे, त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीरजी० ॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादशांगी गुंथी अभिराम, विचरे महीयलमां गुण धाम ॥ अनुक्रमे आव्यारे, श्री सिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडिरे, पंच तणे परिवार ॥ अनशन कीधुंरे, निज आतमने उद्धार ॥ वीरजी० ॥ ३ ॥ चैत्री पुनम दिवसे एह, पाम्या केवळज्ञान अछेह, शिवसुख वरिया अमर अदेह ॥ पूर्णानंदीरे, अगुरू लघु अव-

गाह ॥ अज अविनाशीरे, निजगुण भोगी
अथाह ॥ निजगुण करतारे, पर पुद्गल नहि
ग्राह ॥ वीरजी० ॥ ४ ॥ तेणे प्रगट्यु पुंडरिक
गिरि नाम ॥ साभळो सोहम देवलोक स्वाम,
एहनो महिमा अतिहि उद्दाम ॥ इणे दिन की-
जे, तप जप पूजाने दान ॥ व्रत वळी पोसोरे
लेइ वर अभिदान ॥ फल तस पामेरे, पच-
कोडी गुणुं मान ॥ वीरजी० ॥ ५ ॥ सक्ते भव्य
जीव जे होय, पंचम भवे मुक्ति लहे सोय,
तेहमा बाधक छे नहि कोय ॥ व्यवहार केरोरे,
मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्ट योगेरे, अंतर
मुहूर्त विख्यात ॥ शिवसुख साधेरे, निज आतम
अवदात ॥ वीरजी० ॥ ६ ॥ चैत्री पुनम महिमा
देख, पूजा पंच प्रकारी विशेष, तेहमा नहि
ऊणिम कांइ रेख ॥ इणी पेरे भाखेरे, जिनवर

उत्तम वाण ॥ सांभळी चुव्यारे, केइक भविक सुजाण ॥ इणीपरे गायारे, पद्मविजय सुप्रमाण ॥ वीरजी० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

(माहारा वालाजी– ए देशी.)

तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंत रे, प्रीतमजी ॥ आठ भवानी प्रीतडी त्रोडी तंत ॥ माहारा प्रीतमजी ॥ नवमे भव पण नेह न आणो मुझ रे ॥ प्रीत० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुज्ज ॥ माहा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तिर्यचनो एम रे ॥ प्रीत० मूको अबला रोती प्रभुजी केम ॥ माहा० ॥ षट्जीवना रखवालमां शिरदार रे ॥ प्रीत० ॥ तो केम विलवती स्वामी मूको नारी ॥ माहा० ॥ २ ॥ शिववधू केरुं

एहतु कहेतु रुप रे ॥ प्रीत० ॥ मुझ मूकीने चितमा धरी जिन भूप ॥ माहा० ॥ जिनजी लीये सहसावनमा व्रत भार रे ॥ प्रीत० ॥ घाती करम खपावीने निरधार ॥ माहा० ॥ ३ ॥ केवल ऋद्धि अनती परगट कीध रे ॥ प्रीत० ॥ जाणी राजुल एम प्रतिज्ञा लीध ॥ माहा० ॥ जे प्रभुजीये कीधु करखु तेह रे ॥ प्रीत० ॥ एम कही व्रतधर थइ प्रभु पासे जेह ॥ माहा० ॥ ५ ॥ प्रभु पहेला निज शोकनु जोवा रुप रे॥ प्रीत० ॥ केवलज्ञान लही थइ सिद्ध सरुप ॥ माहा० ॥ शिववधू वरीया जिनवर उत्तम नेम रे ॥ प्रीत०॥ पद्म कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ माहा० ॥ ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

॥ आदि जिणेसर पूजतां, दुःख मटोरे ॥
आबुगढ दृढ चित्त, भवि जइ भेटोरे ॥ देल-
वाडे देहेरां नमी ॥ दुःख० ॥ चार परिमित नित्य
॥ भवि० ॥ १ ॥ वीश गज वल पदमावती ॥
दुःख० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ भवि० ॥ शंख
दीये अंबीसुरी ॥ दुःख० ॥ पंच कोश वहे बाण
॥ भवि० ॥ २ ॥ बार पादशाहा जीतीनें ॥ दुःख०
॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ भवि० ॥ द्रव्य भरी
धरती कीयो ॥ दुःख० ॥ ऋषभदेव प्रासाद ॥
भवि० ॥ ३ ॥ बिहूत्तेर अधिकां आठशे ॥ दुःख० ॥
बिंब प्रमाण कहाय ॥ भवि० ॥ पन्नरसें कारीगर ॥
दुःख० ॥ वरस त्रिके ते थाय ॥ भवि० ॥४॥
द्रव्य अनुपम खरचियो ॥ दुःख० ॥ लाख त्रेपन
बार कोडी ॥ भवि० ॥ संवत दश अठ्यासीये ॥

दु ख० ॥ प्रतिष्टा करी मन होड ॥भवि० ॥५॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ दु ख० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ भवि० ॥ वस्तुपाळ तेजपाळनी ॥ दु ख० ॥ ए दोय काता जाण ॥ भवि० ॥६॥ मूल नयक नेमीसरु ॥ दु ख० ॥ चारशें अडशट्ट बिंब ॥ भवि० ॥ ऋषभ धातुमय देहरे ॥ दु ख० ॥ एकसो पीस्तालीश बिंब ॥ भवि० ॥ ७ ॥ चउमुख चैत्य जूहारीये ॥ दु ख० ॥ काउस्सगीया गुणवत ॥ भवि० ॥ बाणु मित्त तेहमा कहु ॥ दु ख० ॥ अगन्यासी अरिहत ॥ भवि० ॥ ८ ॥ अचल गढे प्रभुजी घणा ॥ दु ख० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ भवि० ॥ कोडी तप फळ जे लहे ॥ दुःख० ॥ ते प्रभु भक्ति विचार ॥ भवि० ॥ ९ ॥ सालबन निरालबने ॥ दु ख० ॥ प्रभु ध्याने भव पार ॥ भवि० ॥

मंगल लीला पामीये ॥ दुःख० ॥ वीरविजय जयकार ॥ भवि० ॥ १० ॥ (इति)

॥ अथ श्री अष्टापद जिन स्तवन ॥

॥ अष्टापद अरिहंतजी महारा वाहालाजी रे ॥ आदीश्वर अवधार ॥ नमीये नेहशुं ॥ महा० ॥ दश हजार मुणींदशुं ॥ मा० ॥ वरिया शिव-वधू सार ॥ नमीये० ॥ १ ॥ भरत भूप भावे करचो ॥ मा० ॥ चउमुख चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवींशें जिहां ॥ मा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे विराजतां ॥ मा० ॥ लंछनने अलंकार ॥ न० ॥ ३ ॥ समनासाये शोभता ॥ मा० ॥

चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक करता निचाल ॥ न० ॥ त्रूटि तात तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी बजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवि त्रोडयु ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयु ॥ मा० ॥ अद्भुत भावशु गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आज्ञा ते जात १ ॥ न० ॥ जगचिंतामणि तिहां करयु ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटको ॥ मा० ॥ तिणे भवि पामे ते सिद्धि ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वत ऋद्धि ॥ न० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केता करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरे

१ यात्रा

स्वमुखे वरणव्यो ॥मा०॥ नमतां कोडि कल्याण॥ नमीये० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री समेतशिखर जिन स्तवन ॥

(क्रीडा करी घरे आवीयो-ए देशी.)

॥ समेतशिखर जिन वंदीये, मोटुं तीरथ एह रे॥ पार पमाडे भव तणो, तीरथ कहिये तेह रे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रभ शिव सुख वर्या, त्रणशें अड अणगार रे ॥ समेत० ॥२॥ पांचशें मुनि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणिंद रे॥ समेत० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीधा रे ॥ सात सहसशुं चौदमा,

निज कारय[1] वर कीवा रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एक्रमो आठशु ऋर्षभजी, नवशेंशु शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक महसशु, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमी एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिव सुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश महस त्रणशें, उपरे ओगणपचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सीध्या अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, पास शामलनु चेइ-[2] रे ॥ स० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥

॥ शत्रुंजे ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या

1 काम 2 चैत्य-देरासर

रे ॥ सीध्या साधु अनंत ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ त्रण कल्याणिक तिहां थयां, मुगतें गयारें ॥ नेमीसर गिरनार ॥ तीरथ० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥ भरतें भरव्यां बिंब ॥ तीरथ० ॥ आबु चौमुख अतिभलो, त्रिभुवन तिलोरे ॥ विमल वसहि वस्तुपाल ॥ तीर० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामाणोरे सीधां तीर्थंकर वीश ॥ तीर० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयेंरे ॥ सीधा श्री वासुपूज्य ॥ तीर० ॥ ३ ॥ पूर्व दिशें पावापुरी, ऋद्धं भरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ तीर० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयेंरे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ तीर० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें चिरनंदीयेरे ॥ अरिहंत देहरा आठ ॥ तीर० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरोरे ॥ फलोधी थंभण

पास ॥ तीर० ॥ ५ ॥ अंतरिक अञ्जारगे, अमीझरोरे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ तीर० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ तीर० ॥ ६ ॥ तारगे अजित जुहारियें, दुःख वारीये रे ॥ थरात्र श्री महावीर ॥ तीर० ॥ नवारे नगरना देहरा, बावन भलारे ॥ शा रायशी वर्द्धमान भराव्या बिंब ॥ तीर० ॥७॥ श्री नाडुलाइ जादवो, गोडि स्तवोरे ॥ श्री वरकाणो पास ॥ तीर० ॥ नदीश्वरना देहरा, बावन भला रे ॥ रुचक कुंडल चार चार ॥ तीर० ॥ ८ ॥ शाश्वती अशाश्वती प्रतिमा छतीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ तीर० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहा, होजो मुज इहांरे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ तीर० ॥ ९ ॥ (इति)

।। श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ।।

(बीजी अशरण भावना (अथवा) सहेजानंदीरे आतमा-ए देशी)

।। भरतजी कहे सुणो मावडी, प्रगटया नवे निधान रे ।। नित्य नित्य देता ओलंभडा, हवे जुवो पुत्रना मान रे ।। ऋषभनी शोभा हुं शी कहुं (ए आंकणी) ।। १ ।। अढार कोडाकोडी-सागरे, वसीयो नयर अनुपरे ।। चार जोयणनु रे मान छे, चालो जोश्रोने भूपरे ।। ऋष० ।। २ ।। पेहेलो रुपानो कोट छे, कांगरा कंचन साजरे ।। बीजो कनकनो कोट छे, कांगरा रतन समाज रे ।। ऋष० ।। ३ ।। त्रीजो रत्ननो कोट छे, कांगरा मणीमय जाणरे ।। तहमां मध्य सिंहासने, हुकुम करे प्रमागरे ।। ऋष० ।। ४ ।। पूर्व दिशीनी संख्या सुणो, पगथीयां वीसहजार रे ।। इणीपरे गणतां

चारे दीशे, पगशीया ऐंशी हजार रे ॥ ऋप०
॥ ५ ॥ शिरपर त्रण छत्र जलहले, तेहथी त्रिभु-
वन राय रे ॥ तीन भुवननोरे पादशाह, केव-
लनान सहाय रे ॥ ऋप० ॥ ६ ॥ वीश चत्रीश
दश सुरपति, वली दोय चंदने सूर रे ॥ दोय कर-
जोडी उभा खडा, तुम सुत ऋपभ हजुर रे ॥
ऋप० ॥ ७ ॥ चामर जोडी चोवीश छे, भाम-
डल झलक्तरे ॥ गाजे गगनेरे दुदुभी, फुल पगर
नरमत रे ॥ ऋप० ॥ ८ ॥ बारगुणो प्रभु देहथी,
अशोक वृक्ष श्रीकार रे ॥ मेघ समाणीरे देशना,
अमृतवाणी जयकार रे ॥ ऋप० ॥ ९ ॥
प्रातिहार्य आठथी, तुम सुत दीपे देदार रे ॥
चालो जोवाने मानडी, गयवर खधे अमवाररे
॥ ऋप० ॥ १० ॥ दुग्थी वाजारे साभळी,
जोता हर्प न माय रे ॥ हर्पना आनुथी फाटीया,

पडल ते दूर पलायरे ॥ ऋष० ॥ ११ ॥ गय-
वर खंधर्थी देखीयां, निरुपम पुत्र देदार रे ॥
आदर दीधो नही मायने, माय मन खेद अपार
रे ॥ ऋष० ॥ १२ ॥ केहनां छोरुं ने मावडी,
एतो छे वीतराग रे ॥ इणीपेरे भावना भावतां,
केवल पाम्या महा भाग रे ॥ ऋष० ॥ १३ ॥
गजवर खंधे मुक्ति गया, अंतगड केवली एहरे ॥
वंदो पुत्रने मावडी, आणी अधिक स्नेहरे ॥
ऋष० ॥१४॥ ऋषभनी शोभाने वरणवी, सम-
कित पुर मोझाररे॥ सिद्धगिरि महात्म्य सांभळो,
संघने जय जयकार रे ॥ ऋष० ॥ १५ ॥ संवत
अढार एंशीये, मागशर मास सोहाय रे ॥ दीप-
विजय कविरायने, मंगलमाल सवाय रे ॥
ऋष० ॥ १६ ॥ (इति)

॥श्री संभवनाथ जिन स्तवन.॥

॥ साहिब सांभळो रे, संभव अरज हमारी॥ भवोभव हुं भम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरक नीगोदमां रे, तिहां हुं बहु भव भमीयो॥ तुम विना दुःख सह्यां रे, अहर्निश क्रोधे धमधमियो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसे ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, थावर हणीआ हुंसे ॥ व्रत चित्त नवि धर्या रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाळ्युं ॥ श्री जिनआणशुं रे, में नवि संजम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परे रे, शुद्ध न आहार गवेस्यो ॥ रसना लालचे रे, निरस पिंड उवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरभव दोहिलो रे, पामी मोह वश

पडियो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुझ मन तिहां जइ अडियो ॥ काम न को सर्यारे, पापे पिंड में भरियो ॥ शुद्ध बुद्धि नवि रही रे, तेणे नवि आतम तरियो ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचे रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तो पण नवि मळी रे, मळी तो नवि रही राखी ॥ जे जन अभिलखेरे, ते तो तेहथी नासे ॥ तृण सम जे गणेरे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥५॥ धन्य धन्य ते नरारे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने धर्ममां जोडी ॥ अभक्ष्य ते में भख्यां रे, रात्रि भोजन कीधां ॥ व्रत नवि पालियां रे, जेहवां मूळथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत भव हुं भम्यो रे, भमतां साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दियेरे, बोधि रयण मुझ बळियो ॥ संभव आपजो रे,

चरण कमळ तुम सेवा ॥ नय एम जिनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा ॥ सा० ७ ॥ (इति)

॥ श्री अभिनंदन स्वामीनुं स्तवन ॥

(आज निहेजोरे दीसे नाहलो (अथवा) सिद्धारथनारे नंदन विनवुं-ए देशी)

॥ अभिनंदन जिन दरिसण तरसीए, दरिसण दुर्लभ देव ॥ मत मत भेदेरे जो जइ पुछीए, सहु थापे अहमेव ॥ अभिनंदन० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरीसण दोहलुं, निर्णय सकल विशेष ॥ मदमें घेर्योरे अंधो केम करे, रवि शशि रुप विलेख ॥ अभि० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरी जोइए, अति दुर्गम नयवाद ॥ आगमवादे हो गुरु गम को नहीं, ए सबलो विखवाद ॥ अभि० ॥ ३ ॥ घाति डुंगर आडा

अति घणा, तुज दरिसण जगनाथ ॥ धीटाइ करी मारग संचरुं, सेंगु[1] कोइ न साथ॥ अभि० ॥ ४ ॥ दरिसण दरिसण रटतो जो फरुं, तो रण रोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अम्रत पाननी, किम भांजे विषपान ॥ अभि० ॥ ५ ॥ तरस[2] न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरिसण काज ॥ दरिसण दुर्लभ सुलभ कृपाथकी, आनंदघन महाराज ॥ अभि० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री सुविधिनाथ जिन स्तवन ॥

(नारे प्रभु नही मानुं ॥ (अथवा) मारें दीवाळी रे थइ आज, प्रभु मुख जोवाने—ए देशी)

॥लाग्यो लाग्योरे प्रभुशुं नेह, वसीयो हइडामां ॥ म्हारो साहिबो अतिहि सनेह ॥ वसीयो

---

१ मार्गदर्शक भोमियो. २ त्रास.

हडडामा ॥ दर्शन प्रभुजीनु देखतारे, जोता मुखनी ज्योति रे ॥ दुरित पडल दुरे कर्यारे वारी, प्रगट्यो ज्ञान उद्योत ॥ वसी० ॥ १ ॥ सूरत मनडामा वसी रे, कागल जिम चित्राम रे ॥ रात दिनस सुता जागता रे हुवो, नित समरु प्रभु नाम ॥ वसी० ॥ २ ॥ जेहना मनमा ज वस्यारे, तेहने तेहशु नेहरे ॥ मधु-करने मन मालतीरे जिम, मोर तणे मनमेह ॥ वसी० ॥ ३ ॥ देव अवर देखी घणारे, किहा न माने मन्न रे ॥ प्रभु गुण साकले मारुल्यो रे तेतो, आलोचे नही अन्न ॥ वसी० ॥ ४ ॥ माहिन सुविधि जिणदनी रे हु, चाहु मनोभर सेव ॥ हसरतन कहे माहरे रे काढ, लागी एहज टेव ॥ वसी० ॥ ५ ॥ (इति)

।। श्री शितलनाथ जिन स्तवन ।।

(घोडी तो आई थारा देशमां मारुजी–ए देशी)

।। शीतल जिनवर सेवना साहेबजी, शीतल जिम शशिबिंब हो ।। ससनेही सूरत माहरे मन वसी साहेबजी ।। शाह पुरुषाशुं गोठडी ।। साहे० ।। मोहोटो ते आला लूंबहो ।। सस० ।। ।। १ ।। क्षण एक मुझने न वीसरे ।। साहे० ।। तुज गुण परम अनंत हो ।। सस० ।। देव अवरने शुं करुं ।। साहे० ।। भेट थइ भगवंत हो ।। सस० ।। २ ।। तुमें छो मुकुट त्रिहुं लोकना ।। सा० ।। हुं तुम पगनी खेह हो ।। सस० ।। तुमें छो सघन ऋतु मेहूला ।। साहे० ।। हुं पश्चिम दिशि मेद हो ।। सस० ।। ३ ।। निरागी प्रभु रीझवुं ।। साहे० ।। ते गुण नहि मुझ मांहि हो ।। सस० ।। गुरु गुरुता साहासुं जूओ

॥ साहे० ॥ गुरुता ते मूके नाहि हो ॥ सस० ॥ ४ ॥ मोहोटा सेंती बरोबरी ॥ साहे० ॥ सेवक किण विध थाय हो ॥ सस० ॥ आसगो किम कीजिये ॥ साहे० ॥ जिहा रह्या आलुभाय हो ॥ सस० ॥ ५ ॥ जगगुरु करुणा कीजिये ॥ साहे० ॥ न लहो आचार विचार हो ॥ सस० ॥ मुजने जो राज निवाजशो ॥ साहे० ॥ तो कुण तारण हार हो ॥ सस० ॥ ६ ॥ ओलग अनुभव भावथी ॥ साहे० ॥ जाणो जाण सुजाण हो ॥ रुस० ॥ मोहन कहे कवि रूपनो ॥ साहे० ॥ जिनजी जीवन प्राण हो ॥ सस० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री विमलनाथ स्वामीनुं स्तवन ॥

(राग मल्हार, इडर आंवा आंवलीरे–ए देशी.)

॥दुःख दोहग दूर टळ्यांरे,सुख संपदशुं भेट॥ धींग धणी माथे कियारे, कुण गंजे नर खेट॥ विमल जिन, दीठां लोयण आज, महारां सीध्यां वांछित काज ॥ विमल जिन ॥ दीठां० ॥१॥ चरण कमल कमला [1] वसेरे, निर्मल थिर पद देख ॥ समल अथिर पद परिहरीरे, पंकज पामर पेख ॥ वि० ॥ दि० ॥ २ ॥ मुझ मन तुझ पद पंकजेरे, लीनो गुण मकरंद ॥ रंक गणे मंदिरधरारे, [2] इंद चंद नागिंद ॥ वि० ॥ दी० ॥ ३ ॥ साहिब समरथ तुं धणीरे, पाम्यो परम उदार ॥ मन विशरामी वालहोरे, आतमचो [3] आधार ॥ वि० ॥ दी० ॥ ४ ॥ दरिसण दीठे

---

१ लक्ष्मी. २ मेरु–सुवर्णाचल भूमि. ३ आत्मानो.

जिन तणुरे, संशय न रहे वेध ॥ दिनकर कर-
भर पसरतारे, अंधकार प्रतिषेध ॥ वि० ॥ दी०
॥ ५ ॥ अमिय भरी मूरति रचीरे, उपमा न घटे
कोय ॥ शांत सुधारस झीलतीरे, निरखत तृप्ति न
होय ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥ एक अरज सेवक
तणीरे, अवधारो जिनदेव ॥ कृपा करी मुझ दीजीये
रे, आनंदघन पद सेव ॥ वि० ॥ दी० ॥ ७ ॥
(इति)

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन. ॥

(हांरे मारे जोबनीयानो लटको दहाडा
चार जा-य देशी)

॥ हांरे मारे धर्म जिणंदशुं लागी पूरण प्रीत
जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीनी ओळगे
रे लो ॥ हांरे मुने थाशे कोईक समय प्रभु सुप्र-

सन्न जो, वातलडी माहारी रे सवी थाशे वगै रे लो. ॥ १ ॥ हांरे प्रभु दुर्जनना भं-भेर्यो माहारो नाथ जो, ओळवश्ये नहीं क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हांरे मारा स्वामी स-रखो कुणछे दुनियां मांहि जो, जइयें रे जिम तेहने घर आशा करी रे लो. ॥ २ ॥ हांरे जस सेवासेंती स्वारथनी नही सिद्धि जो, ठा-लीरे शी करवी तेहथी [1]गोटडीरे लो ॥ हांरे कांइ जुठुं खाय ते मीठाइने माटे जो, क्यांइ रे परमारथ विणा नही प्रीतडी रे लो. ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राण आधार जो, वायो रे नवि जाण्यो कलीयुग वायरोरे लो ॥ हांरे मारे लायक नायक भक्तवत्च्छल भग-वंत जो, वारुरे गुण केरो साहिब सायरु रे

---

१ दोस्ती–भाईबंधाइ.

लो. ॥ ४ ॥ हारे प्रभु लागी मुजने ताहारी माया [1]जोर जो, अळगारे रह्याथी होय [2]ओमगळो रे लो॥ हारे कुण जाणे अंतरगतनी [3]विण महाराज जो, [4]हेजेरे हमी चोलो छाडी [5]आमलोरे लो. ॥ ५ ॥ हारे तारे मुखने मटके अटक्यु माहरु मन जो, आखटली अणीयाळी कामणगारडी रे लो ॥ हारे मारा नयणा लपट जोवे खीण खीण तुज जो, [6]गते रे प्रभु रुप न रहे वागीआ रे लो.॥ ६ ॥ हारे प्रभु अळगा तोपण जाणज्यो करीने हजर जो, ताहरी रे बल्हिहारी हुं जाउ वारणे रे लो॥ हारे नवि रुप त्रिभुवनो मोहन फरे अरदास जो, गिरुआ री मन आणी उलट

---

१ बहु २ अर्धागळो ३ स्नेहथी ४ थोडी ५ प्रभुना ६ [illegible] मार्या [illegible]

अति घणो रे लो. ॥ ७ ॥ (इति)

॥ अथ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन. ॥

(जेम जेम ए गिरि भेटीए रे–ए देशी.)

॥ शांति जिनेश्वर साहिबा रे, शांति तणो दातार ॥ सलूणा ॥ अंतरजामी छो माहरा रे, आतमना आधार ॥ सलूणा ॥ शांति० ॥ १ ॥ चित्त चाहे प्रभु चाकरी रे, मन चाहे मलवाने काज ॥ स० ॥ नयण चाहे प्रभु निरखवा रे, द्यो दरिसण महाराज. ॥ स० ॥ शांति ॥ २ ॥ पलक न विसरो मनथकी रे, जेम मोरा मन मेह ॥ स० ॥ एक पखो केम राखीये रे, राज कपटनो नेह. ॥ स० ॥ शांति० ॥ ३ ॥ नेह नजर निहालतां रे, वाधे बमणो वान ॥ स० ॥ अखूट खजानो प्रभु ताहरो रे, दीजियें वंछित

दान ॥ म० ॥ शांति० ॥ ४ ॥ आश करे जे कोइ आपणी रे, नहीं मूकिये निराश ॥ स० ॥ सेवक जाणीने आपणो रे, दीजीये ताम दिलास ॥ म० ॥ शांति० ॥ ५ ॥ दायकनें देता थका रे, क्षण नवि लागे वार ॥ म० ॥ काज सरे निज दासना रे, ए मोहोटो उपगार ॥ स० ॥ शांति० ॥ ६ ॥ एवुं जाणीने जग धणी रे, दिल-माहिं धरजो प्यार ॥ म० ॥ रूपविजय कवि रायनो रे, मोहन जग जयकार. ॥म०॥ शांति० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

([illegible])

॥ [illegible] शांति [illegible], ध्यान

[illegible]

जिणंदको नाम असीसें, उलसित होत हम रोम[१] वपुना॥क्षण०॥भव चोगानमें फिरते पाये, छोरत में नहीं चरण प्रभुना॥क्षण०॥ १ ॥ छील्लरमें रति कबहु न पावे, जे झीले जल गंगा यमुना॥क्षण०॥ तुम सम हम शिर नाथ न थाशे, कर्म अधुना दूना धूना. ॥ क्षण० ॥ २ ॥ मोह लराइमें तेरी सहाइ, तो खिणमें छिन्न छिन्न कटुना ॥ क्षण० नांहि घटे प्रभु आनाकूंना,[२] अचिरासुत पति मोक्ष[३] वधुना. ॥ क्षण० ॥ ३ ॥ ओरकी पास में आस न करते, च्यार अनंत पसाय करुंना ॥ क्षण० ॥ क्यों कर मागत पास धतूरे, युगलिक याचक कल्पतरुना. ॥ क्षण० ॥ ४ ॥ ध्यान खडग वर तेरे आसंगे, मोह डरें सारी

१ शरीर उपरना. २ आनाकानी करवी–ना पाडवी. ३ स्त्रीना.

भीक भरना॥क्षण०॥ध्यान अरुपी तो सोइ अरुपी, भक्त ध्यावत तान्या तुन्या. ॥ क्षण० ॥ ५ ॥ अनुभव रंग नध्यो उपयोगे, ध्यान सुपानमें नाथा चूना ॥क्षण०॥ चिदानंद झकझोळ घटामें, श्री शुभ वीर विजय पडिवुन्ना [१] ॥ क्षण० ॥६॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(रतुंनी राम ह्रदयमा रहेजो रे (अथवा) सांवा आयो पामजी कुज मल्हायारे–ए देशी)

॥ शांति प्रभु विनति एक मोरी रे, वारी आंतरडी कामण गारी ॥ शांति० ॥ (ए आंकणी) विश्वसेन राजा तुज तायरे, राणी अचिरादेवी माय रे ॥ तुं मो गजपुर नगरीनो

[१] पूर्ण–पूरण करनार

राय ॥ शांति० ॥१॥ प्रभु सोवन कांति विराजे रे, मुकुटे हीरा मणि छाजे रे ॥ तारी वाणी गंगापूर गाजे ॥शांति ० ॥२॥ प्रभु चालीश धनुपनी काया रे, भवि जनना दिलमां भाया रे ॥ कांइ राज राजेसर राया ॥ शांत० ॥३ ॥ प्रभु माहारा छो अंतरजामी रे, करुं विनंति हुं शिरनामी रे ॥ चउद राजना छो तुने स्वामी ॥ शांति० ॥४॥ प्रभु पर्षदा बार मांहे रे, दीये देशना अधिक उच्छाहे रे ॥ प्रभु आंगीए भेटचा उमाहे ॥ शांति० ॥५॥ श्रावक श्राविका बहू पुण्यवंतारे, शुभ करणी करे महंता रे ॥ शांतिनाथना दरिसण करता ॥ शांति० ॥६॥ संवत अढार अगणुओ सार रे, मास कल्प कर्यों तिणि वाररे ॥ सूरि मुक्ति पदना धार ॥ शांति० ॥७॥
(इति)

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

(नंद सलुणा नंदनारे लो (गरबानी)-ए देशी)

॥ संवर रायना नंदनारे लो, त्रिभुवन जन आनंदनारे लो ॥ सुरति मोहन गारियेरे लो, तन धन जीवन वारियेरे लो ॥ संवर० ॥ १ ॥ मुजरो लीजे माहरोरे लो, हुं छु सेवक ताहरोरे लो ॥ जगतारक नही वीसरोरे लो, तो मुजने किम वीसर्योरे लो ? ॥ संवर० ॥ २ ॥ जे जेहना ते तेहनारे लो, सेवु पासा केहनारे लो? ॥ अपजस जग जे देननारे लो, न करु तेहनी सेवनारे लो ॥ संवर० ॥ ३ ॥ जे फळ चाख्या कागडेरे लो, ते हंसो किम आभडेरे लो ॥ आप विचारी देखशोरे लो, तो मुज प्रेम उवेखश्योरे लो ॥ संवर० ॥ ४ ॥ अभिनंदन जिन भेटि-येरे लो, भवसायर भय मेटिओरे लो ॥ वाचक

विमलविजय तणोरे लो, राम लहे आणंद घणोरे लो ॥ संवर० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन ॥

(कमळरस झुमकडुं (अथवा) यात्रा नवाणु करीए सलुणा, करीये पंच सनाथ सुनं०-ए देशी)

॥ श्री पद्मप्रभुजीने सेवियेरे, शिवसुंदरी भरतार ॥ कमळदळ आंखडीयां ॥ मोहनशुं मन मोही रह्युंरे, रूप तणो नहि पार ॥ भमुह धनुं वांकडीयां ॥ १ ॥ [१]अरुण कमळ सम देहडीरे, जगजीवन जिनराज॥ वियण रस सेलडीयां॥ त्रीस पूरव लख आउखुंरे, सारो वंछित काज ॥ मोहन सुख वेलडीयां. ॥ २ ॥ सहिरो सवि टोळे मळीरे, सोळ सजी शिणगार ॥ मळी सखी सेर-

---

१ राता कमळ जेवी.

टीया ॥ गुण गाती ध्रुमरी दीयेरे, करे चूडी खलकार ॥ कमळ मुख [1] गोरडीया ॥ ३ ॥ माता सुसीमा उरे धर्योरे, मुज दिलडामा देव ॥ वस्यो दिन रातडीया ॥ कोसंबी नयरी तणोरे, नाथ नमो नितमेव ॥ सुणो सखी वातडीया ॥ ४ ॥ धनुष अढीसें शोभतारे, उंचपणे जग-दीश ॥नमो साहेलडीया ॥ रामविजय प्रभु सेवतां, लहीये सयल जगीस ॥ नवे सुख वेलडीया ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(निंदा म करजो कोईनी पारकीरे–ए देशी)

॥ मुझ मन भमरो प्रभू गुण फूलडेरे, रमण करे दिन रातरे ॥ सुणजो स्वामि सुपास सोहा-

---

१ स्त्रीओ

भणारे, करजोडी कहु वातरे ॥१॥ मनडुं ते चाहे प्रभु मलवा भणीरे, पण दीसे छे अंतरायरे ॥ जीव प्रमादीरे कर्म तणे वशेरें, ते केम मलवुं थायरे ॥ मनडुं० ॥२॥ लाख चोराशी जीवा योनिमांरे, भव अटवी गति चाररे ॥ काल अनादि अनंत भमतां थकांरे, किमही न आवे पाररे ॥ मनडुं० ॥ ॥३॥ मारग बतावोरे साहेब माहेरारे,जेम आवुं तुम पायरे॥लाज वधारोरे सेवक जाणीनेरें, द्यो दरिसण जिनरायरें ॥ मनडुं० ॥ ॥४॥ मूर्ति ताहारी रूपें रूअडीरें, अनुभव पद दातारर ॥ नित्यलाभ प्रभुशुं प्रेमें वीनवेरे, तुमथी लहुं सुख साररे ॥ मनडुं० ॥५॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीये, जास सुगं०-ए देशी)

॥ परमातम परमेसरु, जगदीसर जिनराज॥ जगबंधु जगभाण बलिहारी तुम तणी, भव-जलधिमां रे शिहाज ॥१॥ तारक वारक मोहनो, धारक निज गुण रुद्धि ॥ अतिशय वंत भदंत रु-पाली शिव वधू, परणी लही निज सिद्धि ॥२॥ ज्ञान दर्शन अनंत छे, वली तुझ चरण अनंत॥ इम दानादि अनंत क्षायिकभावे थया, गुण ते अनंतानंत ॥३॥ बत्रीश वर्ण समाय छे, एकज श्लोक मझार ॥ एक वर्ण प्रभु तुज्ज न माये ज-गतमां, कम करी थुणीए उदार ॥४॥ तुज गुण कोण गणी शके, जो पण केवल होय ॥ आवि-र्भावे ¹तुज्ज सयल गुण माहरे, प्रच्छन्न

¹ प्रगट—जाहेर

[1]भावथी जोय ॥५॥ श्रीपंचाशरा पासजी, अरज करुं एक तुज्ज ॥ आविर्भावथी थाय दयाल कृपानिधि, करुणा कीजे जी मुज्ज ॥ ६ ॥ श्री जिन उत्तम ताहरी, आशा अधिक माहाराज ॥ पद्मविजय कहे एम लहुं शिव नगरीनुं, अक्षय अविचल राज ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(जिनजी चंद्रप्रभु अवधारो के नाथ निहाळजो रे लो (अथवा) वारी प्रभु दशामा शीत०-ए देशी.)

॥ जिनजी गोडी मंडण पास के, विनति सांभलो रे लो ॥ जिनजी अरज करुं सुविलास के, मूकी आमलो रे लो ॥ जिनजी तुम दर्शनने काज के, जीवडो टळवळे रे लो ॥ जिनजी महेर करो

---

१ अव्यक्त—सत्तारुपे.

महाराज के, आशा सवि फळे रे लो ॥१॥ जिनजी मनभमरो ललचाय के, प्रभुनी ओलगे रे लो ॥ जिनजी जेम तेम मेळो थाय के, ते करजो वेगे रे लो॥जिनजी दूर थका पण नेह के,माचो मानजो रे लो ॥ जिनजी तुमथी लहु गुण गेहके, अमृत पानजो र लो ॥२॥ जिनजी प्रभु नाथ्यो प्रेम के, ते केम निसरे रे लो॥जिनजी नीज जात्रा नियम के, प्रभुथी दिल ठरे रे लो ॥ जिनजी जोता ताहरु रुप के, अनुभव मार्ग रे लो ॥ जिनजी ताहारी ज्योति अनुप के, चिंता दुःख हरे रे लो ॥३॥ जिनजी एट्ठु भोजन खाय के, गींठाइनी लालचे रे लो ॥ जिनजी आतमने हित थाय के, प्रभुना गुण रुचे रे लो॥ जिनजी कर्म तणा नळ जोर के, तेहथी तारिये रे लो ॥ जिनजी समकितना जे चोर के, तेहने वा-

रिये रे ॥४॥ जिनजी निज सेवक जाणीने, मुक्ति वतावियें रे लो ॥ जिनजी करुणा रस आणीने, मनमां लावीये रे लो ॥ जिनजी वाचक सहज सुंदरनो, सेवक एम कहे रे लो ॥ जिनजी पंडीत श्री नित्य लाभ के, प्रभुथी सुख लहे रे लो ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्रीमहावीरस्वामीनुं स्तवन. ॥

(रायरे सिद्धारथ घुर पटराणी–ए देशी.)

॥वीरजी सुणो एक विनती मोरी, वात विचारो तुमे घणी रे ॥ वीर मने तारो, महावीर मने तारो, भवजळ पार उतारोने रे ॥(ए आंकणी) परिभ्रमण में अनंता रे कीधा, हजुए न आव्यो छेडलो रे ॥ तुमे तो थया प्रभु सिद्ध निरंजन, हमे तो अनंता भव भम्या रे ॥वीर मने०॥१॥ तुमे हमे वार अनंती

मेळा, रमीआ ससारी पणे रे॥ तेह प्रीत जो पूरण पाळो, तो हमने तुम सम करो रे॥ वीर० ॥२॥ तुम मम हमने जोग न जाणो, तो काइ थोडुं दीजीए रे॥ भवोभव तुम चरणनी सेवा, पामी हम घणु रीजीए रे॥ वीर०॥३॥ इन्द्रजाळीओ कहेतो रे आव्यो, गणधर पद तेहने दीओरे, अर्जुनमाळी जे नर पापी, तेहने जिन तमे उद्धर्यो रे ॥ वीर०॥४॥ चदनबाळाए अडदना बाकुल, पडिलाभ्या तुमने प्रभु रे ॥ तेहने साहुणी साची रे कीधी, शिवबहु साथे भळवी रे ॥ वीर ० ॥५॥ चरणे चडकोशीयो डशीयो, कल्प आठमे ते गयो रे ॥ गुण तो तमारा प्रभु अवगुणी गुणीने, आवी तुम सनमुख थयो रे॥ वीर० ॥६॥ निरजन प्रभु नाम धरावो, तो सहुने सरखा गणो रे॥

भेदभाव प्रभु दूर करीने, मुजशुं रमो एकमेकशुं रे ॥ वीर० ॥७॥ मोडा वेला तुमहीज तारण, हवे विलंब शा कारणे रे॥ ज्ञानतणा भवना पाप मीटावो,वारी जाउं वीर तोरा वारणे रे॥वीर०॥८॥
(इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(माता मारुदेवीना नंद देखी ताहारी०-ए देशी.)

॥ मेतो हजुर रेहेशुंजी, माहारारे साहेबजी मेतो नजीक रेहेशुंजी (ए आंकणी) साहेबनी सेवामां रहीशुं, करशुं सुख दुःख वात ॥ आण वहीने शिवसुख लइशुं, दइशुं दुरगती वार ॥ मेतो० ॥१॥सिद्धारथ राजानो नंदन, त्रिशला देवी माय॥ चोवीशमां जिनना गुण गाता, करशुं निर्मल

गात्र ॥ मेता० ॥ २ ॥ च्यार [१] पाच [२] सात [३] आठ [४] हणीने, नवशु [५] वशु नेह ॥ दश [६] पोताना दोस्त करीने,एकने [७] देहशु छेह॥मेतो० ॥३॥ठने [८]छंडी दाने[९]मडी, बोलावीशु वार[१०]॥

---

१ क्रोध, मान, माया, अने लोभ ए चार कषाय २ स्पर्शेन्द्री, रसइन्द्री, घ्राणइन्द्री, चक्षुइन्द्री, अने श्रोतइन्द्री ए पाच इन्द्रीय ३ सातभय तेना नाम (१) आलोक भय (२) परलोक भय (३) आदान भय (४) अकस्मात भय (५) वेदना भय (६) मरण भय (७) अपजश भय ४ आठ कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनीवरणीय वेदनीय, मोहनीय, आयुकर्म, नाम कर्म, गोत्रकर्म, अतराय कर्म ५ शियळनी नववाडो ६ दश भेदे जती धर्म आदरीशु ७ मिथ्यात्वने छेडी दइशु ८ पृथ्वी काय, अपकाय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतीकाय अने त्रसकाय ए छने टइशु ९ राग अने द्वेष १० बार व्रत उचरीशु

पंधर [११] जणाना पाशमां न पडशुं, तेरने [१२] देइशुं मार ॥ मेतो० ॥४॥ त्रण [१३] पांच [१४] सत्तावीश [१५] धरशुं, बेतालीश [१६] सुविशेष ॥ तेत्रीशने [१७] चोराशी [१८] टाली, करशुं आतम शुद्ध॥ मेतो० ॥५॥ सत्तर [१९] पाळी अढार [२०] अजुवाली, जीतीशुं बावीश [२१] ॥ तेवीसे [२२] ने दुर करीने, चित्त धरशुं चोवीश [२३] ॥ मेतो ०॥६॥

---

११ परमाधामी पंधर जनाना पाशमा नही पडशुं. १२ तेर काठीयाने मार देइशुं १३ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र. १४ पांच माहाव्रत. १५ सत्तावीश साधुनागुण. १६ बेतालीश दोष रहीत आहार लेइशुं १७ गुरु प्रत्ये तेत्रीश आशातना. १८ जीनभुवननी चोराशी आशातना. १९ सत्तर भेदे संजम पालीशु २० अढार दोष टालीशुं. २१ बावीश परिसह जीतीशुं. २२ त्रेवीश विषय पांच इंद्रियोना छे तेने दुर करीशु. २३ चोवीश तीर्थंकरोने चित्तमा धरशुं.

ध्यानमांथी [२४] बे परीहरशु, बेनो आदर करशु॥ ए साहेबनी आण वहाने भव सायरथी तरशु॥मेतो० ॥७, अग [२५] जिनानो मगज करीये, तराये भव-जळ तीर ॥ उदयरत्तन कहे त्रिशला नंदन, जय जय श्री महावीर ॥ मेतो हजुर० ॥८॥ (इति)

॥ अथ सिद्ध भगवाननुं स्तवन. ॥

(हमीरीयानी (अथवा) संभव जिन अवधारीये -ए देशी)

॥ श्री गौतम पृच्छा करे, विनय करी शीश नमाय ॥ प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक में सुण्युं, कृपा करी मोय बताय ॥ प्रभुजी ॥ शिवपुर नगर

२४ आर्तध्यान अने रौद्रध्यान ए बे परीहरशु, धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बेनो आदर करशु २५ सिद्ध भगवानने अंग नथी, कर्म नथी, माटे एमनो संग करशु

सोहामणुं ॥ १ ॥ (ए आंकणी) ॥ आठ कर्म अलगां करी, सारयां आतम काम हो ॥ प्र० ॥ छुटचा संसारनां दुःखथकी, तेणे रहेवानुं किहां ठाम हो ॥प्र० ॥शि ०॥ २॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमां, सिद्ध शिलातणुं ठाम हो गौतम॥ स्वर्ग छव्वीशनी उपरें, तेहनां बार नाम हो ॥गौ० ॥ शि०॥३॥ लाख पिस्तालीश जोजना, लांबी पोहोली जाण हो ॥गौ०॥ आठ जोजन जाडी विचें, छेडे मांख पंख ज्युं जाण हो ॥गौ०॥शि० ॥४॥ उज्वल हार मोती तणो, गोदुग्ध शंख वखाण हो ॥गौ०॥ ते थकी ऊजली अति घणी, उलट छत्र संठाण हो॥गौ०॥ शि० ॥५॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती, गठारी मठारी जाण हो॥गौ०॥ फटक रत्न थकी निर्मली, सुंआली अत्यंत वखाण हो ॥गौ०॥शि०॥६॥ सिद्धशिला ओलंघी गया,

अधर रह्या सिद्ध राज हो ॥गो०॥ अलोकशु जाई अड्या, सान्या आतम काज हो ॥गो०॥शि०॥७॥ जन्म नहीं मरण नहीं, नही जरा नही रोग हो ॥ गो०॥ वैरा नहीं मित्रज नहीं, नही सजोग निजोग हो ॥गो०॥शि०॥८॥ भूख नहीं तृष्णा नहीं, नहीं हर्ष नही सोग हो ॥ गो० ॥ कर्म नही काया नही, नहीं विषयारस योग हो ॥गो०॥ शि०॥९॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गो० ॥ बोले नहीं चाले नहीं मौनपणु नही खेद हो ॥ गो० ॥ शि० ॥१०॥ गाम नगर तिहां कोई नहीं, नहीं वसती न उजाड हो ॥ गो० ॥ काल सुगाल वर्त्ते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो ॥ गो० ॥ शि० ॥ ॥ ११ ॥ राजा नहीं परजा नही, नहीं ठाकुर नहीं दास हो ॥गो०॥ मुक्तिमा गुरु चेला नहीं,

नहीं लघू वडाई तास हो ॥गौ०॥ शि० ॥ १२ ॥
अनंता सुखमां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्र-
काश हो ॥ गौ० ॥ सहु कोईनें सुख सारीखां,
सघलानें अविचल वास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥
१३॥ अनंत सिद्ध मुगतें गया, वली अनंता जाय
हो ॥ गौ० ॥ अवर जग्या रूंधे नही, ज्योतिमां
ज्योति समाय हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १४॥ के-
वल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन खास हो ॥
गौ० ॥ खायक समकित दीपतुं, कदीय न हो-
वे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥१५॥ सिद्ध
स्वरूप जे ओलखे, आणी मन वैराग हो ॥गौ०
॥ शिवसुंदरी वेंगें वरे, नय कहे सुख अथाग
हो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥१६॥ (इति)

———

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

(जीहो कुवर बेठो गोखडे-ए देशी)

॥ जीहो शीतल जिन जगनो धणी, जीहो शीतल दर्शन जाम ॥ जीहो शीतल चदननी परे, जीहो पसरयो सुजस सुनाम ॥ सुगुणनर सेवो शीतलनाथ, ए तो अविचल शिवसुख साथ ॥सुगुणनर सेवो०॥१॥ (ए आंकणी) जीहो विषय दावानळ ओलवे, जीहो ध्यान तणो लवलेश ॥ जीहो[१] गारव रज ते उपशमे, जीहो दूरि[२] दुरित कलेश ॥सुगु० ॥२॥ जीहो मलयाचल शुभ वासथी, जीहो कंटक होये सुगध ॥ जीहो सज्जन सहु पण आदरे, जीहो ए उत्तम

---

१ रस ऋद्धि अने शाता ए त्रण गारव रुपी धुळ शांत थई जाय २ पाप

[1] अनुबंध ॥ सुगु० ॥३॥ जीहो रोम रोम तनु उल्लसे, जीहो आनंद अधिक अथाह ॥ जीहो शीतलवाणी [2] सुधारसें, जीहो सींच्यो वे परवाह ॥सुगु० ॥ ४ ॥ जीहो शीतलताने कारणे, जीहो आणो समता भाव ॥ जीहो ज्ञानविमल सुख-संपदा, जीहो होये अधिक जमाव ॥सुगु०॥५॥ (इति)



॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन. ॥

(कीसके चेले कीसके पूत—ए देशी.)

॥ शीतलनाथ सुणोअरदास, साहिब आपो पद कमके वास ॥ सांइ सांभळो ॥ (ए आंकणी. मोह महीपति मोटो चोर, नव नव रुप धरी करे जोर ॥ सां० ॥१॥ मातापिता वधु भगिनी भ्रात, सासु

१ अभ्यास. २ अमृत रसथी.

ससरो पितरीया जात ॥ सा० ॥ कुड्न नेप करी किरतार, एह भमाडे बहु ससार ॥ सा० ॥२॥ पट दर्शननु लेइ रुप, जगने पाडे भवनें कूप ॥ सा०॥ जो छोडण चाहे सुणी सूत,[1] रुप धरे एह बीजो धूत ॥ सा० ॥ ३ ॥ निमग्न कुमति मन उन्माद, आणा लोपी माडे वाद ॥ सा०॥ आगम भाखीनी मति मद, आरोपे निजमतनो कंद ॥ सा० ॥४॥ मोह तणो एहनो प्रपच, स्वामी हवें स्यो कीजे सच[2]॥ सा०॥ काड नतानो एक उपाय, जेम मोह नाशी दूर जाय ॥ सा० ॥५॥ नेह नजर भरी नाथ निहाळ, सुखीयो थाउ त्रण्ये काळ॥ सा० ॥ कीर्तीनिमळ प्रभु कर उपकार, लक्ष्मी कहे तु करुणागार सा०॥६॥(इति)

1 सूत्र सिद्धांत 2 उपाय

॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तवन ॥

(देखो गति दैवनीरे (अथवा) ओश वरश घर मां वस्यारे, सुखभर वामानंद-ए देशी.)

॥ ज्ञान अनंतु ताहररे, दर्शण ताहारे अनंत ॥ सुख अनंतमय साहिबारे, वीर्य पण उलस्युं अनंत. ॥ अनंत जिन आपजो रे, मुज एह अनंतां च्यार ॥ अनं० ॥ मुने नहीं अवरशुं प्यार ॥ अनं० ॥ तुजने आपंता नहीं वार ॥ अनं० ॥ ए छे तुज जशनो ठार ॥ अनंत जिन आपजोरे. (ए आंकणी) ॥१॥ आप खजानो न खोलवोरे, नहीं मळवानी चिंत ॥ म्हारे पोते छे सवे रे, पण विचें आवरणनी भींत ॥ अनं० ॥२॥ तप जप कीरीया मोघेंरे, मांगी पण मांगी न जाय ॥ पण तुज आण लहे थके रे, एक हेलामां परही थाय ॥ अनं० ॥३॥ मारुदेवी निज

गातने रे, जिम स्वरूप गुणमा दीप ॥ पार
परागु विचारता रे, तम केम वीतरागता जिष्ट
॥ अनं० ॥४॥ ते माटे नग अधिकार, तुज
प्रार्थना ज कोइ होक ॥ नहीं आपो आसगीर,
तिहां न घटे कापरी टोक ॥ अन० ॥५॥ ते-
हने तेहनु आपनु रे, जिहां थयो उपजे छ खेद॥
प्रार्थना करता ताहरे रे, प्रभुनाहनो पण नहीं
छेद ॥ अन० ॥६॥ पाम्या पामे पामशे रे, जे
कोइ ज्ञानादि अनंत ॥ ते तुज आणाथी लवे
रे, कहे मानविजय उल्लमत ॥ अन०॥७॥ (इति)

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(रसीयानी देशी (अथवा) प्रणमु पास जिनेश्वर
प्रेमसु, आणी आणंद अंग चतुरनर-ए देशी)

॥ धर्म जिनेश्वर मुज मनडे वस्यो, राग उ-

मंगेरे अंग ॥ साहिबजी ॥ काळे पलटे हो रंग पतंगनो, चोळनो न लहे रे भंग ॥सा० ॥ धर्म० ॥१॥ लाख गमे दीठा सुर अभिनवा, तेहथी न [1] राचे रे चित्त ॥सा०॥ [2] माझी अंतरगतीनो तुं मिल्यो, मन मानितो रे मित्त ॥ सा० धर्म० ॥२॥ संभारे वाधे बहु मोहनी, वीसार्यो किम जाय ॥सा०॥ संचरतां फिरतां मुज हियडले, खिण खिण बेसेरे आय ॥सा० धर्म०॥३॥ जीवन तो विण जंप न जीवने, आतम तुज गुण लीन ॥सा०॥ तपि तपि कलपे तलफे जीवडो [3] अलप जळें जिम मीन ॥सा० धर्म०॥४॥ प्रेम संभाळी टाळी आमळो, वातलडी धरी कान ॥ सा०॥ कांति कहे करुणानिधि करी कृपा, सेवकने सनमान ॥ साहिबजी धर्म० ॥५॥ (इति)

१ गोठे. २ मानी. ३ थोडा पाणीमां ४ माछली.

॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

(कौण भरे री जल कौण भरे, दल बादलीगे पाणी कोण भरे—ए देशी)

॥ कौन रमे चित्त कौन रमे, मल्लिनाथजी विना चित्त कौन रमे ॥ (ए आकणी) माता प्रभावती राणी जायो, कुंभनृपति सुत [1]काम दमे ॥ म० ॥१॥ कामकुंभ जिम [2]कामित पूरे, कुंभ लंछन जिन मुख गमे ॥ म० ॥२॥ मिथिलानयरी जनम प्रभुको, दर्शन देखत दुःख शमे ॥ म० ॥३॥ घेवर भोजन सरसा पीरस्या, कुकस बाकस कौण जिमे ॥ म० ॥४॥ नील वरण प्रभु कांतिके आगे, मरकत मणि छवि दूर भमे ॥ म० ॥५॥ न्यायसागर प्रभु जगनो पामी, हरि हर ब्रह्मा कौण नमे ॥ म० ॥६॥ (इति)

---

[1] कामदेवनो नाश करनार [2] मनकामना

॥ श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

(प्रथम गोवालीया तणे भवेजी रे (अथवा) समकितनुं मूल जाणीयेजी–ए दशी)

॥ मल्लि तणा गुण गायवाजी, उलट अंगे थाय ॥ [1] उत्कंठा अधिकी हुयेंजी, हयडुं हरखे भराय ॥ सुणिजी ॥ खिण मन आणो ठाम ॥ समरो प्रभुनुं नाम ॥ सु० ॥ जिम सांझे तुम काम ॥ सुणिजी खिण० ॥ १ ॥ (ए आंकणी) कुंभराय कुळ दीपिकारे, दीपावी स्त्री जात ॥ सुर नर पति सेवा करेरे, मोटी अचरिज वात ॥ सुणिजी खिण० ॥ २ ॥ करी सोवननी पूतलीरे, मांहि मूकावीयो आहार ॥ पूरव मित्र समझावीयारे, ते देखाडि विकार ॥ सुणिजी खिण० ॥ ३ ॥ तिम अम्हनें प्रतिबोधवाजी, मांडो कोइ उपाय

---

[1] इच्छा.

॥ विनय कहे प्रभु तिम करोजी, जिम अम्ह मोह [1]पलाय ॥ सुणिजी खिण०॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(सुणो चदाजी, सीमधर परमातम पासे जायज्यो–ए देशी)

॥ शामळीया लाल, तोरणथी रथ फेरयो कारण कहोने ॥ गुणगिरुआ लाल, मुजने मूकी चाल्या दरिशण द्योने ॥ ए आकणी) हु छु नारि ते तमारी, तुम्हे सें प्रिति मूकी अम्हारी ॥ तुम्हे सयम स्त्री मनमा धारी ॥शाम०॥१॥ तुम्हे पशु उपर किरपा आणी, तुम्हे माहरी वात न को आणी ॥ तुम्ह विण परणू नहीं को प्राणी ॥ शाम०॥२॥ आठ भवोनी प्रीतलडी, मूकीने चा-

---

[1] जाते रहे

ल्या रीतलडी ॥ नही सज्जननी ए रीतलडी ॥ शाम०॥३॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, तो[१] कर मुकावुं हुं माथे ॥ पण जावुं प्रभुजीनी साथे ॥शाम०॥४॥ इम कहि प्रभु हाथे व्रत लीधो, पोतानो कारज सवि कीधो ॥ पकडचो मारग एणे शिव सीधो ॥शाम०॥५॥ चोपन दिन प्रभुजी तप करीओ[२], पणपन्ने केवल वर धरीओ ॥ पण सत[३] छत्रिश शुं शिव वरिओ ॥शाम०॥ ॥५॥ इम त्रण कल्याणक गिरनारे, पाम्या ते जिन उत्तम तारे ॥ जो पाद पद्म तस शिर धारे ॥ शाम० ॥ ७ ॥ (इति)

---

१ हाथ २ पंचावन. ३ पाचसे छत्रीशथी.

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(बालपणे आपण ससनेही (अथवा) बीजे भव वरथानक तप करी-ए देशी)

॥ वीर जिणेसर साहिब मेरा, पार न लहु तेरा ॥ मेहर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो ॥ जिनजी ॥ अब हु शरणे आयो ॥ १ ॥ (ए आकणी) गर्भावास तणा दुःख महोटा, उधे मस्तक रहियो ॥ मळ मूतर माहे लपटाणो, एहना दुःख में सहिया हो ॥जिन०॥ ॥ २ ॥ नरक निगोदमा उपनो ने चवियो, सूक्ष्म बादर थइयो ॥ वेहेंचाणो सुइने अग्रभागे मान तिहा किहा रहियो हो ॥ जिन० ॥ ३ ॥ नरक तणी वेदना अति उछमी, सही ते जीवे बहू ॥ परमाधामीने वश पडीयो, ते जाणो तमे

सहू हो ॥ जिन० ॥ ४ ॥ तिर्यंच तणा भव कीधा घणेरा, विवेक नहींय लगार ॥ निशि-दिननो व्यवहार न जाण्यो, केम उतराये पार हो ॥ जिन० ॥ ५ ॥ देव तणी गति पुण्ये हुं पाम्यो, विषयारसमां भीनो ॥ व्रत पच्चक्खाण उदय नवि आव्यां, तान मान मांहे लीनो हो ॥जिन०॥६॥ मनुष्य जन्म ने धर्म सामग्री, पाम्यो छुं बहु पुण्ये ॥ राग द्वेष मांहे बहू भळियो, न टळी ममता बुद्धि हो ॥ जिन० ॥ ७ ॥ एक कंचन ने बीजी कामिनी, तेहशुं मनडुं बांधुं ॥ तेना भोग लेवाने हुं शुरो, केम करी जिनधर्म साधुं हो ॥ जिन० ॥ ८ ॥ मननी दोड कीधी अति झाझी, हुं छउं कोक जड जेहवो ॥ कलि-कालि कल्प में जन्म गमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो ॥ जिन० ॥ ९ ॥ गुरु उपदेशमां

हु नथी भीनो, नानि सद्दहणा स्वामी ॥ हवे वडाई जोईये तमारी, खीजमतमाहि छे खामी हो ॥ जिन० ॥ १० ॥ चार गति माहे रड-वडीयो, तो ए न सीधा काज ॥ ऋषभ कहे तारो सेवकने, वाहे ग्रह्यानी लाज हो ॥जिन० ॥ ११ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(कडखानी देशी (अथवा) पास सखेश्वरा सार करो सेवका देवका ए वडीवार लागे-ए देशी)

॥ तार हो तार प्रभु, मुझ सेवक भणी जगतमा एटलु सुजश लीजे॥दास अवगुण भर्यो, जाणी पोता तणो, दयानिधि दीनपर दया कीजे ॥तार० ॥ १ ॥ राग द्वेषे भर्यो, मोह वैरी नड्यो,

लोकनी रीतिमां घणुं ए रातो ॥ क्रोध वश ध-
मधम्यो, शुद्ध गुण नवि रम्यो, भम्यो भवमांहि
हुं विषय मातो ॥ तार० ॥ २ ॥ आदर्यु आचरण,
लोक उपचारथी, शास्त्र अभ्यास पण कांइ की-
धो ॥ शुद्ध श्रद्धा न वळि, आत्म अवलंब विनु,
तेहवो कार्य तिने कोन सीधो ॥ तार० ॥ ३ ॥ स्वा-
मी दरिसण समो, निमित्त लही निर्मळो, जो
उपादान ए शुचि न थाशे ॥ दोष को वस्तुनो,
अहवा उद्यम तणो, स्वामी सेवा लही निकट ला-
शे ॥ तार० ॥ ४ ॥ स्वामी गुण ओळखी, स्वामी
ने जे भजे, दरिसण शुद्धता तेह पामे ॥ ज्ञान चा-
रित्र तप, वीर्य उल्लासथी, कर्म झींपी वसे मुक्ति
धाम ॥ तार० ॥ ५ ॥ जगत वत्सल, महावीर जिन-
वर सुणी, चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो ॥
तारजो बापजी, बिरुद निज राखवा, दासनी से-

चना गरे जोगो ॥तार०॥६॥ विनति मानज्यो, शक्ति ए आपजो, भावस्याद्वादता शुद्ध भासे॥ साधि साधक दशा, सिद्धता अनुभवी, देवचंद्र निमल प्रभुता प्रकासे ॥तार० ॥ ७॥ (इति)

॥ श्री महावीर प्रभुने संदेश ॥

(ओ भवजी संदेशो कहेज्यो मारा श्यामने (अथवा) प्रीतडली बंधाणीरे अजीत जिणदप्रभु-ए देशी)

॥ पथीडा संदेशो रे कहेजो म्हारा नाथने, वर्द्धमान जे चोवीसमो जिनराज जो॥ राज इहाथी मात ऊंचा तुमे जई वस्या, ल्याता नम्ना बेठा हृदये मोझार जो ॥पथीडा०॥१॥ जे दिनथी प्रभु आप इहाथी सिधावीया, ते दिनथी प्रभु ज्ञान खजानो लुटायजो ॥ आप जे नर रक्षाकार राख्या हता, ते तो मने आप केटे सिद्धाय जो

॥पंथीडा०॥२॥ केवल ने मनःपर्यव दोय नाशी गया, लघू भ्राता तस ओहिनाण पण जाय जो॥ आयो अज्ञान अंधाराने साथे लई, पसर्यो भरतना चारे खुणां मांय जो ॥ पंथीडा० ॥३॥ आपे जे प्रभु धर्म वृक्ष रोप्यो हतो, ते तो खंडोखंड करी वहेंचाय जो ॥ दिगंबर श्वेतांबर आदि अनेक जे, निज निज मतिए गच्छा गच्छ ठराय जो ॥पंथीडा० ॥४॥ एता पंथ छतां हेमो तृप्त न थयो, तेणे कछमां एक अबाधि पंथ जगाय जो ॥ कहे जिनदास मुंझायो पंथ देखी घणा, केणे पंथे पोहचुं आप कने सो कहेवाय जो ॥ पंथीडा० ॥ ५ ॥ (इति)

॥श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(आवो आवो जशोदाना कंत, अम घेर आवोरे-ए देशी)

॥ महावीर भज्याथी मोक्ष, विश्वनो थावे रे॥ भजो महावीर अजपा जाप, द्रव्यने भावेरे ॥ महावीर० ॥१॥ (ए आंकणी) आप असंख्य प्रदेशी स्वरूप, पिंडमां व्याप्यारे ॥ वराटे सहु ब्रह्मांड, समष्टिए व्याप्यारे ॥ महावीर० ॥२॥ म्हने व्हाला तमे भगवान्, सहु पर्यायीरे ॥ म्हारा हैडामां आप हजूर, बिराजो सबाइरे ॥ महावीर० ॥३॥ श्वासोश्वासे तमारो जाप, पापने टाळे रे ॥ भूल्याने मार्ग बतावी, तुम पद न्हाळे रे ॥ महावीर० ॥४॥ आप रक्षण करता देव, छो प्रतिपाळ रे ॥ भक्तिना दिलमां वास, छो

रखवाळ रे ॥ महावीर० ॥५॥ वीर समर्यां पाप अनंत, क्षणमां जावेरे ॥ म्हने आशरो ताहरो एक, अन्य न भावेरे ॥ महावीर० ॥६॥ करे हरिहर ताहरी सेव, देव ने देवी रे ॥ खातां पीतां हरतां याद आवे छे सेवी रे ॥ महावीर० ॥७॥ म्हारी राखो महावीर लाज, काज सुधारो रे ॥ षट् चक्रोमां तुं एक, प्रगटचो प्यारो रे ॥ महावीर० ॥८॥ ज्यां त्यां ध्यावुं त्यांहि तुंहि तुंहि, स्हामो सुहातो रे ॥ करी दर्शन त्हारां देव, सुख बहु पातो रे ॥ महावीर० ॥९॥ वीर नाम समो नहीं जाप, जगमां दीठोरे ॥ म्हने लागे छे दिलमांही, सर्वथी मीठोरे ॥ महावीर० ॥१०॥ अरिहंत प्रभु महावीर, लय तव लागीरे॥ म्हारी कायामां रहेनार, थयो हुं सौभागीरे ॥ महावीर० ॥११॥ एक रूपे मळी भगवान, तु-

जमा समायो रे ॥ बुद्धिसागर महावीर देव, आत्म सुहायोरे ॥ महावीर० ॥१२॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन. ॥

(प्रभु पडिमा पूजीने पोसह करीए रे–ए देशी)

॥ जिनवर वीर प्रभुना दर्शन कीजेरे, त्यागीने दुःखदायी ममारने ॥ बार वर्ष निःसंगे चेतन घ्यायोरे, ध्यान थकी सफल कर्यो अवतारने ॥ समताए तजीया मोह विकारने ॥ धर्म क्षमा धरीने तजीया खारने ॥ धन्य धन्यरे वीर प्रभु अणगारने ॥ समजीने चेतन ! ! शिक्षा धारने ॥समताए० ॥ १ ॥ (ए आंकणी) गुण स्थानक सोपाने ध्याने चढियारे, मुक्तिना महेलेरे प्रभुजी वीराजीया ॥ कर्म कटक संहारी जिनपद लीधुरे, लोकांते सिद्ध थइने गाजीया

॥ समताए०॥२॥ क्षायिकभावे नव ऋद्धिना भोगीरे, उपयोगी समये समये सर्वना ॥ रूपारूपी सहज स्वरूपी योगीरे, भवथकी महावीर रे वर्तं गर्वना ॥समताए०॥३॥ कृपा करीने ध्याने दिलमां आवोरे, विषयादिक वैरी शीघ्र निवारजो॥ गांडोपण आ बाळ तमारो जाणीरे, भवसागरनी पारे प्रभुजी उतारजो॥समताए०॥४॥ बाळ तमारो कहीने प्रभु बोलावोरे, व्हाला वीर!! सेवक व्हारे आवजो ॥ जिनवर दर्शन स्पर्शन करवा रसीयोरे, अंतरना स्वाभीरे करुणा लावजो॥ समताए० ॥५॥ म्हारो कही बोलावो हस्त ग्रहीनेरे, सेवकने तारे रे शोभा आपनी ॥ बुद्धिसागर वीर जिनेश्वर तारो रे, भक्ति एक साचीरे वीर मा बापनी ॥ समताए० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(वेकुंठ मारग वेगळोरे -(अथवा) लाल गुलाल
आगी बनीरे-ए देशी)

॥ व्हाला वीर प्रभुने नितनु रे, प्रेमे प्रणमु पाय हो लाल ॥ मटाडोने मनना आमळारे, मनक सुखिया थाय हो लाल ॥ व्हाला वीर० ॥१॥ (ए आकणी) आडु अवळु मनडु आथडे रे, जेम हरायु ढोर हो लाल ॥ वानर पेठे भटके वेगथीरे, करतु शोर बकोर हो लाल ॥व्हाला० ॥२॥ लाखो लालचथी लपटायलु रे, ठरे नहीं एक ठाम हो लाल ॥ समजाव्यु समजे नहीं शास्त्रथीरे, करे नठारा काम हो लाल ॥व्हाला० ॥३॥ आशा उंडी अतर राखतु रे, लेश न राखे लाज हो लाल ॥ डहापण दरियामाहि डबोळ-

तुं रे, करे न धर्मनुं काज हो लाल ॥ व्हाला० ॥४॥ क्षणमां शाणुं थइने शोभतुं रे, घडीमां गांडु थाय हो लाल ॥ रागी द्वेषी घडीमां घणुं हुवे रे लोभे बहु लपटाय हो लाल ॥व्हाला०॥५॥ समजाव्युं समता राखे नहीं रे, क्षणमां छटकी जाय हो लाल ॥ शांति तेथी लेश न संपजे रे, आपोने उपाय हो लाल ॥ व्हाला० ॥६॥ गरीबनो बेली तुं गाजतो रे, राखो सेवक लाज हो लाल ॥ व्हार करोने विश्वंभर विभु रे, करजो सेवक काज हो लाल ॥ व्हाला०॥७॥ आप प्रभुनी म्हारे ओथ छे रे, शरणुं तुं संसार हो लाल ॥ बुद्धिसागर तारो बापजी रे, अडवडीआं आधार हो लाल ॥ व्हाला० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(मन मंदिर आवो रे, कहु एक वातडली-ए देशी)

॥ मन मंदिर वसिया रे, महावीर जयकारी ॥ वर्द्धमान जिनेश्वर रे, सदा मुज उपकारी ॥ मन मंदिर० ॥१॥ (ए आकणी) सर्व दर्शन शोध्या रे भम्यो जग बहु ठामे ॥ महावीर मळ्या रे, ठरी बेठो हामे ॥ मन० ॥२॥ देव देवीओ दीठा रे, नहीं कोइ वीर तोले ॥ मन मस्त बन्यो हुं रे, प्रभु अमृत बोले ॥ मन० ॥३॥ दुनियानी न परवा रे, नथी वपुनी ममता ॥ महावीरना शरणे रे, हृदय प्रगटी समता ॥ मन० ॥४॥ म्हारा मनमां तनमां रे, महावीर जिन भरिया ॥ नाहय आतर ज्योते रे, महावीर छो दरिया ॥ मन० ॥५॥ जगजीवन स्वामी रे, मळ्या एक विश्रामी ॥ इच्छु बीजुं न बीजु र,

अनंता छो नामी ॥ मन० ॥६॥ हाथ झाल्यो तमारो रे, वर्या में निर्धारी ॥ तव धर्म स्वीकार्यो रे, निश्चय निर्धारी ॥ मन० ॥७॥ धातो धात रंगाणी रे, महावीर तुज प्रेमे ॥ देह भान न रहेतुं रे, रह्यो एक तुज नेमे ॥ मन० ॥८॥ नहीं पुद्गल इच्छा रे, हृदय मुज तुं वसियो ॥ पूर्ण शुद्धोपयोगी रे, के निरखी उल्लसियो ॥ मन० ॥९॥ हवे रहियो न भेद रे, अभेदे रह्यो प्रेमे ॥ भव मुक्तिमां समतारे, सदा आतम क्षेमे ॥ मन० ॥१०॥ तुम विण नहीं वीजुं रे, दृष्टिथी देखातुं ॥ परब्रह्म परातम रे, प्रभु रूप परखातुं ॥ मन०॥११॥ हवे उघाडुं बोलुंरे, रहुं नहीं को छानुं ॥ पूर्ण प्रेमथी परख्यारे, पडयुं तुजथी पानुं ॥ मन० ॥१२॥ वीर वीर जपंतां रे, रह्यो तुज गुण गातो ॥ मागवानुं न

रहियु रे, सगो तुजथी नातो ॥ मन० ॥१३॥ मन देहना फेगरे, नथी तुजमा मळता ॥ नथी भयने आमक्ति रे, महानीरथी मळता ॥ मन० ॥१४॥एक अनेक रुपे रे, चिदानद छो प्यारा॥ बुध्दिसागर नळियारे, आनन्द आधारा ॥ मन० ॥१५॥ (इति)

॥ श्री अभिनंदन जिन स्तवन ॥

(जगपती नायक नेमीजिणद, द्वारिका नगरी समोसर्या (अथवा) फनमल पाणीडा गइनी नळाव, काटो भाग्यो पगनी लाकमा–ए देशी)

॥ प्रभुजी अभिनदन जगनाथ, शिनपुर साथ भलो मळयो ॥ प्रभुजी तस्कर पति रागादि तेहनो भय दूर टळयो ॥१॥ प्रभुजी तुज सरिखो सथवाह, बाह्य ग्रहीने उद्धरे ॥ प्रभुजी दु ए

दायक जग जेह, ते वैरी तिहां शुं करे ॥ २ ॥ प्रभुजी भव भमतां बहु काळ, चक्र अनंता वहि गया ॥ प्रभुजी इहां मिल्या जीनराज, काज सवे मुज सिध थया ॥३॥ प्रभुजी ज्यो हवे सिद्धि विलंब, प्राणिनो अवसर भावियो ॥ प्रभुजी महिर करो महाराज, तुम चरणे हुं आवियो॥४॥ प्रभुजी तारण तरण जहाज,आज भले प्रभु भेटिया ॥ प्रभुजी वाघजी मुनिनो भाण, कहे भव दुःख सवि मेटीया ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री कुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

(ललनानी देशी (अथवा) देश मनोहर मालवों–ए देशी)

॥ करुणा कुंथु जिणंदनी, त्रिभुवन मंडळ मांहि ॥ ललना ॥ परमेश पंच कल्याणके,प्रगट

उद्योत उछाह ।।ललना करुणा०॥१॥ सुर सुत तन खट कायने, गरे अचरिज रुप ॥ ललना ॥ भाव अहिमक गुण तणो, एं व्यवहार अनुप ॥ ल० करु०॥२॥ दाधो दुष्ट व्यंतर थकी, [1]छाग रह्यो पग आय ॥ ललना ॥ परम कृपाळ प्रभु मिळे, कहो किम [2]अळगो थाय ॥ललना करु० ॥३॥ ग्रात अनुमत वय तणो, लोकोत्तर आचार ॥ ललना ॥ उदायिक पण अरिहतनो, न धरे विषय विकार ॥ललना करु०॥४॥ असख्य प्र-देश परिणमे, अव्याबाव अनंत ॥ललना॥ वा-नगी अगनी मटले, निहाग इति समंतत ॥ ललना करु०॥५॥ जगजतु जिनवर तणे, शर-णे सिद्धि लहत ॥ ललना ॥ क्षमाविजय जिन देशना, जलधर परे वरसत ॥ ललना करुणा० ॥ ६ ॥ (इति)

---

[1] बकरो [2] दूर [3] मरकी विगेरे रोग उत्पात

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

(कंत तमाकु परिहरो-ए देशी)

॥ श्री मुनिसुव्रत साहिबो, सेवो दिल एकंत ॥ मोरालाल ॥ वीशमो जिन मन वीसम्यो, ए सम अवर न संत ॥मोरा लाल॥श्री मुनि०॥१॥ (ए आंकणी) पदमावती उर उपन्यो, पुत्र रयण परगट्ट ॥मोरा०॥ विद्याधर सुरपति सवे, माने महीपति थट्ट ॥मोरा०श्री मुनि०॥२॥ राय सुमित्र कुळ सायरे, उग्यो शारद चंद ॥मोरा०॥ अतुली बळ अवनी जयो, महिमा मेरु गिरिंद ॥ ॥ मोरा० श्री मुनि० ॥ ३ ॥ मन मान्याशुं [1]गोठडी, जो करीये किरतार ॥मोरा० ॥ पाणी दुध [2]पइंतरो, तो लहिये एकवार ॥मोरा० श्री मुनि० ॥४॥ [3]कच्छप लंछन जिनवरु, शामळी

---

१ दोस्ती. २ जुदापणानी पिछाण. ३ काचबानुं.

ओ सुकुमाळ ॥मोरा०॥ मेरुविजय गुरु शिष्यने,
दीजे मंगळमाळ॥मोरा०॥ श्री मुनि०॥५॥ इति)

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

(साहिबा अजित जिणंद जुहारियें ए देशी)

॥ साहेबा श्री सीमधर साहेबा, तुम प्रभु देवाधि देव ॥ सनमुख जूओने महारा साहेबा, मन शुद्धे करु तुम सेव ॥ एकवार मळोने महारा साहेबा (ए आंकणी) ॥ १ ॥ साहेबा सुख दुःख वातो महारे अति घणी, कोण आगळ कहु नाथ ॥ साहेबा केवळज्ञानी प्रभु जो मळे, तो थाऊं हुं रे सनाथ ॥ एकवार० ॥२॥ साहेबा भरत क्षेत्रमा हु अवतर्यो, ओछु एटलुं पून्य ॥ साहेबा ज्ञानी विरह पड्यो आकरो, ज्ञान रह्यो अति न्यून ॥ एकवार० ॥३॥ साहेबा दश

दृष्टांते दोहिलो. उत्तम कुल सोभाग ॥ साहेबा पाम्यो पण हारी गयो, जेम रत्ने उडाड्यो काग ॥ एकवार० ॥४॥ साहेबा षडरस भोजन बहु कर्या, तृप्ति न पाम्यो लगार ॥ साहेबा हुं रे अनादि भूलमां, रझळ्यो घणो संसार ॥ एकवार० ॥५॥ साहेबा सज्जन कुटुंब मेळा घणां, तेहने दुःखे दुःखी थाय ॥ साहेबा जीव एकने कर्म जूजूआं, तेहथी दुर्गति जाय ॥ एकवार० ॥६॥ साहेबा धन मेळववा हुं धसमस्यो, तृष्णानो नाव्यो पार ॥ साहेबा लोभे लटपट बहु करी, न जोयो पुण्य ने पाप व्यापार ॥ एकवार० ॥७॥ साहेबा जेम शुद्धाशुद्ध वस्तु छे, रवि करे तेह प्रकाश ॥ साहेबा तेम रे ज्ञानी मळे थके, ते तो आपे समकित वास ॥ एकवार० ॥८॥ साहेबा मेघ वरसे छे चाटमां, वरसे

छे गामो गाम ॥ साहेबा ठाम कुठाम जुए नहीं, एहना महोटाना काम ॥ एकवार० ॥९॥ साहेबा हुं वस्यो भरतने छेडले, तुमे वस्या महाविदेह मोझार ॥ साहेब दूर रही करुं वंदना, भव समुद्र उतारो पार ॥ एकवार० ॥१०॥ साहेबा तुम पासे देव घणा वसे, एक मोकलजो महाराज ॥ साहेबा मुखनो संदेशो सांभली, तो सहेजे सरे मुज काज ॥ एकवार० ॥११॥ साहेबा हुं तुम पगनी मोजडी, हुं तुम दासनो दास ॥ साहेबा ज्ञानविमळ सूरि एम भणे, मने राखो तमारी पास ॥ एकवार० ॥१२॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

(माहावीर प्रभु घर आवे-ए देशी)

॥ सिद्धाचल गिरि सुहावे, अनंत जनत कु-

हावे ॥ भेद पंचरथी शिव जावे. गुण अगुरु-लघु निपजावे रे ॥ विमलाचल वेगे वधावो, गिरिराज तणा गुण गावोरे ॥ विमला० ॥१॥ (ए आंकणी) जितारी अभिग्रह लीधो, दिन सातमे भोजन कीधो॥ शुकराजाये राज ते लीधो, शत्रुंजय नाम ते दीधोरे ॥ विमलाचल० ॥२॥ देव दानव इण गिरि आवे, जिनराजने शीश नमावे॥ सुत्र मांहे नाच नचावे, जोगावंचक फळ पावेरे॥ विम० ॥३॥ विद्याचारण मुनि वरिया, मर्कट फळ जल संचरिया॥ आकाशे पवनसें चालिया, देखी हेमागिरि हेठा उतरिया रे ॥ विम०॥४॥ प्रभु देखीने आनंद पावे, जिनराजने शीश नमावे ॥ देव साथे भावना भावे. पछी इच्छित स्थानके जावे रे॥ विम० ॥५॥ ज्ञान दर्शन जेहथी लहिये, नवमो श्रावक गुण वहिये ॥ संसारनी

रीते रहिये, जिन शासन तीरथ कहिये रे ॥ निम०
॥६॥ सहु तीरथनो ए राजा, सूर्यकुंडभा जळ
ताजा ॥ नाहाता जिन आनंद भाजा, हुओ कु-
कडो ते चंद राजा रे ॥ निम० ॥७॥ ए तीरथ
भेटण काजे, गुजरातनो संघ समाजे ॥ पंथे पंथे
निमामो छाजे, गिरि देखी वधाने उल्लासे रे ॥
निम० ॥८॥ अढार तिहुंतेरा वरसे, मार्गशिर
वदि तेरश दिनमे ॥ भेटया आदीसर उल्लासे,
जाणु भवजळ पार उतरशे रे ॥ निम० ॥ ९ ॥
गिरि देखी लोचन ठरिया, चकेसरी वीर केस
रीया ॥ जाय केतकी वृक्ष लहेरीया, शेत्रुंजे नदी
जळ भरीया रे ॥ निम० ॥१०॥ राय भरत रतन
निंन ठाने, चकेसरी यात्रा करावे ॥ ते त्रीजे भ-
वे शिव जावे, शुभवीर वचन रस गावे रे ॥
निम० ॥११॥ (इति)

॥ अथ सिद्धाचळजीनुं स्तवन. ॥

(भरत नृप भावशुं ए (अथवा) जयो जिन वीरजी ए—ए देशी.)

॥ मनना मनोरथ सवि फळ्या ए, सिध्या वंछित काज ॥ पूजो गिरिराजने ए ॥ (ए आंकणी) प्राये ए गिरि शाश्वतो ए, भवजळ तरवा झाज ॥ पूजो० ॥ १ ॥ मणि माणेक मुगता फळे ए, रजत कनकना फूल ॥ पूजो० ॥ केशर चंदन घशी घणां ए, बीजी वस्तु अमूल ॥ पूजो० ॥२॥ छठे अंगे दाखीयो ए, आठमे अंगे भाख ॥ पूजो० ॥ स्थिरावली पयन्ने वरण्यो ए, ए आगमनी शाख ॥ पूजो० ॥३॥ विमळ करे भवि लोकने ए, तेणे विमळाचळ जाण ॥ पूजो० ॥ शुक राजाथी विस्तर्यो ए, शत्रुंजय गुणखाण ॥ पूजो० ॥ ४ ॥ पुंडरीक गणधरथी थयो ए,

पुडरीक गिरि गुणधाम ॥ पूजो० ॥ सुरनर कृत एम जाणीए ए, उत्तम एकवीश नाम ॥ पूजो० ॥५॥ ए गिरिवरना गुण घणा ए, नाणीए नवी कहेवाय ॥ पूजो० ॥ जाणे पण कहीं नवि शके ए, मुगद घुवडने न्याय ॥ पूजो० ॥६॥ गिरिवर फरशन नवि कर्यो ए, ते रह्यो गरभावास ॥ पूजो०॥ नमन दरशन फरसन कर्यो ए, पूरे मननी आश ॥ पूजो० ॥७॥ आज महोदय में लह्यो ए, पाम्यो प्रमोद रसाळ ॥ पूजो०॥ माणि उद्योत गिरि सेवता ए, घेर घेर मगळमाळ ॥ पूजो० ॥८॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

॥ गिरिराजकु सदा मेरी वदना, वदना वदना वदना रे॥ गिरिराजकु० ॥ (ए आंकणी) जिनको

दर्शन दुर्लभ देखी, कीधी कर्म निकंदना रे ॥ गिरि०॥२॥ धन धन ते दिन कवही रे होशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे ॥गिरि०॥ ३ ॥ तिहां विशाल भाव पण होवे, जिहां तुज पदकज फरसना रे ॥गिरि०॥४॥ वली वली दरिसन चहेलुं लहीये, एह विरह नित भावना रे ॥ गिरि० ॥५॥ चित्तमांहेथी कबहु न विसारुं, तुम गुण गणनी ध्यावना रे॥गिरि०॥६॥ भव भव एहिज चित्तमां चाहुं, मेरे ओर नहि विचारणारे ॥गिरि० ॥७॥ चित्त रमे दिन मावतनी परे, बहोरी न होय उत्तारणा रे ॥गिरि०॥८॥ ज्ञानविमल प्रभू पुरण कृपाथी, सुश्रेणिक वोध सुवासना रे॥गिरिराजकुं० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

॥ सिद्धाचळ गिरि भेट्या रे, धन्य भाग्य ह-

मारा ॥ विमलाचळ गिरि भेट्या रे,'धन्य भाग्य हमारा ॥ (ए आंकणी) ए गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेता नावे पार ॥ रायण रुख समो- सर्या स्वामी, पूरव नवाणु वार रे ॥धन्य०॥१॥ मूळनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमां चार ॥ अष्ट द्रव्यशु पुजो भावे, समकित मूल आधार रे ॥धन्य०॥२॥ भाव भक्तिशु प्रभू गुण गावे, अपणा जनम सुवार्या ॥ यात्रा करी भवि- जन शुभ भावे, निरय तिर्यच गति वार्या रे ॥ धन्य०॥३॥ दूर देशांतरथी हु आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा, पतित उध्धारण बिरुद तुमारु, ए तीरथ जग सारा रे ॥धन्य०॥४॥ सवत अ- ढार त्यासी मास अषाढे, वदि आठम भोमवारा॥ प्रभूजीके चरण प्रतापके सघमें, क्षमारतन प्रभू प्यारा रे ॥धन्य०॥५॥ (इति)

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

(हमको छोड चले वन माधो ए देशी)

॥ अबतो पार भए हम साधो, श्री सिद्धाचल दरस करे रे ॥ अब० ॥ (ए आंकणी) ॥ आदीश्वर जिन महेर करी अब, पाप पटल सब दूर भयो रे ॥ तन मन पावन भविजन केरो, निरखी जिनंद चंद सुख थयोरे ॥ अब० ॥१॥ पुंडरीक पमुहा मुनि बहु सिद्धा, सिद्ध क्षेत्र हम जाच लह्योरे ॥ पशु पंखी जिहा छिनकमे तरीया, तो हम दृढ विसवास थयोरे ॥ अब० ॥२॥ जिन गणधर अवधि मुनी नाहीं, किस आगे हुं पूकार करुंरे ॥ जिम तिम करी विमलाचल भेट्यो, भव सागरथी नाही डरुं रे अब० ॥३॥ दूर देशांतरमे हम उपने, कुगरु कुपंथको जाल पर्यो रे ॥ श्री जिन आगम हम मन मान्यो, त-

नही कुपथको जाल जयों रे ॥ अव० ॥४॥ तो तुम मरण निचागी आयो, दीन अनाथको सरण दियो रे ॥ जयो विमलाचल पूरण स्वामी, जनम जनमको पाप गयो रे ॥ अन० ॥५॥ दूरभवी अभव्य न देखे, सूरि धनेश्वर एम कह्यो रे ॥वि-मलाचल फरसे जो प्राणी, मोक्ष महेल तिण वेग लह्यो रे ॥ अन० ॥६॥ जयो जगदीसर तु परमे-सर, पूर्व नवाणु वार थयो रे ॥ समवसरण रा-यण तले तेरो, नीरखी मम अघ दूर गयो रे ॥ अन० ॥७॥ श्री विमलाचल मुझ मन वसीयो, मानु समारनो अंत कयो रे ॥ यात्रा करी मन तोष भयो अन,जनम मरण दु:ख गयो रे ॥ अन० ॥८॥ निर्मल मुनिजन जो ते तार्या, ते तो प्र-सिद्ध सिद्धांत कयो रे ॥ मुज सरीखा निंदक जो तारे, तारक बिरुद ए साच लह्यो रे अन०॥९॥

ज्ञान हीन गुणरहित विरोधी, लंपट धीट कषाय खरो रे ॥ तुम विन तारक कोइ न दीसे, जयो जगदीसर सिद्ध गिरो रे ॥ अव० ॥१०॥ तिर्यग नरक गति दूर निवारी, भवसागरकी पीर हरो रे ॥ आतमराम अनघपद पामी, मोक्ष वधू तिन वेग वरी रे ॥ अव० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभ जिन स्तवन ॥

(प्यारे आवो गुण गावो बजावो. सननन छुम छुम छुम ॥ (अथवा) थयोछेरे अम सफळ दिवस तुम दर्शनथी आजे–ए राग)

॥ थयोछेरे अम मननो मनोरथ, ए जिन करवा सेव ॥ (ए आंकणी) पद्मप्रभुजी परम धर्मना, दायक परम सुदेव ॥ देखी कांति, टळी भ्रांति, लही शांति ॥ अगम अनुपम मु-

सकमल दरस थकी, टळी अनादि कुटेव ॥ थयोठेरे० ॥१॥ मोह अने मिथ्यात्व महा अरि, दर्शनथी दूर जाय ॥ सुखकारी, जाउवारी, बलिहारी ॥ दर्शन दर्शन देव दयाळु, योने अति सुखदाय ॥ थयो० ॥२॥ निनति स्वीकारी जैन बाळनी, सेवा द्यो सुखकार ॥ धरी प्रीति, रुडी रीति, शुभ नीति ॥ जैन तत्व सद्बुद्धि वधे वो, सफल मनुष्य अवतार ॥ थयो० ॥३॥(इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनु स्तवन ॥

(पीले शराब मजेदार मोरे यार, पीले शराब० (अथवा) धीमा चालोने मोरा नेम गिरनार, धीमा चालो मोरा नेम०—ए राग)

॥ चरम जिनेश्वर वीर प्रभु देव, चरम जिनेश्वर देव ॥ (ए आकणी) जन्मथकी चोसट

सुरपति दिल, भाव धरीने शुभ सारे सेव ॥ चरम० ॥१॥ चरणे डस्यो चंडकोशीओ तेने, कीधो वैमानिक ततखेव ॥ चरम० ॥२॥ वादना अर्थी गौतमने तमे, आप्यो शाश्वत पद रुप मेव ॥ चरम० ॥३॥ राय सिध्दार्थ नंदन नभ-मणि, त्रिशला माता जगदाधार ॥ चरम० ॥४॥ चैत्र शुदि तेरसे जनम्या, तीन भुवनमां हर्ष अपार ॥ चरम० ॥५॥ त्रीश वर्ष गृहवासे वासिया, दीक्षा लही ग्रह्यो संयम भार ॥ चरम० ॥६॥ बार वरस छउमथ्थे विचर्या, त्रीश वर्ष केवल सुखकार ॥ चरम० ॥७॥ बोहोत्तेर वर्ष-नुं आयुष्य पूरु, दीवाली दिन मुक्ति मझार ॥ चरम० ॥८॥ एवा प्रभुने वंदन करतां, बुद्धि-सागर लहे भवपार ॥ चरम० ॥९॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(भेखरे उतारो राजा भरथरी-ए राग)

॥ मनमोहन प्रभु पासजी, सुणो जगत आधारजी ॥ शरणे आव्योरे प्रभु ताहरे, मुज दुरित नीवारजी ॥ मनमोहन० ॥१॥ विषय कषायना पाममा, भमीयो काळ अनतजी ॥ राग द्वेष महा चोरटा, लुट्यो धर्मनो पथजी ॥ मन० ॥२॥ पण काइ पूरन पुण्यथी, मळीया श्री जिनराजजी ॥ भव समुद्रमा बुडता, आलबन जीमझाझजी ॥मन०॥३॥ कमठे निज अज्ञानथी, उपसर्ग कीधो नहु जातजी ॥ ध्यानानल प्रगटावीने, कीधो कर्मनो घातजी ॥मन०॥४॥ केवळ ज्ञानथी देखीयुं, लोकालोक स्वरुपजी ॥ निजय मुक्तिपद जइ वयुं, साठी अनत चिदरुपजी ॥ मन०॥५॥ ते पद पामवा चाहतो, मोहन कम-

लनो दासजी ॥ मनमोहन प्रभु माहरी, पुरजो मननी आशजी ॥मन०॥६॥ (इति)

श्री नवसारी मंडन.

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

[पाम्यो पाम्यो पद्मणी नारी हो-ए राग]

॥ प्यारी प्यारी निजानंदकारी हो, प्रभु पार्श्व प्रतिमा प्यारी ॥ (ए आंकणी) दुःख दोहग सव दूर करवाने, विषय विषधर विष हरवाने, जपो जिणंद जयकारी हो ॥प्रभु पार्श्व०॥१॥ नरक निगोदे दुःख अपारी, सहे सकर्म चेतन बहु वारी, पार्श्व सेवी दियो टारी हो ॥ प्रभु पार्श्व० ॥२॥ काम कुंभ चिंतामणि साचो, कामधेनु ए नित्य नित्य जाचो, सुरतरु सुखकारी हो ॥प्रभु

पार्श्व० ॥३॥ प्रभु गुण गाये गड[1] दु ख जाये, तस महिमा कहो केम कहाये, सुरगुरु पण गया हारी हो ॥प्रभु पार्श्व०॥४॥ नवसारी मडन सुख-दाया, पुण्ये प्रभु तुम दर्शन पाया, करो भवो-दधि पारी हो ॥प्रभु पार्श्व०॥५॥ आत्म-कमल विकसित करवाने, लब्धि सूरि जिनपद वरवाने, जिन शरण जग भारी हो॥प्रभु पार्श्व०॥६॥(इति)

श्री गधार मडन

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन ॥

॥ मेरे तो चिंतामणि प्रभु पासजीका काम है जी (ए आकणी) जलधि किनारे भारा, नगर गधार सारा ॥ चिंतामणी पास प्रभुका, उहा वडा धाम है जी ॥ मेरे० ॥१॥ मूरति प्रभुकी

[1] चार गतिरूप

मीठी, ऐसी छबी नाही दीठी ॥ शान्त सुधारस केरा, मानुं एक ठाम है जी ॥ मेरे० ॥२॥दुषम कालमें स्वामी, दुःखकी है नाही खामी॥ आनंद समाधि दीजे, मुजे वडी हाम है जी ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ अखूट खजाना तेरा, थोडा वहोत कर दो मेरा ॥ सुख जनकुं देना वेतो, प्रभु तोरा काम है जी ॥ मेरे० ॥४॥ बिरुद संभाल लीजे, मेरा तेरा नाही कीजे ॥ तरण तारण ऐसा, प्रभु तोरा नाम है जी ॥ मेरे० ॥५॥ वीर कहे सीर नामी, सुनो हो गंधार स्वामी ॥ देना हो तो ज्ञान देदो, दुजा नही काम है जी ॥ मेरे० ॥६॥निधि रस निधीन्दु वर्षे, पोस मासे सित पक्षे॥ चतुर्दशी दिन भेटे, एही अभिराम है जी ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ (इति)

श्री घोघा मडन

॥ श्री नवखंडा पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(तमे वधा याहादुर अही आवो, रुढवाने सौ सज थाओ-ए चाल)

॥ घन घटा भुवन रग छाया, नवखडा पार्श्वजिन पाया ॥ (ए आकणी) प्रभु कमठ हटीकु हठाया, विषधर परजलती काया ॥ दिल दया धरीके छोडाया, सेवक मुख मंत्र सुणाया ॥ क्षणमें धरणेंद्र बनाया॥घन०॥१॥ मैं और देवनकु ध्याया, सब फोगट जनम गमाया ॥सुनो वामा राणीका जाया, कुछ परमारथ नही पाया॥ज्यु फुटा ढोल बजाया ॥ घन० ॥२॥ सुणि स्वामी कर भरमाया, मैं पीतल हस्ते पाया ॥ मुझे हुवा बहु दुखदाया, करमोने नाच नचाया ॥ इस विध बके बहु खाया ॥ घन० ॥३॥ घोघा मंडण सुखदाया,

जग वहु उपकार कराया ॥ नवखंडा नाम ध-
राया, मैं सुणकर शरणे आया ॥ उध्दार करो
महाराया ॥ घन० ॥४॥ हुवा चतुरमास मुज
आया, किस कारण अब बेठाया ॥ द्यो मन वं-
छित सुख दाया, हुं प्रेमे प्रणसुं पाया ॥ सेव-
कका काज सराया ॥ घन० ॥५॥ शर युग निधि
इंदु कहाया, भला आश्विन मास सोहाया ॥ दी-
वाली दिन जव आया, मैं आतम आनंद पाया ॥
एम वीराविजय गुण गाया ॥ घन० ॥६॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणकनुं स्तवन ॥

(दोहा) सुपन पाठक बोलाविया, रवि उदये घर भूप ॥ सुन फल सुपन विदा किये, देई दान अनुरूप ॥ १ ॥ तीन ज्ञानसुं उपने, तेवीसमे

अरिहत ॥ वामा ऊर सर हसलो, दिन दिन वृध्दि लहत ॥ २ ॥ भूपति पूरे दोहला, सहिया वृंद समेत ॥ प्रभु पूजे अक्षत धरी, चामर पंखा-लेत ॥ ३ ॥

[तुम त्रिदशन चद आनद लाल तोरे दर्शनकी बलिहारी-ए चाल]

॥ प्रभु पारसनाथ जिनदचद तोरे, जनम तणी बलिहरी ॥ नाथ तोरे जनम तणी बलि-हारी ॥ (ए आकणी) लील विलासे पूरण मासे, दशमी पोष वदि सारी ॥ नाथ० ॥ १ ॥ वन-वासी पशु पक्षी प्राणी, उनको सुख समकारी ॥ नाथ० ॥ २ ॥ इण रजनी घर घरमें ओच्छव, जगमें सुखी नरनारी ॥ नाथ० ॥ ३ ॥ उत्तम ग्रह निशाला जोगे,जनमे प्रभु जयकारी॥नाथ० ॥ ४ ॥ सातों नरकमें चादना होया, थावरको

सुखकारी ॥ नाथ० ॥ ५ ॥ मात नमी आठों दिक् कुमरी, अधोलोक वसनारी ॥ नाथ०॥६॥ सूती घर ईशाने करती, योजन अशुचि टारी ॥ नाथ० ॥ ७ ॥ आतम लक्ष्मी शिव साधनको, वल्लभ वीर विचारी ॥ नाथ० ॥ ८ ॥

(दोहा) कुमरी अठ ऊर्ध्व लोककी, वरसावे जल फूल ॥ आतम निर्मल निज करे, मिटे जन्मकी भूल ॥१॥

(ठुमरी)-गिरनारी की पहाडी पर कैसे गुजरी-
ए चाल.)

॥ करे ओच्छव मिल कुमरी सारी ॥ (ए आंकणी) पूर्व रुचक अठ दर्पण धरती, दक्षिण की अठ कलशाली ॥ करे०॥१॥ पंखा धरती अठ पश्चिमकी, आठ उत्तर चामर धारी ॥ करे० ॥२॥ दीप धरंती चार विदिशिकी, रुचक द्वीप

देवी चारी ॥ करे० ॥३॥ केलि घर करके तिग उत्तम, मर्दन स्नान अलकारी ॥ करे०॥४॥ रक्षा पोटली बाधके दोनो, मेले निज गृह शृगारी ॥ करे० ॥५॥ प्रभु माता तू जगतकी माता, जग दीपक की धरनारी ॥ करे० ॥६॥ माता तुन नदन बहु जीवो, उत्तम जीवके उपकारी ॥करे० ॥७॥ छपन्न दिककुमरी गुण गाती, वीर वचन के अनुसारी ॥ करे० ॥८॥ आतम आनद हर्ष धरती, वल्लभ प्रभु की बलिहारी ॥करे० ॥९॥(इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(पनजी मुडे बोल (अथवा) बोल बोल आदीसर वाला काइ थारी मरजीरे के म्हासु मुडे बोल —ए चाल)

॥ तार तार महावीर अतररा नाथ अमरजीरे,

भवजल पार उतार ॥ (ए आंकणी) तुं उप-
गारी सदा गुणवंतो, दरशन थारो करसो रे ॥
कांइ पुरवरी स्थिती सुणजो, परगट करसो रे ॥
भव०॥१॥ सुक्ष्म नीगोद बादरमें वहां, काल
अनंत गुमायो रे ॥ जन्म मरणारा दुःखडारो कांइ,
पार न पायो रे ॥ भव०॥२॥ जल तुंबीका न्या
य उर्द्ध जेम, स्थावरमे स्थीर ठायो रे ॥ वीना
भांन भव अटवीरो कांइ, अन्त नही आयो रे ॥
भव० ॥ ३ ॥ तरसां में तृष्णा नही छीपी, और
द्दष्टी नही जागी रे ॥महामोहकी अंध धुंदमे,वहां
लय लागी रे ॥ भव० ॥ ४ ॥ आर्य अनार्य नरक
नीगोदे, उर्द्ध अधोगति धायो रे ॥ प्रबल मोह
मीथ्यात्व उदय, दरीशन नही पायो रे ॥भव०
॥५॥ भवमें नाटक भमतो चेतन, नाना विध
दुःख पायो रे ॥अकाम नीर्जरा करता कर्मो, ढाले

आयोरे ॥भव०॥६॥ पूर्व पुन्यरो खील्यो अकुरो, मनुष्य देह शुभ पायो रे ॥ आर्यक्षेत्र उत्तम कुलमें भी, धर्म सवायो रे ॥ भव० ॥७॥ बालपणे हस खेल कूद कर, टटो जगडो कीनो रे ॥ओळखा घर घररा समता, काम न छीनो रे ॥भव०॥८॥ घर घररा गपाटा मारे, चाडी चुगली खावे रे ॥ चोटे बेसी निंदामें यु अकल गुमावे रे ॥ भव० ॥९॥ पाच चोर लाग्या मुजकडे, भुडो हाल करायो रे॥ विविधपणे इम दुनीयामें घणो, नाच नचायो रे॥भव०॥१०॥ जेसे प्रकृति नाच नचावे, तेसे रगभर खेले रे ॥ छेल छबीलो घणो हटीलो, नही काइ समजे रे॥भव०॥११॥ इत्यादि चोगति चाकमें, विविध वेदना भुक्ति रे ॥ सहज भावरी आई वृत्ति तव, सुजी मुक्ति रे ॥ भव० ॥१२॥ प्रबल मोह काइ मद हुवो तव, अतर

दृष्टी जागी रे ॥ दर्शन करतो जिनजीरा, भ्रमणा सब भागी रे ॥भव० ॥१३॥परिपक्व स्थिती हो जावे, सहज दृष्टी खुल जावे रे ॥ गुरुराजरी पूर्ण कृपासे चित्त,जोग जगावे रे ॥भव०॥१४॥ उदए प्रकृति देख शुभाशुभ, संयममें चित्त लाया रे ॥ कर्पूर प्रभूजीरा ध्यानमें, आनंद सुख पावां रे ॥ भव० ॥ १५ ॥ (इति)

॥ श्री सिद्ध परमात्माको स्तवन ॥

(अमरसींगना ख्यालनी-म्हाने मत वरज्यो, जासुं आगरे, सुण हाडी राणी म्हाने०-ए चाल)

॥ प्रभु मारी अरज सुणोने, हुकम देवो तो भेटां सिद्धने ॥ मारी अरज सुणोने ॥ हुकम०॥ (ए आंकणी) तुज दर्शन करवा भणी सरे, मनमे घणी उमंग॥रही पीपासा आकरी सरे,चलुं किणेंरी

सग ॥ चलु किणेरी संघ पथ अति आकरो,
कृपा करो हजूर सहज होय पाधरो॥प्रभु मारी०
॥१॥ अगम पथ टेडो घणो सरे, घाती प्रबल
निख्यात ॥ और भी विघ्न है घणा सरे, है जोरा-
वर न्यात॥ है जोरावर न्यात कायर देखी दटे,
सूरा होय सन्मुख दुस्मणसे नही हटे॥प्रभु मारी०
॥२॥ अतराय मुज आकरो सरे, तुज दर्शन है
दूर ॥ स्थिति पाके महज में मरे, आना आप
हजूर॥आना आप हुजुर सुणा परमेश्वरु,सन्मुख र-
हो सदाय के मन सायर तरु॥ प्रभु मारी० ॥३॥
त्रैलोक्य के माहें ने सरे, थाने पूजे सब ससार॥
पद पकज़री सेवना सरे, करता हर्ष अपार ॥
करता हर्ष अपार आनद भरपूर है, दिन दिन
वधते तेज सवाया नूर है ॥ प्रभु मारी० ॥४॥
अलख निरजन माहेनो सरे, पुग्ण ब्रह्म अपार ॥

अगम अरूपी अखंडमें सरे, मारी सेवा लिजो सार ॥ सेवा लिजो सार कथ्यो नही जात है, कर्पूर सिद्ध स्वरूप अनुभव वात है॥प्रभु मारी० ॥५॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(मेरे मौला बुलालो मदीने मुझे-ए चाल)

॥ मेरी अरजी उपर प्रभु ध्यान धरो, मेरे दीलके ये दर्द तमाम हरो ॥ (ए आंकणी) कभी आधि कभी व्याधि, कभी उपाधी आती है ॥ सेवा जीनराजकी साची, तीनोकी जड उडाती है ॥ मेरी लाख चोराशीकी पीर[1] हरो ॥ मेरी० ॥१॥ ज्ञान चाहुं ध्यान चाहुं, मस्त आतम भावमें ॥ जैसे बने ऐसे करो, हो दिलनिज स्वभा-

---

[1] पीडा.

वमें ॥ मेरा नुर मुझे वक्षीस करो ।।मेरी० ।।२।।
तुंही त्राता तुंही भ्राता, तुंही रक्षण कार है ॥
तुंही ब्रह्मा तुंही विष्णु, तुंही तारण हार है ॥
मेरी डुबत नैयाको[1] पार करो ॥ मेरी० ॥ ३ ॥
पूरब फीरा पश्चिम फीरा, दक्षिण फीरा उत्तर
फीरा ॥ देखा नही दरबार ऐसा, चमकता आ-
तम हीरा ॥ मेरा ज्योतिसे ज्योत मीलान करो
।।मेरी०।।४।। तु जुदा नही में जुदा नहीं, और
कोइ जुदा नहीं ॥ पर्दा उठे जो कर्मका, तो
भरम सब भागे सही ॥ प्रभू वोही करम पट दूर
करो ।।मेरी०।।५।। आतम कमलमें है मेरी, खुब
खुबीयो जीनराजजी ।।लब्धि विकासी नाथ मेरे,
सारे[2] सबेर काजजी ॥ मेरे ज्ञान खजानेको पूर
भरो ॥ मेरी० ॥ ६ ॥ (इति)

---

१ होडी २ बधा कामो

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(प्यारे मोहनीया निभाना होगा. ए-चाल)

॥ प्रभु मोहे अपना मनाना होगा, मनाना होगा बनाना होगा ॥ प्रभु० ॥ (ए आंकणी) शरणागत वत्सल मैं आयाहुं सरणे, सेवक जानी निभाना होगा ॥ प्रभु० ॥१॥ सरणा न तुम विन मोहे किसीका, अब तो अपना कहाना होगा ॥ प्रभु० ॥२॥ जला रहाहै मोहे क्रोध दानावल, क्षमा वर्षासे बुझाना होगा ॥ प्रभु० ॥३॥ मान अहि मोहे खाय रहाहै, नम्रता देके बचाना होगा ॥ प्रभु० ॥४॥ माया प्रपंच मोहे उलझा रहाहै, देके सरलता छुडाना होगा ॥प्रभू० ॥५॥ लोभ सागरमें मैं डूब रहाहूं, संतोष नावा तराना होगा ॥ प्रभू० ॥६॥ काम सुभट मेरे पीछे लगाहै, दे ब्रह्मचर्य हटाना होगा ॥ प्रभु०

॥७॥ ज्ञाताके आगे अधिक क्या कहना, आ-
खिर पार लगाना होगा ॥ प्रभु० ॥८॥ आतम
लक्ष्मी सहर्ष मनाया, वल्लभ अपना बनाना
होगा ॥ प्रभु० ॥ ९ ॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन. ॥

(जीरे मारे जाग्यो कुमर०-ए चाल)

॥ प्रभुजी मन चाहे मिलवा काज, क्षिणमें
जीव खोटा घडे जीरे जी ॥ प्रभुजी क्षीणमें बेठे
चड राज, क्षीण लासीणो घोडे चडे जीरे जी
॥१॥ प्रभुजी जीतु मनकु जरर, औषध ऐसो
दीजीए जीरे जी ॥ प्रभुजी तुम शरणे तरीया
अनत, कुमता वेली कापीए जीरे जी॥२॥ प्रभुजी
करणी म जोवो कीरतार, नीरुद विचारो आपहो
जीरे जी॥प्रभुजी तीनामे लागो तन, मन निधानो

माहरो जीरे जी ॥३॥ प्रभुजी धन गुरु गम ज्ञान, गीरुओ प्रभुने ओलखावीया जीरे जी ॥ प्रभुजी फलीया मनोरथ आज, भवियोना मन भावीया जीरे जी ॥४॥ प्रभुजी क्षणभर छोड्या न जाय, अलगो न रहीशां एक घडी जीरे जी ॥ प्रभुजी उमेदने तारो आधार, ओर पूजननी आखडी जीरे जी ॥५॥ (इति)

(श्री पुना वेताल पेठ मंडन)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(मजा देते है क्या यार, तेरे वाल घुंगरवाले (अथवा) धन्य धन्य पार्श्वनाथ भगवान, भवो दधि पार लगाने वाले–ए चाल)

॥ श्री श्री आदिनाथ भगवान, भवोदधि पार लगाने वाले (ए आंकणी) माता मरु-

देवीके नद, सोहे मुख पुनमके चद ॥ देखी भवि कुमुद विकमद, प्रभु दुःख दोहग हटाने वाले ॥ श्री श्री आदि० ॥१॥ इस अवसर्पिणी मझार, लीया नाभि कुले अवतार ॥ कचन वरणी देह धार, प्रभु सब कला शिखाने वाले ॥ श्री श्री०॥२॥ प्रकाशक धर्म नीति व्यवहार, प्रथम राजा प्रथम आणगार ॥ हुए प्रथम जिनद शीरदार, प्रभु शिव पथ बताने वाले ॥श्री श्री०॥३॥ चार घाति करम हटाय, प्रभु केवलज्ञान प्रगटाय ॥दीये देशना भवि सुखदाय,प्रभु ज्ञान अमृत पिलाने वाले ॥ श्री श्री० ॥४॥ अष्टादश दुषण टार,धार लिय प्रभु गुण बार॥पात्रीस वाणी मनोहार, अतिशय चोत्रीस धराने वाले ॥ श्री श्री० ॥५॥ करी कर्म सकल चकचूर, पहुचे प्रभुजी शीवपुर ॥ शीवसुख लीया भरपूर, प्रभु मोह

निंदसे जगाने वाले ॥ श्री श्री० ॥ ६ ॥ कुमति कुलटाका वास, हुवा सुमति सखीका विनास॥ मोह रिपुका अति त्रास, तुम विन कोन बचाने वाले ॥ श्री श्री० ॥७॥ क्रोधादिक कषाय चार, मद मोह विषय विकार ॥ राग द्वेष महा विकराळ, वोही चार गतिमें रुलाने वाले॥श्री श्री० ॥८॥ भव समुद्रमें मुज झाहाज, डुबती हे सुनो जिनराज ॥ तुज हाथमें हे अब लाज, तुंही किनारे पर लाने वाले ॥ श्री श्री० ॥९॥ प्रभु संसार ए हे असार, नंही हे इसमें कुच्छ सार ॥ करो मुजने भवजल पार, तुंही कर्म बंध छुडाने वाले ॥ श्री श्री० ॥१०॥ प्रभु मूरति है मनोहार, अष्टमी शसि सम भाल ॥ देखुं पल पलमें सो सो वार, अनुपम रुप दिखाने वाले ॥ श्री श्री०॥११॥ पूना वेताल पेठे सुखकंद, वीराजे

श्री आदिनाथ जिणंद॥दर्शनमें प्रगट्यो आनंद,
आतम लक्ष्मी दिलाने वाले ॥ श्री श्री० ॥१२॥
आदि जिन प्रभु दीनदयाल, करीए प्रभु पूजा
त्रिकाल ॥ थई हम ममा उजमाल, कपूर प्रभु
गुणको गाने वाले ॥ श्री श्री० ॥१३॥(इति)

(श्री पुना वेताळ पेठ मंदिर)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(केसरीया थाशु, प्रीत करीरे साचा भावशु
(अथवा) गोपीचंद लडका, गादल वरसेरे कचन,
महेलमे-ए चाल)

॥ आदिश्वर स्वामी, आप बीराजो पुना शहे-
रमा (ए आकणी) देश देशना मन जे आवे,
यात्रा करवा भावे ॥ पूजा आगी ठाठ रचावे,
लक्षी लक्षी जीन गुण गावे रे ॥ आदि० ॥१॥

हुं पण भटक्यो काळ अनंतो, तुम दर्शन विण स्वामी ॥ अब तुम दर्शन निरमल पामी, सहज मुक्ति गती गामी रे ॥ आदि० ॥२॥ भरत-रायने राज्य भळावी, आप रह्या वनवासी ॥ दुक्कर तप करी केवल पाम्या, भरत राय उल्लासी रे ॥ आदि० ॥३॥ रिखभदेवनुं नाम जपंती, माताजी सुख पावे ॥ हाथी खंध उपर वेसाडी भरतराय तव लावे रे॥आदि०॥४॥समवसरणनी ऋद्धि देखी, अनित्य भावना भावे॥ अष्ट कर्मनो क्षय करीने, माता मोक्षे जावे रे॥ आदि ०॥५॥ हुं पण स्वामी शरणे आव्यो, दर्शन करवा काजे॥ तुम दर्शनथी आतम तार्यो, फलीया वंछित काज रे ॥ आदि० ॥६॥ ओगणीशे चोसठनी साले, मेर त्रयोदशी जाणो ॥कमलविजय कहे यात्रा करी-ने, सुख संपत्ति घर आणोरे॥आदि०॥७॥(इति)

॥ श्री अजितनाथ जिन स्तवन ॥

(ललित छन्द(अथवा)-कपट हे पती केम ते कर्युं, धीरज हु हवे शी रीते धरु-ए चाल)

॥ अजितनाथ रे अर्ज उचरु, मुज नितकनी वात शु करु ॥१॥ आत्म द्रव्यने हारी हु भम्यो, तुज विना प्रभु इद्रिए दम्यो ॥२॥ विषय वासना पासमा फस्यो, मान मणिधरे बहु मने डस्यो ॥३॥ कपट वृत्तिने लोभथी मर्यो, नरक दु खथी हु नवी डर्यो ॥४॥ अब करो प्रभु सार माहरी, एह छ खरी फर्ज ताहरी ॥५॥ सेवक जाणीने दीजीए मने, विजय मुक्तिने शु कहु तने ॥६॥ अरज माहरी उर धारजो, चरण सेवना नित्य आपजो ॥७॥ विजयकमल सूरि किंकरु, विजयदेव कहे अर्ज हु करु ॥८॥ (इति)

(एलचपुर मंडन)

॥ श्री वासुपूज्य स्वामीनुं स्तवन ॥

(हमपर कृपा भइ नेमीवरकी (अथवा) कहु छुं नर्शीवे शुं द खोयो कीधो छे, भख प्रिया तारा वियोगे लीधोछे–ए चाल

(मराठी भाषा) ॥ कृपा वासुपूज्याची झाली, पापकर्म गेलें पाताळी ॥कृपा०॥१॥ दर्शन एलचपुरीं घेतलें, धन्य मनी मज फार वाटलें ॥ कृपा०॥२॥ करुणा अशी कोणी नच केली, दुःख दारिद्र पळवुनि नेलीं ॥कृपा०॥ ३ ॥ प्रभु कृपेनें सुमति मिळाली, तृष्णा माझी आतांचि गळालीं ॥कृपा०॥४॥ हंस म्हणे तव मूर्ति पाहिली, चरणांबुजिची आशा राहिली ॥कृपा०॥५॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(म्हेताजी रे शुं महीं मुल वतावु–ए चाल.)

॥शांति जिन रे, शी गति थाशे हमारी ॥ में कर्म कर्या बहु भारी॥ (ए आंकणी) हुं काळ अनादिनो भमीयो रे, महा मोहना घरमा रमीयो रे, सम्यक्त्व पामी फरी वमीयो रे, नथी ज्ञानी रे, क्या करु जड पोकारी ॥ मे कर्म कर्या बहु भारी ॥१॥ मुने कर्म शत्रु दळ नडियो रे, नरक निगोदमा अरवडियो रे, परमाधामीने वश पडियो रे, लडथडियो रे, आप चरण विण भारी ॥ में कर्म० ॥२॥ विश्वसेन पिता कुल आया रे, अचिरा माता हुलराया रे हथ्थिणाउर नयरी राया रे, मृगलंछन रे, सोवन वरणी सारी ॥ में कर्म ०॥३॥ प्रभु शिव रमणीना रमीया रे, शिव सुंदरी सेज उलसिया रे, शाश्वत सुखमा जइ वसिया रे, अविनासी रे, नजर करो एक वारी ॥ में कर्म०॥४॥ शांतिजिन शांति आपो रे, मारा भव दव तापने

कापो रे, मने मोक्ष नगरमां स्थापो रे, दया-
निधि रे, जन्म मरणथी निवारी ॥ मैं कर्म०॥५॥
तुमे समता रसना दरीया रे, कर्म रायने चूरण
करीया रे, घोर संसार सागर तरिया रे, दादाजी रे,
द्यो दरिसण एक वारी ॥ मैं कर्म० ॥६॥ क्रोध
मान माया मद छाक्यो रे, राग द्वेष विषय नवि
थाक्यो रे, तृष्णा तरुणी रस चाख्यो रे, अथडायो-
रे, योनि अनंति वारी ॥ मैं कर्म०॥७॥ हुं कुमति
कदाग्रह भरियो रे, धूर्त लोभ अरि मुझ नडियो रे,
गुण श्रेणी चडि फरी पडियो रे, नथी आरो रे,
बाल करे पोकारी ॥ मैं कर्म० ॥८॥ शांत दांत
वृद्धि जयकारी रे, गुरु कपूरविजय बलिहारि रे,
ल्यो पुण्यने भवथी उगारि रे, आव्यो शरणे रे,
ढील म करशो लगारी ॥ मैं कर्म० ॥९॥ (इति)

॥ श्री मल्लीनाथ जिन स्तवन ॥

(राग क्षत्री कलकनो (अथवा) सुणो सचीरजी चतुर सुजाण, छबीलो छोडनारी नथी रे-ए चाल)

॥ प्रभु मल्ली जिनेश्वर आज, अरज मोरी दील धारो रे ॥ मेनकनी राखो लाज ॥ अरज० ॥ तुमे ब्रह्मव्रतना धरनार ॥ अरज० ॥ हु अब्रह्मना सेवेनार ॥ अरज० ॥प्रभु०॥ १ ॥ प्रभु ज्ञान तणा दातार ॥ अरज० ॥ हु मुरखनो शीरदार ॥ अरज० ॥ प्रभु क्षमा कृपानतार ॥ अरज०॥ हु क्रोध तणो भंडार ॥अरज०॥प्रभू०॥२॥ प्रभू कोमलता नहु तुज ॥ अरज० ॥ अभिमान घणा छे मुज ॥अरज०॥ तुज सरल स्वभाव छे सार ॥ अरज० ॥ हु कपट घणो करणार ॥अरज०॥ प्रभू०॥३॥ तुज तृष्णा गइ आधी दुर ॥अरज०॥ मुज लोभ अती भरपुर ॥ अरज० ॥ तुम चार

माहात्म्त धार ॥ अरज० ॥ हुं पुदगळानंदी अपार ॥अरज०॥प्रभु०॥ ४ ॥ तुज मुरती मोहन गार ॥अरज०॥ तुज गुण अनंत अपार॥ अरज०॥ मुज तार प्रभु आ वार ॥अरज० ॥ तुज पाय पडुं सो सो वार ॥अरज०॥प्रभु०॥५॥ मूज विनतडी अवधार ॥ अरज० ॥ प्रभु आवागमन निवार॥ अरज० ॥ तुज सेवा करुं माहाराज ॥अरज०॥ प्रभु तुं छे गरीब निवाज ॥अरज०॥प्रभु०॥ ६ ॥ छ मित्र पुरवना तुज ॥ अरज० ॥ तेना सरीखो गणो प्रभु मुज ॥अरज०॥ तारी सेवा करुं प्रभु हुज ॥ अरज० ॥ रुडु ज्ञान नहीं छुं अबुज ॥ अरज०॥प्रभु०॥७॥ आ संसारे अनंतीज वार ॥ अरज० ॥ हूं मित्र तमारो श्रीकार ॥ अरज०॥ हवे आपो मुक्तिपुरीनुं राज ॥ अरज० ॥ केम लीधा विना रहुं आज ॥ अरज०॥प्रभु०॥ ८ ॥

भुल चुक करो सहु माफ ॥ अरज० ॥ दील खोलीने बोलो साफ ॥ अरज० ॥ हुं भक्ति भावे बोलु आज ॥ अरज० ॥ ते क्षमा करशो महाराज ॥अरज०॥प्रभु० ॥ ९ ॥ हुं नीतिविजयनो बाळ ॥अरज०॥ मारा कर्मनी त्रुटे जाळ॥अरज०॥ एम जाचु हुं जीनराज ॥ अरज० ॥ कहे सिद्धि विजयजी प्रभु आज ॥अरज०॥प्रभु०॥१०॥(इति)

॥ श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥

(माहु लगाडीतो मारा संग छे सलुणीरे-ए चाल

॥ जाओ जाओ नेम पिया, तोरी गति जानी रे ॥ इतनी मी अरजी मेरी, नही पिया मानी रे (ए आंकणी) अन कहि कियो मग, सहमानन लियो म्ग ॥ सोलहसो रानी के संच, राधा रुक्मिणीरे ॥ जाओ०॥ १ ॥ पिचकारी जल

भरी, विमल कमल करी ॥ अबीर गुलाल बीच, कैसी झीनी छानी रे ॥जाओ०॥२॥पशुअन दया करी, भये पूर्ण व्रत धारी ॥ आगे ही मिलुंगी तुमसे, सुणो केवलज्ञानीरे ॥ जाओ० ॥ ३ ॥ अधम उधारी भारी, त्रिभुवन उपकारी ॥ कपूर प्रभुके चरणे, जैसे दूध पानीरे ॥ जाओ०॥ ४ ॥ (इति)

(श्री गोवा मंडन)

॥ श्री नवखंडा पार्श्वजिन स्तवन. ॥

(राता जेवा फुलडाने सामळ जेवो रंग–ए चाल)

॥नवखंडाजी हो पास,मनडुं लोभावी बेठा आप उदास॥(ए आंकणी)तारे तो अनेक छे ने,मारे तो तूं एक ॥ कामी क्रोधी देव जोई, कहाडी नांखी टेक ॥ नवखंडा ० ॥१॥ कोई देवी देवताने,

झाली उभी हाय ॥ मोहडे माडे मूरलीने, नाचे राधानाथ ॥ नव ० ॥२॥ जटा जूटा शिरधारे, चली चोले राख ॥ गले तो गिरिजाने राखे, जोगी पनो खाख ॥ नव ० ॥३॥ पीरने फकीर जोया, निरगुणी देव ॥ काचकणी माणि गणी, आतो खोटी टेव ॥ नव ० ॥४॥ देव देवी झूट-डाने, आव्यो तु हजूर ॥ गुण आपो आपना तो, कांति भरपूर ॥ नव ० ॥५॥ (इति)

॥ श्री सुलतान पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(शु कहु कथनी मारी राज-ए चाल)

॥ लाख चोराशी भवमांही भटक्यो, वार अनति वेला॥ पारगत तुज शरणे आव्यो, कापो भव भ्रम फेरा राज ॥ सद् चिद्‌घन सुख आपो, घनघाती कर्म निवारी राज ॥ सद० ॥१॥ (ए

आंकणी) मोहादिक रिपु रण संग्रामे, घेरी
मुने गभराव्यो ॥ ज्ञान खजानो लुटी लीयो सब,
हवे हुं जिनजी हार्यो राज ॥ सद० ॥ २ ॥
विषय रागमां भान भूल्यो विभु, कुसुमायुधने
जोरे ॥ तृष्णा तरुणी लीन थयो विभु, लुंटायो
कर्म घोरे राज ॥सद० ॥ ३ ॥ अश्वसेन कुल
वामा माता, नयरी वनारसी राया ॥ शीधपुर
क्षेत्रमां भव दुःख भंजण, सुलतान पार्श्व-
कहाया राज ॥ सद० ॥४॥ भव अटवीमां हुं
रडवडीयो, कर्म जंजीरने फंदे ॥ सम दम शांति
सुधारस आपो, भेटचा पद अरविंदे राज ॥सद०
॥५॥ अमृत झरती पापने हरती, सुरति मनोहर
पाई ॥ मीट गयो भव भय दुःख हमेरो, घटमें
ज्योत जगाई राज ॥ सद० ॥६॥ वृद्धिविजय
गुरु कपूरविजय तस, बाल उपासक जाणो ॥

पुण्योदय जब प्रगट थयो तब, हृदय कमल हरखाणो राज ॥ सद० ॥७॥ (इति)

॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(भज भज गुरुचे पाय ॥ शिष्या ॥ भज भज०(अथवा) पारसनाथ आधार, मेरो प्रभु पार०-ए चाल) (मराठी भाषा) ॥ सेवा करावी सार ॥ प्रभुची ॥ सेवा करावी सार ॥ (ए आकणी) श्री अंतरिक्ष पार्श्व प्रभुजीचे, देऊल पहा सुखकार ॥ ॥प्रभुचीसेवा०॥१॥ तिकडे जाऊनी दर्शन घ्यावे, पाया पडुनी नरनार ॥प्रभु०॥२॥ केसर चंदन चर्चुनी आंगी, चढवा चंपक हार ॥प्रभु०॥३॥ गयपसेणी ज्ञाता अंग हे, ऐकुनी करा सुविचार ॥प्रभु०॥४॥ पुजेचे फल आहे सांगितलें, हित सुख मोक्ष उदार ॥प्रभु०॥५॥ रोग शोक भय

त्रास न त्याला, उतरावें भवपार ॥प्रभु०॥ ६ ॥ हंस सांगतो सेवे वांचुनी, कोण तुम्हां आधार ॥ प्रभु० ॥ ७ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(कमली वालेने (अथवा) आलमका डंका दुनीयामें बजवाया नेमी लालेने–ए चाल)

॥ अहिंसा तत्व जगतभरमें, बतलाया वीर जिनेश्वरने ॥ सवि भारत जीवको विश्वप्रेम, शिख लाया वीर जिनेश्वरने ॥ (ए आंकणी) सवि जीव वर्ग सुख चाहत है, है भाइ समा इस आलममें ॥ इसको मत दुःख दीयो मनसे ॥ बतलाया० ॥१॥ " मरजावो " कथनसे दर्द बहु, होता है छोटा बालकके ॥ फिर घातसे क्या दुःख होता है ॥ बतलाया०॥२॥ विष्टाका कीट के इन्द्र सहु,

जिन्दा रहनेको चाहत है॥ मत स्वार्थसे उसका प्राण हरो ॥ बतलाया०॥ ३ ॥ जो एक प्राणीका काटेंगे, वो दश गुने फल पावेंगे ॥ अथवा तो अनत गुना फलको ॥ बतलाया० ॥ ४ ॥ है जीव स्वतन्त्र अनादि महि, जो करता है सो पाता है ॥ वह सोचके पापसे दूर हटो ॥ बतलाया० ॥५॥ हिंसा है भगिनी अग्निकी, मत्रि नारक हिंसा होलीमें ॥ क्यू तप जप धर्म जलाते हो॥ बतलाया० ॥ ६ ॥ श्री विश्व पितामह होता है, जो त्यागी सर्व अहिंसाके ॥ वह गुरुके पद मे लायक है॥ बतलाया०॥७॥ जो बडे जीवको नहीं मारे, उपयोगसे दुनिया दारीमें ॥ श्रावक जीव भ्रात समान यही॥ बतलाया०॥८॥ वीर वनके अहिंसाका झंडा, फरकाओ हरदम आलममें ॥

दर्शन निज उन्नति पाठ सही ॥ चतलाया०॥९॥
(इति)

॥श्रीमहावीरस्वामीनुं(पालणु)स्तवन॥

(रहो रहोरे यादव दो घडीया-(अथवा) भवि नंदो जिनंद जस करणीने-ए चाल.)

॥ त्रिशलादे गोद खिलावे छे ॥(ए आंकणी) वीर जिनंद जगत किरपाल, तेराही दरस सुहावे छे ॥ त्रिश ०॥१॥ आ मेरे वाला त्रिभुवन लाला, ठुमक ठुमक चल आवे छे ॥ त्रिश ०२॥ पालने पोढ्यो त्रिभुवन नायक, फिर फिर कंठ लगावे छे ॥ त्रिश० ॥३॥ आवो सखी मुझ नंदन देखो, जगत उद्योत करावे छे ॥ त्रिश ० ॥४॥ आतम अनुभव रसके दाता, चरण सरण तुम भावे छो॥ त्रिश० ॥५॥ (इति)

(श्री जेसलमेर मंडन.)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(केसरीयाने हुकम जहाज तीरायो (अथवा) नाथ कैसे गजको बंध छुडायो–ए चाल)

॥ वीर तोरे दर्शनकी बलीहारी, वारी जाउ वार हजारी ॥ वीर०॥(ए आंकणी) अनंत ज्ञान दर्शनको नायक, लायक शिव सुखधारी ॥ अटल अबाधित सुखके दाता, ताते शरण तुम्हारी ॥वीर०॥१॥ आतम सत्ता अनुभवकी रीती, श्रीजिनकी गति न्यारी ॥ भोगी अभोगी योगी अयोगी, लखी न जाय गति ताहारी ॥वीर०॥२॥ भेद अभेद खेद अखेद, ज्ञान अज्ञान मझारी ॥ अकल कळा ग्यानी नही जानत, अंदर रहे के न्यारी ॥वीर०॥३॥ सुख न दुःख अनुभव रसमें, रोग सोग रहे न्यारा ॥ चाहत अनुभव ज्ञान

सुधारस, मीलादो सुमति प्यारी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन ॥

(गजल–कव्वाली–नजर इक महेरकी करके दीखादोगे तो क्या होगा–ए चाल)

॥ प्रभु महावीर दर्शनसे, हृदय आनंद पाता है ॥ अपूरव वीरता जीवन प्रभुका याद आता है ॥ (आंकणी) रगे रग है भरी प्रभुके, अपूरव वीरता यारो ॥ सभी जीवनमें है एसे, मगर विरला दिखाता है ॥ प्रभु० ॥१॥ बनी शूरवीर विघ्नोंके, अडे जो सामने रहते ॥ दिखाते हैं पराक्रमको, उन्हें जग वीर गाता है ॥ प्रभु० ॥२॥ दीपायो नाम महावीरको, हटाकर वृत्ति पैशाची ॥ सहन कर दंश भी अहिका, करी पर-

जीन सात हे ॥ प्रभु० ॥३॥ महा मल्ल रूपको धारी, प्रतिमल्ल मोहको मारी ॥ करी अन्याय चकचुरा, धरम धोरी कहाता हैं ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ करम योगी तपे योगी, बने प्रभु ध्यान योगी हे ॥ महादानी महाज्ञानी, महा-उपकारी त्राता हैं ॥ प्रभु० ॥५॥ प्रभु महावीर तुम शरणा, कपट जो त्याग धरता हे ॥ प्रभु सनाथे तुम सेवक, नही वन नीर जाता हैं ॥ प्रभु० ॥६॥ अहो प्रभु आत्म आलंबी, स्वय निज लक्ष्मीको साधी ॥ अपूरव हर्ष मुक्तिका, वल्लभ मनमें समाता हैं ॥ प्रभु० ॥७॥ (इति)

॥ श्री वितराग जिन स्तवन ॥

॥ महाराज थारी पूजा प्यारी लागे हो निन रात ॥ महाराज थारे शरण में तो आयो महारा

राज ॥ (ए आंकणी) लाख चौरासी जोनिमें, पायो दुःख अपार ॥ नरक और तिर्यंचमें, रु-लत फर्यो संसार ॥ हो जिनराज याते जग सुपनाकी माया महारा राज॥महा०॥१॥और देव सब छोडके, आयो तुमारे पास ॥ महिर नजर कर दीजीए, मनकी पुरो आश ॥ हो जिन-राज पूरण कीजो मनरा चाया महारा राज॥महा० ॥२॥ केई अपराधि तारीया, केई तारण हार ॥ हुं छुं सेवक ताहरो, आवागमन निवार ॥ हो जिनराज थांरे शरणे रही सुख पायो महारा राज ॥महा०॥३॥ हाथ जोडकर करुं विनती, चरणे शीश नमाय ॥ मित्र मंडली शरण रही, शिव-पुर गेलो वताय ॥ हो जिनराज थांरा सब मिल-कर गुण गाया महारा राज ॥ महा० ॥४॥ (इति)

॥ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥

(मधुकरनी देशी (अथवा) श्रावक व्रत सुरतर फलियो-ए देशी)

काया पामी अति कूडी, पाख नही आवु ऊडी॥ लब्धि नही कोये रूडी रे ॥ श्री युगमधरने केजो, के दधिसुत वीनतडी सुणजो रे ॥ श्री युग० ॥१॥ (ए आकणी) तुम सेवामाहे सुर कोडी, ते इहा आवे एक दोडी ॥ आश फले पातक मोडी रे ॥ श्रीयुग० ॥२॥ दुसम समयमा एणें भरतें, अतिशय नाणी नवि वरते॥ कहीये कहो कोण सामलते रे॥श्री युग०॥३॥श्रवणे सुखीया तुम नामें, नयणा दरिसण नवि पामे ॥ ए तो झगडानो ठामे रे ॥ श्रीयुग० ॥४॥ चार आगल अतर रहेवु, शोकडलीनी परें दुःख सहेवु ॥ प्रभु विना कोण आगल कहेवु रे ॥ श्री युग० ॥५॥

म्होटा मेल करी आंप, वेहुने तोल करी थांपा॥
सज्जन जस जगमां व्यापे रे ॥ श्री युग० ॥६॥
वेहुनो एक मतो थाये, केवलनाण युगल पावे॥
तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्री युग० ॥७॥
गजलंछन गजगति गामी, विचरे विप्रविजय-
स्वामी॥नयरी विजया गुण धामीरे ॥ श्री गुण०
॥८॥ मात सुताराये जायो, सुदृढ नरपति कुल
आयो ॥ पंडित जिनविजयें गायो रे श्री युग०
॥९॥ (इति)

(श्री केसरीयाजी मंडन)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(आशक तो हो चुका हुं० (अथवा) विनती तो
कर रहा हुं, चाहे मानो या न मानो–ए चाल)

॥ सरणा तो ले चुका हूं, चाहे तारो या न

तारो ॥ (ए आकणी) ऋषभदेव स्वामी मेरे, सरणा है चरण तेरे ॥ चरणों मे आ चुका हू ॥ चाहे तारो या न तारो ॥१॥ देवाधिदेव मेरा, फल मुक्ति सुख लेरा ॥ चरणों में आ झुका हू ॥ चाहे० ॥२॥ जिन वीतराग शंकर, भवि जीवके प्रियकर ॥ दिल तुममे ला चुका हू ॥ चाहे० ॥३॥ सेवक कष्ट हरिये, अपने ही जमा करिये ॥ आखिर यह कह चुका हू ॥ चाहे० ॥४॥ आतम लक्ष्मी दीजे, अत्यत हर्ष कीजे ॥ वल्लभ तो हो चुका हू ॥ चाहे तारो या न तारो ॥५॥ (इति)

॥ श्री वासुपूज्यजिन स्तवन ॥

(वज्रमंडल देश देगादो रसीया (अजगा) चालो सोरठ देश देगावो रसीया चालो सोरठ—ए चाल)

॥ मन मंदिर नाथ वसाओ रसिया मन

मंदिर ॥ (ए आंकणी) तूंहिज हजाणे लिखो करि चोखुं, दुरित दोहग रज जायं खसिया ॥ मन० ॥ १ ॥ मन मंदिर साहिब जब वसिया, गुण आवे सवि धसमसिया ॥मन०॥२॥ दर्शन फरशन दुर्लभ पामी, हृदय कमळ मुज उल्लसि या ॥मन०॥३॥ मन मोहन मन मंदिर वेसि, कर्म अहितकों ल्ये तसीया ॥मन०॥४॥ वासुपूज्य जिन मनमथ[1] जाणी, विषय विकार अलगा खसीया ॥ मन० ॥५ ॥ न्यायसागर प्रभु सेवा करतां, अंतरंग गुण सवि हसिया ॥मन० ॥६॥ (इति)

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(ध्यानमे जीनके सदा० (अथवा) आ गया है कर्मयुग कुछ, कर्म करना शिखलो–ए चाल)

---

१ कामदेव.

॥ छोड जिनवर को दुनीमे १ दील लगाकर क्या करुं ? ॥ हाथ हीरा मील गया, कंकर को लेकर क्या करु ? ॥ (ए आकणी) भवारण्यके तापमें, जलता फीरु केइ कालमे ॥ कल्प छाया मील गइ, छत्राको २ सीरपर क्या करु ?॥ छोड०॥१॥ मोह अंधी रैनमें ३ चलतेही खाइ ठोकरें ॥ ज्ञान दिनकर ४ देख फीर, बत्ती जलाकर क्या करु ? ॥छोड०॥ २ ॥ काल अनादि कर्मके, दु रोगसे पीडा हुआ ॥ धर्म बुट्टी मील गइ, घधैदा ५ बुलाकर क्या करु ? ॥ छोड० ॥३॥ देव देवी सवमे, चटता रहा ससारमें ॥ मोक्ष दाता अव मीले, परकी पुजा कर क्या करु ? ॥ छोड० ॥ ४ ॥ गा रहा हू प्रेमसे, प्रभु गुन प्रभुके सामने ॥ ग्यान जो हो प्रमद्य फीर,

औरो[6] रीझाकर क्या करुं ? ॥ छोड० ॥ ५ ॥
(इति)

॥ श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

(श्री राग—वीर जिन दर्शन नयनानंद—ए चाल)

॥ सेवो भविजन धर्म जिनंद ॥ (ए आंकणी)
ज्यूं वछडा नित चाहत धेनुं, चाहत मोर श्याम घन वृंद ॥ कामी कामिनीसुं मन राचे, विंध्याचल रेवा जगवृंद ॥ सेवो० ॥१॥ राजहंस चाहत कमलाकर, कमलाकर चाहत दिन इंद ॥ बावना चंदन भोगी लिपटे, चाहे चंद विकासी चंद ॥ सेवो० ॥२॥ मंजर सुंदर कोयला चाहे, ज्यूं चाहे मधुकर मकरंद ॥ धर्म जिनेश्वर त्यूं नित चाहत,

---

१ दुनीसे=दुनियाथी. २ छत्ता=छत्री. ३ रैन=रात. ४ दिनकर=सूर्य. ५ वजेदों=वैद्यो. ६ औरो=बीजाओ.

भविजन सुर नर मुनि गण वृन्द ॥ सेवो० ॥३॥ धर्म जिनेश्वर धर्म के दाता, पाता निज गुण सहजा नंद ॥ पीके भविजन तृप्त हुए बहु, नाशे कर्म भरम मल फंद ॥ सेवो० ॥४॥ राग मोह नहीं द्वेष जिनोंमें, भानु सुव्रता माता नंद ॥ सन-मतर रचणा दग करके, आतम वल्लभ हर्ष करंद॥ सेवो० ॥५॥ (इति)

(श्री पुना वेताळ पेठ मंदिर)

॥श्री गोडी पार्श्वनाथ जिन स्तवन॥

(नेक नजर करो नाथजी (अथवा) प्यारो शेत्रुंजो मन सांभरे-ए देशी)

॥ अरज सुणो प्रभु माहरी, हारे हुंतो चाकर चाहुं सेवा ताहरी जोडी ॥अरज० ॥ १ ॥ (ए आकणी , हारे मोने लाग्या चोगतीना फेरा, हारे

गयो काल अनंती चरमें जीहो ॥अरज०॥ २ ॥ हांरे भव उंच निच कुल पामीयो, हांरे सद्गुरु वचन नवि मांनियो जीहो ॥अरज० ॥३॥ हांरे क्रोध मान माया लोभ जालमें, हांरे गयो मानवनो भव आलमें जीहो ॥अरज०॥४॥ हांरे म्हेतो कुमति कुटिलता संगमें, हांरे रह्यो मोह मिथ्यामति रंगमें जीहो ॥अरज० ॥५॥ हांरे म्हेतो कुगुरु कुदेवना पासमें, हांरे रह्यो तृष्णा विषयनी वासमें जीहो ॥अरज० ॥ ६ ॥ हांरे क्यारे काठियां तेर अंतराविओ, हांरे जाया पुत्र मित्र मन भाविओ जीहो ॥अरज०॥ ७॥ हांरे सुणो अश्वसेनजीके नंदना, हांरे करुं वारंवार प्रभु वंदना जीहो ॥अरज०॥ ८ ॥ हांरे मोहे तारो अग्यानी प्राणीनें, हांरे प्रभु बिरुद तुमारां जाणीनें जीहो ॥अरज०॥९॥ हांरे मेंतो पुनामें गाईजी

मेटीया, हारे मुनि चारित्र कहे दुःख मेटीया जीहो ॥ अरज० ॥ १० ॥ (इति)

॥ श्री गोडी पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(बलिहारी बलिहारी बलिहारी, जगनाथ हो जाउ तोरी, शांति जिन शान्ति०-ए चाल)

॥ हितकारी सुखकारी दुःखहारी, प्रभु पार्श्व अंतरयामी, करुणाकर करूणा सेवक कीजिए जी (ए आंकणी) गोडी पाम्म जिन, सेंदु मे गल दिन॥ सरणा तुमरा मे लिया धारी॥ प्रभु पार्श्व० ॥१॥ पास रहित पास, पासमें मेरो वास॥ पास कटो मेरा पास म्हारी॥ प्रभु पार्श्व० ॥२॥ प्रभु निरागी रागी, सेवक तुम पटमार्गी॥ अपना कहकी लाज मागी॥ प्रभु पार्श्व० ॥३॥ आस घरी मे वास, कीनी है तुमरे पास॥ पूरण करो आस मारी॥ प्रभु पार्श्व०

॥४॥ रूप प्रभु जो आप, वोही है मेरो वाप ॥ अपनासा कीजे वाल धारी॥ प्रभु पार्श्व०॥५॥ दृष्टी सुधारस वर्षे, आतम लक्ष्मी हर्षे ॥ वल्लभ होवे जय जय कारी॥ प्रभू पार्श्व० ॥६॥ (इति)

॥ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(भक्ति सुधारस घोलनो रे (अथवा) तेजे तर णीथी वडो रे, दोय शिखानो दिवडो रे–ए देशी)

॥ शिरपुर नगरमां शोभतां रे, अंतरिक्ष प्रभु पास ॥ दक्षिण देश वऱ्हाडमां रे, चित्तमें लियो तुमे वास हो जिनजी ॥ भक्ति हृदयमां धारजो रे, अंतर वैरिने वारजो रे, तारजो दीनदयाल॥१॥ (ए आंकणी) पहाड पर्वत ओलंघिया रे, झाडी जंगी अति क्रुर ॥ तुझ दरशन करवा भणी रे, आव्यो हुं इतनी दूर हो जिनजी भक्ति० ॥२॥

वामानदन वंदिये रे, अश्वसेन कुल चद्र ॥ सप्त फणें करि शोभता रे ,सेवे सुर नर इंद्र हो जिनजी॥ भक्ति०॥३॥श्यामवरण सोहामणो रे ,अद्‌भूत बिंब उदार ॥ तरण तारण जिनेश्वरु रे, आवागमन निवार हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥४॥ धरणीथी ऊंचा वसा रे, नयणें निरख्या सो प्रमाण ॥ गिरुद नडो छे राजनो रे, माहिन चतुर सुजाण हो जिनजी ॥ भक्ति ० ॥५॥ सवत् उगणीस तिया सेम रे, माधन वदि सुखकार ॥ तिथि दशमी यात्रा करी रे, आनद हरख अपार हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥६॥प्रभु भेव्या घणा भावसु रे, साथे सकल परिवार॥मोहन मुनि कहे साहरी रे, कीजे तुज प्रतिपाल हो जिनजी ॥ भक्ति० ॥७॥ (इति)

॥ श्री फलवर्धी पार्श्वनाथ स्तवन ॥

(थारी लइरे शरण जगनाथ, आज मुज तारो तो सही-ए चाल)

॥ थे तो फलवर्धी पारसनाथ, प्रभुको पुजो तो सही ॥ पुजो तो सही मेरा चेतन पूजो तो सही ॥ थे तो० ॥ (ए आंकणी) अष्टादश दुषण करी वरजित, देवो तो सही ॥ टुक स्याम सलूनो रूप आनंद भर, जोवो तो सही॥जोवो० ॥१॥ परमानंद कंद प्रभु पारस, पारस तो सही ॥ तुम निज आतमको कनक करन टुक, फरसो तो सही ॥फरसो०॥ २ ॥ अजर अमर प्रभु ईश निरंजन, भंजन कर्म कही ॥ एतो सेवक मन वंछित सब पूरण, अदभुत कल्प सही ॥ अद-भुत०॥३॥ चंद्र अंक वेद दिव संवत्, षष्टी मैत्र लही ॥ मन हर्ष हर्ष प्रभुके गुण गावत, परमा-

नंद लही ॥ परमानद० ॥४॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(आई इन्द्र नार, कर कर श्रृंगार, खडी जिनके द्वार-ए चाल)

॥ सब करम जार, जिन सरन धार ॥ तुम नाम सार, भनी सन्त कार ॥ अनुभव आधार, समयतरम भीनो ॥मन०॥१॥ भवोदधि अपार कर तार तार ॥ जग सत्थवाह, सब जग आधार ॥ तुही पारसनाथ, अजरामर कीनो ॥ मन० ॥२॥ मम मेट सोग, सब विपत भोग ॥ कर आज योग, मिटे मनका रोग ॥ तुम नाम लेन, मोह भट जय कीनो ॥मन०॥ ३ ॥ मम सर्यो काम, तुम चरन पाम ॥ तुम धर्यो ध्यान, गयो पाप नाम ॥ आतम आनन्द, दरसन कर लीनो ॥ मन० ॥ ४ ॥ (इति)

(मारवाड-श्री वलडुट गाम मंडन)

॥ श्री गोडी पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

(वटवा गुंथन दे रे मीजाजडा वट०-ए चाल)

॥ मुखडा देखन देरे सुभागीआ, मुखडां देखन दे ॥ अहो मेरे प्रभुजीकी चंगी रे अंगीआं, मुखडां देखन दे॥ (ए आंकणी) एकतो देखना चंद्रमुखी प्रिया, दुसरा देखनादी ॥ तीसरा देखना प्रेमकी बत्तीया,सेरा प्रियाकाजी॥अहो सेरे०॥१॥ एक तो ढुं ढुं में वाग वगीचा,दुसरा ढुं ढुं वजार॥ चुन चुन कलीयां फुलोकी रचना, रचु मेरे किरतार ॥ अहो ० ॥२॥ जेणे जो पीधा अमिका प्याला,न गमे नठारां नीर॥ जेण जो दीठां स्वर्गका सुखडां, तिनकुं न गमे पीड ॥ अहो० ॥३॥छेल छबीली पार्श्वकी मुर्ति, नगर बलदुट मोजार ॥ [२] नेनोके[६] रस [९] नव [१] शशिके वर्षे(१९६२),निरखे

जय जय कार ॥ अहो० ॥ ४ ॥ सूरि राजेंद्र गुरु धम्मीलके राज्ये, वाचनाचार्य राज ॥ धनचंद्रसूरि मन या छबी प्यारी, तारण तरण जहाज अहो० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(माता त्रिशला झुलावे पुत्र पारणे-ए देशी)

॥ माता वामादे बोलावे जमवा पासने, जमवा वेला थइ छे रमवाने चित जाय ॥ चालो तात तुमारा बहु थाये उतावला, वहेला हालोने भोजनीया टाढा थाय ॥ माता०॥ १ ॥ मातनु वचन सुणीने जमवाने बहु प्रेमशु, उट्ठी बाजोठ ढाली बेठा थइ हुंशीयार ॥ विनय थाल अनु-जाली ठाउन आगल मूकीयो, विनय वाट-कीया सोभाने थाल मझार ॥ माता० ॥ २ ॥

॥श्री पावापुरी महावीर जिन स्तवन॥

॥ हर लिया हर लिया हर लिया रे, मेरा मनवा महावीरजीने हर लिया रे (ए आंकणी) विचरता वीर जिनेश्वर आया, पावापुर पावन कीया रे ॥मेरा मनवा०॥ १॥ सुरवर समोवसरणकी रचना, करी भक्तिमें भर गीया रे ॥ मेरा० ॥२॥ सिंहासनपें प्रभुजी विराजी, देशना अमृत वरसीया रे ॥मेरा०॥३ ॥ शोल पहोर प्रभु देशना दीनी, अवसर अणशण का लीया रे ॥मेरा० ॥ ४ ॥ सर्व समाधी अणशण पाली, मन वच काया वस कीया रे ॥मेरा०॥५॥ शिववधु वरिया भवोदधि तरीया, पारंगतका पद लिया रे॥ मेरा०॥६ ॥ मोक्ष कल्याणिक महोच्छव जाणी, इंद्रादिक सव मिल गीया रे ॥मेरा०॥ ७ ॥ वडे ठाठसें महोच्छव करके, नाम पावापुरी कह

गिया रे ॥मेरा०॥८॥ तीर्थ भेटी भवदुःख मेटी, आतम आनद ले लिया रे ॥ मेरा०॥ ९ ॥ ओगणीसे बासठ माघ शुदकी, पचमी दिन पावन थिया रे ॥मेरा० ॥१०॥ वीरविजय कहे वीर जिणंदका, दर्शण विन हम रह गया रे ॥ मेरा मनवा महावीर० ॥ ११ ॥ (इति)

॥ श्री आदिनाथ स्वामिनुं स्तवन ॥

(फनाकी-नजर टुक महेरकी करके, दीक्षा देते तो क्या होगा-ए चाल)

॥ प्रभु श्री आदि जिन स्वामी, करु विनती मै शिरनामी ॥ करो भवपार शिवगामी, करुं विनती मै शिरनामी (ए आकणी) जगत वल्लभ जगत रक्षक, देवाधिदेव सुरधामी॥जगत नायक जगत त्राता ॥ करु० ॥१॥ जनि जरा मरण दु ख

दोहग, रोग और सोग नहीं स्वामी ॥ ऐसे भव समुद्रसे तारो ॥करुं० ॥२॥ नहीं क्रोधी नहीं मानी, नहीं मायी नहीं कामी ॥ प्रभु गंभीर सागर सम ॥ करुं० ॥३॥ प्रभा प्रभु देहकी अद्भुत, अनुपम आतमारामी ॥ करे दिदार सुख पावे ॥करुं०॥४॥ चरण जिनराजके पावन, सुरासुर नर नमति स्वामी ॥ निरंतर पूजते भावे ॥ करुं ० ॥५॥ प्रभु तुम नाम शिव कहिये, उपद्रवको दिये दामी॥ शिवंकर शिवगति दीजे, करुं० ॥६॥ हुए विशुद्ध जग देवा, दोष सब कर्म के वामी ॥ प्रभु निर्दोष मुज कीजे ॥ करुं ०॥७॥ उन्नीसौ छ्यासी विक्रमके, वदि मृग तीज धन स्वामी ॥ हुआ उद्धार मंदिरको॥ करुं० ॥८॥ आतम लक्ष्मी प्रभु हर्ष-वल्लभ सुख संपदा पामी ॥ बोले संघ पेण जय-कारा ॥ करुं ० ॥९॥ (इति)

॥ श्री ऋषभदेव जिन स्तवन ॥

(आज श्याम मोही लीनो, बासरी बजा०-ए चाल)

॥ उठत प्रभात नाम, जिनजीको गाइयें ॥ नाभिजीके नंदके, चरन चित लाइयें ॥ उठत० आनंदके कंद जाकु, पूजत सुरिंद वृंद ॥ ऐसो जिनराज छोड, औरकुन ध्याइयें. ॥उठत० ॥१॥ जनम अयोध्या ठाम, माता मरुदेवा नाम॥लछन वृषभ जाके, चरणा सुहाइये ॥ उठत०॥ पाचसें धनुष्य मान, दीपत कनकवान॥ चोराशी पूरव लाख, आयु स्थिति पाइयें ॥उठत०॥२॥ आदिनाथ आदिदेव, सुर नर सारे सेव ॥ देवनके देव प्रभु, शिवसुख दाइये॥उठत०॥प्रभुके पादारविंद, पूजत हरखचंद ॥ मिटे दुखदंद, सुखसंपति घटाइयें ॥ उठत० ॥ ३ ॥ (इति)

॥ श्री संभवनाथ जिन स्तवन ॥

(महावीर चरणमें जाय, मेरो मन लागी रह्यो (अथवा) भलाजी मेरा नेम चल्यो गिरनार, एकेली जानसे, मेरो नेम०–ए चाल)

॥ प्रभु संभव जिन सुखदाई, चित्तमें लागी रहो ॥ (ए आंकणी) दुःख संभवमें दूर कीयो है, सुख संभव थयो आज ॥ चित्तमें० ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ एह संसार असार सार है, तुम शरणा महाराज ॥चित्तमे०॥प्रभु०॥ २ ॥ मोहसेन सब चुर लीयो है, शिवपुर केरो राज ॥चित्त०॥प्रभु० ॥३॥ दीन हिन दुखियो मुज देखी, सारो सेवकको काज ॥चित्त०॥प्रभु०॥४॥ मोह द्रोह सब नाश करीने, राखो सेवककी लाज ॥ चित्त० ॥प्रभु०॥५॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो, वीर विजयको आज ॥चित्त०॥ प्रभु०॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तवन ॥

(बैठे नहीं आसन नारीके, ब्रह्मचारी धीर वीर (अथवा) महावीर तुमारी मनहर मुर्ति, देवी मन हरखाय-ए चाल)

॥ शीतल जिन शीतल कारी, प्रभुजी टारो भव पीर ॥ (ए आकणी) शीतलसे शीतल माने, हरिचंदन जगत पिछाने ॥ प्रभु तुम गुण निरला जाने-प्रभुजी टारो०॥१॥ प्रथमाक्षर निन नहीं दिसे, सागरमें निमग्ना रीसे ॥ मानु छिप गया तुम रीसे-प्रभुजी टारो० ॥२॥ मध्याक्षर निन जग मारा, माने बोले जयकारा ॥ मुक्ति गामीने धारा प्रभुजी-टारो० ॥ ३ ॥ अत्याक्षर निन कृपाने, प्राणिको नाच नचावे ॥ प्रभु तुम निन कौन बचाने-प्रभुजी टारो० ॥ ४ ॥ तीनो मील माता कारी, वहिरंतर ताप निवारी ॥

लीनी प्रभु अभिधा धारी–प्रभुजी तारो०॥५॥ सुदि जेठ पंचमी आजे, शीतल जिन गादी विराजे ॥ विध विध वाजींतर वाजे–प्रभुजी तारो०॥ ६ ॥ ईषु वसु निधि इंदु वर्षे, आतम लक्ष्मी उत्कर्षे ॥ वल्लभ पाटण संघ हर्षे–प्रभुजी तारो भव पीर० ॥७॥ (इति)

॥ श्री सामान्य जिन स्तवन ॥

(आ गया है कर्मयुग कुछ, कर्म करना–ए चाल)

॥ है जगतमे नाम ये, रोशन सदा तेरा प्रभु ॥ तारते उसको सदा जो, ले शरण तेरा प्रभु ॥ (ए आंकणी) लाख चोरासीमें घेरी, कर्मने मारा मुझे ॥ ले बचा अब तो सहारा, है मुझे तेरा प्रभु ॥ है जग ० ॥१॥ सैंकडोंको तारते हो, मेहेरकी करके नजर ॥ क्यों नही तारो मुझे है, क्या

गुना मेरा प्रभु ॥ हे जग०॥२॥ हाल जो तनका हुआ है, आप जिन किसको कहूं॥ मोह राजाने मुझे, चारों तरफ घेरा प्रभु ॥ हे जग ० ॥३॥ आपसे हरदम तिलककी, तो यही अरदास है॥ आप चरणोंमें रहे, मेरा सदा डेरा प्रभु ॥हे जग० ॥४॥ (इति)

॥श्री सामान्य जिन स्तवन॥

(मैंतो दासी थनी (अथवा) जन हो पाडी चापरा, हिंदुस्तानला चणरा लागला०-ए चाल)

॥ मूजने प्रभुनो आधार (ए आंकणी) लक्ष चोर्यासी माहे भम्यो हुं, सया दुःख अपारा ॥ महेर नजर करी मुजने निहालो, टळे चोर्यासी फेरा ॥ मुजने० ॥ १ ॥ अज्ञाने हुं गाटो भरीयो, कर्या पाप अनंता ॥ तृष्णाथी नहीं धाप्यो हुं

तो, कृपा करो भगवंता ॥ मुज०॥२॥ प्रभु वीना नहीं और जगतमां, संकटनो हरनार ॥ भक्त-वत्सल भगवान जीनेश्वर, शिव सुखनो दातार ॥ मुजने० ॥ ३ ॥ शांत मुद्रा मोहनगारी, प्रभुनी प्यारी लागे ॥ काज सुधारो प्रभुजी मारा, जैन समाज ए मांगे ॥ मुजने०॥ ४ ॥ (इति)

॥श्री सिद्धाचळजी आदिनाथ स्तवन॥

(मेरे मौला बुलालो मदिने मुझे ए चाल)

॥आदिनाथ शत्रुंजे बुलालो मुझे ॥ (ए आंकणी) आप आये थे गिरिपे, पूर्व निन्नाणु अहो ॥ और भी जिनवर पधारे, विमल गिरि पुनित हो॥ इस भू-मिका फरस करादे मुझे ॥आदि०॥१॥ इस गिरिपे ध्यान धरके, जाप निजपदका किया॥ कर्म शत्रुको हटाके, वोही शिव स्वामी हुवा ॥ यही ध्यानका पाठ सिखादे मुझे ॥ आदि ० ॥२॥ चंद्रशेखर

मुक्ति गामी, हुआ कर्म हटाय के ॥ हुओ कुर्कुट चंदराजा, सिद्धगिरि पर आय के ॥ इसी तोरका ज्ञान दिखादे मुझे ॥ आदि ० ॥३॥ श्री मिमधर देवने यु, कहा इन्द्रकी सामने ॥ तीर्थ शत्रुंजय समा नहिं, और है इस कालमें ॥ तीरथ भक्तिका प्याला पिलादे मुझे ॥ आदि ० ॥४॥ अन्यमति ससर्गसे मैं, द्वेष जिनमतका किया ॥ कुमतिका समर्गसे मैं, द्वेष मूर्तिका किया ॥ तव चरणोंका दास बनाले मुझे ॥ आदि ० ॥५॥ बालकी अरदास अमृत, पान भक्ति लिजीये ॥ सिद्धगिरि बुलायके, निज आत्म दर्शन दीजिए॥ शिवरानी की सेर दिखादे मुझे॥आदि०॥६॥(इति)

॥ श्रीशत्रुंजय तीर्थराज स्तवन ॥

(प्रभु पूजा करे यार आओ आओ-ए चाल)

॥ करिये तीर्थ उद्धार आओ आओ, मिलकर

सब परिवार आओ आओ ॥ (ए आंकणी)
श्रीशत्रुंजय मंडनस्वामी, आदिनाथ प्रभु अंतर-
जामी ॥ जगवल्लभ घटघट विसरामी, दीपे
कांति उदार ॥ आओ आओ—करिये ० ॥ १ ॥
अष्ट करमको दूर निवारी, सिद्ध भये चिदरूप
विहारी ॥ हंसगति पंचम गति धारी, सुख संपत
आधार ॥ आओ आओ—क०॥ २ ॥ मनमोहन
सुंदर प्रभु सुरत, समरस रंग भरी प्रभु मूरत ॥
भविजन मनके वंछित पूरन, चतुर नमे नरनार॥
आओ आओ—क० ॥ ३ ॥ विमलाचल वि-
मलातम करता, शत्रुंजय शत्रु गुण हरता ॥ जो
भवि मनमें विवेकको धरता, लाभ भाव अनु-
सार ॥ आओ आओ क० ॥४॥ कंचनगिरि
जग कारज सारे, तारणगिरि भविजनको तारे॥
जस दर्शन दुर्लभ संसारे, आवागमन निवार ॥

आओ आओ–क० ॥५॥ तीर्थनायक लायक अरिहता, मेघध्वनि उपदेश करता ॥ सिद्धाचल आये पुण्यवता, पूर्व निनाणवे पार ॥ आओ आओ–क० ॥६॥ जग चिंतामणि चिंता चूरण, जगगुरु चद्र प्रभा मुख पूरण ॥ चरण सरण प्रभु अघ दल मूरण, जय जय जिन नलिहार ॥ आओ आओ–क० ॥७॥ तीर्थवास रमणीक विचारी, भव्यजीव शिव आशा धारी ॥ आतम-भाव विकास निहारी, तीरथ तारण हार ॥ आओ आओ–क०॥८॥ नाण[५] वसु[८] निधि[९] इदु[१] वरसे (१९८५), पाटण शहर चोमासा फरसे ॥ आतम लक्ष्मी प्रभु गुण वरसे, वल्लभ हर्ष अपार ॥ आओ आओ–करिये०॥९॥(इति)

॥ अथ लावणीयोनो संग्रह ॥

॥ श्री आदिनाथजीनी लावणी ॥

॥ श्री आदिनाथ निर्वाणी, नमुं मैं ध्यानी॥ नमुं० ॥ भवि जीव तरनके काज, वनाई बानी ॥ तुम नाभिराय कुलधारी, वडे अवतारी ॥ वडे० ॥ खुल रही खलकमें खुव, केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनकी मारी, आतमा तारी ॥ आत० ॥ तज दीनी प्रीत विषयनकी, जान कर खारी ॥ तुम करी मुक्ति पद राणी, जगतमें जानी ॥ जग० ॥ भवि० ॥ १ ॥ जाण्या सुर नर सुख-राशि हुआ हे उदासी ॥हुआ०॥ जल गई जबर जंजाल, जगतकी फांसी ॥ तुम जगतपति अवि नासी, मुक्तिके वासी ॥ मु० ॥ शिवमंदिरमें

सुख सेज, निठाई खासी ॥ तुम करी सफल जिंदगानी, मेरे मन मानी ॥ मेरे० भवि०॥२॥ नंडे ज्योतिरत्त जिनराज, जगतमें वाजे ॥जगत० ॥ तेरो दरिसन हे सुखदायि, सुधारे काजे ॥ तेरी धुनी गगनमें गाजे, वे सुरपति लाजे ॥ वे सुर० ॥ गल गया गरव पाखंड, कामना भाजे ॥ नाटक नाचे इंद्राणी, अधिक धुनि आणी ॥ अधिक० ॥ भवि०॥३॥ तेरी महिमा कहिय न जावे, पार नहिं पावे ॥ पार० ॥ गंधर्व सुरपति सब देव, तेरे गुण गावे ॥ तेरे चरनुमें लपटाइ, सरस लय लावे ॥ सरस० ॥ नर नारी हियाके माहे, भक्ति तेरी चहावे ॥ तेरी तृष्णा सब निरलाणी, मुक्तिकु ठाणी ॥ मु०॥भवि० ॥४॥ मरु देवी कूखका जाया, अमर पद पाया ॥ अमर०॥ छपन्न कुमारी नारी, मिली जस गाया

॥ दुर्गतिका दुःख विरलाया, सफल करी काया ॥ सफल० ॥ जिनदास निरंजन देख, सरन तेरे आया ॥ समकितकी सेहज पीछान, मिली मोहे टाणी ॥ मिली० ॥ भविजीव तरन के काज बनाई बानी ॥ ५ ॥ (इति)

॥ श्री शांतिनाथजीनी लावणी ॥

॥ श्री शांतिनाथ महाराज विराजे, मांडव-गढ मांहि ॥ सरव धातुकी मुरत खासी, दर-सनणे त्यांहिं ॥ शांति० ॥१॥ ओलु दोलु बावन देरा, बीच जिनेसरजी ॥ मानभद्र महाराज खडा हे, शोभा दर्शनकी ॥ शां० ॥ २ ॥ देश देशके आवे जातरा, दर्शनके त्यांहि ॥ सुंदर मूरत खुब रचना, मांडव गढमांहि ॥ शांति० ॥ ३ ॥ देख सुपना तेरे दर्शन आया, मांडव

गढमाहि ॥ शो मण तो घी चढाया, दीपकके माहिं ॥ शांति० ॥ ४ ॥ उड्डध सीका पच आया, माडवगढ माहि ॥ अष्ट दरवकी पूजा करकें, गिनात जमराई ॥ शांति० ॥५॥ सेनक अरज करे कर जोडी, मूरति में मागी ॥ शांतिनाथ दुर्बलके दाता, जनम मरण त्यागी ॥ शांति० ॥ ६ ॥(इति)

॥ श्री नेमनाथजीनी लावणी ॥

॥ नेमजीकी जान बनी भारी, देखनकु आये नर नारी (ए आकणी) अनता घोडा ओर हाथी, मनखरी गिनती नहीं आती ॥ ऊंट पर धजा जो फरराती, गमकमें फिरती फरराती (दोहा) समुद्रविजयका लाडिला, नेम उनूका नाम ॥ राजूलदेकु आये परणवा, उग्रसेन घर

ठाम ॥ प्रसन्न भई नगरी सव सारी ॥ नेमजीकी जान वनी भारी ॥ १ ॥ कसुंवल वावा अति भारी, काने कुंडल छवि हे न्यारी ॥ कलंगी तूरा सुखकारी, माल गले मोतीयनकी डारी (दोहा) काने कुंडल झगमगे, शीश खूब झलकार ॥ कोडि भानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज रह्यां वाजां टंकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ छुट रही उनकी वरराई, व्याहनमें आये-वडे भाई॥ झरूखे राजुलदे आई, जानकुं देखी सुख पाई (दोहा) उग्रसेनजी देखकें, मनमें करे विचार॥ वहोत जीव करि एकठा, वाडो भरचो अपार ॥ करी सव भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशु जीव सवही कुरलाये ॥ नेमजी वचन फरमाये, पशु जीव कायेकूं लाये (दोहा) याको भोजन होवसी,

जान वासते एक ॥ एह वचन सुनी नेमजी, थरथर कापे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसु राजुलदे आइ, हाथ जन पकडयो छिनमाही ॥ काहा तु जाने मेरी जाइ, और वर है तुझ मोकलाई (दोहा) मेरे तो वर एकही, हो गया नेम कुमार ॥ और भुवनमें वर नहिं, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ साहेल्या सवही समजाव, हिये राजुलके नहिं आवे ॥ जगत सब झुठो दरसावे, मेरे मन नेम कुमर भावे (दोहा) तोडया कंकण दोरडा, तोडयो नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सोपारी, त्याग्यो सब सणगार ॥ साहेल्या मनहीं निलखाणी ॥ नेम० ॥ ६ ॥ तज्या सब सोले सिणगारा, आभूषण रत्नजडित सारा ॥ लगे मांहे

सबही सुख आरा, छोड कर चाली निरधारा (दोहा) मात पिता परिवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ विजोग कर चली आपशुं, जाय चढी गिरनार ॥ झूरती छोडी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुअनकी आई, त्याग जब कीनो छिनमांई ॥ नेम जिन गिरनारे जाई, पशुके बंधन छुडवाई (दोहा) नेम राजुल गिरनारपें, लीनो संजम दान ॥ नवलराम करी लावनी, उपन्यो केवलज्ञान ॥ जिनोकी किरिया शुद्धि सारी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ (इति)

॥ श्रीगोडी पारसनाथनी लावणी ॥

॥ जगत भविककज महेर अनंत गुण, तेज तपत है श्री जिनको ॥ प्रगट प्रबल प्रताप परम गुण, सुणतां सुख दिये तन मनको ॥

नील कमल दल नय कर दीपे, देह हे गुण-गणके वृंदा ॥ नमो निरंजन फणिपति सेवित, पास गोडीचा सुखकंदा ॥ १ ॥ (ए आंकणी) मोह करी कुंभस्थल भेदन, कंठे रव प्रभु तु सच्चा ॥ हरि हर इंद्र विरंचि देव गण, कर्म कीचमें पड कच्चा ॥ तुम सम ओर ठोर कुण जगमे, देव दुसरो जे नंदा ॥ नमो० ॥२॥ तु अकलंक सरूपी अरूपी, परमानंद पद तु दायी॥ तु शंकर ब्रह्मा जगदीश्वर, वीतराग तु निर्मोयी, अनुपम रूप देख तुझ रीज्या, सुर नर नारीके वृंदा ॥ नमो० ॥ ३ ॥ जलहल ज्वाल जलत चिहुं कोरे, धूम घटा गगनें चाली ॥ जलत काठ कोटर सर सर्पन, दरपत मरण दिशा आली ॥ जगत सरण दुःख हरण प्रबल प्रभु, कहंत कमठ मुण जोगिंदा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ तप जप करत

धरत नहिं करुणा, वासें दुःख दोहग पावे ॥ कहत कमठ तव अरुण नयन करी, जोग बात तुमकुं नावे ॥ पावक अंतर जलत नागकूं, सेवक हाथे निकसंदा ॥ न० ॥५॥ सुणी नवकार नाग जिन मुखसें, धरणींद्र पदवी पावे ॥ चंद कीरण उज्वल जस पसरित, पास प्रभु निज घर आवे॥ तजी संसार चरण प्रभु लीनो, ध्यान धरत मन आनंदा ॥ नमो ० ॥ ६ ॥ ध्यान धरत प्रभु देखी कमठसुर, आय करी परिसह भारी ॥ गगन भाग चिहुं ओर घनाघन, घोर घटा उलटी धारी ॥ चंचला चपला होत चिहुं ओर, चंचल चंपलाके वृंदा ॥ नमो० ॥ ७ ॥ कटट काटका होत गगनमें, गडड गडड चिहुं दिशि गाजे ॥ फरर फरर घन पवन फुरत हे, तरुवर करड मरड भांजे ॥ छनन छनन पावस जड लागी,

मूशल धार वरसदा ॥ नमो० ॥ ८ ॥ खलल खलल जगतीजल पसरत, छिनभर नाक तोडे आला ॥ मेरु परें प्रभु वीर रही तव, ध्यान रसें रहे मतवाला ॥ ततक्षण धरणरायको आसन, कपटी ज्यान ज्यु चालदा ॥ नमो० ॥ ९ ॥ ततक्षण धरण राय अरु धरणी, आय नमत जिनकु रंगें ॥ शिरपर छत्र धरे फणिगणको, शेप नाग डोलत अंगें ॥ हार्यो कमठ सरण करि प्रभुको, गयो निज स्थानकु हर्षदा ॥ नमो० ॥ १० ॥ नाचत धरणरायकी ललना, ठमक ठमक पग ठमकती ॥ छमक छमक नेंउआ छमकावत, धम धम घुघरी धमकती ॥ ताल तान लयमान प्रकार, नव नव छंदे नाचदा ॥ नमो० ॥ ११ ॥ धप मप धप मप मादल धमके, झरड कम्ट कग्ताल करे ॥ रण रण

रणके रण रणकंती, झल्लरी नाद रसें पसरे ॥ दडड दडड दुक्कडां वाजे, भुंगल भेरीना वृंदा ॥ नमो० ॥ १२ ॥ वाजे श्रीमंडल सरणाई, वीणा ताळ कंसाल छटा ॥ ढुक ढुक मिलत मिलत एक एकसें, जोर बनी तव रंग घटा ॥ प्रभु पण ज्ञान ध्यान लय लीना, मोडे कर्म अरिवृंदा ॥ नमो० ॥ १३ ॥ केवल ज्ञान लही प्रभु निर्मल, स्थापन चउविह संघ करे ॥ चरण कमल सुररचित कमल शिर, धरत धरणि जन तिमिर हरे ॥ शत सम आयु करी प्रभु पूरण, सिद्ध वधू कर पकरंदा ॥ नमो० ॥ १४ ॥ अजर अमर अविनाशि निरंजन, सिद्ध बुद्ध समरो रंगें ॥ परम महोदय परमातम पद, लहियें जिन सेवन संगें ॥ रोग सोग दोहग दुःख जावे, पावे सोहग सुखकंदा ॥ नमो० ॥ १५ ॥ अरि करी

जलण जलोदर जल भय, नाम जप्या सहू दूर टले ॥ प्रभूपद पद्म सेवनमें कमला, रंग रसाला आय मिले ॥ रूपविजय कहे सुनत लावनी, पामे चित्त परमानंदा ॥ नमो० ॥ १६ ॥ (इति)

॥ श्रीमहावीर भगवाननी लावणी ॥

॥ अनंतबली जिनराज जगतपति, चरण अंगुठे मेरु कंपाया ॥ देव देवी मिल करे नीतनति सब सुरपति आनंद पाया ॥ [ए आंकणी] ॥ तेरे गुणकी महिमा अंत पाइ, इतना गुनो वगमीन करे ॥ खमो अपराध प्रभू पापको, प्रेम नजर हम उपर धरे ॥ करि स्तुति उठे सुरि सुर सब, जन्म मोच्छव अब करणो सरे ॥ अधिक अधिक धरि हर्ष हियेमें, आत्म अपने तनको हरे ॥ शुद्ध तन मनमें करो महोत्सव,

शिव रमणीकुं सिताब वरो ॥ भगतिसें भर
धर्यो हीयाकुं, अब दुर्गतिसुं काहेकुं डरो ॥जनम
मरनकुं मेट दिया हे, सो जिन भक्तिसें नहाया
॥ देव० ॥ १ ॥ सुरनकी संपत सुख दायक,
जिनवरकी ए भक्ति भली ॥ दोहिलो तुं मत
होय जीवडा, अण तेडी ऋद्धि आवे चली ॥
उठाय कलश हाथोमें लीना, सुरपतिका मन
हुवा रली ॥ जय जय शब्द मुखसें सब बोले,
विषय गये तस दूर टली ॥ हरख वदन कर
सुर सब गावे, आनंद घडी मुझ आय मिली
॥ जन्म हमारो लेखे लग्यो हे, सुखकी सेज
सुरलोक ढली ॥ धन धन हे जिनकी जिंदगानी,
जिनवरका गुण मुख गाया ॥ देव० ॥२॥ करे
निरत जिनवरके आगें, वाजांकी धुन वाज रही ॥
सुरतका सुर नर हे सबला, महिमा मोसें न

जाय कही ॥ अग मोड हात जोड करे सब, सफल घडी मेरी आज भई ॥ उदय आनद दिनकर घर उग्यो, कुमति कलेसण अलगी गई ॥ सुर नरका सुखकी नहीं गिनती, अमरापुर पद जाय लही ॥ छपन कुमारी जिन गुन गावे, मुखसु कथन कर कीरति कही ॥ ऐसो उलट धरि करता महोत्सव, हिरदे हरख अधिका आया ॥ देव० ॥ ३ ॥ मेरु शिखरपर कलस ढाल कर, हाथ जोड सुर आगें खडे ॥ मैं चरणोका चाकर तेरा, अरज करे यु खडे खडे ॥ छत्र चमर ढाले जिनवर पर, ललि ललि सब सुर पाय पडे ॥ हुकम करो तो नीर नमणको, सब सुरपतिके सीस चडे ॥ इण विधिमें भक्ति जे करता, भव भवका सब पाप जडे ॥ तुम गुनको सुर पार नहिं ले, जिनदास कैसो करो

रडे ॥ फूल सुगंधी नीर छटकता, सुर सब प्रभुकुं घर लाया ॥ देच० ॥ ४ ॥ (इति)

॥ अथ छंदोनो संग्रह ॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं छंद ॥

(भुजंग प्रयातं छंद) ॥ शिवं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न वंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेच्छा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ न वंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न भोगं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न माया न लोभं ॥ चि० ॥ २ ॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिव्हा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा ॥ न

स्वामी न मृत्य न देवो न मर्त्यं ॥ चिं० ॥३॥
न जन्मं न मृत्युर्न मोद न चिंता, न क्षुद्रो न
भीतो न कृश्य न तद्रा ॥ न स्वेद न खेद न
वर्ण न मुद्रा ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे
निश्वनाथ, हृषीकेश विध्वस्त कर्मारिजाल ॥ न
पुण्य न पाप न चाक्षादि ग्राण ॥ चि० ॥५॥
न वालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो, न खेद न
भेद न मूर्त्तिर्न मेघा, न कृष्ण न शुक्ल न मोह
न तद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्य न मध्य न
अंत न माया, न द्रव्य न क्षेत्र न कालो न
भावाः॥ न गुर्वो न शिष्यो न हीन न दीन
॥ चि० ॥ ७ ॥ इद ज्ञानरूप स्वय तत्ववेदी,
न पूर्ण न शून्य न चैत्यस्वरूपी ॥ न अन्यो-
ऽन्य भिन्न न परमार्थमेक ॥ चि० ॥ ८ ॥ (शा-
र्दूलविक्रीडित वृत्तम्) ॥ आत्मारामगुणाकर गुण-

निधिं, चैतन्य रत्नाकरं ॥ सर्वं भूतगतागते सुख-दुःखे, ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा, ध्यायंति योगीश्वरा ॥ वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं, श्रीमान् हृदाभ्युद्यतं ॥९॥ (इति)

॥ अथ श्री शांतिनाथजीनो छंद ॥

(वीर जिनेसर केरोशिष्य–ए देशी)

॥ शांतिनाथको कीजे जाप, कोड भवोना कापे पाप ॥ शांतिनाथजी म्होटा देव, सूर नर सारे जहनी सेव ॥१॥ दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख संपति होवे भरपुर ॥ ठग फांसीगर जावे भाग, बळती होवे शीतळ आग ॥२ ॥ राजलोकमां कीर्ति घणी, शांति जिनेश्वर माथे धणी । जो ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधिकुं

मान ॥३॥ गड गुवड पीडा मिट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय ॥ सघळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकित काट्या कर्म ॥३॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हुं सेवक तमे पुरो आश ॥मुज मन चिंतित कारज करो, ।चिंता आरति विघ्नज हरो ॥५॥ मेटो म्हारा आळ जजाळ, प्रभु मुजने तुं नयण निहाळ ॥ आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु म्हारा काम ॥६॥ जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोतीनघा फूला कटे ॥ चेप लागण दोनु जळ जाय, विण औषध कट जाने छाय ॥७॥ शातिनाथना नामथी थाय, आखे ट्रट पडळ कट जाय ॥ कमळो पीळो जळ जळ झरे, शाति जिनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटाने रोग, भज्जन मित्रनो मळे सयोग ॥ एह्वो देव न दीसे ओर, नहि चाले

दुश्मनको जोर ॥ ९ ॥ लुंटारा सव जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास ॥ शांतिनाथनी कीर्ति घणी, कृपा करो तमे त्रिभुवन धणी ॥ १० ॥ अरज करुं हुं जोडी हाथ, आपशुं नहि कोई छानी वात ॥ देखि रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ॥ तुम सम जगमांहि नही कोय, तुम भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास चले नहि मरकी रोग, ताव तेजरो नांखे तोड ॥ मारि मिटाड कीधी प्रभु संत, तुज गुणनो नहि आवे अंत ॥ १३॥ तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥ काटो संकट राखो मान, अविचळ पदनुं आपो थान ॥ १४ ॥ संवत अढार चो-राणुं जाण, देश माळवो अधिक वखाण ॥

शेहेर जानरा चेतर माम, हु प्रभु तुम चरणाको दाम ॥ १५ ॥ ऋषि रुगनाथजी कीधो छद, काटो प्रभूजी म्हारा फद ॥ दृ जोड प्रभुजीनी वाट, मुज आगति चिंता सवि काट ॥१६॥(इति)

॥ श्री पार्श्वनाथनो छंद ॥

(त्रोटकछंद) ॥ आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्रशु प्रेम धरो॥ तुमे देश देशांतर काइ दोडो, नित्य नाम जपो श्री जिन रुडो ॥१॥ मन वाछित सघळा काज सरे शिर उपर छत्र चामर धरे ॥ कल्मल आगल चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच नर्को, मायणि डायणि जाय टळी ॥ छळ छिद्र न कोइ लागे रुडो ॥ नित्य० ॥३ ॥ एकांतर ताव सिया दाह, औषध विण जावे क्षण माह ॥

नवि दुःखे माथुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमाळा गड गुंवड सघळा, तस उदर रोग टळे सघळा ॥ पीडा न करे फिन गळ फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तीर्थंकर पास वहु, एम जाणे सघळो जगत सहू ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणारशि पुरि नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समय सुंदर कहे करजोडी ॥ नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्रीभीडभंजन पार्श्वनाथनो छंद ॥

(झुलणा छंद) राग प्रभाती–(मात पृथ्वी सुत प्रात उठी नमो–ए देशी)

॥ भीड भंजन प्रभु, भीड भंजन सदा, नहिं कदा निष्फल थाय सेवा ॥ भविजन भावशुं,

भजनमाही भजे, परमपद सपदा तएत लेवा ॥ १ ॥ काशी वणारशी, जिनपद पुरे जयो, वामा अश्वसेन सुत विश्व दीवो ॥ सेढी वत्रक तटे, खेटक पुर तपें, कल्पनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥ भीड मन भिति भय, भावठ भजणो, भक्ति जन रजणो, भाने भेटयो ॥ आज जिनराज मुज, काज सिद्धा मने, मोह राजाननो मान मेटयो ॥ ३ ॥ कोडि मन कामना, सुजम नहृ ठामना, शिव सुख धामना आज साध्या ॥ मगल मालिका, आज दीपालिका, मुज मन मदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें, कान्ति वद आठमें, मत्तर अठयोत्तरें पास गायो ॥ उदय निज दामनी, एह अरदास सुणि, हित धरी नाथजी हाथ साह्यो ॥ ५ ॥ (इति)

॥ अथ श्री गौतम स्वामीनो छंद ॥

(वीर जिणेसर केरो शिष्य-ए देशी)

॥ जयो जयो गौतम गणधार, म्होटी लब्धी तणो भंडार॥ समरे वांछित सुख दातार, जयो जयो गौतम गणधार ॥ १ ॥ वीर वजीर वडो अणगार, चौद हजार मुनि शिरदार ॥ जपतां नाम हूवे जयकार ॥ जयो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कलत्र सज्जन परिवार॥ आपे कनक कोडी विस्तार॥ जयो० ॥ ३ ॥ घर घोडा पायक नही पार, सुखासन पालखी उदार ॥ वैरी विकट थाये विसराळ ॥ जयो० ॥ ४ ॥ प्रह उठी जपीये गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमळा दातार ॥ रुप रेख मयण अवतार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रुपचंद गुरु

केरो शिष्य, गौतम गुरु प्रणमो निश दिश ॥
कहे चंद ए सुमतागार॥ जयो०॥ ६ ॥ (इति)

॥श्री जिन नव अंग पूजाना दूहा ॥

॥ जळ भरी संपुट पत्रमा, युगलिक नर पूजत॥
ऋषभ चरण अंगुटडो, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बळे काउसग्ग रह्या, विचर्या देश वि-
देश ॥ खडा खडा केवळ लह्यु, पूजो जानु नरेश
॥२॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान॥
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहु मान ॥३॥
मान गयु दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत॥ भुजा
बळे भवजल तर्या, पूजो खंध[1] महंत ॥४॥ सिद्ध
शिला गुण उजळी, लोकांते भगवंत ॥ वसीया
तेणे कारण भवी, शिर शिखा पूजंत ॥ ५ ॥

१ स्कंधो

तीर्थंकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत. ॥ ६ ॥ सोळ पोहार प्रभु देशना, कंठ विवर वरतुल ॥ मधुरध्वनी सुरनर सुणे, तीणे गळे तिलक अमूल. ॥७॥ हृदय कमळ उपशम वळे, बाळ्या रागने रोष ॥ हीम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष. ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी गुण उजली, सकळ सुगुण विसराम ॥ नाभि कमळनी पूजना, करतां अविचळ धाम ॥ ९ ॥ उपदेशक नव तत्वना, तिणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागशुं, कहे शुभवीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पंडित श्री कुंवरविजयजी कृत अष्ट प्रकारी पूजा ॥

(दोहा) त्रिजग नायक तुं धणी, महा महोटो

महाराज ॥ महोटे पुण्ये पामियो, तुम दरिशण हु आज ॥ १ ॥ आज मनोरथ मनि फल्या, प्रगटया पुण्य कल्लोल ॥ पाप करम दूरे टल्या, नाठा दुःख ददोल ॥ २ ॥ सुखदाई प्रभु तु वडो, तुज सम अवर न कोइ ॥ करम मल दुरे कर्या, पाम्या शिवपद सोय ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणीय (१) क्षय करी, दर्शनावरणीय (२) कर्म ॥ वेदनीय (३) कर्म दुरे करी, टाल्यु मोहनीय (४) कर्म ॥ ४ ॥ नाम (५) कर्म ने आयु (६) कर्म, गोत्र (७) अने अतराय (८) ॥ अष्ट कर्म एणी परे, दुर कर्या महाराज ॥ ५ ॥ दोष अढारे क्षय गया, प्रगटया पुण्य अनत ॥ अतरग सुख भोगवे, निश्चल धीर महत ॥ ६ ॥ कल्प वृक्षने कामकुभ, पूरे मनना कोड ॥ प्रभु सेवाथी ते मले, जो मछा[1] होय

1 श्रद्धा-इच्छा

अडोल ॥ ७ ॥ त्रण भुवनमां तुं वडो, तुज सम अवर न कोय ॥ इंद्र चंद्रने चकवा[1], तुज पद सेवे सोय ॥ ८ ॥ प्रभु सेवा भाव करे, प्रेम धरी मन रंग ॥ दुःख दोहग दूरे टले, पामे सुख मन चंग ॥ ९ ॥ पूजा करतां प्रा-णीया, पोते पूजनिक होय ॥ आभव परभव सुख घणां, तस तोले नहि कोय ॥ १० ॥ जीवडा जिनवर पूजिये, जिन पूज्या सुख थाय ॥ दुःख दोहग दूरे टले, मनवंछित सुख थाय ॥ ११ ॥ द्रव्यभावथी अतिघणो, हैडे हरख न माय ॥ एणेविध जिनवर पुजतां, पाप करम दुर जाय ॥ १२ ॥

॥ अथ प्रथम श्री जल पुजा ॥

(दोहा) सुगंधमय जल वासिने, जे पुजे जि-

---

1 चक्रवर्ति.

नराय ॥ तस त्रिभुवन जश विस्तरे, दुर्गंधता दूर जाय ॥ १ ॥ मलीन वस्तु उज्ज्वल करे, ए स्वभाव जल माही ॥ जलथी जिनवर पूजता, कर्म कलंक मिट जाय ॥ २ ॥ तीर्थोदक कुंभे करी, रतन प्रमुख श्रीकार ॥ अट सहस्स अड जातिना, अथवा कलशा चार ॥ ३ ॥ आठ जाति कलशे करी, नवरावे जिनराय ॥ तस त्रिभुवन जश विस्तरे, सुरपति सेवे पाय ॥ ४ ॥ ज्ञान कलश भरी आतमा, समता रस भरपूर ॥ श्री जिनने नवरावता, कर्म थाय चकचूर॥५॥

॥ अथ द्वितीय श्री चंदन पुजा ॥

(दोहा) केशर चंदन द्रव्य थकी, भाव थकी बहु मान ॥ जिनवर अंगे चरचता, प्रगटे आतम ज्ञान ॥ १ ॥ केशर चंदन घसी करी, भरी कचोला सार ॥ जिनवर अंगे चरचता,

पाप कर्यो परिहार ॥ २ ॥ बावना चंदन अति भलुं, कस्तुरी बरास ॥ एणी विध जिनवर सेवतां, पामे लील विलास ॥ ३ ॥ कनक कचोलां भरी करी, सेवे जिनपति पाय ॥ दुःख दोहग दूरे टले, मनवंछित सुख थाय ॥ ४ ॥ तपत वस्तु शीतल करे, चंदन शीतल आप ॥ चंदनसें जिन पूजतां, मिटे मोह संताप ॥ ५ ॥ पूजाने परिणाम दोय, करो चंदनकी रीत ॥ शीतलताने सुगधता, जेणे भाजे भव भीत ॥ ६ ॥

॥ अथ तृतीय श्री पुष्प पूजा ॥

(दोहा) प्रणिधाने सद्गति होवे, पुजाथी केम नव होय ॥ सुमनस भावे दुर्गता[1], पुजा पंचाशक जोय ॥१॥ शतपत्री वर मोगरो, चंपक जाई गुलाब ॥ केतकी डमरो बोलसीरी ॥ पूजो जिन भरी छाब ॥ २ ॥

---

1 निर्धन नारी.

॥ अथ चतुर्थ श्री धूप पूजा ॥

(दोहा) ॥ पावक ग्रहे सुगधकु, धूप कहावत सोय ॥ उखेवत धूप जिणदकु, कर्म दहन सन होय ॥१॥ धूप उखेवत जे जना, प्रभु आगल बहु मान ॥ दुर्गंधता दुरे करे, पामे अमर विमान ॥२॥ हुताशनमें काष्ट ज्यु, तेम ध्याना-नल कर्म ॥ तेणे मिशे धूप पूजा करो, जिम पामो शिव शर्म[1] ॥३॥

॥ अथ पंचम श्री दीप पूजा ॥

(दोहा) ॥ केवलनाण प्रभावशु, जेम लहो लोकालोक ॥ तेम पूजा द्रव्य दीपकी, करता शिवफल गेक ॥१॥ जगदीपक प्रभु दीपजे, करता भावो एह ॥ अवराणु जे अनादिनु, ज्ञान लहो निज देह ॥२॥

---

[1] सुख

॥ अथ षष्ठ श्री अक्षत पूजा ॥

(दोहा) ॥ हवे अक्षत पूजा करो, शालि व्रीहि[1] गोधूम ॥ उज्ज्वल परिपरि ढोवके, टालो मोहकी धूम ॥१॥ अक्षय फल लेवा भणी, अक्षत पुजा उदार ॥एह भव पण नवि क्षय होवे, राज्य रिद्धि भंडार ॥२॥

॥ अथ सप्तम श्री नैवेद्य पूजा ॥

(दोहा) ॥ हवे नैवेद्यनी पूजना, कीजे जीम हलिराय ॥ भव निर्वेद प्रभु मुखे, मागो अविचल ठाय ॥१॥ कर्ता भोक्ता मुज नहिं. पुद्गल भावनो जीव ॥ तेणो पुद्गलनी तर्जना, करतां शर्म सदैव ॥ २ ॥

॥ अथ अष्टम श्री फल पूजा ॥

(दोहा) ॥ फल पूजा करतां थकां, सफल

---

1 डांगर.

करो अवतार ॥ फल मागो प्रभु आगले, तार तार मुज तार ॥१॥ उत्तम फल उपम जग नहि, पाम्या पछी नहिं अंत ॥ अव्याबाध अचल अजर, भाषु शिव अनंत ॥ २ ॥ जे जेसी करणी करे, ते तेसा फल होय ॥ फल पुजा जिन देवकी, निश्चे शिवपद होय ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी एणी परे, जे पूजा करे उदार ॥ अष्टमी गति फल ते लहे, पामिजे भव पार ॥४॥ जिन उत्तम पद पद्मनी, नित सेवा करो त्रण काल ॥ निजरूप प्रगटे सुख होवे, अमि कुंवर कहे नहि वार ॥ ५ ॥

॥ इति पंडित श्री कुंवरविजयजी कृत
अष्ट प्रकारी पूजा समाप्त ॥

पंडीत श्री उत्तमविजयजी कृत अष्टप्रकारी
संपुर्ण पूजामांथी फक्त दुहानो संग्रह.

॥ श्री अष्टप्रकारी पूजाना दुहा ॥

न्हवण विलेपन कुसुमनी, धूप दीप मनोहार;
अखंड अक्षत नैवेद्यनी, अष्टमी फळ सुविचार॥१॥
भाव–स्तवने कारणे, द्रव्य स्तव अधिकार;
कारणथी कारण सधे, तेणे धुर पूजा उदार ॥२॥
पिठ मनोहर थापिने, अरिहंत प्रतिमा सार;
ताल मृदंग वाजित्र युत्त, करिये हर्ष अपार॥३॥

(प्रथम जल पूजा)

तीर्थोदक कुंभो भरी, रत्न प्रमुख श्रीकार ॥
अष्ट सहस्स अड जातिना, अथवा कलशा च्यार
॥१॥ इणी परे जल पूजा करी, करीए अप्पा शुद्ध;
माने छिणुं जे एहमां, जाणो तेह अबुद्ध ॥ २ ॥

(बीजी चंदन पूजा)

हवे करवा गुणवासना, असंख्यात प्रदेश;
चंदननी पूजा करो, आणी भाव विशेष ॥ १ ॥
पूजानें परिणाम दोउ, करो चंदनकी रीत,
शीतलताने सुगंधता, जीम भाजे भव भीत ॥ २ ॥

(त्रीजी पुष्प पूजा)

हवे त्रीजी सुमनस तणी, पूजा अतिही उदार;
सुमनस सुख जीणथी लहे, त्रिणे सुमनस प्रकार १
[1]प्रणिधाने सदगति होये, पूज्ये किम नवी होय;
[2]सुमनस भवे [3]दुर्गता, पूजा पचाशक जोय, ॥२॥

(चोथी धूप पूजा)

[4]हुताशनथी काष्ट ज्युं, तिम ध्यानानले कर्म,

---

१ एकाग्र भावे २ योग्यता भावे ३ दुर्गता (स्त्रीए) भारी भगत न्र महावीर देवने बहुत पूजा करवा जती मार्गमां आयुष्य क्षय थयथी योग्यता आवथी वाहूग ने पामी ४ अग्नि

तिणे मिशे धुप पूजा करो, पामो ज्युं शिव शर्म॥१॥
इणीपरे धुप पूजा करी, जिन आंगळ शुभ भाव;
टाळी विभावनी परिणति, दूर करो परभाव ॥२॥

(पांचमी दीप पूजा)

[१]जगप्रदीप पुर दीप शुभ, करतां भावो एह;
अवराणुं जे अनादिनुं, ज्ञान लहो निज तेह ॥१॥
केवळनाण[२] पइवशुं, ज्युं लहे लोकालोक;
त्युं पूजा द्रव्य दीपनी, करतां शिव फळ रोक ॥२॥

(छठी अक्षत पूजा)

हवे[३] अक्षत पूजा करो, शाळी व्रीहि गोधूम;
उज्वल प्रभुपर ढोइने, टाळो मोहकी धूम ॥१॥
अक्षय फळ लेवा भणी, अक्षत पूजा उदार;
इह भव पण नवि क्षय होवे, राज ऋद्धि भंडार॥२॥

---

१ जगदीपक श्री जिनेश्वर आगळ जयणायुक्त (गायना घीनो) दीप प्रगटाववतां. २ प्रदीप—दीपक. ३ (अणीशुद्ध) शालि—चोखादि.

(सातमी नैवेद्य पूजा)

हवे नैवेद्य निवेदना, कीजे जिम हलीं राय,
भव निर्वेद[1] प्रभु मुखे, मागो अविचळ ठाय ॥१॥
कर्त्ता भोक्ता मुज नहि, पुद्गल भावनो जीव,
तिणे पुद्गलनी त्यागना, करता शर्म सदैव ॥२॥

(अष्टमी फळ पूजा)

फळ पूजा करता थका, सफळ करो अवतार;
फळ मागो प्रभु आगळे, तार तार मुज तार ॥१॥
जस फळ ओपम जग नहि, पाम्या पछी न अंत,
अव्याबाध अचळ अरुप, मागो सुख अनंत ॥२॥

****

(इति श्रीअष्टप्रकारी पूजाना दुहा संपूर्ण)

****

१ संसार उपरथी वैराग्य

श्री नवपदजी (सिद्धचक्रजी)ना आयंबिलनी ओळीमां खमासमण वखते बोलवाना काव्यो तथा पदो.

॥१॥ प्रथम दिवसे श्री अरिहंत पद ॥

॥ अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रुपी थाय रे ॥ वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभळजो चीत लाइ रे ॥ आतम ध्यानें आतमा, ऋद्धि मळे सवी आई रे ॥ महावीर० ॥ १ ॥

॥ इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥

(ए प्रमाणे खमासमण देई)

ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं, ए प्रथम पदें श्री

अरिहंतजी, बार गुणे शोभित, मध्यभागे विराजमान, उज्ज्वल वर्ण सहित, एवा श्री अरिहंत भगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे बार (१२) खमासमण देवा)

॥२॥ द्वितीय दिवसे श्री सिद्ध पद ॥

॥ रुपातीत स्वभावजे, केवळ दसण नाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्ध गुण खाणी रे ॥ महावीर० ॥ २ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ऱ्हीं नमो सिद्धाणं, ए बीजे पदे श्री सिद्ध परमात्मा, आठ गुणे शोभित, पूर्वदिशे विराजमान, रक्त वर्ण सहित, एवा श्री सिद्ध भगवंतने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे आठ (८) खमासमण देवा)

॥३॥ तृतीय दिवसे श्री आचार्य पद ॥

॥ ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ महावीर० ॥ ३ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं, ए त्रीजे पदे श्री आचार्यजी, छत्रीश गुणें शोभित, दक्षिण दिशें विराजमान, पीतवर्ण सहित, एवा श्री आचार्यजीने म्हारी त्रिकाळ वंदना होजो.

(ए प्रमाणे छत्रीश (३६) खमासमण देवा)

॥४॥ चतुर्थ दिवसे श्री उपाध्याय पद॥

॥ तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जग बंधव जग भ्राता रे ॥ महावीर० ॥ ४ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण, ए चोथे पदे श्री उपाध्यायजी, पचीश गुणे शोभित, पश्चिम दिशे विराजमान, नील वर्ण सहित, एवा श्री उपाध्यायजीने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे पचीस (२५) खमासमण देवा)

॥५॥ पंचम दिवसे श्री साधु पद ॥

॥ अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शु मुंडे शु लोचे रे ॥ महावीर० ॥ ५ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूण, ए पांचमे पदे श्री साधुजी, सत्तावीश गुण शोभित, उत्तर दिशे विराजमान, श्याम वर्ण सहित, एवा सर्व

साधुने महारी त्रिकाल वंदना होजो.
(ए प्रमाणे सत्तावीश (२७) खमासमण देवा)

॥ ६ ॥ षष्ट दिवसे श्री दर्शन पद ॥

॥ शम संवेगादीक गुणा, क्षय उपशम जे आवे रे ॥ दर्शन तेहीज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥ महावीर० ॥ ६ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स, ए छठे पदें श्री सम्यक् दर्शन, सडशठ बोलें शोभित, अग्नि खूणे विराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री दर्शन पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे सडसठ (६७) खमासमण देवा.)

॥७॥ सप्तम दिवसें श्री ज्ञान पद ॥

॥ ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षय उपसम तस

थाय रे ॥ तो हुये एहीज आतमा, ज्ञान अ-
बोधता जाय रे ॥ महावीर० ॥ ७ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीं नमो नाणस्स, ए सातमे पदे श्री स-
म्यक् ज्ञान, एकावन भेदें शोभित, नैऋत्य खूणे
विराजमान, श्वेत वर्ण सहित, एवा श्री ज्ञान प-
दने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे एकावन (५१) खमासमण देवा)

॥८॥ अष्टम दिवसे श्री चारित्र पद ॥

॥ जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभा-
वमा रमतो रे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोह-
वने नवी भमतो रे ॥ महावीर० ॥ ८ ॥

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स, ए आठमे पदे श्री

चारित्र, सत्तर भेदें अने शित्तेर प्रकारे शोभित, वायव्य खूण विराजमान. श्वेतवर्ण सहित, एवा श्री चारित्र पदने महारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे शित्तर (७०) समासमण देवा)

॥ ९ ॥ नवम दिवसे श्री तप पद ॥

॥ इच्छारोधे संवरी, परिणती समता योगे रे ॥ तप ते एहीज आतमा, वर्त्ते नीज गुण भोगे रे ॥ महावीर० ॥ ९ ॥ (॥१०॥) आगमनो आगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतम भावे थीर होजो, परभावे मत राचो रे ॥ वीर०॥११॥ अष्टक सकळ समृद्धिनी, घटमाहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतम राम छे सा-खी रे ॥ वीर० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अव

लंनने, आतम ध्यान प्रमाणो रे ॥ वीर०॥१३॥-
ढाळ बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी
वाचक जस तणी, कोई नये न अधुरी रे ॥ महा
वीर० ॥ १४ ॥ (इति)

(खमासमण देई)

ॐ ह्रीँ नमो तवस्स, ए नवमे पदें श्री तप,
चार भेदे अने पचाश प्रकारे शोभित, ईशान-
खूणे बिराजमान, श्वेतवर्ण सहित, एवा श्री तप
पदने म्हारी त्रिकाल वंदना होजो.

(ए प्रमाणे पचाश ('५०) खमासमण देवा

आ प्रमाणे आयंबिलना ओळीना नवे दिवस जिन
मंदिरादिकमां सिद्धचक्रजीनी स्थापना करी प्रदक्षिणा स
हीत खमासमण देवा छेल्ला दशमा (पारणाना) दिवसे
नवे दिवसना पदमांथी एक एक खमासमण लेई नव
खमासमण देवा

॥ अथ प्रभातनां पच्चख्खाण ॥

॥ १ ॥ नमुक्कारसहि मुठसहिनुं ॥

॥ उग्गएसूरे, नमुक्कारसाहिअं, मुठिसाहिअं; पच्चख्खाइ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं,पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥१॥

॥ २ ॥ पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गएसुरे, नमुक्कारसाहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं मुठिसाहिअं, पच्चख्खाइ ॥ उग्गएसुरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहूवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ पुरिमड्ढ अवड्ढनु पच्चख्खाण ॥

॥ उग्गए सुरे नमुक्कारसहिअ पुरिमड्ढ अवड्ढ मुठिसहिअ पच्चख्खाइ सुरे उग्गए चउव्हिपि आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेण पच्छन्नकालेण दिसामोहेण साहुवयणेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्ति-यागारेण वोसिरे ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ विगइ निविगइनु पच्चख्खाण ॥

॥[1]विगइओ [2]निविगइओ पच्चख्खाइ अन्नत्थणाभोगेण सहसागारेण लेवालेवेण गिहत्थसंसट्ठेण उख्खित्तविवेगेण पडुच्चमख्खिएण पा

---

१ विगइओ—एकेके एक विगयनो त्याग २ निविगइओ—सर्व विगयनो त्याग करवो होय तो ए आगार कहेवो

रिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिव-त्तियागारेणं वोसिरे ॥ ४ ॥

॥ ५ ॥ नियासणा एकासणानुं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सुरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साढपोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमड्ढं मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ॥उग्गए सुरे, चउविहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं (¹ विगइओ पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडु-

---

१ छ विगयमांथी कोई पण विगइ त्यागनुं पच्चखाण करवुं होय तो कौंसमां बतावेल आगार कहेवा. विगय त्याग न करवी होय तो ए आगार कहेवानी जरुर नथी.

च्चमखिएणं, पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण,) बियासणं पचरूखाइ, तिविहंपि आहार, असण, खाइमं, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, सागारियागारेण आउटण पसारेण, गुरु अब्भुठाणेण, पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागरेण। पाणस्स लेवेणवा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा वोसिरे ॥ जो एकासणानु पच्चरूखाण करवु होय तो, बियासणने ठेकाणे एकासणनो पाठ केहवो ॥ ५ ॥

॥ ६ ॥ आयंबिलनु पच्चरूखाण।

॥ उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअ, पोरिसिं, साढ पोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, मुठिसहिअ

पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सुरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहु वयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठा वणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-यागारणे ॥ एगासणं पच्चक्खाइ ॥ तिविहंपि-आहारं, असणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउं टण पसारेणं, गुरुअब्भुठाणेणं, पारिठावणिया-गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेणं वा, बहु-लेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरे॥

॥ ७ ॥ चउविहार उपवासनुं पच्चख्खाण ॥

॥ सुरे उग्गए अब्भत्तठ पच्चख्खाइ ॥ चउव्विहंपि आहार, असण, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥ ७ ॥

॥ ८ ॥ तिविहार उपवासनुं पच्चख्खाण ॥

सुरेउग्गए, अब्भत्तठ पच्चख्खाइ ॥ तिविहंपि आहार, असण, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण ॥ पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, सूरे उग्गए पुरिमड्ढ, अवड्ढ, मुठिसहिअ, पच्चख्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेणं,

दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेणवा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा, वोसिरे ॥ ८ ॥

॥ ९ ॥ चउत्थ छठ्ठ अठ्ठम भत्तादिकनुं पच्चखाण ॥

॥ सुरे उग्गए [1] चउत्थभत्तं अभत्तठं पच्चक्खाइ, सुरे उग्गए [2] छट्ठभत्तं अभत्तठं पच्चक्खाइ, सुरे उग्गए [3] अठ्ठमभत्तं अभत्तठं पच्चक्खाइ, तिविहं

---

१ चउत्थभत्तं—उपवासना पहेला अने छेला दिवसे एकासणु करी उपवास एक करवो ते. २ छठ्ठभत्तं—बे उपवास. ३ अठ्ठमभत्तं—त्रण उपवास. एज प्रमाणे च्यार उपवास वालाने दसम भत्तं, पांच उपवास वालाने द्वादश भत्तं आप्रमाणे जेटला उपवास होय तेनी बमणी संख्या करी तेमां बे मेळवी जे संख्या थाय तेटला भत्त कहेवुं.

पिआहारं (बाकीना आगार तिविहार उपवास मा म्हा प्रमाणे कहेवा) ॥ ९ ॥

॥१०॥ छट्ठ अट्ठमादिक तप करे अने बीजा दिवसादिकें पाणी वापरवुं होय त्यारे पाणहारनु पच्चख्खाण

॥ पाणहार पोरिसिं मुठिसहिअ पच्चख्खाइ, अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेण, साहुवयणेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेणवा, वोसिरे ॥ १० ॥

॥११॥ गठसहिय आदि अभिग्रहोनुं पच्चख्खाण ॥

॥ गठसहिअ वेट्ठसहिअ दिवसहिअ थिवुगसहिअ मुठिसहिअं पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगे-

णं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं वोसिरे ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ चउद-नियम धारनारे सवारे अने सांझे लेवानुं देसावगासिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ देसावगासियं उवभोग परिभोगं पच्चख्खाइ. अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ १२ ॥

॥ अथ सांझना पच्चख्खाण ॥

(तिहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, निविगइ, आंयंबिलं, तिविहार उपवास अने छठ अठमादि पच्चख्खाण करे तो तेणे सांझे पाणहारनुं पच्चख्खाण करवुं, ते आवी रीतेः—)

॥१३॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खाइ ॥

अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥ १३ ॥

॥ १४ ॥ चउविहारनु पच्चख्खाण ॥

॥ दिवस चरिम पच्चख्खाइ ॥ चउविहंपि आहार, असण, पाण, खाइम, साइम ॥ अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥ १४ ॥

॥ १५ ॥ तिविहारनु पचख्खाण ॥

॥ दिवस चरिम पचख्काइ ॥ तिविहंपि आहार, असण, खाइम, साइम, अन्नथ्यणाभोगेण, सहसागारेण, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥ दुविहारनु पच्चख्खाण ॥

॥ दिवस चरिम पच्चख्खाइ ॥ दुविहंपि

अहारं, असणं, खाइमं, अन्नथ्थणाभोगेणं, सह-सागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरे ॥ १६ ॥

(श्रीमान् श्री हेमचंद्राचार्य प्रणित)

॥ श्री महादेव स्तोत्रनो संस्कृत श्लोक उपरथी गुजराथी भाषामां अनुवादना काव्यो ॥

(प्रयोजक सांकळचंद पितांबरदास शाह.)

(हरिगीत छंद.)

जेनुं अतिशय शान्तरसथी भरेलुं दर्शन यथा,
जगजीवने जे अभय दाता मंगळिक मानुं तथा;
दर्शन अमोघ अपूर्व उत्तम भव्य भयहर छे सदा,

तेथीज ते शिर श्रेष्ठ छे हु हर्ष भेर नमुं मुदा. १
सौ देवना पण देव जे अति सर्वसमृद्धिवान छे,
तेथी महेश्वर मानीए ठकुराइने चिद् ज्ञान छे,
एवा समर्थ स्व राग द्वेषथी रहित परमात्मा खरा,
ते जिनेश्वरने नमु जे सुख दायका पावन करा. २
परकाश लोका लोकने करणार जस महा ज्ञान छे,
महादयाने महा दमन ते जगनाथने महा ध्यान छे;
ए लक्षणे महादेव ते त्रिभुवन विषे कहेवाय छे,
बीजा अनेरा नाम मात्र कुदेव तेह गणाय छे. ३
निज शरिरमा रहेनार विषय कषाय आदिक[1] त-
स्करो, ते सर्वथा जीती लीधा ए देव सेवा आदरो;
ते महादेव गणाय बीजा राग द्वेषी देवला,
नव तर्या ते केम तारशे जे भव[2] नोका सम नला. ४
दुर्जय महा जे राग द्वेष रूपी महा सुभटो तणो,

---

१ चोरा २ काणी नाव

भवरण विषे जेणे कर्यो जय सर्वथा जिन ते भणो;
त्हेनेज हुं महादेव मानुं नाम धारी अन्य छे, अहा!
महादया जगजीव-शासन रसिक करवा धन्य छे. ५
लौकिक मतमां शब्द मात्रज महादेव मनाय छे,
पण जैन शासनमां सदा गुण युक्त देव गणाय छे;
ए शब्दने वळी अर्थथी महादेव जैनो मानता,
विपरीत अन्यमति सदा कल्पित देव पिछाणता. ६
वळी शक्ति मात्र विज्ञान लक्षण लौकिके महादेव छे,
पण जैन शासन मांह्य व्यक्त विज्ञान लक्षण देव छे;ए
लक्षणे महादेव श्री वीतराग [1] ते स्वयमेव छे, जेणे
घणी महा मोह जाळ [2] उच्छेदी ते महादेव छे ७
महामद विवर्जीत महालोभ विमुक्त देव स्वरुप छे,
वळी महागुण युत एज छे महादेव चिद्घन रुप छे;
ते गुणयुत महादेवने हुं नमस्कार करुं मुदा, जे

---

१ पोतानी मेळे—स्वभाविक. २ उखेडी.

तरण तारण दुःख निवारण अभय आपे छे सदा. ८
महा राग द्वेषने मोह तेमज कषायो जेणे हण्या,
ते सत्य जग महादेव याज्ञु अवर कुदेवो गण्या,
ते डुब्या पोते बुडाडे निज भक्तने कल्पित अहा,
नर भजे निर्बुधो कुदेवोने भजे ते मुढा महा. ९
महा काम ज्वरनो नाश कीधो महा भय दूरे कर्या,
उपयोग महाव्रतनो कर्यो ते महादेव खरा¹ धरा;
हु शरण करु महादेव एवा जितेंद्रियनु सर्वदा,
साम्राज्य जे शिवपुरिनु आपे शिव ते रहु सदा. १०
महा क्रोधने महा मान माया महा मद जेणे हण्या,
महा लोभ आदिक दोष सघळा हण्या जेणे मूळ
खण्या,
अहा ते खरा महादेव शुभ केहवाय जगमा शाश्वता,
बीजा सरागी देव जुठा कषायो युत लाजता ११
जे महा दयाळु महानदी अने महा ज्ञानी पूरा, महा

1 पृथ्वी

योगी ने महा तपस्वी महा मौनी ते प्रभुजी खरा;
महादेव ए शुभ लक्षणो युत सदा शोभे जयकरा,
क्यां जिनपति सु गजेंद्र सम क्यां अन्य देवो
खर[1] धरा. १२

महा वीर्यने महा धैर्य वळी महाशील जेमां छे सदा,
महा गुणने महा क्षमा आदिक सत्व जेमां छे यदा;
महादेव ए कहवाय जे छे अभयदाता सर्वथा, जे
पमाडे जगजीवने शाता वधु शी कहुं कथा? १३

थयुं स्वतःपरगट ज्ञान लोकालोक परकाशक यथा,
जेमां अनंतु वीर्यने चारित्र जेनामां तथा;
साक्षात् ए शुभ उद्भव्यां ते स्वयंभु कहेवाय छे,
बीजा अनेरा देव तेह सरागी द्वेषि गणाय छे. १४

स्त्री शस्त्र आदि रहित जे कायोत्सर्ग मुद्रा मुदा,
मुद्रा पर्यंकासन धरी जे प्रशम रस झीले सदा;

---

१ पृथ्वी तळ उपर.

एवा प्रभु जिनपति ते शिव अने शंकर जाणीए,
एथी रहित अन्यमति देवो देव रुप न मानीए. १५
साकार निराकार छे वळी मूर्त अमूरत जेह छे,
जे परम आत्मा बाह्य आत्मा अतरात्मा तेह छे,
छे स्वरूप एनु अकळ जे नव ओळखे अज्ञो डरी,
पंडितजनो करता परीक्षा वीतराग तणी खरी. १६
जे परम दर्शन ज्ञान योगथी अक्षय आत्म
स्वभावने,
पाम्या वळी जे थया परमात्माज तजीय विभावने,
जे क्षमा परम अने दयायुत संता परमात्मा खरा,
कहनाय छे सार्थक नथी प्रभु निरर्थक
जग भास्करा, १७
जे सिद्ध अविनाशीज सुख सप्राप्तथी परमात्म छे,
वळी प्रथम कर्मवशात् संसारे भम्या बाह्यात्म छे, ते-
मज निरेरूथी देहधारी छता अतर आत्म छे, ए त्र-

१ ज्ञा॰ दर्शन — मूर्व

ग प्रकारे शिव मनाय श्रीजिनपति ते आप्त छे. १८
जे अवस्था दोषित तेह सकल अवस्था जाणवी,
वळी दोष रहित निष्कल अवस्था तेज साची
मानवी;
ते सर्वथा निज देह रहित थतां परमपद स्थित दशा,
वीतराग ते पामे दशा बीजा सुमार्गेथी खस्या! १९
जे एक मूर्ति छतां पण पर्याय नये त्रिमूर्ति छे,
आत्मा तणा शुद्ध ज्ञान दर्शन चरण गुणथी पूर्ति छे;
तथीज ब्रह्मा विष्णु महेश्वर त्रिमूर्ति कहेवाय छे, वी-
तराग ने उपमा घटे ए अवरमां न घटाय छे.२०
जे एक मूर्ति छतां ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नव घटे,
ए त्रइण भाग न बने छे भिन्न परस्पर मिथ्या रटे;
ए त्रइणनी मूर्ति यथाविध एक कदी नव संभवे.
आवे विरोध ए वात कहेतां अन्यमति जेम तेम
लवे. २१

छे विष्णु कार्य स्वरुप ब्रह्मा क्रियारुप जाणो यथा,
वळी महेश्वर कारण रुपे छे एक मूर्ति नव तथा,
एवीज रीते कार्य कारण युक्त मूर्ति न एक छे,
घटना घटे नव एक कहेता कहे ते नर[1] भेक छे
॥२२॥

छे प्रजापतिनो पुत्र ब्रह्मा मात पद्मावति कही,
अभिजित नक्षत्रे जनम जम एक मूर्ति नव रही,
अहा ! अर्थ व्यर्थ करे मुढात्मा तत्व ते जाणे नहीं,
वीतराग प्रणित न मूत्र जाणे वात युक्ति नव कही.
॥२३॥

वसुदेवनो सुत विष्णु छे माता कही जम देवकी,
नक्षत्र जन्मनु रोहिणी तो एक मूर्ति क्या टकी ?
जिन शासने कही युक्त वातो अन्यमति नव सद्दहे,
कल्पित-कपोल कथा कु विकथा शिरो पी इत उत
लहे. ॥२४॥

---

1 देडको.

पेढालनो सुत रुद्र छे तस सत्यकी माता कही,
नक्षत्र मूळमां जन्म जेनो एक मूर्ति क्यां रही ?
अर्धांग राखे अंगना जे शूळ शस्त्र धरे सदा, वीत-
रागने नहीं शस्त्र रमणि प्रशमरस झीले मुदा. २५

॥ भुजंगी छंद ॥

जुवो वर्ण रातोज ब्रह्मा तणो छे,
वळी श्वेतवर्णि महेश्वर भण्यो छे;
तथा श्यामवर्णि अहा ! विष्णु केवो ?
न मूर्ति कदा संभवे एक देवो ? ॥२६॥
जपे जापमाला सदा एह ब्रह्मा,
धरे रुद्र त्रिशूळने अंक रामा;
वळी शंखने चक्र छे विष्णु पासे,
न मूर्ति कदा संभवे एक खासे ? ॥२७॥
वळी चार मुखोज ब्रह्मा कह्यो छे,
तथा त्रइण नेत्र महेश्वर रह्यो छे;

अहा ! विष्णुने हाथ छे चार केना ?
न मूर्ति कदा संभवे एक देवा ? ॥२८॥
मथुरा विषे जन्म ब्रह्मा तणो छे,
महेश्वर तणो राजगृहिमा भण्यो छे,
वळी द्वारिका कृष्णनो जन्म जाणो,
न मूर्ति कदा एक तो केम ताणो ? ॥२९॥
जुवो हंसनुं [१]यान ब्रह्मा तणु छे !
वळी नंदीनु यान तो रुद्रनु छे,
तथा विष्णुनु यान जाणो गरुडे,
न मूर्ति कदा एक तो केम जुडे ? ॥३०॥
जुवो पद्म ब्रह्मा तणे हाथ दीसे,
महेश्वर तणा हाथमा शूळ रीसे,
तथा विष्णुना हाथमा चक्र केतु ?
न मूर्ति कदा एक के केम एतु ? ॥३१॥

---

१ वाहन

थया कृत युगेज ब्रह्मा विचारा,
थया युग त्रेता विषे रुद्र न्यारा;
अने द्वापरे विष्णुनी उत्पति छे,
न मूर्ति कदा एकए कुवृत्ति छे. ॥३२॥
वळी ज्ञान ते विष्णु साचाच मानुं,
सदा शुद्ध चारित्र ब्रह्मा वखाणुं;
कह्या ज्ञान सम्यकत्वथी शिव शान्ति,
घटे मूर्ति अर्हत तणी सौम्य कान्ति. ३३
[१]मही [२]वारी वा [३]वन्हि यजमान मानुं,
वळी [४]व्योमने [५]सोम जे श्रेष्ट [६]भानु;
यथा आठगुणो वित्या राग जेना,
घटे त्हेमने ते वीजाने घटेना. ॥३४॥
प्रसन्ना सुवारी क्षमा तेज पृथ्वि,
निःसंगी सुवायु अने योग वन्हि;

१ पृथ्वि. २ पाणी. ३ अग्नि. ४ आकाश. ५ चंद्र ६ सूर्य.

छता मुर्ख माने कषायो भरेला,
कुदेवो छता देव माने छकेला. ॥३५॥
दया दानने जे तपो युक्त आत्मा,
खरा एज यजमान मानो प्रमात्मा,
अने लेप वर्जी स्वभावे सुआत्मा,
सदा व्योमनी तुल्य मानुज महात्मा ३६
सदा सौम्य मूर्ति रुपे हु पिछाणु,
खरा चद्र श्री अर्हतोने वखाणु,
अने ज्ञान विकाशथी सूर्य जाणु,
बीजा अन्य जे आगियाने न मानु.३७
[1]निमुक्ता अहा ! पुण्यने पाप येथी,
वळी [2]वर्जीता राग ने द्वेष तेथी,
नमस्कार ते अर्हतो ने करे जे,
न इच्छा छता शिव श्री ने वरे ते.३८

---

१ मुकाएला २ रहिता ३ सोम्य दर्पा स्पर्शी

अकारेथी विष्णु रकारेथी ब्रह्मा,
हकारे शिवा जाणवा जे प्रशम्या;
नकारेथी मानो सदा श्रेष्ठ मुक्ति,
रह्यो अर्थ अर्हन् पदे ए सुयुक्ति. ३९
अकारेज आदि प्रबोधे सुधर्मो,
वळी आदि मुक्ति स्वरुप ज्ञान परमो;
तथा विध अर्हन् पदे ए अकार,
रह्यो अर्थ युक्तो कह्यो सौ स्विकार. ४०
रुपीने अरुपी स्वरुप द्रव्य वांच्युं,
प्रभु त्हें दीठुं ज्ञान चक्षुथी साचुं;
लोकालोक दीठा प्रभु त्हें प्रकाश्या,
भणे भाग्यशाली रकारे सु रासा. ४१
हण्या राग ने द्वेष मोहादि जेणे,
परीसा सह्या ने हण्या कर्म एणे;
अहा ! वीतरागे जीती सर्व बाजी,

हकारे भण्या ते थया निश्च काजी. ४२
चळी पुण्यने पाप जाण्या प्रभुता,
अने आठ सुप्रातिहार्योथी युक्ता,
सदा शुद्ध मतोपथी पूर्ण स्वामी,
नकारे भणे पंडितो शीर नामी. ४३
भवो बीजना अंकुरा राग आदी,
गया दोष जेना चराटी प्रमादी,
भले ब्रह्म विष्णु हरो जिन हावे,
नमस्कार तेहने करु पाप धोवे. ॥४४॥
॥ हरिगीत छंद ॥
भगवान् हेमाचार्य जे सर्वज्ञ कलिकाळे खरा,
महादेव स्तोत्र रच्यो रुडो जे धर्मधुरंधर धरा,
अनुवाद आ शुभ छंद साकळचंद रांचे स्तवना करे,
जे भणे निसुणे भव्य ते निश्चे वरे शिवश्री
खरे ॥ ४५ ॥

॥ श्री आदिनाथजीनी आरती ॥

॥ जय जय आरती आदि जिणंदा, नाभिराया मरुदेवीको नंदा ॥ जय जय० ॥ १ ॥ पहेली आरती पूजा कीजे, नरभव पामीने लाहो लीजे ॥ जय जय० ॥ २ ॥ दूसरी आरती दीन दयाळा, धुलेवा मंडन प्रभु जग अजवाळ्या ॥ जय जय० ॥ ३ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन देवा, सुर नर इंद्र करे तोरी सेवा ॥ जय जय० ॥ ४ ॥ चोथी आरती चउगति चुरे, मनवंछित फळ शिवसुख पुरे ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ पांचमी आरती पुन्य उपावे, मूळचंद्र रीखव गुण गावे ॥ जय जय० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ अथ श्री आदिनाथ जिन आरती ॥

॥ पहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजा

मंडग ऋषभ जिणदा ॥ आरती कीजे जिनराज तुमारी ॥१॥ दुसरी आरती मारुदेवी माता, युगला धर्मनिवार करता ॥ आर० ॥२॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्न सिंघासण मारा प्रभुजीने सोहे ॥ आर० ॥३॥ चोथी आरती नित्य नरी पूजा, देव निरंजन अवर न दुजा ॥ आर० ॥४॥ पांचमी आरती प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ आर० ॥५॥ (इति)

॥ श्री आदिनाथजीनी आरती ॥

॥ अपछरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन आगे रे जिन आगे ॥ हारे ए तो अविचळ सुखडां मागे, हारे नाभिनंदन पास ॥ अपछरा० ॥१॥ ता थेई नाटक नाचती पाय ठमके, हारे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हारे सोवनमय घुघरी

घमके, हांरे लेती फूदडी वाळ--अपछरा० ॥२॥
ताळ मृदंगने वासळी डफ वीणा, हांरे रुडा
गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां,
हांरे जोती मुखडुं निहाळ ॥ अपछरा० ॥ ३ ॥
धन्य मरुदेवी मातने प्रभु जाया, हांरे जेनी
कंचनवरणी काया ॥ हांरे मेंं तो पुरण पुन्ये पाया,
हांरे देख्यो प्रभुनो देदार ॥ अपछरा० ॥ ४ ॥
प्राणजिवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे हूं तो
सेवक छु जिन तारो ॥ हांरे भवो भवना दुखडां
वारो, हांरे तुं छे दीनदयाळ ॥ अपछरा० ॥ ५ ॥
सेवक जाणी आपनो चित्त धरजो, हांरे मारी
आपदा सघळी हरजो ॥ हांरे मुनि माणेक सुखीयो
करजो, हांरे जाणी पोतानो बाळ ॥ अपछरा० ॥६॥

॥ श्री शांतिनाथजीनी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरण कमळकी मैं जाऊ बलिहारी ॥ जय जय० ॥१॥ विश्वसेन अचिराजीके नंदा, शांतिनाथ मुख पुनम चंदा ॥ जय जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभु चरण सोहाया ॥ जय जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पंचम सोहे, सोळमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय जय० ॥ ४ ॥ मंगळ आरती तोरी कीजे, जन्मोजन्मनो लाहो लीजे ॥ जय जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नरनारी अमरपद पावे ॥ जय जय० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ श्री पार्श्वनाथजीनी आरती. ॥

॥ मकट मगळकारी, त्रिभुवन उपगारी॥ दुर्गति

दूर निवारी, वरिया शिवनारी ॥ जयदेव ! जय-देव ! ॥ १ ॥ तुज मूरति बहु सारी, लागे मुज प्यारी ॥ झगमग ज्योति भारी, मोहे सुर नारी ॥ जय० ॥ २ ॥ तीन जगत राया, वामाए जाया ॥ अश्वसेन घर आया, नीलवरण काया ॥ जय० ॥ ३ ॥ पार्श्वनाथ नामी, चिंतामणी स्वामी ॥ करुं आरती शिर नामी, मूज अंतरजामी ॥ जय० ॥ ४ ॥ कमठको हठ वामी, ज्ञान केवळ पामी ॥ भक्तनमन शिवरामी, भये सिद्ध स्वामी ॥ जय० ॥ ५ ॥ तुज गुण हुं रसियो, मुज मन तुं वसियो ॥ तुज मयाथकी उल्लासियो, गुण गावा-धसमसियो जय० ॥ ६ ॥ (इति)

श्री वर्द्धमान[महावीर]जीनी आरती.

॥ श्री सरस्वती माई, कृपा करो आई ॥ सरस

वचन सुख दाई, द्यो मुज चतुराई ॥ जयदेव ! जयदेव ! ॥ १ ॥ श्री वर्द्धमान देवा, जगमा नहि एवा ॥ पातक दूर करेवा, करे इंद्र सेवा ॥ जय० ॥ २ ॥ रत्नत्रय राया, त्रिशलाना जाया ॥ सिद्धारथ कुळ आया, कंचनमय काया ॥ जय० ॥३ ॥ शासन तह्यु सारो, लागे मुज प्यारो ॥ संकट दूर निवारो, भवसायर तारो ॥ जय० ॥४॥ त्रिभुवन तुम स्वामी, कर्म मेल वामी ॥ केवळज्ञान सुपामी, शिवपुरना स्वामी ॥ जय० ॥ ५ ॥ भव आरत टाळो, नेह नजर न्याळो ॥ मया करी मुज उपर, कृपा करी मुज उपर, मुज कर तुम झालो ॥ जय० ॥ ६ ॥ (इति)

॥ अथ आरती ॥

॥ विविध रत्नमणी जडित रचावो, थाळ

विशाळ अनोपम लावो ॥ आरती उतारो प्रभु-
जीने आगे, भावना भावि शिवसुख मागे
॥ आ० ॥ १ ॥ सात चौदने एकवीस भेवा,
त्रण त्रण वार प्रदक्षिणा देवा ॥ आर० ॥२॥
जीम जीम जळधारा देई जंपे, तिम तिम दोहग
थरहर कंपे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बहू भव संचित
पाप पणासे, द्रव्य पुजाथी भाव उल्लासे ॥ आ०
॥ ४ ॥ चौद भुवनमां जीनजीने तोले, कोई
नहीं आरती इम बोले ॥ आ० ५ ॥ (इति)

॥ अथ पंच तीरथनी आरती ॥

॥ पेहेली आरती प्रथम जिणंदा, शत्रुंजे मंडण
ऋषभ जिणंदा ॥ श्री सिद्धाचल तीर्थे आव्या,
पूरव नवाणुं भविक मन भाव्या ॥ आरती कीजे
श्री जिनवरकी ॥१॥ दुसरी आरती शांति जिणं

दकी, शांति करे प्रभु शिव मारगकी ॥ पारेवो जिणें शरणें राख्यो, केवल पामीने धर्म प्रकास्यो ॥ आर०॥२॥ तीसरी आरती श्री नेमनाथ, राजुल नारी तारी निज हाथ ॥ सहस पुरुषसु संयम लीधो, करी निज आतम कारज सीधो ॥ आर० ॥३॥ चोथी आरती चिहु गति वारी, परमनाथ भविक हितकारी ॥ गोडी पास संखेश्वरो पास, भविजननी ते पूरे आस ॥ आर०॥४॥ पांचमी आरती श्री महावीर, मेरुपरें जिम रह्या धीर ॥ साढाबार वरस तप तपीया, कर्म खपावीनें शिवपुर वसीया ॥आर०॥५॥ इणिपरे प्रभुजीनी आरती करस्यें, शुभ परिणामें शिवपुर वरसें॥ इ . परें जिनजीनी आरती गावें, शुभ परिणामें शिवपुर जावे ॥ आर० ॥६॥ करजोडी सेवक इम बोलें, नही कोइ मारा जिनजीनें तोले ॥ आर० ॥७॥इति॥

॥ श्री चक्केसरी मातानी आरती ॥

॥ जय जय आरती देवी तुमारी, नित प्रणमुं हुं तुम चरणारी जय० ॥१॥ श्री सिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौख्याली ॥ जय०॥ ॥२॥ विधिपक्ष गच्छनी शासन देवी, सकल श्री संघने सुख करेवी ॥ जय० ॥३॥ नीलवट टीलडी रत्न बिराजें, कांने कुंडल दोय रवि शशि छाजें ॥ जय० ॥४॥ बांहें बाजुबंध बेरखां सोहें, नीलवरण सुचके मन मोहें ॥ जय० ॥५॥ सोवन मांहें नित चूनडी खलके, पाए घुघरडा घम घम घमके ॥ जय० ॥६॥ वाहन गरुड चड्यां बहु प्रेमे, तुजगुण पार न पाउं केमें ॥ जय० ॥७॥ चूनडी जडामां देह अति दीपे, नवसरो हारें जग सहु जीपें ॥ जय० ॥८॥ नित नित मानी आरती उतारे, रोग सुगय भय दूर निवारें ॥

जय० ॥९॥ तस घर पुत्र पुत्रादिक छाजे, मन-वछीत सुख संपद आपे ॥ जय० ॥१०॥ देव-चद्र मुनि आरति गावे, जयो जयो मगल नित वधावे ॥ जय० ॥११॥ (इति)

॥ अथ मंगळ दीवो ॥

॥ दीवो रे दीवो मगलिक दीवो, आरती उतारण बहु चिरजीवो ॥ दीवो० ॥ १ ॥ सोहामणु घेर पर्व दीवाळी, अबर खेले अमराबाळी ॥ दीवो० ॥ २ ॥ दीपाळ भण एणे कुळ अजुआळी, भावे भक्ते वदन निहाळी ॥ दीवो० ॥ ३ ॥ दीपाळ कवि कहे इण कलिकाले, आरती उतारी राजा कुमारपाले ॥ दीवो० ॥ ४ ॥ अम घेर मंगळिक तम घेर मगळिक, मकळ सघ घेर मगळिक होजो ॥ दीवो० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ अथ मंगळ दीवो बीजो ॥

॥ दीवोरे दीवो मंगळिक दीवो, भुवन प्रकाशक जिन चिरंजीवो ॥ दीवो० ॥ १ ॥ चंद सुरज प्रभु तुम मुख केरां, लुंछन करता दे नित्य फेरा ॥ दीवो० ॥ २ ॥ जिन तुज आगल सुरनी अमरी, मंगळदीप करी दिये भमरी ॥ दीवो० ॥ ३ ॥ जिम जिम धुप घटी प्रगटावे, तिम तिम भवनां दुरित दझावे ॥ दीवो० ॥ ४ ॥ नीर अक्षत कुसुमांजलि चंदन, धुप दीप फल नैवेद्य वंदन ॥ दीवो० ॥ ५ ॥ एणी पेरें अष्टप्रकारी कीजें, पुजा स्नात्र महोत्सव पभणीजे ॥ दीवो० ॥ ६ ॥ (इति)

॥अथ चार मंगळ [मंगळ दीवो त्रीजो]

॥चारो मंगळ चार, आज घेर प्रभुजी पधार्या ॥

पहेले मगळ प्रभुजीने पुजु, घसी केशर घनसार आज० ॥ १ ॥ बीजे मगळ अगर उखेवु, कठ ठवु फूल हार ॥ आज० ॥ २ ॥ त्रीजे मगळ आरती उतारु, घट वजावु रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथे मगळ प्रभु गुण गाऊ, नाचु थेई थेईकार आज० ॥ ४ ॥ रूपचद कहे नाथ निरजन, चरण कमळ बलिहार ॥ आज० ॥ ५ ॥ (इति)

॥ अथ चार मंगळ [मंगळ दीवो चोथो]

॥ चारे मगळ चार ॥ आजे मारे ॥ चारे मगळ चार ॥ देख्यो दरश सरस जीनजीको, शोभा सुदर सार ॥ आजे० ॥ १ ॥ छीनु छीनु छीनु मनमोहन चरच्यो, घसी केशर घनसार ॥ आजे० ॥ २ ॥ विवीध जातीके पुष्प मगावो, मोगर लाल गुलाल ॥ आजे० ॥ ३ ॥ धुप उखेवीने करो आरती,

मुख बोलो जयकार ॥ आजे० ॥४॥ हर्ष धरी आदेश्वर पुजो, चौमुख प्रतिमा चार ॥ आजे० ॥५॥ हैये धरी भाव भावना भावो, जीम पामो भवपार ॥ आजे० ॥६॥ सांकळचंद सेवक जीनजीको, आनंदघन उपकार ॥ आजे० ॥७॥

॥ श्री चैत्यवंदन करवानो विधि ॥

(तेमां आवतां सूत्रो सहित)

(प्रथम जीन मंदिरने त्रण प्रदक्षिणा दइ प्रभु सामे उभा रहीबे हाथ जोडी मधुर स्वरे उच्चार करी निचेनो दोहा कहेवो)

॥ शांत सुधारस मुखडुं, कंचन वरणी काय ॥
आंख कृपारस कुंपीका, जय जय श्रीजिनराय ॥१॥

(पछी खमासमण देवा)

॥ इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥ (इति)

(एम कहेवा पूर्वक बे हाथ बे पग अने मस्तक ए पांचे अंगोने नमावी, त्रण खमासमणा देवा पछी बेसी डाबो ढींचण (पग) उभो राखी, बे हाथ जोडीने शांतवृत्तिथी उच्चार करवो के—)

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'चैत्यवंदन करुं ?' इच्छं ॥

॥ सकल कुशल वल्लिः पुष्करावर्त्त मेघो ॥ दुरित तिमिर भानुः, कल्प वृक्षोपमानः ॥१॥ भव-जलनिधि पोतः सर्व संपत्ति हेतुः ॥ स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथ ॥२॥

॥ श्री चोवीश तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषभ अजीत संभव प्रभु, अभिनंदन सुमति ॥ पद्मप्रभ ने सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ सुविधि ॥१॥ शीतल श्रेयांसने वासुपूज्य, विमलनाथ अनंत ॥ धर्म शांति जिन कुंथु अर, मल्लिनाथ गुणवंत ॥२॥ मुनिसुव्रत नमि नेमनाथ, पार्श्वनाथ महावीर ॥ चोवीशे जीन वंदता, वेगें लहुं भव तीर ॥३॥ (इति)

(ए अथवा बीजु गमे ते चैत्यवंदन कहेवु पछी)

(जंकिंचि सूत्र) जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥ (इति)

॥ अथ नमुत्थुण वा शक्रस्तव सूत्र ॥

॥नमुत्थुण, अरिहताणं, भगवताण॥ १॥ आइगराण, तित्थयराणं, सयमबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवरपुंडरीआण, पुरिसवरगंधहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसयाण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीण ॥६॥ अप्पडिहयवरनाण, दसणधराण, विअट्टछउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाण बोहयाण, मुत्ताण मोअगाण, ॥८॥ सव्वन्नूण, सव्वदरिसीण सिव मयल मरुअ-मणत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति- सिद्धिगइ-ना-

ઢાલ-

સમકિત ગુણઠાણે પરિણમ્યા, વળી વ્રતધર સંયમ સુખ રમ્યા; વીશ સ્થાનક વિધિએ તપ કરી, એસી **ભાવદયા** દીલમાં ધરી. ૧

જો હોવે મુજ શક્તિ ઈસી, **સવિજીવ કરૂં શાસનરસી;** શુચિ રસ ઢલતે તિહાં બાંધતા, તીર્થંકર નામ નિકાચંતા. ૨

સરાગથી સંયમ આચરી, વચમાં એક દેવનો ભવ કરી; ચ્યવી પન્નર ક્ષેત્રે અવતરે, મધ્ય ખંડે પણ રાજવી કુલે. ૩

પટરાણી કુખે ગુણનીલો, જેમ માનસરોવર હંસલો; સુખ શય્યાએ રજની શેષે, ઉતરતાં ચૌદ સુપન દેખે ૪

ઢાલ-સ્વપ્નની.

પહેલે **ગજવર** દીઠો, બીજે **વૃષભ** પઈઠો; ત્રીજે કેશરી **સિંહ,** ચોથે **લક્ષ્મી** અબીહ. ૧

પાંચમે ફૂલની **માળા,** છઠ્ઠે **ચન્દ્ર** વિશાળા; **રવિ** રાતો **ધ્વજ** મહોટો; પૂરણ **કળશ** નહિ છોટો. ૨

દશમે પદ્મ સરોવર, અગિયારમે રત્નાકર,
ભુવન વિમાન રતનગ ઓ, અગ્નિશિખા ધૂમ વર્જ ૩
સ્વપ્ન લહી જઈ રાયને ભાખે, રાજા અર્થ પ્રકાશે,
પુત્ર તીર્થંકર ત્રિભુવન નમશે, સકલ મનોરથ ફળશે. ૪

વસ્તુ–૭૬

અવધિ–નાણે અવધિ–નાણે, ઉપના જિનરાજ,
જગત જસ પરમાણુઆ, વિસ્તર્યા વિશ્વજંતુ સુખકાર,
મિથ્યાત્વ તારા નિર્બળા, ધર્મઉદય પરભાત સુંદર,
માતા પણ આનંદિયા, જાગતી ધર્મ વિધાન,
જાણતી જગ–તિલક સમો, હોશે પુત્ર પ્રધાન ૧

દુહો

શુભ લગ્ને જિન જનમીયા, નારકીમાં સુખ જ્યોત
સુખ પામ્યા ત્રિભુવન જના, હુઓ જગત ઉદ્યોત. ૧

ઢાલ

(કડખાની દેશી)

સાંભળો કળશ જિન–મહોત્સવનો ઇહાં,

છપ્પન કુમરી દિશિ, વિદિશિ આવે તિહાં;
માય સુત નમીય, આણંદ અધિકા ધરે,
અષ્ટ સંવર્ત્ત–વાયુથી કચરો હરે. ૧

વૃષ્ટિ ગંધોદકે, અષ્ટકુમરી કરે,
અષ્ટકલશા ભરી, અષ્ટ દર્પણ ધરે;
અષ્ટ ચામર ધરે, અષ્ટ પંખા લહી,
ચાર રક્ષા કરી, ચાર દીપક ગ્રહી. ૨

ઘર કરી કેળનાં, માય સુત લાવતી,
કરણ શુચિકર્મ, જલ–કળશે ન્હવરાવતી;
કુસુમ પૂજી, અલંકાર પહેરાવતી,
રાખડી બાંધી જઈ, શયન પધરાવતી. ૩

નમીય કહે માય! તુજ, બાળ લીલાવતી,
મેરૂ રવિ ચન્દ્ર લગે, જીવજો જગપતિ;
સ્વામી–ગુણ ગાવતી, નિજ ઘર જાવતી,
તેણે સમે ઇન્દ્ર–સિંહાસન કંપતી ૪

ઢાલ

(એકવીશાની દેશી.)

જિન જનમ્યાજી, જિણુ વેળા જનની ઘરે,
તિણુ વેળાજી, ઈન્દ્ર-સિંહાસન થરહરે,
દાહિણોત્તરજી, જેતા જિન જનમે યદા,
દિશિનાયકજી, સોહમ ઈશાન બેહુ તદા ૧

ત્રોટક–છંદ

તદા ચિંતે ઇન્દ્ર મનમા, કોણુ અવસર એ બન્યો,
જિનજન્મ અવધિનાણે જાણી, હર્ષ આનંદ ઉપન્યો,
સુઘોષ આદે ઘંટ નાદે, ઘોષણા સુરમે કરે,
સવિ દેવી દેવા જન્મમહોત્સવે, આવજો સુરગિરિવરે. ૨

(અહી ઘંટ વગાડવો)

ઢાલ–પૂર્વલી

એમ સાંભળીજી, સુરવર કોડી આવી મળે,
જન્મ-મહોત્સવજી, કરવા મેરુ ઉપર ચલે,

સોહમપતિજી, બહુ પરિવારે આવીયા,
માય જિનનેજી, વાંદી પ્રભુને વધાવીયા. ૩

(અહી પ્રભુને ચોખાથી વધાવવા.)

ત્રોટક-છંદ.

વધાવી બોલે હે રત્નકુક્ષી-ધારિણી ! તુજ સુતતણો,
હું શક્ર સોહમ નામે કરશું, જન્મ મહોત્સવ અતિ ઘણો;
એમ કહી જિન-પ્રતિબિંબ સ્થાપી, પંચરૂપે પ્રભુ ગ્રહી,
દેવ દેવી નાચે હર્ષ સાથે, સુરગિરિ આવ્યા વહી. ૪

ઢાલ-પૂર્વલી.

મેરૂ ઉપરજી, પાંડુકવનમે ચિહું દિશે,
શિલા ઉપરજી, સિંહાસન મન ઉલ્લસે;
તિહાં બેસીજી, શક્રે જિન ખોળે ધર્યા,
હરિ ત્રેસઠજી, બીજા તિહાં આવી મળ્યા. ૫

ત્રોટક-છંદ.

મળ્યા ચોસઠ સુરપતિ તિહાં, કરે કળશ અડ જાતિના,
માગધાદિ જળ તીર્થ ઔષધિ, ધૂપ વળી બહુ ભાતિના;

અચ્યુતપતિએ હુકમ કીનો, સાંભળો દેવા સવે,
ક્ષીરજલધિ ગંગા—નીર લાવો, ઝટિતિ જિન મહોત્સવે. ૬

ઢાલ.

(વિવાહલાની દેશી.)

સુર સાંભળીને સંચરીઆ, માગધ વરદામે ચલીયા,
પદ્મદ્રહ ગંગા આવે, નિર્મલ જલ કનક ભરાવે.
તીરથ જલ ઔષધિ લેતા, વળી ક્ષીરસમુદ્રે જાતા,
જલ કલશા બહુલ ભરાવે, ફૂલ ચંગેરી થાળા લાવે. ૨
સિંહાસન ચામર ધારી, ધૂપધાણા રકેબી સારી,
સિદ્ધાંતે ભાખ્યાં જેહ, ઉપકરણ મિલાવે તેહ. ૩
તે દેવા સુરગિરિ આવે, પ્રભુ દેખી આનંદ પાવે,
કલશાદિક સહુ તિહાં ઠાવે, ભક્તે પ્રભુના ગુણ ગાવે. ૪

ઢાલ

(રાગ—ધનાશ્રી.)

આતમભક્તિ મલ્યા કેઈ દેવા, કેતા મિત્તનુ જાઈ
નારી પ્રેર્યા વલી નિજ કુલવટ, ધર્મી ધર્મ સખાઈ,

જોઈસ વ્યંતર ભુવનપતિના, વૈમાનિક સુર આવે,
અચ્યુતપતિ હુકમે ધરી કળશા, અરિહાને ન્હવરાવે.

આતમ૦ ૧

અડજાતિ કળશા પ્રત્યેકે, આઠ આઠ સહસ પ્રમાણો,
ચઉસઠ સહસ હુઆ અભિષેકે, અઢીસેં ગુણા કરી જાણો;
સાઠ લાખ ઉપર એક કોડી, કળશાનો અધિકાર,
બાસઠ ઈન્દ્રતણા તિહાં બાસઠ, લોકપાલના ચાર.

આતમ૦ ૨

ચન્દ્રની પંક્તિ છાસઠ છાસઠ, રવિસેણિ નરલોકા,
ગુરૂસ્થાનક સુરકેરો એકજ, સામાનિકનો એકો;
સોહમપતિ ઈશાનપતિની, ઇન્દ્રાણીના સોલ,
અસુરની દશ ઇન્દ્રાણી નાગની, બાર કરે કલ્લોલ.

આતમ૦ ૩

જ્યોતિષ વ્યંતર ઈન્દ્રની ચઉ ચઉ, પર્ષદા ત્રણનો એકો,
કટકપતિ અંગરક્ષક કેરો, એક એક સુવિવેકો;
પરચુરણ સુરનો એક છેલ્લો, એ અઢીસેં અભિષેકો,

ઈશાન ઈન્દ્ર કહે મુજ આપો, પ્રભુને ક્ષણ અતિરેકા
આતમ૦ ૪

તવ તસ ખોળે ઠવી અરિહાને, સોહમપતિ મનરંગે,
વૃષભ રૂપ કરી શૃંગ જળે ભરી, ન્હવણ કરે પ્રભુ અંગે,
પુષ્પાદિક પૂજીને છાંટે, કરી કેસર રંગરોળે,
મંગળદીવો આરતી કરતા, સુરવર જય જય બોલે
આતમ૦ ૫

ભેરી ભૂંગળ તાલ બજાવત, વળિયા જિન કર ધારી
જનની ઘર માતાને સોંપી, એણીપેરે વચન ઉચ્ચારી,
પુત્ર તુમારો સ્વામી હમારો, અમ સેવક આધાર,
પંચ ધાત્રી રંભાદિક થાપી, પ્રભુ ખેલાવણ હાર
આતમ૦ ૬

બત્રીસ કોડી કનક મણિ માણિક, વસ્ત્રની વૃષ્ટિ કરાવે,
પૂરણ હર્ષ કરેવા કારણ, દ્વીપ નંદીસર જાવે,
કરીય અઠાઈ ઉત્સવ દેવા, નિજ નિજ કલ્પ સધાવે,
દીક્ષા કેવળને અભિલાષે, નિત નિત જિન ગુણ ગાવે
આતમ૦ ૭

તપગચ્છ ઈસર સિંહ-સૂરીસર, કેરા શિષ્ય વડેરા.
સત્યવિજય પન્યાસતણે પદ, કપૂરવિજય ગંભીરા;
ખિમાવિજય તસ સુજ**સ**વિજયના, શ્રીશુ**ભ**વિજયસવાયા
પંડિત **વીરવિજય** તસ શિષ્યે, જિન-જન્મ મહોત્સવ ગાયા.

આતમ૦ ૮

ઉત્કૃષ્ટા એકસો ને સિત્તેર, સંપ્રતિ વિચરે વીશ,
અતીત અનાગત કાલે અનંતા, તીર્થંકર જગદીશ;
સાધારણ એ કળશ જે ગાવે, શ્રી **શુભવીર** સવાઈ,
મંગલલીલા સુખભર પાવે, ઘર ઘર હર્ષ વધાઈ.

આતમ૦ ૯

(અહિં કળશાભિષેક કરી, પંચામૃતનો પખાલ કરવો. પછી પૂજા કરી, પુષ્પ ચઢાવી, લૂણ ઉતારી, **આરતી** ઉતારવી. પછી પ્રતિમાજીને આડો પડદો રાખી, સ્નાત્રીઆએ પોતાના નવ અંગે કંકુના ચાંલ્લા કરવા. પછી પડદો કાઢી નાખી **મંગલ દીવો** ઉતારવો. **જો સ્નાત્ર ભણાવ્યા પછી** તરત જ **શાન્તિકલશ**

ભણાવવો હોય તો આ બધી ક્રિયા પછી કરવી.)

ઇતિ પંડિત શ્રી વીરવિજયજી કૃત-
સ્નાત્ર પૂજા સમાપ્ત

શ્રી જ્ઞાનવિમલસૂરિકૃત-
શ્રી શાન્તિનાથજીનો કલશ

[शार्दूलविक्रीडित-वृत्तम् ।]

श्रेयःश्रीजयमङ्गलाभ्युदयतावल्लीप्ररोहाम्बुदो,
दारिद्र्यद्रुमकाननैककदने मत्तोद्धुरः सिन्धुरः ।
विश्वेऽस्मिन् प्रकटप्रभावमहिमा सौभाग्यभाग्योदयः,
स श्रीशान्तिजिनेश्वरोऽभिमतदो जीयात् सुवर्णच्छविः ॥१॥

गद्य-पाठ–

अहो ! भव्यभव्याः ! शृणुत तावत् सकलमङ्गलमाला केलिकलनसमकलकोलाहलरसगोलम्बितचित्तवृत्तयः । विहितश्रीमज्जिनेन्द्रभक्तिप्रवृत्तयः । साम्प्रतं श्रीशान्तिजिनजन्माभिषेककलशो गीयते–

ઢાલ-પહેલી.

(રાગ-વસત તથા નટ્ટ, દેશાખ.)

[આરામ મ દર ભાવ-એ દેશી.]

શ્રી શાંતિ-જિનવર સયલ-સુખકર કળશ ભણીએ તાસ, જિમ ભવિક-જનને સયલ સંપત્તિ બહુલ લીલ વિલાસ; કુરૂ નામે જનપદ તિલક સુમોવડ હત્થિણાઉર સાર, જિણ નયરી કંચણ રયણ ધણ કણ સુગુણ-જન આધાર ॥ ૧ ॥ તિહાં રાય રાજે બહુ દિવાજે વિશ્વસેન-નરીંદ, નિજ પ્રકૃતિ સોમહ તેજે તપનહ માનુ ચંદ દિણંદ; તસ પણય-ખાણી પટ્ટરાણી નામે અચિરા નાર, સુખ સેજ સૂતાં ચૌદ પેખે સુપન સાર [૧]દુવાર ॥ ૨ ॥ શ્રી શાંતિકરણ જિન શાંતિ જિનેસર-દેવ, જે યોગ-

---

૧ બે વાર; (શ્રી શાંતિનાથ ભગવાનને એક ભવમાં 'તીર્થંકર'ની અને 'ચક્રવર્તી'ની એમ બે પદવીઓ હતી, તેથી અચિરા માતાએ-**દુવાર**-એટલે બે વાર ચૌદ સ્વપ્નાં દેખ્યાં.

ક્ષેમંકર જગ-હિતકર જિનગેહ વિમલેન-નંદન [illegible]
[illegible] ॥ ૩ ॥ [illegible] પંચમ-ચંદ્ર [illegible]
જિનનાથ [illegible]
ઉપન્યા [illegible] સુખ [illegible]
[illegible] દેવે ॥ ૪ ॥

કુંડલ

[illegible]
[illegible] ॥ ૧ ॥

[illegible]

([illegible])

[illegible]
[illegible] ॥ ૧ ॥ [illegible]

ધોરી વૃષભ કહાવે, ભરતે ભવિ-ક્ષેત્રે બોધિબીજ વર વાવે; જસ ઉન્નત કકુદ ઉન્નત ગોત્ર ને વંશ, સિત અમૃત મગલ-મુખ **બીજે વૃષભ** અવતંસ ॥ ૨ ॥ પરતીર્થિક શ્વાપદ-પીડિત ભવિ-વન રાખે, એકલમલ્લ દુર્દ્ધરસિંહ પરાક્રમ દાખે; પરીસહ-ગજ ભેદી નહિ સહાય અબીહ, એહવા એ હોસ્યે **ત્રીજે** આવી એમ કહે **સિંહ** ॥ ૩ ॥ દેઈ વાર્ષિક દાને જિનપદ-લચ્છી લેશે, મુજ ચાપલ દૂષણ એહને સંગે મીટશે; જડ-કંટક-સગી નિજકજ છંડી વાસ, કહે **લક્ષ્મી ચોથે** સુપને અર્થ-વિલાસ ॥ ૪ ॥ ત્રિભુવન-શિર ધરશે જસ આણા સુરધામ **સુમદામ**, નિજ જસભર સુરભિત જગત હુશ્યે ઉદ્દામ; એ **પંચમ સુહણે છઠ્ઠે શશધર** દેખે, નિષ્કલક હુ થાઉં તુજ સુત સગ વિશેષે ॥ ૫ ॥ કુવલયે મુદ દેશ્યે શમ-ચન્દ્રાતપ યુક્ત, હવે **સપ્તમે દિનકર** મિથ્યા તિમિર વિમુક્ત; ભવિ-કમલ વિકાસે માનું કહે પુષ્પદંત, તુમ સુત પરિ અમ્હચો નિત્ય ઉદય પભણુત

॥ ૬ ॥ કુલ-ધ્વજ તુમ નંદન ધર્મધ્વજે મોહંત, સવિ ત્રિભુવનમાહે એહિજ એક મહંત, ઇમ અટ્ઠમ સુહણે ભવિકને ભાવ જણાવે, હવે નવમે કુંભો સુપને એમ કહાવે ॥ ૭ ॥ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્ર ધર્મ મહાપ્રાસાદ, તસ શિખરે કલશે આતમ નહિ વિખવાદ, દસમે પદ્મસરોવર સુર-કૃત-કજ પદ ઠાવે, એ પાવન કરશે જ્ઞાન-જને મગન ભાવે ॥ ૮ ॥ તુજ સુત ગુણ-પૂર્ણે ગંભીરા ગુણ મહેદ્દો, થયો જાણી સેવે ક્ષીરસમુદ્ર જ મીઠો, તેહ ભણી મુજ નંદિ હોજ્યો તનુ પરિભોગ, એકાદશે સુહણે માનુ એ વિનતિ યોગ ॥ ૯ ॥ વળી ભવન-વિમાનાધિપ ચઉ દેવ-નિકાય, સેવિત એ હોશે પામે સુર સમુદાય, બારમે એ જાણો તેરમે રયણનો રાશી, ધન કંચન રઈ કરશે ત્રિગડેવાસી ॥ ૧૦ ॥ જ્ઞાનાદિક ગુણ-મણિ દેશે ભવિને એહ, વર-વરિકા ચોરી પૂરવપરે ગુણ-ગેહ, નિજ કર્મ-ઇંધણને ધ્યાનાનલથું જ્વાળી, નિજ આતમ નિર્મલ

કંચન પરે અજુવાળી ॥ ૧૧ ॥ નિર્ધૂમ-અગ્નિ સમ ભવિ-સોવન કરી શુદ્ધ, ચૌદસમે સુહણે અષ્ટ-કર્મ ક્ષયે સિદ્ધ; ચઉદરાજની ઉપરે કરશ્યે જે અહિઠાણ, તેહ ભણી સંપૂરણ ચૌદ સુપન મંડાણ ॥ ૧૨ ॥ ગુણ-લક્ષણ-લક્ષિત અતિસુન્દર આકાર, જિન માતા ચૌદ દેખે સુપન ઉદાર; પણ ચક્રી-માતા કાંઈક તેજે હીણ, દેખે હોય પદ-ધર હોય વાર ગુણ-પીણ ॥ ૧૩ ॥ કુલ-કીરતિ-થંભો કુલાધાર કુલ-મેર, કુલ-સુરતરૂ પાદપ જેહને નહિ ભવ ફેર; કુલ-મંડણ દીપક જીપક દુશ્મન કોડી, ત્રિભુવન જસ ભગતે નમશ્યે પદ કરજોડી ॥ ૧૪ ॥ વળી હોડ ન એહની કરતા ભુવન મઝાર, લોકોત્તર ચરિતે ધન્ય હોશ્યે અવતાર; વળી જ્ઞાનવિમલ ગુણ જેહના કહેતાં પાર, ન લહે સુખે કહેતાં જો સુર-ગુરૂ અવતાર ॥ ૧૫ ॥

ઈતિ શ્રીશાન્તિજિનચતુર્દશસ્વપ્નાર્થ-સ્તવનમ્ ।

સંવટ્ટ સિદ્ધ-વિમાનથી તવ ચવીય ઉયરે ઉપ્પન્ન, મહુભદ્દ [1]ભદ્દવ-કિસણ-સત્તમી દિવસ ગુણ-અપન્ન, તવ રોગ સોગ વિયોગ-વિડ્ડુર-મારી -ઈતિ શમન્ત, વર સયલ મંગલ કેલિ-કમલા ઘરે ઘરે વિલસન્ત ॥ ૧ ॥ વર ચંદ યોગે જિટ્ઠ તેરસ વદિ દિન થયો જન્મ, તા અજૂઅ-રયણી દિશાકુમરી કરે સૂઈકમ્મ, તવ ચલિય-આસન ઇંદ મુણિય સવિ હરિ ઘંટ-નાદે મેલી, સુરવિંદ-સત્થે મેરુ-મત્થે રચે મજ્જન કેલિ ॥ ૨ ॥

ઢાલ-ત્રીજી

(નાભિરાયા ઘરે નંદન જનમિયા એ-એ દેશી)

॥ તાલ ॥ વિશ્વસેન નૃપ ઘરે નન્દન જનમીયા એ, નિહુઅણ ભવિયણ પ્રેમસુ પ્રણમીયા એ ॥ ત્રુટક ॥ પ્રણમીયા ચઉસઠ ઇંદ, લેઈ ઠવે મેરુ-ગિરીંદ, સુર-નદીય નીર અભીર, નિહાં ક્ષીર-જલનિધિ-નીર ॥ ૧ ॥

---

[1]-ભાદરવા વદિ સાતમ.

સિંહાસને સુરરાજ, તિહાં મલ્યા દેવ-સમાજ; સવિ ઔષધિની જાત. વર સરસ કમલ વિખ્યાત ॥ ૨ ॥ **તાલ** ॥ વિખ્યાત વિવિધ પરિકર્મના એ, તિહાં હરખભર સુરભિ વરદામના એ ॥ **ત્રુટક** ॥ વરદામ માગધ નામ, જેહ તીર્થ ઉત્તમ ઠામ; તેહ તણી માટી સર્વ, કર ગ્રહે સર્વ સુપર્વ ॥ ૩ ॥ બાવના-ચંદન સાર, અભિયોગી સુર અધિકાર; મન ધરી અધિક આણંદ, અવલોકતા જિનચંદ ॥ ૪ ॥ **તાલ** ॥ શ્રી જિનચંદને સુરપતિ સવિ ન્હવરાવતા એ, નિજ નિજ જન્મ સુકૃતારથ ભાવતા એ ॥ **ત્રુટક** ॥ ભાવતા જન્મ પ્રમાણ, અભિષેક કલશ મંડાણ; સાઠ લાખ ને એક કોડી, શત-દોય પંચાસ જોડી ॥ ૫ ॥ આઠ જાતિના તે હોય, ચઉસઠ્ઠિ-સહસા જોય; એણિ પરે ભક્તિ ઉદાર, કરે પૂજા વિવિધ-પ્રકાર ॥ ૬ ॥ **તાલ** ॥ વિવિધ પ્રકારના કરીય સિણગારશ્યું એ, ભરિય જલ વિમલના વિપુલ ભૃંગારના એ ॥ **ત્રુટક** ॥ ભૃંગાર થાલ

ચંગેરી, સુપ્રતિષ્ઠ પ્રમુખ સુભેરી, સવિ કલશ
પરે મડાણ, તે વિવિધ વસ્તુ પ્રમાણ ॥ ૭ ॥
આરતી મંગલ-દીપ, જિનરાજને સમીપ, ભગવતી-
ચૂરણિ-માહિ, અધિકાર એહ ઉચ્છાહિ ॥ ૮ ॥
તાલ ॥ અધિક ઉચ્છાહિશ્યુ હરખ ભરી જન
ભીજતા એ, નવ નવ ભાતિશ્યુ ભક્તિ-ભર કીજતા
એ ॥ ત્રુટક ॥ કીજતા નાટક રંગ, ગાજતી ગુહીર
મૃદંગ ક્રિટ ક્રિટતિ તિહાં કંસતાલ, ચઉતાન તાલ
કંસાલ ॥ ૯ ॥ શંખ પણવ ભૂગળ ભેરી, ઝલ્લરી
વીણા નફેરી, એક કરે હયહેષારવ, એક કરે ગજ
ગુનકાર ॥ ૧૦ ॥ તાલ ॥ ગુનકાર ગર્જના રવ
કરે એ, પાય ઘુઘર ઘુઘ્ઘર ધૂર સુર વરે એ ॥ ત્રુટક ॥
સુર ધરે અધિક બહુમાન, નિહા કરે નવ નવા તાન,
વર વિવિધ જાતિ છંદ, જિન ભક્તિ સુરતરુ-કંદ
॥ ૧૧ ॥ વળી કરે મંગલ આઠ, એ જમ્બૂપન્નત્તિ
પાઠ, થય-થુઇ મંગલ એમ, મન ધરે અતિ-બહુ
પ્રેમ ॥ ૧૨ ॥ તાલ ॥ બહુ પ્રેમ સુઘોષણા પુણ્યની

સુર સહુ એ, સમકિત-પોષણા શિષ્ટ-સંતોષણા ઇમ બહુ એ ॥ ત્રુટક ॥ બહુ પ્રેમસ્યું સુખ ખેમ, ઘરે આણીયા નિધિ જેમ; બત્રીસ કોડી સુવન્ન, કરે વૃષ્ટિ રયણની ધન્ન ॥ ૧૩ ॥ જિન જનની પાસે મહેલી, કરે અઠ્ઠાઇની કેલી; નન્દીસરે જિનગેહ, કરે મહોત્સવ સસનેહ ॥ ૧૪ ॥

ઢાલ-ચોથી.

હવે રાય મહોચ્છવ કરે રંગભર હુવો જબ પરભાત, સુર પૂજિઓ સુત નયણે નિરખી હરખીયો તવ તાત; વર ધવલ મંગલ ગીત ગાતાં ગંધર્વ ગાવે રાસ, બહુ દાને માને સુખીયા કીધા સયલ પૂગી આશ ॥ ૧ ॥ તિહાં પંચવરણી-કુસુમ-વાસિત, ભૂમિકા સંલિત્ત, વર અગર કુંદરૂ ધૂપધૂપણાં છટા કુંકુમ દિત્ત; શિર મુકુટ મંડલ કાને કુંડલ હૈયે નવસર હાર, ઇમ સયલ-ભૂષણ-ભૂષિતામ્બર જગતજન પરિવાર ॥ ૨ ॥ જિન જન્મ-કલ્યાણક મહોચ્છવે [૧]ચૌદ

૧. ચૌદ રાજલોક

ભુવન ઉદ્યોત, નારકી થાવર પ્રમુખ સુખિયા સકલ મગન હોત, દુખ દુરિત ઈતિ શમિત સઘળાં જિન રાજ જન્મ પ્રતાપ, તિણે હેતે શાન્તિકુમાર ઠવીઉ નામ ઈતિ આલાપ ॥ ૩ ॥ એમ શાન્તિ-જિનનો કલશ ભણતા હોએ મંગળમાલ, કલ્યાણ કમલા કેલિ કરતા લહીએ લીલ વિશાલ, જિનસ્નાન કરીયે સહેજે તરીએ ભવ-સમુદ્ર અપાર, શ્રી જ્ઞાનવિમલ-સૂરીંદ જપે શ્રી શાન્તિ-જિન જયકાર ॥ ૪ ॥

ઈતિ શ્રીજ્ઞાનવિમલસૂરિ-રચિત

શ્રી શાન્તિનાથ-જિનકલશ સંપૂર્ણ

લૂણ ઉતારણ

લૂણ ઉતારો જિનવર અંગે, નિર્મલ જલ ધારા મનરંગે ॥ લૂણ૦ ॥ ૧ ॥ જેમ જેમ તડ તડ લૂણજ ફૂટે, તેમ તેમ અશુભ કર્મ બંધ ત્રુટે ॥ લૂણ૦ ॥ ૨ ॥ નયન સલૂણા શ્રી જિનજીનાં,

અનુપમ રૂપ દયારસ ભીનાં ॥ લૂણ૦ ॥ ૩ ॥ રૂપ સલૂણું જિનજીનું દીસે, લાજ્યું લૂણ તે જલમાં પેસે ॥ લૂણ૦ ॥ ૪ ॥ ત્રણ પ્રદક્ષિણા દેઈ જલધારા, જલણ ખેપવીયે લૂણ ઉદારા ॥ લૂણ૦ ॥ ૫ ॥ જે જિન ઉપર દુમણો પ્રાણી, તે એમ થાયે લૂણ જ્યું પાણી ॥ લૂણ૦ ॥ ૬ ॥ અગર કૃષ્ણાગરૂ કુંદરૂ સુગંધે, ધૂપ કરીજે વિવિધ પ્રબંધે ॥ લૂણ૦ ॥ ૭ ॥

આરતિ.

જય જય આરતિ આદિ જિણંદા; નાભિરાયા મરૂદેવાકો નંદા ॥ જય૦ ॥ ૧ ॥ પહેલી આરતિ પૂજા કીજે; નરભવ પામીને લહાવો લીજે ॥ જય૦ ॥ ૨ ॥ દુસરી આરતિ દીન દયાળા; ધુળેવા મંડપમાં જગ અજુવાળા ॥ જય૦ ॥ ૩ ॥ તીસરી આરતિ ત્રિભુવન દેવા; સુર નર ઈન્દ્ર કરે તોરી સેવા ॥ જય૦ ॥ ૪ ॥ ચોથી આરતિ ચઉગતિ ચૂરે; મન વાંછિત ફળ શિવસુખ પૂરે ॥ જય૦ ॥ ૫ ॥ પાંચમી

આરતિ પુણ્ય ઉપાયા, મૂલચંદે ઋષભ ગુણ ગાયા ॥ જય૦ ॥ ૬ ॥

મંગલ-દીવો

દીવો રે દીવો મંગલિક દીવો, આરતિ ઉતારીને બહુ ચિરંજીવો ॥ દીવો૦ ॥ ૧ ॥ સોહામણું ઘેર પર્વ દિવાળી, અંબર ખેલે અમરા બાળી ॥ દીવો૦ ॥ ૨ ॥ દીપાળ ભણે એણે કુલ અજુવાળી, ભાવે ભગતે વિઘન નિવારી ॥ દીવો૦ ॥ ૩ ॥ દીપાળ ભણે એણે કલિકાલે, આરતિ ઉતારી રાજા કુમાર પાલે ॥ દીવો૦ ॥ ૪ ॥ અમ ઘેર મંગલિક તુમ ઘેર મંગલિક, મંગલિક ચતુર્વિધ સંઘને હોજો ॥ દીવો૦ ॥ ૫ ॥

દેવવન્દન-વિધિ

પ્રથમ ખમાસમણું દઈ, 'ઈરિયાવહીયા' પડિક્કમી, ઉત્તરાસણ નાંખી, ખમા૦ દઈ, ઈચ્છા૦ સંદિ૦

ભગ૦ 'ચૈત્યવંદન કરૂં ?' એમ આદેશ માગી, પછી 'ઇચ્છં' કહી પાછળ બતાવેલાં ચૈત્યવંદનોમાંથી કોઈ ચૈત્યવંદન કહી, 'જં કિંચિ' તથા 'નમુત્થુ ણં' કહી 'આભવમખંડા' સુધી 'જય વીયરાય' કહેવા, પછી ખમાસણ દઈ, ચૈત્યવંદન કહી, 'જં કિંચિ'-'નમુત્થુ ણં' આદિ કહી-યાવત્ ચાર સ્તુતિઓ કહેવી. પછી 'નમુત્થુ ણં'-આદિ કહીને, બીજી વાર ચાર સ્તુતિઓ કહેવી. પછી 'નમુત્થુ ણં' અને 'જાવંતિ' કહી, ખમાસણ દઇ, 'જાવંત કે વિ સાહૂ' અને 'નમોऽર્હત્' કહી સ્તવન કહેવું, સ્તવન કહ્યા પછી 'જય વીયરાયં' આભવમખંડા સુધી કહી, ખમા૦ દઈ, 'ચૈત્યવંદન' કહી 'જં કિંચિ' તથા 'નમુત્થુ ણં' કહી, સંપૂર્ણ 'જય વીયરાય' કહેવા પછી ખમા૦ દઈ 'અવિધિ આશાતના મિચ્છામિ દુક્કડં' કહેવું.

દેવવંદનમાં ઉપયોગી સ્તુતિ-જોડા.

શ્રી સિદ્ધચક્રજીની સ્તુતિ

અરિહંત નમો વળી સિદ્ધ નમો, આચારજ વાચક સાહુ નમો, દર્શન જ્ઞાન ચારિત્ર નમો, તપ એ સિદ્ધચક્ર સદા પ્રણમો ॥ ૧ ॥ અરિહંત અનંત થયા થાશે, વળી ભાવ નિક્ષેપે ગુણ ગાશે, પડિક્કમણાં દેવવંદન વિધિશું, આંબિલ-તપ ગણણું ગણો વિધિશું ॥ ૨ ॥ છ-ની પાળી જે તપ કરશે, શ્રીપાળ તણી પેરે ભવ તરશે સિદ્ધચક્રને કુણ આવે તોલે, એહવા જિન-આગમ ગુણ બોલે ॥ ૩ ॥ સાડા-ચાર વરસે એ તપ પૂરો, એ કર્મ વિદારણ તપ શૂરો, સિદ્ધચક્રને મન-મંદિર થાપો, નયવિમલેસર વર આપો ॥ ૪ ॥

શ્રી સિદ્ધચક્રજીની સ્તુતિ.

જિન શાસન વંછિત-પૂરણ દેવ રસાળ, ભાવે

ભવિ ભણીએ સિદ્ધચક્ર ગુણમાળ; ત્રિહું કાલે એહની પૂજા કરે ઉજમાળ, તે અમર અમરપદ સુખ પામે સુવિશાળ ॥ ૧ ॥ [૧]અરિહંત [૨]સિદ્ધ વંદો [૩]આચારજ [૪]ઉવજ્ઝાય, [૫]મુણિ [૬]દરિસણ [૭]નાણ [૮]ચરણ [૯]તપ એ સમુદાય; એ નવ પદ સમુદિત સિદ્ધચક્ર સુખદાય, એ ધ્યાને ભવિનાં ભવકોટી દુઃખ જાય ॥ ૨ ॥ આસો ચૈતરમાં શુદ સાતમથી સાર, પૂનમ લગી કીજે નવ આંબિલ નિરધાર; દોય સહસ ગણણું પદ [૧]સમ સાડાચાર, એકાશી આંબિલ તપ આગમ અનુસાર ॥ ૩ ॥ શ્રી સિદ્ધચક્ર સેવક શ્રી વિમલેસરદેવ, શ્રીપાળ તણી પરે સુખ પૂરે સ્વયમેવ; દુઃખ દોહગ નાવે જે કરે એહની સેવ, શ્રી સુમતિ સુગુરૂનો રામ કહે નિત્યમેવ ॥ ૪ ॥

શ્રી શત્રુંજય–તીર્થની સ્તુતિ.

શત્રુંજય મંડન, ઋષભ–જિણંદ દયાળ, મરૂ-

૧–સમ–વર્ષ.

દેવા-નંદન, વંદન કરુ ત્રણ કાળ, એ તીરથ જાણી, પૂરવ નવાણુ વાર, આદીશ્વર આવ્યા, જાણી લાભ અપાર ॥ ૧ ॥ ત્રેવીશ તીર્થંકર, ચઢીયા ઈણ ગિરિ રાય, એ તીરથના ગુણ, સુર-અસુરાદિક ગાય, એ પાવન તીરથ, ત્રિભુવન નહિ તસ તોલે, એ તીરથના ગુણ, સીમંધર મુખ બોલે ॥ ૨ ॥ પુંડરીકગિરિ મહિમા, આગમમાં પરસિદ્ધ, વિમલાચલ ભેટી, લહિયે અવિચલ રિદ્ધ, પંચમી ગતિ પહોંચ્યા, મુનિ વર કોડાકોડ, એણે તીરથે આવી, કર્મ-વિપાક વિછોડ ॥ ૩ ॥ શ્રી શત્રુંજય કેરી, અહોનિશ રખવાળી, શ્રી આદિ-જિનેશ્વર, આણ હૃદયમાં ધારી, શ્રીસંઘવિઘનહર કવડ જક્ષ ગણભૂર, શ્રી રવિબુધસાગર, સંઘના સંકટ ચૂર ॥ ૪ ॥

શ્રી પર્યુષણ-પર્વની સ્તુતિ.

સત્તર ભેદી જિન પૂજા રચીને,—સ્નાત્ર-મહોત્સવ કીજે જી, ઢોલ દદામા ભેરી નફેરી-ઝલ્લરી નાદ

સુણીજે જી; **વીર-જિન** આગળ ભાવના ભાવી-માનવ ભવ ફળ લીજે જી, પર્વ પજુસણ પૂરવ પુણ્યે-આવ્યાં એમ જાણીજે જી ॥ ૧ ॥ માસ પાસ વળી દસમ દુવાલસ-ચત્તારિ અઠ્ઠ કીજે જી, ઉપર વળી દસ દોય કરીને-જિન ચોવીશે પૂજીજે જી; વડા-કલ્પનો છઠ્ઠ કરીને-વીર વખાણ સુણીજે જી, પડવેને દિન જન્મ મહોત્સવ-ધવળ મંગળ વરતીજે જી ॥ ૨ ॥ આઠ દિવસ લગે અમર પળાવી-અઠ્ઠમનો તપ કીજે જી, **નાગકેતુની** પરે કેવળ લહીએ-જો શુભ ભાવે રહીયે જી; તેલાધર દિન ત્રણ કલ્યાણક-ગણધર વાદ વદીજે જી, **પાસ નેમીસર** અંતર. ત્રીજે-**ઋષભ ચરિત્ર** સુણીજે જી ॥ ૩ ॥ બારસા **સૂત્રને સામાચારી-સંવચ્છરી** પડિક્કમીયે જી, **ચૈત્ય-પ્રવાડી** વિધિશું કીજે-સકલ જંતુને ખામીજે જી; પારણાને દિન સ્વામીવત્સલ-કીજે અધિક વડાઈ જી, **માનવિજય** કહે સકલ મનોરથ-પૂરે **દેવી સિદ્ધાઈ** જી ॥ ૪ ॥

શ્રી પર્યુષણ-પર્વની સ્તુતિ

મણિ રચિત સિંહાસન-બેઠા જગદાધાર, પર્યુષણ કેરો-મહિમા અગમ અપાર, નિજ મુખથી દાખી-સાખી સુર નર વૃંદ, એ પર્વ પર્વમાં-જિમ તારામાં ચંદ ॥ ૧ ॥ નાગકેતુની પરે-કલ્પ સાધના કીજે, વ્રત નિયમ આખડી-ગુરૂ મુખ અધિકી લીજે; દોય ભેદે પૂજા-દાન પંચ પ્રકાર, કર પડિક્કમણા ધર-શિયળ અખંડિત ધાર ॥ ૨ ॥ જે ત્રિકરણ શુદ્ધે-આરાધે નવ વાર, ભવ સાત આઠ નવ-શેષ તાસ સંસાર, સહુ સૂત્ર શિરોમણિ-કલ્પસૂત્ર સુખકાર, તે શ્રવણે સુણીને-સફળ કરો અવતાર ॥ ૩ ॥ સહુ ચૈત્ય જુહારી-ખમત ખામણાં કીજે, કરી સાહમ્મિ વચ્છલ-કુગતિ દ્વાર પટ દીજે; અટ્ઠાઈ મહોત્સવ-ચિદાનંદ ચિત્ત લાઈ, ઇમ કરતાં સંઘને-શાસન દેવ સહાઈ ॥ ૪ ॥

શ્રી આદિનાથ-પ્રભુની સ્તુતિ.

પ્રહ ઉઠી વંદું-**ઋષભદેવ** ગુણવંત, પ્રભુ બેઠા સોહે-**સમવસરણ** ભગવંત; **ત્રણ છત્ર** વિરાજે -**ચામર** ઢાળે ઈન્દ્ર, જિનના ગુણ ગાવે-સુર નર નારીના વૃંદ ॥ ૧ ॥ **બાર પર્ષદા** બેસે-ઈંદ્ર ઈંદ્રાણી રાય, **નવ કમળ** રચે સુર-તિહાં ઠવના પ્રભુ પાય; **દેવ દુંદુભિ** વાજે-**કુસુમવૃષ્ટિ** બહુ હુંત, એવા **જિન ચોવીશે**-પૂજો એકણ ચિત્ત ॥ ૨ ॥ જિન જોજન ભૂમિ-વાણીનો વિસ્તાર, **પ્રભુ અર્થ** પ્રકાશે-**રચના** ગણધર સાર; સો **આગમ** સુણતાં-છેદીજે ગતિ ચાર, જિન વચન વખાણી-લીજે ભવનો પાર ॥ ૩ ॥ જક્ષ **ગોમુખ** ગિરવો-જિનની ભક્તિ કરેવ, તિહાં **દેવી ચક્કેસરી**-વિઘન કોડી હરેવ; શ્રી તપગચ્છ નાયક-**વિજયસેનસૂરિરાય**, તસ કેરો શ્રાવક-**ઋષભદાસ** ગુણ ગાય ॥ ૪ ॥

શ્રી શાતિનાથસ્વામીની સ્તુતિ

(શાતિ સુહકર સાહિબો—એ દેશી)

શાતિ જિનેસર સમરીએ—જેની અચિરા માય, વિશ્વસેન કુલ ઉપન્યા—મૃગ લછન પાય, ગજપુર નયરીનો ધણી—કચન વરણી છે કાય, ધનુષ ચાલીશની દેહડી—લાખ વરસનુ આય ॥ ૧ ॥ શાન્તિ જિનેસર સોલમા—ચક્રી પચમ જાણુ, કુન્થુનાથ ચક્રી છઠ્ઠા— અરનાથ વખાણુ, એ ત્રણે ચક્રી સહી—દેખી આણુદુ, સજમ લેઇ મુગતે ગયા—નિત્ય ઉઠીને વદુ ॥ ૨ ॥ શાન્તિ જિનેસર કેવળી—મેશ ધર્મ પ્રકાશે, દાન શિયળ તપ ભાવના—નર મોહે અભ્યાસે એ ચૈ વચન જિનજી તણા—જેણે હૈડે ધરીયા, સુણુતા સમકિત નિર્મળા—નિશ્ચે કેવળ વરીયાં ॥ ૩ ॥ સમેતશિખર ગિરિ ઉપરે—જેણે અણુસણુ કીધા, કાઉસગ્ગ ધ્યાન મુદ્રા ગ્રહી—જેણે મોક્ષજ લીધા, જક્ષ ગરૂડ સમરૂ સદા—દેવી નિર્વાણી, ભવિક જીવ તુમે સાભળો—ઋષભદાસની વાણી ॥ ૪ ॥

શ્રી નેમિનાથસ્વામીની સ્તુતિ.

રાજુલ વરનારી–રૂપથી રતિહારી, તેહના પરિહારી–બાલથી બ્રહ્મચારી; પશુઆં ઉગારી–હુઆ ચારિત્રધારી, કેવલસિરિ સારી–પામીયા ઘાતી વારી ॥ ૧ ॥ ત્રણ જ્ઞાન સંયુતા–માતની કૂખે હુંતા, જનમે [૧]પુરૂહૂતા–આવી સેવા કરંતા; અનુક્રમે વ્રત લહંતા–પંચ સમિતિ ધરંતા, મહીયલ વિચરંતા–કેવલ શ્રી વરંતા ॥ ૨ ॥ સવિ સુરવર આવે–ભાવના ચિત્ત લાવે, ત્રિગડું સોહાવે–દેવછંદો બનાવે; સિંહાસન ઠાવે–સ્વામીના ગુણ ગાવે; તિહાં જિનવર આવે–તત્ત્વ વાણી સુણાવે ॥ ૩ ॥ શાસન–સુરી સારી–**અંબિકા** નામ ધારી, જે સમકિતી નર નારી–પાપ સંતાપ વારી; પ્રભુ સેવા કારી–જાપ જપીએ સવારી, સંઘ દુરિત નિવારી–**પદ્મને** જેહ પ્યારી ॥ ૪ ॥

૧–પુરૂહૂતા–ઇન્દ્રો.

શ્રી શંખેશ્વર-પાર્શ્વનાથની સ્તુતિ

શંખેશ્વર પાસજી પૂજીએ, નરભવનો લાહો લીજીએ, મન વંછિત પૂરણ સુરતરુ, જય વામા-સુત અલવેસરુ ॥ ૧ ॥ [1]દોય ગતા જિનવર અતિ ભલા, [2]દોય ધોળા જિનવર ગુણ નીલા, [3]દોય નીલા [4]દોય શામળ કહ્યા, સોલે જિન કંચન વર્ણ લહ્યા ॥ ૨ ॥ આગમ તે જિનવર ભાખીયો, ગણધર તે હૈડે રાખીયો, તેહનો રસ જેણે ચાખીયો, તે હુવો શિવસુખ સાખીયો ॥ ૩ ॥ ધરણેન્દ્રરાય પદ્માવતી, પ્રભુ પાર્શ્વ તણા ગુણ ગાવતી, સહુ સંઘનાં સંકટ ચૂરતી, નયવિમલના વંછિત પૂરતી ॥ ૪ ॥

શ્રી મહાવીર જિન-સ્તુતિ

જય જય ભવિ હિતકર વીર-જિનેશ્વર દેવ,

૧-પદ્મપ્રભ અને વાસુપૂજ્ય. ૨-ચંદ્રપ્રભ અને સુવિધિનાથ. ૩-મલ્લિનાથ અને પાર્શ્વનાથ ૪-મુનિ સુવ્રતસ્વામી અને નેમિનાથ.

સુર–નરના નાયક જેહની સારે સેવ; કરૂણારસ કંદો વંદો આનંદ આણી, ત્રિશલા–સુત સુન્દર ગુણમણિ કેરો ખાણી ॥ ૧ ॥ જસ પંચ કલ્યાણક દિવસ વિશેષ સુહાવે, ×પણ થાવર નારક તેહને પણ સુખ થાવે; તે [૧]ચ્યવન [૨]જન્મ [૩]વ્રત [૪]નાણ અને [૫]નિરવાણ, સવિ જિનવર કેરાં એ પાંચે અહિ-ઠાણ ॥ ૨ ॥ જિહાં પંચ સમિતિ યુત પંચ મહાવ્રત સાર, જેહમાં પરકાશ્યા વળી પાંચે વ્યવહાર; [૧]પરમેષ્ઠી [૨]અરિહંત [૩]નાથ [૪]સર્વજ્ઞ ને [૫]પાર, એહ પંચ પદે લહ્યો આગમ–અર્થ ઉદાર ॥ ૩ ॥ માતંગ સિદ્ધાઈ દેવી જિનપદ સેવી, દુઃખ દુરિત ઉપદ્રવ જે ટાળે નિતમેવી; શાસન–સુખદાયી આઈ સુણો અરદાસ, શ્રી જ્ઞાનવિમળ ગુણ પૂરો વંછિત આસ ॥ ૪ ॥

× 'પણ'–પાંચ.

चिन्ताचूरक–श्रीचिंतामणि–पार्श्वनाथाय नमः ।

શ્રી સિદ્ધાચલ–મહાતીર્થાદિ સ્તવનાવલી

સાતમો–વિભાગ

નવસ્મરણો, શ્રી ગૌતમસ્વામીનો રાસ,
શ્રી ગૌતમાષ્ટક–છંદ અને નવકાર
મહામંત્ર–માહાત્મ્ય દર્શક–છંદ



ન – વ – સ્મ – ર – ણો.

નવકાર–મહામંત્રઃ

[પ્રથમ સ્મરણમ્]

નમો અરિહંતાણં ॥ ૧ ॥ નમો સિદ્ધાણં ॥ ૨ ॥ નમો આયરિયાણં ॥ ૩ ॥ નમો ઉવ-ઝ્ઝાયાણં ॥ ૪ ॥ નમો લોએ સવ્વસાહૂણં ॥ ૫ ॥ એસો પંચ નમુક્કારો ॥ ૬ ॥ સવ્વ-

પાવપ્પણાસણો ॥ ૭ ॥ મંગલાણં ચ સવ્વેસિં ॥ ૮ ॥ પઢમં હવઈ મંગલં ॥ ૯ ॥

ઉવસગ્ગહરં સ્તવનમ્.

[દ્વિતીયં સ્મરણમ.]

ઉવસગ્ગહરં પાસં, પાસં વંદામિ કમ્મ-ઘણમુક્કં; વિસહરવિસનિન્નાસં, મંગલકલ્લાણ-આવાસં ॥ ૧ ॥ વિસહરફુલિંગમંતં, કંઠે ધારેઈ જો સયા મણુઓ; તસ્સ ગહરોગમારી-દુઠ્ઠજરા જંતિ ઉવસામં ॥ ૨ ॥ ચિઠ્ઠઉ દૂરે મંતો, તુજ્ઝ પણામો વિ બહુફલો હોઈ; નર-તિરિએસુ વિ જીવા, પાવંતિ ન દુક્ખ-દોગચ્ચં ॥ ૩ ॥ તુહ સમત્તે લદ્ધે, ચિંતામણિકપ્પ-પાયવબ્ભહિએ; પાવંતિ અવિગ્ઘેણં, જીવા અયરામરં ઠાણં ॥ ૪ ॥ ઈઅ સંથુઓ મહાયસ !,

ભત્તિબ્ભરનિબ્ભરેણ હિયએણ, તા દેવ ! દિજ્જ બોહિં, ભવે ભવે પાસ ! જિણચંદ ! ॥ ૫ ॥

સંતિકર સ્તવનમ્

[તૃતીય સ્મરણમ્.]

સંતિકરં સંતિજિણં, જગસરણં જયસિરીઇ દાયારં, સમરામિ ભત્તપાલગ–નિવ્વાણી–ગરુડ–કયસેવં ॥ ૧ ॥ ૐ સનમોવિપ્પોસહિ,–પત્તાણં સંતિસામિપાયાણં, ઝ્રૌં સ્વાહામંતેણં, સવ્વાસિવદુરિઅહરણાણં ॥ ૨ ॥ ૐ સંતિનમુક્કારો, ખેલોસહિમાઇલદ્ધિપત્તાણં, સૌં હ્રીં નમો સવ્વો,–સહિપત્તાણં ચ દેઇ સિરિં ॥ ૩ ॥ વાણીતિહુઅણસામિણિ, – સિરિદેવીજક્ખરાયગણિપિડગા, ગહ–દિસિપાલ–સુરિંદા, સયા વિ રક્ખંતુ જિણભત્તે ॥ ૪ ॥ રક્ખંતુ મમ

રોહિણી, પન્નત્તી વજ્જસિંખલા ય સયા; વજ્જંકુસિ ચક્કેસરિ, નરદત્તા કાલિ મહકાલી ॥ ૫ ॥ ગોરી તહ ગંધારી, મહજાલા માણુવી અ વઇરુટ્ટા; અછુત્તા માણુસિઆ, મહમાણુસિઆ ઉ દેવીઓ ॥ ૬ ॥ જક્ખા ગોમુહ મહજક્ખ, તિમુહ જક્ખેસ તુંબરુ કુસુમો; માયંગવિજયઅજિઆ, બંભો મણુઓ સુરકુમારો ॥ ૭ ॥ છમ્મુહ પયાલ કિન્નર, ગરુડો ગંધવ્વ તહ ય જક્ખિંદો; કૂબર વરુણો ભિઉડી, ગોમેહો પાસ માયંગો ॥ ૮ ॥ દેવીઓ ચક્કેસરિ, અજિઆ દુરિઆરિ કાલિ મહાકાલી; અચ્ચુઅ સંતા જાલા, સુતારયાડસોય સિરિવચ્છા ॥ ૯ ॥ ચંડા વિજયંકુસિ,—પન્નઇત્તિ નિવ્વાણિ અચ્ચુઆ ધરણી; વઇરુટ્ટછુત્ત (દત્ત) ગંધારિ, અંબ પઉમાવઈ સિદ્ધા ॥ ૧૦ ॥ ઇઅ તિત્થરક્ખણરયા,

અન્નેડવિ સુરા સુરી ય ચઉહા વિ, વ તગ્-જોઈ ણિપમુહા, કુણુ તુ ગ્ક્ખ સયા અમ્હ ॥ ૧૧ ॥ એવ સુદિટ્ઠિસુરગણુ,-સહિઓ સઘસ્સ સતિ-જિણુચદો, મજ્ઝ વિ કરેઉ રક્ખ, મુણિસુદર-સૂરિથુઅમહિમા ॥ ૧૨ ॥ ઈઅ સતિનાહ-સમ્મ,-દ્દિટ્ઠિ રક્ખ સરઈ તિકાલ જો, સવ્વો વદ્દવગ્હિઓ, સ લહઈ સુહસપય પરમ ॥ ૧૩ ॥ તવગચ્છગયણુદિણુયર-જુગવરસિરિસોમસુદરગુરૂણુ, સુપસાયલદ્ધગણુહર-વિજ્જાસિદ્ધી ભણુઈ સીસો ॥ ૧૪ ॥

તિજયપહુત્ત-સ્તોત્રમ્.

[ચતુર્થ સ્મરણુમ.]

તિજયપહુત્તપયાસય,-અટ્ઠમહાપાડિહેરજુત્તાણું;સમયખિત્તઠિઆણુ, સરેમિ ચક્કં જિણિ

દાણું ॥ ૧ ॥ પણવીસા ય અસીઆ, પનરસ પન્નાસ જિણવરસમૂહો; નાસેઉ સયલદુરિઅં, ભવિઆણું ભત્તિજુત્તાણું ॥ ૨ ॥ વીસા પણ-યાલા વિ ય, તીસા પન્નત્તરી જિણવરિંદા; ગહભૂઅરક્ખસાઇણિ—ઘોરૂવસગ્ગં પણાસંતુ ॥ ૩ ॥ સત્તરિ પણતીસા વિ ય, સઠ્ઠી પંચેવ જિણગણો એસો; વાહિજલજલણહરિકરિ,–ચોરા-રિમહાભયં હરઉ ॥ ૪ ॥ પણપન્ના ય દસેવ ય, પન્નઠ્ઠી તહ ય ચેવ ચાલીસા; રક્ખંતુ મે સરીરં, દેવાસુરપણમિઆ સિદ્ધા ॥ ૫ ॥ ઓં હરહુંહ સરસુંસઃ, હરહુંહઃ તહ ય ચેવ સર-સુંસઃ; આલિહિયનામગબ્ભં, ચક્કં કિર સવ્વ-ઓભદ્દં ॥ ૬ ॥ ઓં રોહિણિ પન્નત્તિ, વજ્જ-સિંખલા તહ ય વજ્જઅંકુસિઆ, ચક્કેસરિ નરદત્તા, કાલિ મહાકાલી તહ ગોરી ॥ ૭ ॥

ગધારિ મહજ્જાલા, માણુવિ વઇરુટ્ટ તહય અચ્છુત્તા, માણુસિ મહમાણુસિઆ, વિજ્જા-દેવીઓ રક્ખતુ ॥ ૮ ॥ -પંચદસકમ્મભૂમિસુ, ઉપ્પન્ન સત્તરિ જિણાણુ સય, વિવિહરયણાઈવન્નો,-વસોહિઅ હરઉ દુરિઆઈ ॥ ૯ ॥ ચઉતીસ અઇસયજુઆ, અટ્ઠમહાપાડિહેર-કયસોહા, તિત્થયરા ગયમોહા, ઝાએઅવ્વા પયત્તેણુ ॥ ૧૦ ॥ ઓ વરકણયસંખવિદ્દુમ,-મરગયઘણુ-સન્નિહ વિગયમોહ, સત્તરિસય જિણાણુ, સવ્વામરપૂઇઅ વંદે સ્વાહા ॥ ૧૧ ॥ ઓ ભવણુવઇવાણુવંતર,-જોઇસવાસી વિમાણુવાસી અ, જે કે વિ દુટ્ઠદેવા, તે સવ્વે ઉવસમંતુ મમ ॥ સ્વાહા ॥ ૧૨ ॥ ચંદણુ-કપ્પૂરેણુ, ફલએ લિહિઊણુ ખાલિઅ પિઅં; એગંતરાઇગહભૂઅ,-સાઇણિમુગ્ગં પણાસેઈ ॥ ૧૩ ॥ ઇઅ સત્ત-

રિસયજંતં, સમ્મં મંતં હુવારિ પડિલિહિઅં; દુરિઆરિવિજયવંતં, નિબ્ભંતં નિચ્ચમચ્ચેહ ॥ ૧૪ ॥

નમિઊણ સ્તોત્રમ્.

[પંચમં સ્મરણમ્.]

નમિઊણ પણયસુરગણ,–ચૂડામણિકિરણરંજિઅં મુણિણો; ચલણજુઅલં મહાભય,–પણાસણં સંથવં વુચ્છં ॥ ૧ ॥ સડિયકરચરણનહમુહ, નિબુડ્ડનાસા વિવન્નલાયન્ના; કુટ્ઠમહારોગાનલ,–ફુલિંગનિદ્દ્ઢસવ્વંગા ॥ ૨ ॥ તે તુહ ચલણારાહણ, – સલિલંજલિસેય[1]વુડ્ઢિયચ્છાયા; વણદવદડ્ઢા ગિરિપા,–યવ વ્વ પત્તા પુણો લચ્છિં ॥ ૩ ॥ દુવ્વાયખુભિઅ જલનિહિ×, ઉબ્ભડકલ્લો–

૧–'વુડ્ઢિયચ્છાહા' ઈતિ પાઠાંતર. × પ્રાકૃતત્વાત્ સપ્તમી લોપઃ

લભીસણુરાવે, સભ તભયવિસ કુલ,–નિજ્ઝામ-
ચમુક્કવાવારે ॥ ૪ ॥ અવિદ્લિઅજાણુવત્તા,
ખણેણ પાવનિ ઈચ્છિઅ કૂલ, પાસજિણચલ-
ણજુઅલ, નિચ્ચ ચિઅ જે નમતિ નરા
॥ ૫ ॥ ખરપવણુધ્ધૂયવણદવ–જાલાવલિમિલિ-
અસયલદુમગહણે, ડજ્ઝ તમુદ્ધમયવહુ,–ભીસણ-
રવભીમણમ્મિ વણે ॥ ૬ ॥ જગગુરુણો કમ-
જુઅલ, નિવ્વાવિઅસયલતિહુઅણાભોઅ, જે
સભરતિ મણુઆ, ન કુણઈ જલણો ભય
તેસિં ॥ ૭ ॥ વિલસ તભોગભીસણ–કુરિઆરુ
ણુનયણુતરલજીહાલ, ઉગ્ગભુઅગ નવજલય,–
સચ્છહ ભીસણાયાર ॥ ૮ ॥ મન્નતિ કીડસ-
રિસ, દૂરપરિચ્છૂઢવિસમવિસવેગા, તુહ નામક્ખ-
રફુડસિદ્ધ,–મંત ગુરુઆ નરા લોએ ॥ ૯ ॥
અડવિસુ ભિલ્લતક્કર,–પુલિંદસદ્દૂલસદ્દભીમાસુ,

ભયવિહુરવુન્નકાયર,–ઉલ્લુરિયપહિયસત્થાસુ ॥ ॥ ૧૦ ॥ અવિલુત્તવિહવસારા, તુહ નાહ! પણામમત્તવાવારા, વવગયવિગ્ઘા સિગ્ઘં, પત્તા હિઅઇચ્છિયં ઠાણં ॥ ૧૧ ॥ પજ્જલિઆનલનયણં, દૂરવિયારિયમુહં મહાકાયં; નહકુલિસઘાયવિઅલિઅ,–ગઇંદકુંભત્થલાભોઅં ॥ ૧૨ ॥ પણયસસંભમપત્થિવ,–નહમણિમાણિક્કપડિઅપડિમસ્સ; તુહ વયણપહરણધરા, સીહં કુદ્ધં પિ ન ગણંતિ ॥ ૧૩ ॥ સસિધવલદંતમુસલં, દીહકરુલ્લાલવુડ્ઢિઉચ્છાહં; મહુપિંગનયણજુઅલં, સસલિલનવજલહરારાવં ॥ ૧૪ ॥ ભીમં મહાગઇંદં, અચ્ચાસન્નં પિ તે ન વિ ગણંતિ; જે તુમ્હ ચલણજુઅલં, મુણિવઇ! તુંગં સમલ્લીણા ॥ ૧૫ ॥ સમરમ્મિ તિક્ખખગ્ગા,–ભિગ્ઘાયપવિદ્ધઉદ્ધુયકબંધે; કુંતવિણિભિન્નકરિકલ,–હમુ-

ફુકસિક્કાગપઉરમ્મિ ॥ ૧૬ ॥ નિજ્જિઅદપ્પુદ્ધુ
રગ્ગિઉ,–નરિંદ–નિવહા ભડા જસ ધવલ, પાવ તિ
પાવપસમિણ, પાસજિણ ! તુહ પ્પભાવેણ ॥ ૧૭ ॥
રોગ–જલ–જલણ–વિસહર,–ચોરારિ–મઈંદ–ગય
–રણભયાઈં, પાસજિણનામસ કિ,–ત્તણેણ પસ-
મ તિ સવ્વાઈં ॥ ૧૮ ॥ એવ મહાભયહર,
પાસજિણિંદસ્સ મ થવમુઆર, ભવિયજણાણ-
દયર, કલ્લાણપર પરનિહાણ ॥ ૧૯ ॥ રાયભય
જક્ખ–રક્ખસ,–કુસુમિણ–દુસ્સઉણ–રિક્ખ–પી-
ડાસુ, સ ઝાસુ દોસુ પ થે, ઉવસગ્ગે તહ ય રયણીસુ
॥ ૨૦ ॥ જો પઢઇ જો અ નિસુણઇ, તાણ
કઇણો ય માણતુગસ્સ, પાસો પાવ પસમેઉ,
સયલભુવણચ્ચિયચલણો ॥ ૨૧ ॥ ઉવસગ્ગ તે
કમઠા,–સુરમ્મિ ઝાણાઉ જો ન સ ચલિઓ,
સુર–નર–કિન્નર–જુવઈહિં, સ થુઓ જયઉ પાસ-

ફુકસિક્કારપઉરમ્મિ ॥ ૧૬ ॥ નિજ્જિઅદપ્પુધ્ધુરરિઉ,–નરિંદ–નિવહા ભડા જસ ધવલ, પાવ તિ પાવપસમિણ, પાસજિણ ! તુહ પ્પભાવેણ ॥ ૧૭ ॥ રોગ–જલ–જલણ–વિસહર,–ચોરારિ–મઇંદ–ગય–રણભયાઇં, પાસજિણનામસં કિ,–ત્તણેણ પસમંતિ સવ્વાઇં ॥ ૧૮ ॥ એવં મહાભયહરં, પાસજિણિંદસ્સ સંથવમુઆરં, ભવિયજણાણંદયરં, કલ્લાણપરં પરનિહાણં ॥ ૧૯ ॥ રાયભય જક્ખ–રક્ખસ,–કુસુમિણ–દુસ્સઉણ–રિક્ખ–પીડાસુ, સંઝાસુ દોસુ પંથે, ઉવસગ્ગે તહ ય રયણીસુ ॥ ૨૦ ॥ જો પઢઇ જો અ નિસુણઇ, તાણં કઇણો ય માણતુંગસ્સ, પાસો પાવં પસમેઉ, સયલભુવણચ્ચિયચલણો ॥ ૨૧ ॥ ઉવસગ્ગંતે કમઠા,–સુરમ્મિ ઝાણાઉ જો ન સંચલિઓ, સુર–નર–કિન્નર–જુવઇહિં, સંથુઓ જયઉ પાસ-

જિણો ॥ ૨૨ ॥ એઅસ્સ મજ્ઝયારે, અઠાર-સઅક્ખરેહિં જો મંતો; જો જાણઇ સો ઝાયઇ, પરમપયત્થં ફુડં પાસં ॥ ૨૩ ॥ પાસહ સમરણ જો કુણઈ, સંતુટ્ઠહિયએણ; અટ્ઠુત્તર-સયવાહિભય, નાસઈ તસ્સ દૂરેણ ॥ ૨૪ ॥

અજિતશાન્તિ-સ્તવનમ્.

[ષષ્ઠં સ્મરણમ.]

અજિઅં જિઅસવ્વભયં, સંતિં ચ પસં-તસવ્વગયપાવં; જયગુરુ સંતિગુણકરે, દો વિ જિણવરે પણિવયામિ ॥ ૧ ॥ ગાહા ॥ વવગ-યમંગુલભાવે, તે હં વિઉલતવનિમ્મલસહાવે; નિરુવમમહપ્પભાવે, થોસામિ સુદિટ્ઠસબ્ભાવે ॥ ૨ ॥ ગાહા ॥ સવ્વદુક્ખપ્પસંતીણં, સવ્વ પાવપ્પસંતિણં; સયા અજિઅસંતીણં, નમો

અજિઅસંતિણુ ॥ ૩ ॥ સિલોગો ॥ અજિઅ-
જિણ! સુહપ્પવત્તણુ, તવ પુરિસુત્તમ! નામ-
કિત્તણુ, તહ ય ધિઇમઇપ્પવત્તણુ, તવ ય
જિણુત્તમ! સંતિ! કિત્તણુ ॥ ૪ ॥ માગહિઆ
॥ કિરિઆવિહિસંચિઅકમ્મકિલેસવિમુક્ખયરં,
અજિઅં નિચિઅં ચ ગુણેહિં મહામુણિસિદ્ધિ-
ગયં, અજિઅસ્સ ય સંતિમહામુણિણો વિ અ
સંતિકરં, સયયં મમ નિવ્વુઇકારણયં ચ નમં-
સણયં ॥ ૫ ॥ આલિંગણયં ॥ પુરિસા! જઇ
દુક્ખવારણું, જઇ ય વિમગ્ગહ સુક્ખકારણું,
અજિઅં સંતિં ચ ભાવઓ, અભયકરે સરણું
પવજ્જહા ॥ ૬ ॥ માગહિઆ ॥ અરઇ-રઇ-
તિમિર-વિરહિઅ-મુવરય-જરમરણું સુર-અસુ
ર-ગરુલ-ભુયગવઇ-પયય-પણિવઇયં, અજિઅ-
મહમવિ અ સુનયનયનિઉણમભયકરં, સરણું

સુવસરિઅ ભુવિદિવિજમહિયં સયયમુવણમે ॥ ૭ ॥ સંગયયં ॥ તં ચ જિણુત્તમ–મુત્તમ-નિત્તમસત્તધરં; અજ્જવ–મદ્દવ–ખંતિ–વિમુ-ત્તિસમાહિનિહિં; સંતિકરં પણમામિ દમુત્ત-મતિત્થયરં, સંતિમુણી મમ સંતિસમાહિવરં દિસઉ ॥ ૮ ॥ સોવાણયં ॥ સાવત્થિપુવ્વપ-ત્થિવં ચ વરહત્થિમત્થયપસત્થવિત્થિન્નસંથિયં, થિરસરિત્થવચ્છં મયગલલીલાયમાણવરગંધહ-ત્થિપત્થાણપત્થિયં સંથવારિહં; હત્થિહત્થબાહું ધંતકણગ–રુઅગ–નિરુવહય–પિંજરં પવર–લ-ક્ખણોવચિઅસોમચારુરૂવં, સુઈસુહમણાભિરામ-પરમરમણિજ્જવરદેવદુંદુહિનિનાયમહુરયર–સુ-હગિરં ॥ ૯ ॥ વેડ્ઢઓ ॥ અજિઅં જિઆ-રિગણં, જિઅસવ્વભયં ભવોહરિઉં; પણમામિ અહં પયઓ, પાવં પસમેઉ મે ભયવં !

॥ १० ॥ રાસાલુદ્ધઓ ॥ કુરુજણવયહત્થિણા-
ઉરનરીસરો પઢમ તઓ મહાચક્કવટ્ટિભોએ
મહપ્પભાવો, જો બાવત્તરિ–પુરવર–સહસ્સ–વર
નગરનિગમ–જણવયવઈ-બત્તીસારાયવરમહસ્સા-
ણુયાયમગ્ગો, ચઉદસવરરયણનવમહાનિહિ–ચઉ-
સટ્ઠિસહસ્સપવરજુવઈણ સુંદરવઈ, ચુલસી–હય
–ગય–રહ–સયસહસ્સસામી છન્નવઈગામકોડિ-
સામી આસી જો ભારહમ્મિ ભયવં ॥ ૧૧ ॥
વેઙ્ઢઓ ॥ તં સંતિ સંતિકરં, સંતિણ્ણં
સવ્વભયા, સંતિં થુણામિ જિણં, સંતિં વિહેઉ
મે ॥ ૧૨ ॥ રાસાનંદિયં ॥ ઇક્ખાગ ! વિદે-
હનરીસર ! નરવસહા ! મુણિવસહા !, નવસાર–
યસસિસકલાણણ ! વિગયતમા ! વિહુઅરયા !,
અજિ ! ઉત્તમ ! તેઅગુણેહિં મહામુણિ–અમિ-
અબલા ! વિઉલકુલા !, પણમામિ તે ભવભય-

મૂરણ ! જગસરણા ! મમ સરણં ॥ ૧૩ ॥
ચિત્તલેહા ॥ દેવ-દાણવિંદ-ચંદ-સૂરવંદ !
હુઠ-તુઠ-જિઠ-પરમ, લઠ-રૂવ ! ધંત-રૂપ્પ-
-પટ્ટ-સેય-સુદ્ધ-નિદ્ધ-ધવલ,-દંતપંતિ ! સંતિ !
સત્તિ-કિત્તિ-મુત્તિ-જુત્તિ-ગુત્તિપવ !, દિત્તતે-
અવંદ ! ધેઅ ! સવ્વલોઅ-ભાવિઅપ્પભાવ !
ણેઅ ! પઈસ મે સમાહિં ॥ ૧૪ ॥ નારા-
યઓ ॥ વિમલસસિકલાઇરેઅસોમં, વિતિમિર-
સૂરકરાઇરેઅતેઅં; તિઅસવઈગણાઇરેઅરૂવં,
ધરણિધરપ્પવરાઇરેઅસારં ॥ ૧૫ ॥ કુસુમ-
લયા ॥ સત્તે અ સયા અજિઅં, સારીરે અ
બલે અજિઅં; તવસંજમે અ અજિઅં, એસ
થુણામિ જિણં અજિઅં ॥ ૧૬ ॥ ભુઅગપ-
રિરિંગિઅં ॥ સોમગુણેહિં પાવઈ ન તં નવ-
સરયસસી, તેઅગુણેહિં પાવઇ ન તં નવ-

સરયરવી, રૂવગુણેહિં પાવઈ ન ત તિઅસગ-
ણવઈ, સારગુણેહિં પાવઈ ન ત ધરણિધરવઈ
॥ ૧૭ ॥ ખિજ્જિઅય ॥ તિત્થવરપવત્તય
તમરયરહિય, ધીરજણથુઅચ્ચિઅ ચુઅકલિ
કલુસ, સંતિસુહપ્પવત્તય તિગરણપયઓ,
સંતિમહં મહામુણિં સરણમુવણમે ॥ ૧૮ ॥
લલિઅય ॥ વિણઓણય-સિરરઈઅ જલિ-
રિસિગણસંથુઅં થિમિઅં, વિબુહાહિવધણ
વઈનરવઈ-થુઅ-મહિઅચ્ચિઅં બહુસો, અઈ-
રુગ્ગયસરય-દિવાયર-સમહિઅ-સપ્પભં તવ-
સા, ગયણંગણ-વિયરણ-સમુઈઅ-ચારણવંદિ-
અં સિરસા ॥ ૧૯ ॥ કિસલયમાલા ॥
અસુર-ગરુલ-પરિવંદિઅં, કિન્નરોરગ-નમં-
સિઅં, દેવકોડિસય-સંથુઅં, સમણસંઘપરિ-
વંદિઅં ॥ ૨૦ ॥ સુમુહં ॥ અભય અણહં,

અરયં અરુયં; અજિઅં અજિઅં, પયઓ પણમે ॥ ૨૧ ॥ વિજ્જુવિલસિઅં ॥ આગયા વરવિમાણદિવ્વકણગ,–રહ–તુરય–પહકર-સએહિં હુલિઅં; સસંભમોઅરણખુભિયલુલિયચલ,–કુંડલંગયતિરીડસોહંત–મઉલિમાલા ॥ ૨૨ ॥ વેડ્ઢઓ ॥ જં સુરસંઘા સાસુરસંઘા વેરવિઉત્તા ભત્તિસુજુત્તા, આયરભૂસિઅસંભમપિંડિઅ–સુટ્ઠુસુવિમ્હિઅસવ્વબલોઘા; ઉત્તમ–કંચણ–રયણ–પરૂવિયભાસુરભૂસણભાસુરિઅંગા; ગાયસમોણયભત્તિવસાગયપંજલિપેસિયસીસપણામા ॥ ૨૩ ॥ રયણમાલા ॥ વંદિઊણ થોઊણ તો જિણં, તિગુણમેવ ય પુણો પયાહિણં; પણમિઊણ ય જિણં સુરાસુરા, પમુઈઆ સભવણાઈં તો ગયા ॥ ૨૪ ॥ ખિત્તયં ॥ તં મહામુણિમહં પિ પંજલી, રાગ–દોસ–ભય–મોહ–વજ્જિઅં; દેવ–દાણવ–

નરિંદ-વંદિઅ, સંતિમુત્તમમહાતવં નમે ॥ ૨૫ ॥ ખિત્તય ॥ અંબરંતરવિઆરણિઆહિં, લલિઅહંસ-વહુગામિણિઆહિં, પીણસોણિથણસાલિણિઆહિં, સકલકમલદલલોઅણિઆહિં ॥ ૨૬ ॥ દીવય ॥ પીણનિરંતરથણભરવિણમિઅ-ગાયલઆહિં, મણિકંચણપસિઢિલમેહલસોહિઅસોણિતડાહિં, વરખિંખિણિ-નેઉર-સતિલય-વલય-વિભૂસણિઆહિં, રઈકર-ચઉર-મણોહર-સુંદર-દંસણિઆહિં ॥ ૨૭ ॥ ચિત્તક્ખરા ॥ દેવસુંદરીહિં પાયવંદિઆહિં વંદિઆ ય જસ્સ તે સુવિક્કમા કમા, અપ્પણો નિડાલએહિં મંડણોડ્ડણપ્પગારએહિં કેહિં કેહિં વી, અવંગતિલય-પત્તલેહનામએહિં ચિલ્લએહિં સંગયંગયાહિં, ભત્તિ-સન્નિવિ -વંદણાગયાહિં હુંતિ તે વંદિઆ પુણો પુણો ॥ ૨૮ ॥ નારા

ચઓ ॥ તમહં જિણચંદં, અજિઅં જિઅમોહં;
ધુયસવ્વકિલેસં, પયઓ પણમામિ ॥ ૨૯ ॥
નંદિઅયં ॥ થુઅવંદિઅયસ્સા રિસિગણદેવગ-
ણેહિં, તો દેવવહુહિં પયઓ પણમિઅસ્સા; જસ્સ-
જગુત્તમ-સાસણઅસ્સા, ભત્તિવસાગયપિંડિઅ-
યાહિં; દેવવરચ્છરસાબહુઆહિં, સુરવરરઇગુણપં-
ડિઅયાહિં ॥ ૩૦ ॥ ભાસુરયં ॥ વસ-સદ્દ-તંતિ-
તાલમેલિએ તિઉક્ખરાભિરામ-સદ્દ-મીસએ કએ
અ, સુઈસમાણણે અ સુદ્ધસજ્જગીઅપાયજાલ-
ઘંટિઆહિં; વલય-મેહલા-કલાવ-નેઉરાભિરામ-
સદ્દ-મીસએ કએ અ, દેવનટ્ટિઆહિં હાવ-ભાવ
-વિબ્ભમ-પ્પગારએહિં, નચ્ચિઊણ અંગહાર-
એહિ વંદિઆ ય જસ્સ તે સુવિક્કમા કમા,
તયં તિલોયસવ્વસત્તસંતિકારયં પસંતસવ્વપા-
વદોસમેસ હં નમામિ સંતિમુત્તમં જિણં ॥ ૩૧ ॥

નારાયઓ ॥ છત્ત-ચામર-પડાગ-જૂઅ-જવ-મ-ડિઆ, ઝયવર-મગર-તુરય-સિરિવચ્છસુલ છણા, દીવ-સમુદ્દ-મ દર-દિસાગય-સોહિઆ, સત્થિઅ-વસહ-સીહ-રહ-ચક્ક-વર કિઆ ॥ ૩૨ ॥
લલિઅય ॥ સહાવલટ્ઠા સમપ્પઇટ્ઠા, અદોસદુટ્ઠા ગુણેહિં જિટ્ઠા, પસાયસિટ્ઠા તવેણ પુટ્ઠા, સિરીહિં ઈટ્ઠા રિસીહિં જુટ્ઠા ॥ ૩૩ ॥ વાણુવાસિઆ ॥ તે તવેણ ધુઅસવ્વપાવયા, સવ્વલોઅહિઅમૂલપાવયા, સ થુઆ અજિઅ-સ તિ-પાયયા, હુંતુ મે સિવસુહાણ દાયયા ॥ ૩૪ ॥ અપરાંતિકા ॥ એવ તવબલવિઉલ, થુઅ મએ અજિઅસ તિજિણજુઅલ, વવગયકમ્મરયમલ, ગઈ ગય સાસય વિઉલ ॥ ૩૫ ॥ ગાહા ॥ ત બહુગુણપ્પસાય, મુક્ખસુહેણ પરમેણ અવિસાય, નાસેઉ મે વિસાય, કુણઉ અ પરિસા વિ અ પ્પસાય ॥ ૩૬ ॥

ગાહા ।। તં મોએઉ અ નંદિં, પાવેઉ અ નંદિસેણ-મભિનંદિં; પરિસા વિ અ સુહનંદિં, મમ ય દિસઉ સંજમે નંદિં ।। ૩૭ ।। ગાહા ।। પક્ખિઅ-ચાઉમ્માસિઅ,–સંવચ્છરિએ અવસ્સ ભણિઅ-વ્વો; સોઅવ્વો સવ્વેહિં, ઉવસગ્ગ–નિવારણો એસો ।। ૩૮ ।। જો પઢઈ જો અ નિસુણઈ, ઉભઓ કાલં પિ અજિઅસંતિથયં; ન હુ હુંતિ તસ્સ રોગા, પુવ્વુપ્પન્ના વિ નાસંતિ ।। ૩૯ ।। જઇ ઇચ્છહ પરમપયં, અહવા કિત્તિં સુવિત્થડં ભુવણે; તા તેલુક્કુદ્ધરણે, જિણવયણે આયરં કુણહ ।। ૪૦ ।।

ભક્તામર-સ્તોત્રમ્.

[સપ્તમં સ્મરણમ.]

ભક્તામરપ્રણતમૌલિમણિપ્રભાણા–મુદ્યો–

તક દલિતપાપતમોવિતાનમ્, સમ્યક્ પ્રણમ્ય
જિનપાદયુગ યુગાદા,-વાલમ્બન ભવજલે
પતતા જનાનામ્ ॥ ૧ ॥ ય સ સ્તુત સકલ-
વાઙ્મયતત્ત્વબોધા,-દુદ્ભૂતબુદ્ધિપટુભિ સુરલોક-
નાથૈ, સ્તોત્રૈર્જગત્ત્રિતયચિત્તહરૈરુદારૈ, સ્તોષ્યે
કિલાહમપિ ત પ્રથમ જિનેન્દ્રમ્ ॥ ૨ ॥
બુદ્ધયા વિનાઽપિ વિબુધાર્ચિતપાદપીઠ!, સ્તોતું
સમુદ્યતમતિર્વિગતત્રપોઽહમ્, બાલ વિહાય
જલસંસ્થિતમિન્દુબિમ્બ,-મન્ય ક ઇચ્છતિ જન
સહસા ગ્રહીતુમ્? ॥ ૩ ॥ વક્તું ગુણાન્ ગુણ-
સમુદ્ર! શશાઙ્કકાન્તાન્, કસ્તે ક્ષમ સુરગુરુ-
પ્રતિમોઽપિ બુદ્ધયા, કલ્પાન્તકાલપવનોદ્ધતનક્ર-
ચક્ર, કો વા તરીતુમલમમ્બુનિધિં ભુજાભ્યામ્?
॥ ૪ ॥ સોઽહ તથાપિ તવ ભક્તિવશાન્મુ-
નીશ!, કર્તું સ્તવં વિગતશક્તિરપિ પ્રવૃત્ત,

પ્રીત્યાત્મવીર્યમવિચાર્ય મૃગો મૃગેન્દ્રં, નાભ્યે-
તિ કિં નિજશિશોઃ પરિપાલનાર્થમ્? ॥ ૫ ॥
અલ્પશ્રુતં શ્રુતવતાં પરિહાસધામ, ત્વદ્ભક્તિ-
રેવ મુખરીકુરુતે બલાન્મામ્; યત્કોકિલઃ કિલ
મધૌ મધુરં વિરૌતિ, તચ્ચારુચૂતકલિકાનિકરૈક-
હેતુઃ ॥ ૬ ॥ ત્વત્સંસ્તવેન ભવસન્તતિસન્નિ-
બદ્ધં, પાપં ક્ષણાત્ક્ષયમુપૈતિ શરીરભાજામ્;
આક્રાન્તલોકમલિનીલમશેષમાશુ, સૂર્યાંશુભિન્ન-
મિવ શાર્વરમન્ધકારમ્ ॥ ૭ ॥ મત્વેતિ નાથ!
તવ-સંસ્તવનં મયેદ,–મારભ્યતે તનુધિયાઽપિ
તવ પ્રભાવાત્; ચેતો હરિષ્યતિ સતાં નલિનીદ-
લેષુ, મુક્તાફલદ્યુતિમુપૈતિ નનૂદબિન્દુઃ ॥ ૮ ॥
આસ્તાં તવસ્તવનમસ્તસમસ્તદોષં, ત્વત્સંક-
થાપિ જગતાં દુરિતાનિ હન્તિ; દૂરે સહસ્રકિ-
રણઃ કુરુતે પ્રભૈવ, પદ્માકરેષુ જલજાનિ વિકા-

શભાગ્જિ ॥ ૯ ॥ નાત્યદ્ભુત ભુવનભૂષણભૂ તનાથ!, ભૂતૈર્ગુણૈર્ભુવિ ભવન્તમભિષ્ટુવન્ત, તુલ્યા ભવન્તિ ભવતો નનુ તેન કિં વા?, ભૂત્યાશ્રિત ય ઇહ નાત્મસમ કરોતિ ॥ ૧૦ ॥ દૃષ્ટ્વા ભવન્તમનિમેષવિલોકનીય, નાન્યત્ર તોષમુપયાતિ જનસ્ય ચક્ષુ, પીત્વા પય શશિકરદ્યુતિદુગ્ધસિન્ધો, ક્ષાર જલ જલનિધેરશિતુ ક ઇચ્છેત્? ॥ ૧૧ ॥ યૈ શાન્તરાગરુચિભિ પરમાણુભિસ્ત્વ, નિર્માપિતસ્ત્રિભુવનૈકલલામભૂત!, તાવન્ત એવ ખલુ તેઽપ્યણવ પૃથિવ્યા, યત્તે સમાનમપર નહિ રૂપમસ્તિ ॥ ૧૨ ॥ વક્ત્ર ક્વ તે સુરનરોરગનેત્રહારિ, નિ શેષનિર્જિતજગત્ત્રિતયોપમાનમ્?, બિમ્બ કલઙ્કમલિન ક્વ નિશાકરસ્ય?, યદ્વાસરે ભવતિ પાણ્ડુપલાશકલ્પમ્ ॥ ૧૩ ॥ સમ્પૂર્ણ-

મણ્ડલશશાઙ્કકલાકલાપ,-શુભ્રા ગુણાસ્ત્રિભુવનં તવ લઙ્ઘયન્તિ; યે સંશ્રિતાસ્ત્રિજગદીશ્વર! નાથમેકં, કસ્તાન્નિવારયતિ સંચરતો યથેષ્ટમ્? ॥ ૧૪ ॥ ચિત્રં કિમત્ર યદિ તે ત્રિદશાઙ્ગ-નાભિ-ર્નીતં મનાગપિ મનો ન વિકારમાર્ગમ્; કલ્પાન્તકાલમરુતા ચલિતાચલેન, કિં મન્દરાદ્રિ-શિખરં ચલિતં કદાચિત્? ॥ ૧૫ ॥ નિર્ધૂમ-વર્ત્તિરપવર્જિતતૈલપૂરઃ, કૃત્સ્નં જગત્ત્રયમિદં પ્રકટીકરોષિ; ગમ્યો ન જાતુ મરુતાં ચલિતા-ચલાનાં, દીપોઽપરસ્ત્વમસિ નાથ! જગત્પ્રકાશઃ ॥ ૧૬ ॥ નાસ્તં કદાચિદુપયાસિ ન રાહુગમ્યઃ, સ્પષ્ટીકરોષિ સહસા યુગપજ્જગન્તિ; નામ્ભોધ-રોદરનિરુદ્ધમહાપ્રભાવઃ, સૂર્યાતિશાયિમહિમા-ઽસિ મુનીન્દ્ર! લોકે ॥ ૧૭ ॥ નિત્યોદયં દલિ-તમોહમહાન્ધકારં, ગમ્યં ન રાહુવદનસ્ય ન

વારિદાનામ્, વિભ્રાજતે તવ મુખાબ્જમનલ્પ-કાન્તિ, વિદ્યોતયજ્જગદપૂર્વશશાઙ્કબિમ્બમ્ ॥ ૧૮ ॥ કિં શર્વરીષુ શશિનાઽહ્નિ વિવસ્વતા વા, યુષ્મન્મુખેન્દુદલિતેષુ તમસ્સુ નાથ !, નિષ્પન્નશાલિવનશાલિનિ જીવલોકે, કાર્યં કિયજ્જલધરૈર્જલભારનમ્રૈ. ॥ ૧૯ ॥ જ્ઞાનં યથા ત્વયિ વિભાતિ કૃતાવકાશં, નૈવં તથા હરિહરાદિષુ નાયકેષુ, તેજઃ સ્ફુરન્મણિષુ યાતિ યથા મહત્ત્વં, નૈવં તુ કાચશકલે કિરણાકુલેઽપિ ॥ ૨૦ ॥ મન્યે વરં હરિહરાદય એવ દૃષ્ટા, દૃષ્ટેષુ યેષુ હૃદયં ત્વયિ તોષમેતિ, કિં વીક્ષિતેન ભવતા ભુવિ યેન નાન્યઃ, કશ્ચિન્મનો હરતિ નાથ ! ભવાન્તરેઽપિ ॥ ૨૧ ॥ સ્ત્રીણાં શતાનિ શતશો જનયન્તિ પુત્રાન્, નાન્યા સુતં ત્વદુપમં જનની પ્રસૂતા, સર્વા દિશો દધતિ ભાનિ સહ-

સ્રરશ્મિં, પ્રાચ્યેવ દિગ્ જનયતિ સ્ફુરદંશુજાલમ્ ॥ ૨૨ ॥ ત્વામામનન્તિ મુનયઃ પરમં પુમાંસ,—માદિત્યવર્ણમમલં તમસઃ પરસ્તાત્; ત્વામેવ સમ્યગુપલભ્ય જયન્તિ મૃત્યું, નાન્યઃ શિવઃ શિવપદસ્ય મુનીન્દ્ર ! પન્થાઃ ॥ ૨૩ ॥ ત્વામવ્યયં વિભુમચિન્ત્યમસઙ્ખ્યમાદ્યં, બ્રહ્માણમીશ્વરમનન્તમનઙ્ગકેતુમ્; યોગીશ્વરં વિદિતયોગમનેકમેકં, જ્ઞાનસ્વરૂપમમલં પ્રવદન્તિ સન્તઃ ॥ ૨૪ ॥ બુદ્ધસ્ત્વમેવ વિબુધાર્ચિતબુદ્ધિબોધાત્, ત્વં શઙ્કરોઽસિ ભુવનત્રયશંકરત્વાત્; ધાતાસિ ધીર ! શિવમાર્ગવિધેર્વિધાનાત્, વ્યક્તં ત્વમેવ ભગવન્ ! પુરુષોત્તમોઽસિ ॥ ૨૫ ॥ તુભ્યં નમસ્ત્રિભુવનાર્ત્તિહરાય નાથ !, તુભ્યં નમઃ ક્ષિતિતલામલભૂષણાય; તુભ્યં નમસ્ત્રિજગતઃ પરમેશ્વરાય, તુભ્યં નમો જિન ! ભવો-

દધિશોષણાય ॥ ૨૬ ॥ કો વિસ્મયોઽત્ર યદિ નામ ગુણૈરશેષૈ,–સ્ત્વં સંશ્રિતો નિરવકાશતયા મુનીશ !, દોષૈરુપાત્તવિવિધાશ્રયજાતગર્વૈ, સ્વ-પ્નાન્તરેઽપિ ન કદાચિદપીક્ષિતોઽસિ ॥ ૨૭ ॥ ઉચ્ચૈરશોકતરુસંશ્રિતમુન્મયૂખ,–માભાતિરૂપમમલં ભવતો નિતાન્તમ્, સ્પષ્ટોલ્લસત્કિરણમસ્તતમોવિતાનં, બિમ્બં રવેરિવ પયોધરપાર્શ્વવર્તિ ॥ ૨૮ ॥ સિંહાસને મણિમયૂખશિખાવિચિત્રે, વિભ્રાજતે તવ વપુઃ કનકાવદાતમ્, બિમ્બં વિયદ્વિલસદંશુલતાવિતાનં, તુઙ્ગોદયાદ્રિશિરસીવ સહસ્રરશ્મેઃ ॥ ૨૯ ॥ કુન્દાવદાતચલચામરચારુશોભં, વિભ્રાજતે તવ વપુઃ કલધૌતકાન્તમ્, ઉદ્યચ્છશાઙ્કશુચિનિર્ઝરવારિધાર,–મુચ્ચૈસ્તટં સુરગિરેરિવ શાતકૌમ્ભમ્ ॥ ૩૦ ॥ છત્રત્રયં તવ વિભાતિ શશાઙ્કકાન્ત,–

મુચ્ચૈઃસ્થિતં સ્થગિતભાનુકરપ્રતાપમ્; મુક્તાફલપ્રકરજાલવિવૃદ્ધશોભં, પ્રખ્યાપયત્ત્રિજગતઃ પરમેશ્વરત્વમ્ ॥ ૩૧ ॥ ઉન્નિદ્રહેમનવપઙ્કજપુઞ્જકાન્તી, પર્યુલ્લસન્નખમયૂખશિખાભિરામૌ; પાદૌ પદાનિ તવ યત્ર જિનેન્દ્ર ! ધત્તઃ, પદ્માનિ તત્ર વિબુધાઃ પરિકલ્પયન્તિ ॥ ૩૨ ॥ ઈત્થં યથા તવ વિભૂતિરભૂજ્જિનેન્દ્ર !, ધર્મોપદેશનવિધૌ ન તથા પરસ્ય; યાદૃક્ પ્રભા દિનકૃતઃ પ્રહતાન્ધકારા, તાદૃક્ કુતો ગ્રહગણસ્ય વિકાશિનોઽપિ ? ॥ ૩૩ ॥ શ્ચ્યોતન્મદાવિલવિલોલકપોલમૂલ,-મત્તભ્રમદ્ભ્રમરનાદવિવૃદ્ધકોપમ્; ઐરાવતાભમિભમુદ્ધતમાપતન્તં, દૃષ્ટ્વા ભયં ભવતિ નો ભવદાશ્રિતાનામ્ ॥ ૩૪ ॥ ભિન્નેભકુમ્ભગલદુજ્જ્વલશોણિતાક્ત,-મુક્તાફલપ્રકરભૂષિતભૂમિભાગઃ; બદ્ધક્રમઃ ક્રમગતં હરિણાધિપો-

ડપિ, નાક્રામતિ ક્રમયુગાચલસંશ્રિતં તે ॥ ૩૫ ॥ કલ્પાન્તકાલપવનોદ્ધતવહ્નિકલ્પં, દાવાનલં જ્વલિતમુજ્જ્વલમુત્સ્ફુલિંગમ્, વિશ્વં જિઘત્સુમિવ સંમુખમાપતન્તં, ત્વન્નામકીર્ત્તનજલં શમયત્યશેષમ્ ॥ ૩૬ ॥ રક્તેક્ષણં સમદકોકિલકણ્ઠનિલં, ક્રોધોદ્ધતં ફણિનમુત્ફણમાપતન્તમ્, આક્રામતિ ક્રમયુગેન નિરસ્તશઙ્ક,-સ્ત્વન્નામનાગદમની હૃદિ યસ્ય પુંસઃ ॥ ૩૭ ॥ વલ્ગત્તુરઙ્ગગજગર્જિતભીમનાદ,-માજૌ બલં બલવતામપિ ભૂપતીનામ્, ઉદ્યદ્દિવાકરમયૂખશિખાડપવિદ્ધં, ત્વત્કીર્ત્તનાત્તમ ઇવાશુ ભિદામુપૈતિ ॥ ૩૮ ॥ કુન્તાગ્રભિન્નગજશોણિતવારિવાહ,-વેગાવતારતરણાતુરયોધભીમે, યુદ્ધે જયં વિજિતદુર્જયજેયપક્ષા,-સ્ત્વત્પાદપઙ્કજવનાશ્રયિણો લભન્તે ॥ ૩૯ ॥ અમ્ભોનિધૌ ક્ષુભિતભી

ષેણુનક્રચક્ર,–પાઠીનપીઠભયદોલ્બણુવાડવાગ્નૌ; ર-
ઙ્ગત્તરઙ્ગશિખરસ્થિતયાનપાત્રા,–ત્રાસં વિહાય
ભવત: સ્મરણાદ્ વ્રજન્તિ ॥ ૪૦ ॥ ઉદ્ભૂત-
ભીષણુજલોદરભારભુગ્ના:, શોચ્યાં દશામુપગતા-
શ્ચ્યુતજીવિતાશા:; ત્વત્પાદપઙ્કજરજોઽમૃતદિગ્ધ-
દેહા, મર્ત્યા ભવન્તિ મકરધ્વજતુલ્યરૂપા:
॥ ૪૧ ॥ આપાદકણ્ઠમુરુશૃંખલવેષ્ટિતાંગા, ગાઢં
બૃહન્નિગડકોટિનિઘૃષ્ટજંઘા:, ત્વન્નામમન્ત્રમનિશં
મનુજા: સ્મરન્ત:, સદ્ય: સ્વયં વિગતબન્ધભયા
ભવન્તિ ॥ ૪૨ ॥ મત્તદ્વિપેન્દ્રમૃગરાજદવાન-
લાહિ,–સંગ્રામવારિધિમહોદરબન્ધનોત્થમ્; ત-
સ્યાશુ નાશમુપયાતિ ભયં ભિયેવ, યસ્તાવકં
સ્તવમિમં મતિમાનધીતે ॥ ૪૩ ॥ સ્તોત્રસ્ર-
જં તવ જિનેન્દ્ર! ગુણૈર્નિબદ્ધાં, ભક્ત્યા મયા
રુચિરવર્ણવિચિત્રપુષ્પામ્; ધત્તે જનો ય ઇહ

કણ્ઠગતામજસ્ર, ત માનતુઙ્ગમવશા સમુપૈતિ લક્ષ્મી ॥ ૪૪ ॥

કલ્યાણમ દિર-સ્તોત્રમ્.

[અષ્ટમ સ્મરણમ્]

કલ્યાણમન્દિરમુદારમવદ્યભેદિ, ભીતાભયપ્રદમનિન્દિતમઙ્ઘ્રિપદ્મમ્, સ સારસાગરનિમજ્જદશેષજન્તુ,–પોતાયમાનમભિનમ્ય જિનેશ્વરસ્ય ॥ ૧ ॥ યસ્ય સ્વય સુરગુરુર્ગરિમામ્બુરાશે , સ્તોત્ર સુવિસ્તૃતમતિર્ન વિભુર્વિધાતુમ્, તીર્થેશ્વરસ્ય કમઠસ્મયધૂમકેતો,–સ્તસ્યાહમેષ કિલ સ મ્તવન કરિષ્યે ॥ ૨ ॥ યુગ્મમ્ ॥ સામાન્યતોઽપિ તવ વર્ણયિતુ સ્વરૂપ,–મસ્માદૃશા કથમધીશ ! ભવન્ત્યધીશા , ધૃષ્ટોઽપિ કૌશિકશિશુર્યદિ વા દિવાન્ધો, રૂપ પ્રરૂપયતિ કિં કિલ ઘર્મરશ્મે ?

॥ ૩ ॥ મોહક્ષયાદનુભવન્નપિ નાથ! મર્ત્યો, નૂનં ગુણાન્ ગણયિતું ન તવ ક્ષમેત; કલ્પાન્તવાન્તપયસઃ પ્રકટોઽપિ યસ્માન્, મીયેત કેન જલધેર્નનુ રત્નરાશિઃ? ॥ ૪ ॥ અભ્યુદ્યતોઽસ્મિ તવ નાથ! જડાશયો પિ, કર્તું સ્તવં લસદસઙ્ખ્યગુણાકરસ્ય; બાલોઽપિ કિં ન નિજબાહુયુગં વિતત્ય, વિસ્તીર્ણતાં કથયતિ સ્વધિયામ્બુરાશેઃ? ॥ ૫ ॥ યે યોગિનામપિ ન યાન્તિ ગુણાસ્તવેશ!, વક્તું કથં ભવતિ તેષુ મમાવકાશઃ?; જાતા તદેવમસમીક્ષિતકારિતેયં, જલ્પન્તિ વા નિજગિરા નનુ પક્ષિણોઽપિ ॥ ૬ ॥ આસ્તામચિન્ત્યમહિમા જિન! સંસ્તવસ્તે, નામાપિ પાતિ ભવતો ભવતો જગન્તિ; તીવ્રાતપોપહતપાન્થજનાન્નિદાઘે, પ્રીણાતિ પદ્મસરસઃ સરસોઽનિલોઽપિ ॥ ૭ ॥ હૃદ્વર્તિનિ ત્વયિ

વિભો ! શિથિલીભવન્તિ, જન્તો ક્ષણેન નિબિડા અપિ કર્મબન્ધા, સદ્યો ભુજઙ્ગમમયા ઇવ મધ્યભાગ,–મભ્યાગતે વનશિખણ્ડિનિ ચન્દનસ્ય ॥ ૮ ॥ મુચ્યન્ત એવ મનુજા સહસા જિનેન્દ્ર !, રૌદ્રૈરુપદ્રવશતૈસ્ત્વયિ વીક્ષિતેઽપિ, ગોસ્વામિનિ સ્ફુરિતતેજસિ દૃષ્ટમાત્રે, ચૌરૈરિવાશુ પશવ પ્રપલાયમાનૈ ॥ ૯ ॥ ત્વ તારકો જિન ! કથ ભવિના ? ત એવ, ત્વામુદ્વહન્તિ હૃદયેન યદુત્તરન્ત, યદ્વા દૃતિસ્તરતિ યજ્જલમેષ નૂન,–મન્તર્ગતસ્ય મરુત સ કિલાનુભાવ ॥ ૧૦ ॥ યસ્મિન્ હરપ્રભૃતયોઽપિ હતપ્રભાવા, સોઽપિ ત્વયા રતિપતિ ક્ષપિત ક્ષણેન, વિધ્યાપિતા હુતભુજ પયસાઽથ યેન, પીત ન કિં તદપિ દુર્દ્ધરવાડવેન ? ॥ ૧૧ ॥ સ્વામિન્નનલ્પગરિમાણમપિ પ્રપન્ના,–સ્ત્વા જન્તવ કથ-

મહો ! હૃદયે દધાના:; જન્મોદધિં લઘુ તરન્ત્ય-તિલાઘવેન, ચિન્ત્યો ન હન્ત મહતાં યદિ વા પ્રભાવ: ॥ ૧૨ ॥ ક્રોધસ્ત્વયા યદિ વિભો! પ્રથમં નિરસ્તો, ધ્વસ્તાસ્તદા બત કથં કિલ કર્મચૌરા: ?; પ્લોષત્યમુત્ર યદિ વા શિશિરાઽપિ લોકે, નીલદ્રુમાણિ વિપિનાનિ ન કિં હિમાની? ॥ ૧૩ ॥ ત્વાં યોગિનો જિન! સદા પર-માત્મરૂપ,-મન્વેષયન્તિ હૃદયામ્બુજકોશદેશે; પૂતસ્ય નિર્મલરુચેર્યદિ વા કિમન્ય,-દક્ષસ્ય સ-મ્ભવિ પદં નનુ કર્ણિકાયા: ? ॥ ૧૪ ॥ ધ્યાના-જ્જિનેશ! ભવતો ભવિન: ક્ષણેન, દેહં વિહાય પર-માત્મદશાં વ્રજન્તિ; તીવ્રાનલાદુપલભાવમપાસ્ય લોકે, ચામીકરત્વમચિરાદિવ ધાતુભેદા: ॥ ૧૫ ॥ અન્ત: સદૈ જિન ! યસ્ય વિભાવ્યસે ત્વં, ભવ્યૈ: કથં તદપિ નાશયસે શરીરમ્ ?; એતત્સ્વરૂપ-

મવ મધ્યવિવર્ત્તિનો હિ, યદ્વિગ્રહં પ્રશમયન્તિ મહાનુભાવાઃ ॥ ૧૬ ॥ આત્મા મનીષિભિરયં ત્વદભેદબુદ્ધયા, ધ્યાતો જિનેન્દ્ર! ભવતીહ ભવત્પ્રભાવ, પાનીયમપ્યમૃતમિત્યનુચિન્ત્યમાન, કિં નામ નો વિષવિકારમપાકરોતિ? ॥ ૧૭ ॥ ત્વામેવ વીતતમસં પરવાદિનોઽપિ, નૂન વિભો! હરિહરાદિધિયા પ્રપન્ના, કિં કાચકામલિભિરીશ! સિતોઽપિ શઙ્ખો, નો ગૃહ્યતે વિવિધવર્ણવિપર્યયેણ? ॥ ૧૮ ॥ ધર્મોપદેશસમયે સવિધાનુભાવા,–દાસ્તા જનો ભવતિ તે તરુરપ્યશોક, અભ્યુદ્ગતે દિનપતૌ સમહીરુહોઽપિ, કિં વા વિબોધમુપયાતિ ન જીવલોક? ॥ ૧૯ ॥ ચિત્રં વિભો! કથમવાઙ્મુખવૃન્તમેવ, વિષ્વક્ પતત્યવિરલા સુરપુષ્પવૃષ્ટિ?, ત્વદ્ગોચરે સુમનસા યદિ વા મુનીશ!, ગચ્છન્તિ નૂનમધ એવ

હિ બન્ધનાનિ ॥ ૨૦ ॥ સ્થાને ગભીરહૃદયોદધિસમ્ભવાયાઃ, પીયૂષતાં તવ ગિરઃ સમુદીરયન્તિ; પીત્વા યતઃ પરમસંમદસઙ્ગભાજો, ભવ્યા વ્રજન્તિ તરસાઽપ્યજરામરત્વમ્ ॥ ૨૧ ॥ સ્વામિન્! સુદૂરમવનમ્ય સમુત્પતન્તો, મન્યે વદન્તિ શુચયઃ સુરચામરૌઘાઃ; યેઽસ્મૈ નતિં વિદધતે મુનિપુઙ્ગવાય, તે નૂનમૂર્ધ્વગતયઃ ખલુ શુદ્ધભાવાઃ ॥ ૨૨ ॥ શ્યામં ગભીરગિરમુજ્જ્વલહેમરત્ન,-સિંહાસનસ્થમિહ ભવ્યશિખણ્ડિનસ્ત્વમ્; આલોકયન્તિ રભસેન નદન્તમુચ્ચૈ,-શ્ચામીકરાદ્રિશિરસીવ નવામ્બુવાહમ્ ॥ ૨૩ ॥ ઉદ્ગચ્છતા તવ શિતિદ્યુતિમણ્ડલેન, લુપ્તચ્છદચ્છવિરશોકતરુર્બભૂવ; સાન્નિધ્યતોઽપિ યદિ વા તવ વીતરાગ!; નીરાગતાં વ્રજતિ કો ન સચેતનોઽપિ? ॥ ૨૪ ॥ ભો ભોઃ પ્ર-

માદમવધૂય ભજધ્વમેન,–માગત્ય નિર્વૃતિપુરી પ્રતિ સાર્થવાહમ્, એતન્નિવેદયતિ દેવ! જગત્ત્રયાય, મન્યે નદન્નભિનભ સુરદુન્દુભિસ્તે ॥ ૨૫ ॥ ઉદ્યોતિતેષુ ભવતા ભુવનેષુ નાથ!, તારાન્વિતો વિધુરયં વિહતાધિકાર, મુક્તાકલાપકલિતોચ્છ્વસિતાતપત્ર,–વ્યાજાત્ત્રિધા ધૃતતનુર્ધ્રુવમભ્યુપેત ॥ ૨૬ ॥ સ્વેન પ્રપૂરિતજગત્ત્રયપિણ્ડિતેન, કાન્તિપ્રતાપયશસામિવ સઞ્ચયેન, માણિક્યહેમરજતપ્રવિનિર્મિતેન, સાલત્રયેણ ભગવન્નભિતો વિભાસિ ॥ ૨૭ ॥ દિવ્યસ્રજો જિન! નમત્ત્રિદશાધિપાના,–મુત્સૃજ્ય રત્નરચિતાનપિ મૌલિબન્ધાન્, પાદૌ શ્રયન્તિ ભવતો યદિ વા પરત્ર, ત્વત્સઙ્ગમે સુમનસો ન રમન્ત એવ ॥ ૨૮ ॥ ત્વં નાથ! જન્મજલધેર્વિપરાઙ્મુખોઽપિ, યત્તારયસ્યસુમતો નિજપૃષ્ઠલ-

માન્; સુકૃતં હિ પાર્થિવનિપસ્ય સતસ્તવૈવ, ચિત્રં વિભો! યદસિ કર્મવિપાકશૂન્યઃ ॥ ૨૯ ॥ વિશ્વેશ્વરોઽપિ જનપાલક! દુર્ગતસ્ત્વં, કિં વાઽક્ષરપ્રકૃતિરપ્યલિપિસ્ત્વમીશ!; અજ્ઞાનવત્યપિ સદૈવ કથઞ્ચિદેવ, જ્ઞાનં ત્વયિ સ્ફુરતિ વિશ્વ-વિકાશહેતુઃ ॥ ૩૦ ॥ પ્રાગ્ભારસંભૃતનભાંસિ રજાંસિ રોષા,–દુત્થાપિતાનિ કમઠેન શઠેન યાનિ; છાયાઽપિ તૈસ્તવ ન નાથ! હતા હતાશો, ગ્રસ્ત-સ્ત્વમીભિરયમેવ પરં દુરાત્મા ॥ ૩૧ ॥ યદ્ગ-ગર્જદૂર્જિતઘનૌઘમદભ્રભીમં, ભ્રશ્યત્તડિન્મુ-સલમાંસલઘોરધારમ્; દૈત્યેન મુક્તમથ દુસ્તરવા-રિ દધ્રે, તેનૈવ તસ્ય જિન! દુસ્તરવારિકૃત્યમ્ ॥ ૩૨ ॥ ધ્વસ્તોર્ધ્વકેશવિકૃતાકૃતિમર્ત્યમુણ્ડ,–પ્રાલમ્બભૃદ્ભયદવક્ત્રવિનિર્યદગ્નિઃ; પ્રેતવ્રજઃ પ્ર-તિ ભવન્તમપીરિતો યઃ, સો સ્યાભવત્પ્રતિભવં

ભવદ્દુ ખહેતુ' ॥ ૩૩ ॥ ધન્યાસ્ત એવ ભુવના-ધિપ ! યે ત્રિસન્ધ્ય,–મારાધયન્તિ વિધિવદ્વિધુ-તાન્યકૃત્યા, ભક્ત્યોલ્લસત્પુલકપક્ષ્મલદેહદેશા, પાદદ્વય તવ વિભો ! ભુવિ જન્મભાજ ॥ ૩૪ ॥ અસ્મિન્નપારભવવારિનિધૌ મુનીશ !, મન્યે ન મે શ્રવણગોચરતા ગતોઽસિ, આકર્ણિતે તુ તવ ગોત્રપવિત્રમન્ત્રે, કિં વા વિપદ્વિષધરી સવિધ સમેતિ ? ॥ ૩૫ ॥ જન્માન્તરેઽપિ તવ પાદયુગ ન દેવ !, મન્યે મયા મહિતમીહિત-દાનદક્ષમ્, તેનેહ જન્મનિ મુનીશ ! પરાભ-વાના, જાતો નિકેતનમહ મથિતાશયાનામ્ ॥ ૩૬ ॥ નૂન ન મોહતિમિરાવૃતલોચનેન, પૂર્વં વિભો ! સકૃદપિ પ્રવિલોકિતોઽસિ, મર્માવિધો વિધુરયન્તિ હિ મામનર્થા, પ્રોદ્યત્પ્રબન્ધગતય કથમન્યથૈતે ? ॥ ૩૭ ॥ આકર્ણિતોઽપિ મહિ

તોઽપિ નિરીક્ષિતોઽપિ, નૂનં ન ચેતસિ મયા વિધૃતોઽસિ ભક્ત્યા; જાતોઽસ્મિ તેન જનબાન્ધવ! દુઃખપાત્રં, યસ્માત્ ક્રિયાઃ પ્રતિફલન્તિ ન ભાવશૂન્યાઃ ॥ ૩૮ ॥ ત્વં નાથ! દુઃખિજનવત્સલ! હે શરણ્ય!, કારુણ્યપુણ્યવસતે! વશિનાં વરેણ્ય!; ભક્ત્યા નતે મયિ મહેશ! દયાં વિધાય, દુઃખાંકુરોદ્દલનતત્પરતાં વિધેહિ ॥ ૩૯ ॥ નિઃસઙ્ખ્યસારશરણં શરણં શરણ્ય,-માસાદ્ય સાદિતરિપુ પ્રથિતાવદાતમ્; ત્વત્પાદપઙ્કજમપિ પ્રણિધાનવન્ધ્યો, વધ્યોઽસ્મિ ચેદ્ભુવનપાવન! હા હતોઽસ્મિ ॥ ૪૦ ॥ દેવેન્દ્રવન્દ્ય! વિદિતાખિલવસ્તુસાર!, સંસારતારક! વિભો! ભુવનાધિનાથ!; ત્રાયસ્વ દેવ! કરુણાહ્રદ! માં પુનીહિ, સીદન્તમદ્યભયદવ્યસનાંબુરાશેઃ ॥ ૪૧ ॥ યદ્યસ્તિ નાથ! ભવદંઘ્રિસરોરુહાણાં,

ભક્તે ફલ કિમપિ સંતતિસંચિતાયા, તન્મે ત્વદેકશરણસ્ય શરણ્ય! ભૂયા, સ્વામી ત્વમેવ ભુવનેઽત્ર ભવાન્તરેઽપિ ॥ ૪૨ ॥ ઈત્થં સમાહિતધિયો વિધિવજ્જિનેન્દ્ર!, સાન્દ્રોલ્લસત્પુલકકઞ્ચુકિતાઙ્ગભાગા, ત્વદ્બિમ્બનિર્મલમુખામ્બુજબદ્ધલક્ષ્યા, યે સંસ્તવં તવ વિભો! રચયન્તિ ભવ્યા ॥ ૪૩ ॥ જનનયનકુમુદચન્દ્ર!, પ્રભાસ્વરા સ્વર્ગસંપદો ભુક્ત્વા, તે વિગલિત–મલનિચયા, અચિરાન્મોક્ષં પ્રપદ્યન્તે ॥ ૪૪ ॥ યુગ્મમ્ ॥

બૃહચ્છાન્તિ–સ્તોત્રમ્.

[નવમ સ્મરણ]

ભો ભો ભવ્યા શૃણુત વચનં પ્રસ્તુતં સર્વમેતદ્, યે યાત્રાયાં ત્રિભુવનગુરોરાર્હતા ભ

કિતભાજઃ; તેષાં શાન્તિર્ભવતુ ભવતામર્હદાદિપ્રભાવા,-દારોગ્યશ્રીધૃતિમતિકરી ક્લેશવિધ્વંસહેતુઃ ॥ ૧ ॥

ભો ભો ભવ્યલોકા ! ઇહ હિ ભરતૈરાવતવિદેહસંભવાનાં સમસ્તતીર્થકૃતાં જન્મન્યાસનપ્રકમ્પાનન્તરમવધિના વિજ્ઞાય, સૌધર્માધિપતિઃ સુઘોષાઘણ્ટાચાલનાનન્તરં સકલસુરાસુરેન્દ્રૈઃ સહ સમાગત્ય સવિનયમર્હદ્ભટ્ટારકં ગૃહીત્વા, ગત્વા કનકાદ્રિશૃંગે, વિહિતજન્માભિષેકઃ શાન્તિમુદ્ઘોષયતિ યથા, તતોઽહં કૃતાનુકારમિતિ કૃત્વા મહાજનો યેન ગતઃ સ પન્થા ઇતિ ભવ્યજનૈઃ સહ સમેત્ય, સ્નાત્રપીઠે સ્નાત્રં વિધાય, શાન્તિમુદ્ઘોષયામિ, તત્પૂજાયાત્રાસ્નાત્રાદિમહોત્સવાનન્તરમિતિ કૃત્વા કર્ણં દત્ત્વા નિશમ્યતાં નિશમ્યતાં સ્વાહા.

ૐ પુણ્યાહ પુણ્યાહ પ્રીયન્તા પ્રીયન્તાં ભગવ તોડર્હન્ત સર્વજ્ઞા સર્વદર્શિનસ્ત્રિલોક-નાથાસ્ત્રિલોકમહિતાસ્ત્રિલોકપૂજ્યાસ્ત્રિલોકેશ્વરાસ્ત્રિ-લોકોદ્યોતકરા

ૐ ઋષભ–અજિત–સ ભવ–અભિનન્દન–સુમતિ–પદ્મપ્રભ–સુપાર્શ્વ–ચન્દ્રપ્રભ–સુવિધિ–શીતલ–શ્રેયાસ–વાસુપૂજ્ય–વિમલ–અનન્ત–ધર્મ –શાન્તિ–કુન્થુ–અર–મલ્લિ–મુનિસુવ્રત–નમિ–નેમિ–પાર્શ્વ–વર્દ્ધમાનાન્તા જિના શાન્તા શાન્તિકરા ભવન્તુ સ્વાહા

ૐ મુનયો મુનિપ્રવરા રિપુવિજયદુર્ભિક્ષ-કાન્તારેષુ દુર્ગમાર્ગેષુ રક્ષન્તુ વો નિત્ય સ્વાહા

ૐ હ્રીઁ શ્રીઁ ધૃતિ–મતિ–કીર્તિ–કાન્તિ–બુદ્ધિ–લક્ષ્મી–મેધા–વિદ્યાસાધન–પ્રવેશ–નિવેશ-નેષુ સુગૃહીતનામાનો જયન્તુ તે જિનેન્દ્રા

ૐ રોહિણી-પ્રજ્ઞપ્તિ-વજ્રશૃંખલા-વજ્રાંકુશી-અપ્રતિચક્રા-પુરુષદત્તા-કાલી-મહાકાલી-ગૌરી-ગાન્ધારી-સર્વાસ્ત્રા મહાજ્વાલા-માનવી-વૈરોટ્યા-અચ્છુપ્તા-માનસી-મહામાનસી ષોડશ વિદ્યાદેવ્યો રક્ષન્તુ વો નિત્યં સ્વાહા.

ૐ આચાર્યોપાધ્યાયપ્રભૃતિ-ચાતુર્વર્ણ્યસ્ય શ્રીશ્રમણસંઘસ્ય શાન્તિર્ભવતુ તુષ્ટિર્ભવતુ પુષ્ટિર્ભવતુ.

ૐ ગ્રહાશ્ચન્દ્ર-સૂર્યાઙ્ગારક-બુધ-બૃહસ્પતિ-શુક્ર-શનૈશ્ચર-રાહુ-કેતુસહિતાઃ સલોકપાલાઃ સોમ-યમ-વરુણ-કુબેર-વાસવાદિત્ય-સ્કન્દ-વિનાયકોપેતા યે ચાન્યેઽપિ ગ્રામ-નગર-ક્ષેત્રદેવતાદયસ્તે સર્વે પ્રીયન્તાં, પ્રીયન્તાં, અક્ષીણકોશ-કોષ્ઠાગારા નરપતયશ્ચ ભવન્તુ સ્વાહા.

ૐ પુત્ર-મિત્ર-ભ્રાતૃ-કલત્ર-સુહૃત્-સ્વજન-

સ બન્ધિ–બન્ધુવર્ગસહિતા નિત્ય ચામોદપ્રમોદકા રિણ્, અસ્મિંશ્ચ ભૂમણ્ડલાયતન–નિવાસિ–સાધુ–સાધ્વી–શ્રાવક–શ્રાવિકાણા રોગોપસર્ગ–વ્યાધિ દુ - ખ–દુર્ભિક્ષ–દૌર્મનસ્યોપશમનાય શાન્તિર્ભવતુ

ૐ તુષ્ટિ–પુષ્ટિ–ઋદ્ધિ–વૃદ્ધિ–માઙ્ગલ્યોત્સવા સદા પ્રાદુર્ભૂતાનિ પાપાનિ શામ્યન્તુ દુરિતાનિ, શત્રવ પરાઙ્મુખા ભવન્તુ સ્વાહા

શ્રીમતે શાન્તિનાથાય, નમ શાન્તિવિધાયિને, ત્રૈલોક્યસ્યામરાધીશ,–મુકુટાભ્યર્ચિતાઙ્ઘ્રયે ॥ ૧ ॥ શાન્તિ શાન્તિકર શ્રીમાન્, શાન્તિ દિશતુ મે ગુરુ, શાન્તિરેવ સદા તેષા, યેષા શાન્તિર્ગૃહે ગૃહે ॥ ૨ ॥ ઉન્મૃષ્ટ–રિષ્ટ–દુષ્ટ,–ગ્રહગતિ–દુ સ્વ પ્ન–દુર્નિમિત્તાદિ, સ પાદિતહિતસ પ,–ન્નામગ્રહણ્ જયતિ શાન્તે ॥ ૩ ॥ શ્રીસઙ્ઘજગજ્જ-નપદ,–રાજાધિપરાજસન્નિવેશાનામ, ગોષ્ઠિકપુર

મુખ્યાનાં, વ્યાહરણૈર્વ્યાહરેચ્છાન્તમ્ ॥ ૪ ॥

શ્રીશ્રમણસંઘસ્ય શાન્તિર્ભવતુ. શ્રીજન-પદાનાં શાન્તિર્ભવતુ. શ્રીરાજાધિપાનાં શાન્તિ-ર્ભવતુ. શ્રીરાજસન્નિવેશાનાં શાન્તિર્ભવતુ. શ્રી-ગોષ્ઠિકાનાં શાન્તિર્ભવતુ, શ્રીપૌરમુખ્યાનાં શા-ન્તિર્ભવતુ. શ્રીપૌરજનસ્ય શાન્તિર્ભવતુ. શ્રી-બ્રહ્મલોકસ્ય શાન્તિર્ભવતુ. ૐ સ્વાહા, ૐ સ્વાહા, ૐ શ્રી પાર્શ્વનાથાય સ્વાહા.

એષા શાન્તિઃ પ્રતિષ્ઠા—યાત્રા—સ્નાત્રાદ્યવ-સાનેષુ, શાન્તિકલશં ગૃહીત્વા કુંકુમ—ચન્દન—કર્પૂરાગુરુ—ધૂપવાસ—કુસુમાઞ્જલિસમેતઃ સ્નાત્ર—ચતુષ્કિકાયાં શ્રીસંઘસમેતઃ શુચિશુચિવપુઃ પુષ્પ—વસ્ત્ર—ચન્દનાભરણાલઙ્કૃતઃ પુષ્પમાલાં કણ્ઠે કૃત્વા, શાન્તિમુદ્‍ઘોષયિત્વા શાન્તિપાનીયં મ-સ્તકે દાતવ્યમિતિ.

નૃત્યન્તિ નૃત્ય મણિપુષ્પવર્ષં, સૃજન્તિ ગાયન્તિ ચ મઙ્ગલાનિ, સ્તોત્રાણિ ગોત્રાણિ પઠન્તિ મન્ત્રાન્, કલ્યાણભાજો હિ જિનાભિષેકે ॥ ૧ ॥ શિવમસ્તુ સર્વજગત, પરહિતનિરતા ભવન્તુ ભૂતગણા, દોષા પ્રયાન્તુ નાશ, સર્વત્ર સુખી ભવતુ* લોક ॥ ૨ ॥ અહ તિત્થયર-માયા, સિવાદેવી તુમ્હ નયર–નિવાસિની, અમ્હ સિવ તુમ્હ સિવ, અસિવોવસમ સિવ ભવતુ સ્વાહા ॥ ૩ ॥ ઉપસર્ગા ક્ષય યાન્તિ, છિદ્યન્તે વિઘ્નવલ્લય, મન પ્રસન્નતામેતિ, પૂજ્યમાને જિનેશ્વરે ॥ ૪ ॥ સર્વમઙ્ગલમાઙ્ગલ્ય, સર્વ-કલ્યાણકારણમ્ પ્રધાન સર્વધર્માણા, જૈન જયતિ શાસનમ્ ॥ ૫ ॥

---

* 'ભવન્તુ લોકા ' ઈતિ પાઠાન્તરમ્

सर्वलब्धिनिधानाय श्रीगौतमस्वामिने नमः।

શ્રી ગૌતમસ્વામીનો રાસ.

: ભાષા :

વીર જિણેસર ચરણકમળ, કમલાકયવાસો; પણમવિ પભણિશું સામિ સાલ, ગોયમગુરૂ રાસો; મણ તણુ વયણ એકંત કરવી, નિસુણો ભો ભવિયા!; જિમ નિવસે તુમ્હ દેહ ગેહ, ગુણગણ ગહગહીયા ॥ ૧ ॥ જંબૂદ્દીવ સિરિ ભરહખિત્ત, ખોણીતલ મંડણ; મગધ દેસ સેણિય–નરેસ, રિઉ દલ બલ ખંડણ; ધણવર ગુબ્બર ગામ નામ, જિહાં ગુણગણ સજ્જા; વિપ્પ વસે વસુભૂઈ તત્થ, જસુ પુહવી ભજ્જા ॥ ૨ ॥ તાણ પુત્ત સિરિ ઇંદભૂઈ, ભૂવલય પસિદ્ધો; ચઉદહ વિજ્જા વિવિહ રૂવ, નારી રસ વિદ્ધો

(લુદ્ધી), વિનય વિવેક વિચાર સાર, ગુણ ગણુહ મનોહર, સાત હાથ સુપ્રમાણુ દેહ, રૂપે રંભા વર ॥ ૩ ॥ નયણ વયણુ કર ચરણ, જિણવિ પંકજ જળે પાડિય, તેજે તારા ચંદ સૂર, આકાશ ભમાડિય, રૂવે મયણુ અનંગ કરવિ, મેલ્હિઓ નિરધાડિય, ધીરમે મેરૂ ગભીર સિંધુ, ચંગમચયચાડિય ॥ ૪ ॥ પેખવિ નિરૂવમ રૂવ જાસ, જાણુ જંપે કિંચિય, એકાકી કલિ ભીત ઈત્થ, ગુણ મેહલ્યા સચિય, અહવા નિચ્ચે પુવ્વ જમ્મ, જિણવર ઈણુ અંચિય, રંભા પઉમા ગૌરી ગંગ, રતિ હા! વિધિ વંચિય ॥ ૫ ॥ નહિ બુધ નહિ ગુરૂ કવિ ન કોઈ, જસુ આગળ રહિઓ, પંચસયા ગુણુપાત્ર છાત્ર, હીંડે પરવરિઓ, કરે નિરંતર યજ્ઞ કર્મ, મિથ્યામતિ મોહિય, ઈણુ છલ હોસે ચરમ નાણુ, દસણુહ વિસોહિય ॥ ૬ ॥

વસ્તુ – છંદ

જંબૂદીવહ જંબૂદીવહ, ભરહ વાસંમિ, ખોણી તલમંડણ મગધ દેસ, સેણિય નરેસર, વર ગુબ્બર ગામ તિહાં, વિપ્પ વસે વસુભૂઈ સુંદર, તસુ ભજ્જ

પુહવી સયલ, ગુણગણ રૂવ નિહાણુ; તાણ પુત્ત વિજ્જાનિલઓ, **ગોયમ** અતિહિ સુજાણુ ॥ ૭ ॥

: ભાષા :

ચરમ જિણેસર કેવલનાણી, ચઉવ્વિહ સંઘ પઇટ્ઠા જાણી; **પાવાપુરી** સામી સંપત્તો, ચઉવ્વિહ દેવ નિકાયે જુત્તો ॥ ૮ ॥ દેવે **સમવસરણુ** તિહાં કીજે, જિણ દીઠે મિથ્યામતિ ખીજે; ત્રિભુવન–ગુરૂ સિંહાસણ બઇટ્ઠા, તતખિણુ મોહ દિગંતે પઇટ્ઠા ॥ ૯ ॥ ક્રોધ માન માયા મદ પૂરા, જાયે નાઠા જિમ દિન ચૌરા; દેવ દુંદુભિ આકાશે વાજે, ધર્મ નરેસર આવ્યા ગાજે ॥ ૧૦ ॥ કુસુમવૃષ્ટિ વિરચે તિહાં દેવા, ચોસઠ ઇંદ્ર જસુ માગે સેવા; ચામર છત્ર શિરોવરિ સોહે, રૂપેહિ જિણવર જગ સહુ મોહે ॥ ૧૧ ॥ ઉવસમ રસભર ભરી વરસંતા, જોજન વાણી વખાણ કરંતા; જાણુવિ **વદ્ધમાણ**–જિણપાયા, સુર નર કિન્નર આવે રાયા ॥ ૧૨ ॥ કાંતિ સમૂહે ઝલઝલકંતા, ગયણ વિમાણે રણરણકંતા; પેખવિ ઇંદિભૂઈ મન ચિંતે, સુર આવે અમ્હ **યજ્ઞ** હોવતે ॥ ૧૩ ॥

તીગતર૩ક જિમ તે વહતા, સમવસરણ પુહતા ગહ-ગહતા, તો અભિમાને ગોયમ જંપે, ઈણિ અવસરે કોપે તણુ કંપે ॥ ૧૪ ॥ મૂઢ લોક અજાણીઉ બોલે, સુર જાણુતા ઈમ કાંઈ ડોલે, મૂ આગળ કો જાણુ ભણીજે, મેરૂ અવર કિમ ઉપમા દીજે ॥ ૧૫ ॥

વસ્તુ – છંદ •

વીર-જિણુવર વીર-જિણુવર નાણુ સંપન્ન, પાવા-પુરી સુર મહિય પત્ત નાહ સંસાર તારણ, તિહિં દેવેહિં નિમ્મવિય સમનસરણ બહુ સુખ-કા રણ, જિણવર જગ ઉજ્જોય કરે, તેજે કરી દિનકાર સિંહાસણે સામિય ઠવ્યો, હુઓ સુજય જયકાર ॥ ૧૬ ॥

ભાષા

તવ ચઢિઓ ઘણ-માણ ગજે, ઇંદભૂઈ ભૂદેવ તો, હુંકારો કરી સંચરિઓ કવણુ સુ જિણવર દેવ તો જોજનભૂમિ સમોસરણ, પેખવી પ્રથમારંભ તો, દહ દિસિ દેખે વિબુધ વધૂ, આવતી સુરરંભ તો ॥ ૧૭ ॥ મણિમય તોરણ દંડ ધજ, કોશીસે નવઘાટ તો, વેર

વિવર્જિત જંતુ ગણુ, પ્રાતિહારજ આઠ તો; સુર નર કિન્નર અસુરવર, ઇંદ્ર ઇંદ્રાણી રાય તો; ચિત્તે ચમક્કિય ચિંતવે એ, સેવંતા પ્રભુ પાય તો ॥ ૧૮ ॥ સહસ-કિરણુ સમ વીરજિણુ, પેખવી રૂપ વિશાળ તો; એહ અસંભવ સંભવે એ, સાચો એ ઇંદ્રિજાળ તો; તો બોલાવે ત્રિજગગુરૂ, ઇંદભૂઈ નામેણુ તો; શ્રીમુખ સંશય સામી સવે, ફેડે વેદ પએણુ તો ॥ ૧૯ ॥ માન મેલ્હી મદ ઠેલી કરી, ભગતે નામે સીસ તો; પંચસયાશું વ્રત લીયો એ, ગોયમ પહિલો સીસ તો; બંધવ સંજમ સુણુવિ કરી, અગનિભૂઈ આવેઈ તો; નામ લેઈ આભાસ કરે, તે પણુ પ્રતિબોધેઈ તો ॥ ૨૦ ॥ ઈણિ અનુક્રમે ગણુહર રયણુ, થાપ્યા વીર અગીઆર તો; તવ ઉપદેશે ભુવનગુરૂ, સંજમશું વ્રત બાર તો; બિહું ઉપવાસે પારણું એ, આપણુપે વિહરંત તો, ગોયમ સંજમ જગ સયલ, જય જયકાર કરંત તો ॥ ૨૧ ॥

: વસ્તુ – છંદ :

ઇંદભૂઈ ઇંદભૂઈ, ચઢિય બહુમાન; હુંકારો કરી

સચરિઓ, સમવસરણ પુહતો તુરત, ઈહ સસા સામિ સવે, ચરમનાહ ફેડે ફુરત, બોધિબીજ સજાય મને, ગોયમ ભવહ વિરત્ત, દિકૂખ લેઈ ગ્રિકૂખા સહિય, ગણહર પય સંપત્ત ॥ ૨૨ ॥

ભાષા

આજ હુઓ સુવિહાણુ, આજ પચેલિમાં પુણ્ય ભરો, દીઠા ગોયમસામી, જો નિય-નયણે અમિય ભરો, સિરિ ગોયમ ગણહાર, પચ સયા મુનિ પરિવરિય, ભૂમિય કરીય વિહાર ભવિયણ જન પડિબોહ કરે, સમવસરણ મઝાર, જે જે સસા ઉપજે એ, તે તે પર ઉપગાર, કારણ પૂછે મુનિપવરો ॥ ૨૩ ॥
જિહાં જિહાં દીજે દિકૂખ, તિહાં તિહાં કેવલ ઉપજે એ, આપ કન્હે અણહુન્ત, ગોયમ દીજે દાન ઈમ, ગુરુ ઉપર ગુરુભત્તિ, સામિય ગોયમ ઉપનીય, ઈણ છલ કેવલનાણુ, રાગજ રાખે રગ ભરે ॥ ૨૪ ॥
જે અષ્ટાપદ શૈલ, વંદે ચઢી ચઉવીસ જિણુ, આતમ લબ્ધિવસેણુ, ચરમસરીરી સોઈ મુનિ, ઈઅ દેસણુ

નિસુણેઈ, ગોયમ ગણહર સંચલિઓ; તાપસ પન્નરસ-
એણ, તો મુનિ દીઠો આવતો એ ॥ ૨૫ ॥ તવ-
સોસિય નિય અંગ, અમ્હ શક્તિ નવિ ઉપજે એ;
કિમ ચઢશે દૃઢ-કાય, ગજ જિમ દિસે ગાજતો એ;
ગિરૂઆ એણે અભિમાન; તાપસ જો મન ચિંતવે
એ; તો મુનિ ચઢિયો વેગ, આલંબવિ દિનકર કિરણ
॥ ૨૬ ॥ કંચણ મણિ નિપ્પન્ન, દંડ કલસ ધજવડ
સહિય; પેખવિ પરમાણંદ, જિણહર ભરહેસર મહિય;
નિય નિય કાય પ્રમાણ, ચઉદિસિ સંઠિઅ જિણહ
બિંબ; પણમવિ મન ઉલ્લાસ, ગોયમ ગણહર તિહાં
વસિય ॥ ૨૭ ॥ વયરસામીનો જીવ, તિર્યગ્જૃંભક
દેવ તિહાં; પ્રતિબોધે પુંડરીક, કંડરીક અધ્યયન ભણી;
વળતા ગોયમસામી, સવિ તાપસ પ્રતિબોધ કરે; લેઈ
આપણે સાથ, ચાલે જેમ જૂથાધિપતિ ॥ ૨૮ ॥ ખીર
ખાંડ ઘૃત આણી, અમિઅ વૂઠ અંગુઠ ઠવે; ગોયમ
એકણ પાત્ર, કરાવે પારણું સવે; પંચસયા શુભ ભાવ,
ઉજ્જવલ ભરીયો ખીર મીસે; સાચા ગુરૂ સંજોગ, કવલ તે

કેવલરૂપ હુઆ ॥ ૨૯ ॥ પચસયા જિણનાહ, સમ વસરણુ પ્રાકાર ત્રય, પેખવિ કેવલનાણુ, ઉપન્નૂ ઉજ્જોય કરે, જાણે જિણુવિ પીયૂષ, ગાજતી ઘણુ મેવ જિમ, જિણ–વાણી નિસુણેઈ, નાણી હુઆ પચસયા ॥ ૩૦ ॥

વસ્તુ – ૭૬

ઇણે અનુક્રમે ઇણે અનુક્રમે, નાણસંપન્ન, પન્નરહ સય પરિવરિય, હરિય દુરિય જિણનાહ વંદઈ, જાણુવિ જગગુરૂ વયણુ, તિહ નાણ અપ્પાણુ નિંદઈ ચરમ જિણેસર ઇમ ભણઈ, ગોયમ ! મ કરીસ ખેઉ, છેહી જઈ આપણુ સહી, હોસું તુલ્લા બેઉ ॥ ૩૧ ॥

ભાષા

સામિઓ એ વીર–જિણંદ, પૂનિમ ચંદ જિમ ઉલ્લસિઅ, વિહરિઓ એ ભરહવાસમ્મિ, વરિસ બહુત્તેર સંવસિઅ, ઠવતો એ કણય પઉમેસુ, પાય–કમલ સંઘહિ સહિઅ, આવિઓ એ નયણાણંદ, નયર પાવાપુરી સુર મહિય ॥ ૩૨ ॥ પેખિઓ એ ગોયમ–સામી, દેવશર્મા પ્રતિબોધ કરે, આપણો એ ત્રિશલાદેવી,–નંદન પહોતો

પરમપએ; વળતાં એ દેવ આકાસ, પેખવિ જાણીય જિણુ સમે એ; તો મુનિ એ મન વિખવાદ, નાદ ભેદ જિમ ઉપનો એ ॥ ૩૩ ॥ કુણુ સમો એ સામિય દેખી, આપ કન્હેં હું ટાળિઓ એ; જાણુ તો એ તિહુઅણનાહ, લોક વિવહાર ન પાલિઓ એ; અતિ ભલું એ કીધલું સામિ, જાણીયું કેવલ માગશે એ; ચિંતવિયું એ બાળક જેમ, અહવા કેડે લાગશે એ ॥ ૩૪ ॥ હું કિમ એ વીરજિણુંદ, ભગતે ભોળો ભોળવ્યો એ; આપણો એ અવિહડ નેહ, નાહ ! ન સંપે સાચવ્યો એ; સાચો એ તુંહી વીતરાગ, નેહ ન જેણે લાલિઓ એ; ઈણુ સમે એ ગોયમ ચિત્ત, રાગ વૈરાગે વાળીઓ એ ॥ ૩૫ ॥ આવતું એ જે ઉલટ્ટ, રહેતું રાગે સાહિત્તું એ; કેવળું એ નાણુ ઉપ્પન્ન, ગોયમ સહેજે ઉમાહિઓ એ; તિહુઅણુ એ જય-જયકાર, કેવળ મહિમા સુર કરે એ; ગણુહર એ કરય વખાણુ, ભવિયણુ ભવ ઈમ નિસ્તરે એ ॥ ૩૬ ॥

: વસ્તુ – છંદ :

પઢમ ગણુહર પઢમ ગણુહર, વરિસ પચાસ;

ગિહિવાસે સંવસિય, તીસ વરિસ સંજમ વિભૂસિય,
સિરિ કેવલનાણ પુણ, બાર વરિસ તિહુયણ નમંસિય,
રાયગિહિ-નયરીહિં ઠવિઅ, બાણવઈ વરિસાઉ, સામી
ગોયમ ગુણનિલો, હોસે શિવપુર ઠાઉ ॥ ૩૭ ॥

ભાષા

જિમ સહકારે કોયલ ટહુકે, જિમ કુસુમ-વને પરિમલ મહકે, જિમ ચંદન સુગંધ-નિધિ, જિમ ગંગાજળ લહેરે લહકે, જિમ કણયાચલ તેજે ઝલકે, તિમ ગોયમ સૌભાગ્ય નિધિ ॥ ૩૮ ॥ જિમ માનસરોવર નિવસે હંસા, જિમ સુરવર સિરિ કણયવતંસા, જિમ મહુયર રાજીવ વને, જિમ રયણાયર રયણે વિલસે, જિમ અંબર તારાગણ વિકસે, તિમ ગોયમ ગુણ કેલિ વને ॥ ૩૯ ॥ પૂનમ નિસિ જિમ સસહર સોહે, સુરતરુ મહિમા જિમ જગ મોહે, પૂરવ દિસિ જિમ સહસકરો, પંચાનન જિમ ગિરિવર રાજે, નરવઈ ઘર જિમ મયગલ ગાજે, તિમ જિનશાસન મુનિપવરો ॥ ૪૦ ॥ જિમ સુરતરુવર સોહે સાખા, જિમ ઉત્તમ મુખ મધુરી ભાષા,

જિમ વન કેતકી મહમહે એ; જિમ ભૂમિપતિ ભુયબલ ચમકે, જિમ જિનમંદિર ઘંટા રણકે, તિમ **ગોયમ** લબ્ધે ગહ ગહે એ ॥ ૪૧ ॥ ચિંતામણિ કર ચઢિઓ આજ, સુરતરૂ સારે વંછિત કાજ, કામકુંભ સવિ વશ હુઆ એ; કામગવી પૂરે મન કામિય, અષ્ટ–મહાસિદ્ધિ આવે ધામિય, સામિય **ગોયમ** અણુસરો એ ॥ ૪૨ ॥ પણુવક્ખર પહેલો પભણીજે, માયાબીજ શ્રવણ નિસુણીજે, શ્રીમતી શોભા સંભવે એ; દેવહ ધૂરિ અરિહંત નમીજે, વિનય–પહુ ઉવજ્ઝાય થુણીજે, ઇણ મંત્રે **ગોયમ** નમો એ ॥ ૪૩ ॥ પુર પુર વસતાં કાંઈ કરીજે?, દેશ દેશાંતરે કાંઈ ભમીજે?, કવણ કાજ આયાસ કરો?; પ્રહ ઉઠી **ગોયમ** સમરીજે, કાજ સમગ્ગહ તતખણ સીઝે, નવનિધિ વિલસે તાસ ઘરે ॥ ૪૪ ॥ ચઉદહ સય બારોત્તર વરસે, **ગોયમ** ગણહર કેવલ દિવસે, કિઉ કવિત્ત ઉપગાર પરો; આદેહિ મંગલ એહ પભણીજે, પરવ મહોચ્છવ પહિલો લીજે, ઋદ્ધિ વૃદ્ધિ કલ્યાણ કરો ॥ ૪૫ ॥ ધન્ય માતા જિણે ઉદરે ધરિયા, ધન્ય પિતા

જિણુ ફુલ અનતગિયા, ધન્ય સદ્ગુરુ જિણે દિક્ખિયા એ,
વિનયવત વિદ્યાભડાર, જસ ગુણુ કોઈ ન લમ્ભે પાર,
વિદ્યાવત ગુરૂ વિનવે એ, ગૌતમસ્વામીના રાસ
ભણીજે, ચઉવિહ સઘ રલિયાયત કીજે, ઋદ્ધિ વૃદ્ધિ
કલ્યાણુ કરો ॥ ૪૬ ॥

ઈતિ શ્રી ગૌતમસ્વામીનો રાસ સપૂર્ણ

શ્રી ગૌતમાષ્ટક—૭૬

વીર જિનેશ્વર કેરા શિષ્ય, ગૌતમ નામ જપો નિશદિશ,
જો કીજે ગૌતમનુ ધ્યાન, તો ઘર વિલસે નવે નિધાન ૧

ગૌતમ નામે ગયવર ચડે, મન વાછિત હેલા સપજે,
ગૌતમ નામે નાવે રોગ, ગૌતમ નામે સર્વ સજોગ ૨

જે વૈરી વિરૂઆ વકડા, તસ નામે નાવે ઢૂકડા,
ભૂત પ્રેત નવિ મડે પ્રાણુ, તે ગૌતમના કરૂ વખાણુ ૩

ગાતમ નામે નિર્મળ કાય, ગૌતમ નામે વાધે આય,
ગૌતમ જિન શાસન શણગાર, ગૌતમ નામે જય જયકાર ૪

શાલ દાલ સુરહાં ઘૃત ગોળ, મનવંછિત કાપડ તંબોળ;
ઘરે સુઘરણી નિર્મલ ચિત્ત, ગૌતમ નામે પુત્ર વિનીત. ૫
ગૌતમ ઉદયો અવિચલ ભાણ, ગૌતમ નામ જપો જગ જાણ;
મ્હોટાં મંદિર મેરૂ સમાન, ગૌતમ નામે સફળ વિહાણ. ૬
ઘર મયગલ ઘોડાની જોડ, વારૂ પહોંચે વંછિત કોડ;
મહીયલ માને મહોટા રાય, જો તૂઠે ગૌતમના પાય. ૭
ગૌતમ પ્રણમ્યાં પાતિક ટળે, ઉત્તમ નરની સંગત મળે;
ગૌતમ નામે નિર્મળ જ્ઞાન, ગૌતમ નામે વાધે વાન. ૮
પુણ્યવંત અવધારો સહુ, ગુરૂ ગૌતમના ગુણ છે બહુ;
કહે **લાવણ્યસમય** કર જોડ, ગૌતમ તૂઠે સંપત્તિ કોડ. ૯

શ્રી નવકાર મહામંત્ર-માહાત્મ્ય દર્શક-છંદ.

સમરો મંત્ર ભલો નવકાર, એ છે ચૌદ પૂરવનો સાર;
એના મહિમાનો નહીં પાર, એનો અર્થ અનંત અપાર. ૧
સુખમાં સમરો દુઃખમાં સમરો, સમરો દિવસ ને રાત;
જીવતાં સમરો મરતાં સમરો, સમરો સહુ સંઘાત. ૨

યોગી સમરે ભોગી સમરે, સમરે રાજા રંક,
દેવો સુમરે દાનવ સમરે, સમરે સુખ નિઃશંક ૩

અડસઠ અક્ષર એના જાણો, અડસઠ તીરથ સાર,
આઠ સપદાથી પરમાણો, અડ સિદ્ધિ દાતાર ૪

નવ પદ એના નવ નિધિ આપે, ભવોભવના દુઃખ કાપે,
વીર વચન જો હૃદયે વ્યાપે, પરમાતમ પદ આપે ૫

વીણાકોકિલકમ્બુચન્દનિકર વાણી યદીયાઽમલા,
માધુર્યેણ જિગાય ચાઽમ્બુદભવ ઘોષેણ ગજાગવમ્,
ગન્ધર્વાસ્ત્રિદિવૌકસશ્ચ સરસ ગાનેન યદ્રાજિતુ,
ભક્ત્યા ત પ્રણમામિ વીરવિજયોપાધ્યાયમહોભિદે ૧

વિદ્વદ્વૃન્દમુખાગ્ર્ય મુદ્ગણમહદ્વૈદુષ્યસદ્વાધર
શ્રેયાનુષ્ઠિતદુષ્કરતપસા વૃદ્ધિપ્રધામા ગુરુ,
મોહધ્વાન્તનિવારણેજનતાકારુણ્યકલ્પદ્રુમ,
કલ્યાણં તનુતા કૃતાર્થવિજય શ્રીદાનસૂરીશ્વર ૧

सुरासुराधीशसेवित-
भगवच्छ्रीमद्वर्द्धमानस्वामिपादपद्मेभ्यो नमः

સિદ્ધાચલ-મહાતીર્થાદિ સ્તવનાવલી.

આઠમો—વિભાગ.

શ્રી ઋષભદેવ - શ્રી મહાવીરસ્વામી અને સામાન્ય જિન-સ્તવન પદો.

વૈરાગ્ય-જનક અને ઉપદેશક પદો, જિન-વધાઈ તથા મેળાવડા પ્રસંગે ગાવાનું મંગળાચરણ.



[૧]

[રાગ—ગોડ સારંગ તથા પૂર્વી.]

પસારી કર લીજે, ઈક્ષુરસ ભગવાન !; ચઢત શિખા શ્રેયાંસકુમરકી, માનું નિરમલ ધ્યાન ॥ પસારી૦ ॥ ૧ ॥ ટેક ॥ મેં પુરૂષોત્તમ-કરકી ગંગા, તું તો ચરન

નિદાન, ઈતિ ગજા અનગ તરજનક, માનુ ચલી અસમાન ॥ પસારી૦ ॥ ૨ ॥ કીધો વિધુ-બિંબ સુધારસુ ચાહત, આપ મહુરતા માન, કીધો દાયકકી પુણ્ય પર પર, દાખત સગ્ગ વિમાન ॥ પસારી૦ ॥ ૩ ॥ પ્રભુ-કરે ઇક્ષુરસ દેખી કહત હૈ, ઐસી ઉપમા જાન, જગ કહે ચિત્ત વિત્ત પાત્ર મિલાવે, યુ ભવિક જિન-ભાન ॥ પસારી૦ ॥ ૪ ॥

---

[૧]

દેખો માઈ! આજ ઋષભ ઘર આવે, રૂપ મનોહર જગાનંદન, અબહી મન ભાવે-દેખો માઈ!૦ ॥ ૧ ॥ કઈ મુક્તાફળ થાળ વિશાળા, કઈ મણિ માણિક્ય ભાવે-દેખો૦ ॥ ૨ ॥ હય ગય રથ પાયક બહુ કન્યા, પ્રભુજીકું વેગે વધાવે-દેખો૦ ॥ ૩ ॥ શ્રી શ્રેયાનકુમાર દાનેશ્વર, ઈક્ષુ રસ વહોરાવે-દેખો૦ ॥ ૪ ॥ ઉત્તમ દાન દીએ અમૃતફલ, સાધુ કીર્તિ ગુણ ગાવે-દેખો૦ ॥ ૫ ॥

---

[૩]

[રાગ—ગોડી સારગ.]

(વિમલાચલ પર દાદાની અજબ જટા—એ દેશી.)

તુહારે શિર રાજત અજબ જટા, છારયે માનું ગયન ન છારત, સીસ સણગાર છટા ।। તુહારે૦ ।। ૧ ।। ક્યું ગંગા અમરી સસુર સેવત, યમુના ઉભય તટા; ગિરિવર શિખરે એહ અનોપમ, ઉન્નત મેઘ ઘટા ।। તુહારે૦ ।। ૨ ।। કૈસે બાલ લગે ભવી ભવજલ, તારત અતિ વિકટા; હરિ કહે જસ પ્રભુ ઋષભ રખો એ, હમહિ અતિ ઉલટા ।। તુહારે૦ ।। ૩ ।।

---

[૪]

[રાગ—આઈ વસંત બહાર.]

આદિજિનંદ દયાલ હો, મેરી લાગી લગનવા ।। એ ટેક ।। વિમલાચલ મંડન દુઃખ ખંડન, મંડન ધર્મ વિસાલ હો ।। મેરી૦ ।। ૧ ।। વિષધર મોર ચોર કામિજન, દરિસન કર નિહાલ હો ।। મેરી૦

॥ ૨ ॥ હું અનાથ તુ ત્રિભુવનનાથ, કર મેરી સંભાલ હો ॥ મેરો૦ ॥ ૩ ॥ આતમ આનન્દ કદકે દાતા, નાતા પરમ દયાલ હો ॥ મેરો૦ ॥ ૪ ॥

[૫]

[રાગ–આશાવરી]

મનુપ્યારા મનુપ્યારા, રિખવદેવ–મનુપ્યારા મનુપ્યારા ॥ એ આંકણી ॥ પ્રથમ તીર્થંકર પ્રથમ નરેસર, પ્રથમ યતિવ્રત ધારા–રિખવદેવ૦ ॥ ૧ ॥ નાભિરાયા મરુદેવીકો નંદન, જુગલાધર્મ નિવારા–રિખવદેવ૦ ॥ ૨ ॥ કેવલ લઈ પ્રભુ સુ તે પોહોતા, આવાગમન નિવારા–રિખવદેવ૦ ॥ ૩ ॥ આનંદઘન પ્રભુ! ઈતની વિનતિ, આ ભવ પાર ઉતારા–રિખવદેવ૦ ॥ ૪ ॥

[૬]

[રાગ–કલ્યાણ]

માઈ ! મેરો મન તેરો નંદ હરે ॥ એ

આંકણી ।। કંચનવરણ કમલ દલ લોચન, નિરખંત નેન ઠરે ।। **માઈ૦** ।। ૧ ।। પંચ વરણ મનહરન ધરન પર, ઠમ ઠમ પાઉં પરે; રતન જડિત કંચન ઘુઘરિયાં, રૂણ ઝુણકાર કરે ।। **માઈ૦** ।। ૨ ।। હલત લસત મુગતાફલ માલા, પીત વરન ઉપરે; માનુ ચુલ હીમવંત શિખરસેં, ગંગ પ્રવાહ ઝરે ।। **માઈ૦** ।। ૩ ।। ધન્ય ત્રિશલાદે ભાગ્ય તિહારો, તું ત્રિહુ-ભુવન શિરે; તિન ભુવનકા નાયક તેરે, આંગનમેં વિચરે ।। **માઈ૦** ।। ૪ ।।

---

[૭]

મહાવીર ચરનમેં જાય, મેરો મન લાગી રહ્યો મહાવીર; વીર ચરનમે જાય—**મેરો મન૦** ।। **એ આંકણી** ।। સિદ્ધારથ કુલ નંદન ઐસો, રાની ત્રિશલાદે માય ।। **મેરો૦** ।। ૧ ।। જનમત હી પ્રભુ મેરૂ કપાયો, સંશય દિયો હૈ મિટાય ।। **મેરો૦** ।। ૨ ।। ક્ષત્રિયકુંડ પ્રભુ જનમ લિયો હૈ, મુગતિ પાવાપુરી જાય

. મેરે૦ ॥ ૩ ॥ જિને ક્છુ ધ્યાયા તિને ફલ પાયા, ય દકીરત ગુન ગાય ॥ મેરે૦ ॥ ૪ ॥

[૮]

[આઈ વસંત બહાર-એ દેશી]

વીરજિનદ કૃપાલ હો, તુ મુજ મન ભાયા-એ ટેક ॥ તેરે જિન ટોન અવમ ઉદ્ધારણ, વારણુ મિથ્યા જાલ હો ॥ તુ મુજ૦ ॥ ૧ ॥ બચન સુધારસ તુમ જગ પ્રગટે, ગટે ભવિજલ લાન હો ॥ તુ મુજ૦ ॥ ૨ ॥ આતમ આનંદરસ ભર લીનો, અજર અમર અકાલ હો ॥ તુ મુજ૦ ॥ ૩ ॥

[૯]

બલીહારી જાઉં વારી, મહાવીર તોરી સમો-સરણકી બલીહારી ॥ એ આંકણી ॥ ત્રણ ગઢ ઉપર તખ્ત બિરાજે, બેઠી છે પર્ષદા ભારી-મહાવીર૦ ॥ ૧ ॥ વાણી જોજન સહુ કોઈ સાંભળે, તાર્યા

છે નર ને નારી—**મહાવીર૦ ॥ ૨ ॥ આનન્દઘન** પ્રભુ એણી પેરે બોલે, આવા ગમન દૂર નિવારી—**મહાવીર૦ ॥ ૩ ॥**

---

[૧૦]

સોહે સોરન ગાતી, સંગાતી સોહે સોરન ગાતી ॥ **એ આંકણી** ॥ સંગીત બંધ ગત થેઈ તતા થેઈ થેઈ, નાચે નાટક સાથી ॥ **સંગાતી૦** ॥ ૧ ॥ બજાવે મૃદંગ ભાવે ધા ધા કીટધા ધા ધા કીટધા, ધપ મપ ધુની જાતી ॥ **સંગાતી૦** ॥ ૨ ॥ તા ધી લાંગ ધુન કીટ કીટ ધન કીટ, ધિના કીટધા ધિના કીટધા ધિના કીટધા ધાતી ॥ **સંગાતી૦** ॥ ૩ ॥ જનમ સમયે જિન જાન આન સબ, શિખર શૈલ જાતી ॥ **સંગાતી૦** ॥ ૪ ॥ સુરાસુરેન્દ્ર સબ ચલે બાલ મિલ, ગાતી બજાતી આતી ॥ **સંગાતી૦** ॥ ૫ ॥

---

[૧૧]

(રાગ-કાનડો)

દરિસન પ્રાણજીવન મોહે દીજે ॥ દરિસન૦ ॥ એ આંકણી ॥ બિન દરિસન મોહે કલ ન પરત હ, [1]તરફ તરફ તનુ [2]છીજે ॥ દરિસન૦ ॥ ૧ ॥ કહા કહું કછુ કહત ન આવત, [3]બિન કહિયાં કિમ રીજે?, [4]સમજાયો સખિ! જાય મનાયો, આપ હી આપ પતીજે ॥ દરિસન૦ ॥ ૨ ॥ [5]દેવર દેરાની સાસુ જેઠાની, યું સબ હી મિલ ખીજે, આનંદઘન બિન પ્રાન ન રહે છિન, [6]કોટી જતન કર લીજે ॥ દરિસન૦ ॥ ૩ ॥

---

[૧૨]

(રાગ-ધનાશ્રી, અથવા ગુર્જરી)

જિન[1] તેરે ચરનકી સરન ગ્રહું-એ ટેક ॥

૧-તરફ તલફ ૨-દીજે ૩-બિન સેજ ક્યું છીજે ૪-સો હું ખાઈ સખી કાહુ મનાવો ૫-દેઉર ૬-કોટી જતન તો કીજે આ પ્રમાણે પાઠભેદ પણ દેખાય છે

હૃદય કમલમેં ધ્યાન ધરત હું, શિર તુજ આણુ વહું ॥ જિન !૦ ॥ ૧ ॥ તુજ સમ ખોળ્યો દેવ ખલ-કમેં, પેખ્યો નાહિ કબહું; તેરે ગુણનકી જપું જપમાલા, અહનિશિ પાપ દહું ॥ જિન !૦ ॥ ૨ ॥ મેરે મનકી તુમ સબ જાનો, ક્યા મુખ બહોત કહું ?; કહે જસવિજય કરો ત્યું સાહિબ !, જ્યું ભવ-દુઃખ ન લહું ॥ જિન !૦ ॥ ૩ ॥

---

[૧૩]

(રાગ-સૂરતિ ટોડી)

પ્રભુ ! તો સમ અવર ન કોઈ ખલકમેં ॥ એ ટેક ॥ હરિ હર બ્રહ્મા વિગૂતે સો તો, મદન જીત્યો તેં પલકમેં-પ્રભુ૦ ॥ ૧ ॥ જ્યું જલ જગમેં અગન બુઝાવત, વડવાનલ સો પીયે પલકમેં-પ્રભુ૦ ॥ ૨ ॥ અનંદઘન પ્રભુ વામા રે નંદન, તેરી હામ ન હોત હલકમેં-પ્રભુ૦ ॥ ૩ ॥

---

[१४]

(राग-मालकोश)

कृपा कर भक्ति करे प्रभु तेरी—कृपा कर० ॥ क्रोध लोभ मद मान विषय रस, छाडत गेर न मेरी—कृपा कर० ॥ १ ॥ कर्म नचावे तिम ही नाचत, माया-वश नट चेरी—कृपा कर० ॥ २ ॥ दृष्टिराग दृढ बन्धन बांध्यो निकसन न लही सेरी—कृपा कर० ॥ ३ ॥ करत प्रशंसा सब मिल अपनी, परनिंदा अधिकेरी—कृपा कर० ॥ ४ ॥ कहत मान जिन-भाव भगति बिन, शिव-गति होत न नेरी—कृपा कर० ॥ ५ ॥

---

[१५]

(राग-आशा, ताल-दीपचंदी)

निरंजन यार ! मोहे कैसे मिलेगे ?—निर जन० ॥ ए टेक ॥ दूर देखु मे दरीआ डुंगर, उंचे बादल नीचे जमीयु तले—निरंजन० ॥ १ ॥ धरतीमे

[1]ઢૂંઢૂં તિહાં ન પીછાનું, અગનિ [2]લહું તો મેરી દેહ જલે-નિરંજન૦ ॥ ૨ ॥ **આનંદઘન** કહે જસ સુનો બાતાં, યેહી મિલે તો મેરો ફેરો ટલે-નિરંજન૦ ॥ ૩ ॥

---

[૧૬]

(રાગ-રામગ્રી.)

ક્યારે મુને મિલશ્યે? માહરો [3]સંત! [4]સનેહી-ક્યારે૦ ॥ [5]સંત! સનેહી [6]સુરીજન [7]પાખે, રાખે ન ધીરજ [8]દેહી-**ક્યારે૦** ॥ ૧ ॥ જન જન આગલ [9]અંતરગતની, વાતલડી કહું [10]કેહી? **-ક્યારે૦** ॥ ૨ ॥ [11]**આનંદઘન** પ્રભુ વૈદ્ય વિયોગે, કિમ જીવે મધુ મેહી?-**ક્યારે૦** ॥ ૩ ॥

૧-ધહુતા ન પીછાનું. ૨-સહું. આ પ્રમાણે પાઠભેદ પણ છે. ૩-હે સંત પુરુષો. ૪-મારૂં શુદ્ધ સ્વરૂપ. ૫-હે સંતો. ૬-સગા, સ્વજન. ૭-વિરહે, વિના. ૮-પ્રાણી. ૯-મનની. ૧૦-કેટલી. ૧૧-આનંદરાશિ ભગવાન રૂપ (કુશળ) વૈદ્યના વિયોગે જેને મધુપ્રમેહ થયેલ હોય તે કેવી રીતે જીવી શકે?

[૧૭]

(રાગ-કાફી ઠુમરી)

નાવરીયા મેરા કૌન ઉતારે બેડા પાર? ॥ એ આંકણી ॥ યહ સંસાર સમુદ્ર જ બીગ, કિન-બિધ ઉતરના પાર—નાવરીયા૦ ॥ ૧ ॥ રાગ દ્વેષ મોહ નદિયાં બહુત હૈ, ભ્રમર કિન્ત ગતિ ચાર—નાવરીયા૦ ॥ ૨ ॥ ઋષભદાસકો દરિસન ચાહીએ, વિનતડી અવધાર—નાવરીયા૦ ॥ ૩ ॥

---

[૧૮]

(રાગ-દેવ ગંધાર)

દેખો માઈ અજબ રૂપ જિનજીકો—દેખો૦ ॥ એ ટેક ॥ ઉનકે આગે ઔર સબહીકો, રૂપ લાગે મોહે ફીકો—દેખો૦ ॥ ૧ ॥ લોચન કરુના અમૃત કચોલે, મુખ સોહે અતિ નીકો—દેખો૦ ॥ ૨ ॥ કવિ જસવિજય કહે યુ સાહિબ, નેમજી ત્રિભુવન ટીકો—દેખો૦ ॥ ૩ ॥

---

[૧૯]

એ અરજી મોરી સઈયાં, મોહે તાર લીજે બઈયાં—એ અરજી૦ ॥ એ ટેક ॥ ઈન કરમોં કે વસ હોય કે, મે ભટક્યો ચતુર ગતિ મઈયાં; ઈન કેઉ વાર લઈયાં—મોહે૦ ॥ ૧ ॥ મેં તારણ તરણ સુનો હૈ, મેં આયો ચરણ ગ્રહીયાં; દૂજો નાહી જાતું સઈયાં—મોહે૦ ॥ ૨ ॥ હિતકરકે દાસ નિહારો, કર–જોડ પડત મૈં પઈયાં; શિવ ક્યું ન દેત સઈયાં—મોહે૦ ॥ ૩ ॥

વૈરાગ્ય–જનક પદો.

[૨૦]

(રાગ–કેરબો.)

સમજ પરી મોહે સમજ પરી, જગ માયા સબ જૂઠી—મોહે સમજ પરી ॥ એ આંકણી ॥ કાલ કાલ તું ક્યા કરે મૂરખ, નાંહી ભરૂસા પલ એક ઘડી ॥ મોહે૦ ॥ ૧ ॥ ગાફિલ છિન ભર નાંહી રહો તુમ,

શિર પગ ધુમે તેરે કાલ અરી ॥ મોહે૦ ॥ ૨ ॥
ચિદાનંદ એ વાત હમારી પ્યારે!, જાણો મિત્ત!
મનમાહે ખરી ॥ મોહે૦ ॥ ૩ ॥

---

[૨૧]
(રાગ-ધન્યાશ્રી)

કૌન કિસીકો મિત્ત જગતમે, કૌન કિસીકો મિત્ત?, માત તાત ઓર ભ્રાત સ્વજનસે, કોઈ નહિ નિચિંત?—જગતમે૦ ॥ ૧ ॥ સબહિ અપને સ્વારથકે હૈ, પરમારથ નહિ પ્રીત, સ્વારથ વિણમે સગો ન હોસી, મિત્તા! મનમે ચિંત—જગતમે૦ ॥ ૨ ॥ ઊઠ ચલેગો આપ એકીલો, તુહી તુ સુવિદિત, કો નહિ તેરો તુ નહિ કિસકો, એહ અનાદિ રીત—જગતમે૦ ॥ ૩ ॥ તાતે એક ભગવાન ભજનકી રાખો મનમે ચિંત, જ્ઞાનસાર કહે યહ વનારસી, ગાયો આતમ ગીત—જગતમે૦ ॥ ૪ ॥

ઉપદેશક–પદ.

[૨૨]

(રાગ–ધન્યાશ્રી.)

ચેત તું ચતુર સુજાણ–ચેતન, ચેત તું ચતુર સુજાણ; ભૂલી ગયો તું ભાન–ચેતન, ચેત તું ચતુર સુજાણ ॥ **એ આંકણી** ॥ મદન કોદ્રવા અણશોધી ખાધા, ગયું દિસે તુજ નાણુ ॥ **ચેતન૦** ॥ ૧ ॥ વસ્તુ–ધર્મ અછતો ભાસે, એ તુજ ઋદ્ધિ હાણુ ॥ **ચેતન૦** ॥ તુજ માન્યતા મનુષ્ય જીંદગી, વિષયાસક્ત ગુલતાન ॥ **ચેતન૦** ॥ ૨ ॥ પ્રાયે જગના જીવો દિસે, બાલ ચેષ્ટાનું ભાન ॥ **ચેતન૦** ॥ સુસંતોથી ગોષ્ઠી કરવી, એ કેમ નહી તુજ સાન ? ॥ **ચેતન૦** ॥ ૩ ॥ અજ્ઞાની આલાપ સંલાપે, કર્મ બંધનની ખાણુ ॥ **ચેતન૦** ॥ મોહ મદિરા છાકે વિકલ્પો, શુધ બુધ લીધી તાણુ ॥ **ચેતન૦** ॥ ૪ ॥ ગણ્યા ગાંઠ્યા આયુષ્ય દિવસો, મિથ્યા પ્રવૃત્તિ કરે રહાણુ ॥ **ચેતન૦** ॥ શું સુખે તુજ નિદ્રા આવે, શું સુખે મોજ માણુ ॥ **ચેતન૦** ॥

૫ ॥ આમ છતા પણ તુજ પ્રવૃત્તિ, સુધરી નહી હે અજાણુ ! ॥ ચેતન૦ ॥ હા ! હા ! મૂરખતા તુજ કેવી, પરભવ સોચ ન આણુ ॥ ચેતન૦ ॥ ૬ ॥ ધન ત્રીયાદિક અતર્દષ્ટે, ઐશ્વર્ય સુખ પ્રમાણુ ॥ ચેતન૦ ॥ પૂન્યાઈ ખાઇ પૂર્ણ પસ્તાઈ, નસી કર જઇશિ અનાણુ ॥ ચેતન૦ ॥ ૭ ॥

[૨૩]

(રાગ—આસાવરી.)

ઐર ઐર નહી આવે, અવસર—ઐર ઐર નહી આવે ॥ યહ ટેક ॥ જ્યું જાણે ત્યું કર લે ભલાઈ, જનમ જનમ સુખ પાવે—અવસર૦ ॥ ૧ ॥ તન ધન જોબન સબહી જૂઠો, પ્રાણ પલકમે જાવે—અવ સર૦ ॥ ૨ ॥ તન છુટે ધન કૌન કામ કો ?, કાયકુ કૃપણ કહાવે—અવસર૦ ॥ ૩ ॥ જાકે દિલમે સાચ બસત હૈ, તાકુ જૂઠ ન ભાવે—અવસર૦ ॥ ૪ ॥ આનંદઘન પ્રભુ ચલત પથમે, સિમર સિમર ગુણ ગાવે—અવસર૦ ॥ ૫ ॥

જિન-વધાઈ

[૧]

(રાગ-સોહીની તાલ-ત્રિતાલ.)

દીનાનાથની બધાઈ બાજે છે, મારા પ્રભુની બધાઈ બાજે છે. શરણાઈ સુર નોબત બાજે, ઓર ધનનનન ગાજે છે-**મારા૦ ॥ ૧ ॥** ઈંદ્રાણી મિલ મંગલ ગાવે, મોતીયોના ચોક પૂરાવે છે-**મારા૦ ॥ ૨ ॥** સેવક પ્રભુજીશું અરજ કરત હે, ચરણોની સેવા પ્યારી લાગે છે-**મારા૦ ॥ ૩ ॥**

---

[૨]

(રાગ-માલવ, તાલ-લાવણી.)

આજ તો વધાઈ રાજા, નાભિકે દરબાર રે; મરૂદેવાએ બેટા જાયો, ઋષભ-કુમાર રે-**આજ૦ ॥ ૧ ॥** અયોધ્યામેં ઉચ્છવ હોવે, મુખ બોલે જય-કાર રે; ધનનન ઘનનન ઘંટા વાજે, દેવ કરે થેઈકાર રે-**આજ૦ ॥ ૨ ॥** ઈંદ્રાણી મલી મંગલ ગાવે, લાવે મોતી-માલ રે; ચંદને ચરચી પાયે લાગે, પ્રભુ જીવો

વિરકાલ રે—આજ૦ ॥ ૩ ॥ નાભિ—રાજા દાનજ દેવે, વરસે અખંડ ધાર રે, ગામ નગર પુર પાટણ દેવે, દેવે મણિ—ભંડાર રે—આજ૦ ॥ ૪ ॥ હાથી દેવે સાથી દેવે, દેવે રથ તૂખાર ર, હીર ચીર પીતામ્બર દેવે, દેવે સવિ શણગાર રે—આજ૦ ॥ ૫ ॥ તીન—લોકમે દિનકર પ્રગટ્યો, ઘર ઘર મંગળ—માળ રે, ભવન કમના રૂપ નિરંજન, આદીશ્વર દયાળ રે—આજ૦ ॥ ૬ ॥

મેળાનડા પ્રસંગે ગાવાનું મંગલાચરણ
(રાગ સારંગ)

નમો નમો મંગલમે મહાવીર, શાસનપતિ વડવીર ॥ નમો૦ ॥ એ આંકણી ॥ જૈન સમાજ મિલી મન રંગે, ચમત્કૃત નિરમલ ચીર ॥ નમો૦ ॥ ૧ ॥ એક એકકે અંતરગતી, ફેલી બની તતખીર ॥ નમો૦ ॥ ૨ ॥ દેખો દાર એ જૈન વર્ગ, સાધન બહુ ગભીર ॥ નમો૦ ॥ ૩ ॥ મગન આનંદ આજ ભયો હૈ, આઈ દિનમેં વીર ॥ નમો૦ ॥૪॥ કરી સુધારો ધર્મ વધારો, પાઈ આજ્ઞા વીર ॥ નમો૦ ॥ ૫ ॥

વિનય, કાળે-ધરી બહુ માન; સૂત્ર અર્થ તદુભય કરી સૂધાં, ભણીએ વહી ઉપધાન રે ॥ પ્રા૦ જ્ઞા૦ ॥ ૨ ॥ જ્ઞાનોપગરણ પાટી પોથી, ઠવણી નોકારવાલી; તેહ તણી કીધી આશાતના, જ્ઞાન ભક્તિ ન સંભાળી રે ॥ પ્રા૦ જ્ઞા૦ ॥ ૩ ॥ ઈત્યાદિક વિપરિતપણાથી, જ્ઞાન વિરાધ્યું જેહ; આ ભવ પરભવ વળી રે ભવોભવ, મિચ્છામિ દુક્કડં તેહ રે ॥ પ્રાણી સમકિત લ્યો શુદ્ધ જાણી, વીર વદે એમ વાણી રે ॥ પ્રા૦ સ૦ ॥ ૪ ॥ જિન વચને શંકા નવિ કીજે, નવિ પરમત અભિલાષ; સાધુ તણી નિંદા પરિહરજો, ફળ સંદેહ મ રાખ રે ॥ પ્રા૦ સ૦ ॥ ૫ ॥ મૂઢપણું છંડો પરશંસા, ગુણવંતને આદરીએ; સાહમ્મીને ધર્મે કરી સ્થિરતા, ભક્તિ પ્રભાવના કરીએ રે ॥ પ્રા૦ સ૦ ॥ ૬ ॥ સંઘ ચૈત્ય પ્રાસાદ તણો જે, અવર્ણવાદ મન લેખ્યો; દ્રવ્ય દેવકો જે વિણસાડ્યો, વિણસંતો ઉવેખ્યો રે ॥ પ્રા૦ સ૦ ॥ ૭ ॥ ઈત્યાદિક વિપરીતપણાથી, સમકિત ખંડ્યુ જેહ; આ ભવ પરભવ વળી રે ભવોભવ, મિચ્છામિ દુક્કડં તેહ રે ॥

પ્રાણી ચારિત્ર લ્યો ચિત્ત આણી, વીર વદે એમ વાણી રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ૮ ॥ પંચ સમિતિ ત્રણ ગુપ્તિ વિરાધી, આઠે પ્રવચન માય, સાધુ તણે ધર્મે પ્રમાદે, અશુદ્ધ વચન મન કાય રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ॥ ૯ ॥ શ્રાવકને ધર્મે સામાયિક, પોસહમા મન વાળી, જે જયણા પૂર્વક એ આઠે, પ્રવચન માય ન પાળી રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ૧૦ ॥ ઇત્યાદિક વિપરીતપણાથી, ચારિત્ર ડોહોળ્યુ જેહ, આ ભવ પરભવ વળી રે ભવોભવ, મિચ્છામિ દુક્કડ તેહ રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ॥ ૧૧ ॥ બારે ભેદે તપ નવિ કીધો, છતે યોગે નિજ શક્તે, ધર્મે મન વચ કાયા વીરજ, નવિ ફેરવીયુ ભગતે રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ૧૨ ॥ તપ વીરજ આચારજ એણીપેરે, વિવિધ વિરાધ્યા જેહ, આ ભવ પરભવ વળી રે ભવોભવ, મિચ્છામિ દુક્કડ તેહ રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ૧૩ ॥ વળીય વિશેષે ચારિત્ર કેરા, અતિચાર આલોઇએ, વીર જિનેસર વયણ સુણીને, પાપ મેલ સવિ ધોઈએ રે ॥ પ્રા૦ ચા૦ ॥ ૧૪ ॥

ઢાલ-બીજી.

(પામી સુગુરૂ પસાય-એ દેશી.)

પૃથ્વી પાણી તેઉ, વાયુ વનસ્પતિ; એ પાંચે થાવર કહ્યા એ, કરી કરસણ આરંભ, ખેત્ર જે ખેડીયાં; કુવા તલાવ ખણાવીયા એ ॥ ૧ ॥ ઘર આરંભ અનેક, ટાંકાં ભોંયરાં; મેડી માળ ચણાવીઆ એ, લીંપણ ગુંપણ કાજ, એણીપરે પર પરે; પૃથ્વીકાય વિરાધીઆ એ ॥ ૨ ॥ ધોયણ નાહણ પાણી, ઝીલણ અપકાય; છોતિ ધોતી કરી દુહવ્યા એ, ભાઠીગર કુંભાર, લોહ સોવનગરા; ભાડભુંજા લીહાલાગરા એ ॥ ૩ ॥ તાપણ શેકણ કાજ, વસ્ત્ર નિખારણ; રંગણ રાંધણ રસવતી એ, એણીપેરે કર્માદાન, પરે પરે કેલવી; તેઉ વાઉ વિરાધીયા એ ॥ ૪ ॥ વાડી વન આરામ, વાવી વનસ્પતિ; પાન ફૂલ ફળ ચુંટીયાં એ, પહોંક પાપડી શાક, શેક્યાં સૂક્વ્યાં; છેદ્યાં છુંદ્યાં આથીયાં એ ॥ ૫ ॥ અળશીને એરંડા, ઘાલી ઘાણીયે; ઘણા તિલાદિક પીલીયા એ, ઘાલી કોલુ માંહે, પીલી શેલડી; કંદમૂળ ફળ વેચીયાં એ ॥ ૬ ॥ એમ એકેન્દ્રિય જીવ, હણ્યા હણાવીયા;

હણુતા જે અનુમોદીયા એ, આ ભવ પરભવ જેહ, વલીય ભવોભવે, તે મુજ મિચ્છામિ દુક્કડ એ ॥ ૭ ॥ કમી ચરમીયા કીડા, ગાડર ગડોલા, ઈયળ પૂરા ને અનરીયા એ, વાળા જળો ચૂડેલ, વિચલિત રસતણા, વળી અથાણા પ્રમુખના એ ॥ ૮ ॥ એમ બેઈંદ્રિય જીવ જે મે દુહવ્યા, તે મુજ મિચ્છામિ દુક્કડ એ, ઉધેહી જૂ લીખ, માકણ મંકોડા, ચાચડ કીડી કુથુઆ એ ॥ ૯ ॥ ગદહિઆ ધીમેલ, કાનખજૂરડા, ગીગોડા ધનેરીયા એ, એમ તેઈંદ્રિય જીવ, જે મે દુહવ્યા, તે મુજ મિચ્છામિ દુક્કડ એ ॥ ૧૦ ॥ માખી મચ્છર ડાસ, મસા પતંગીયા, કંસારી કોલિયાવડા એ, ઢીંકણ વીંછુ તીડ, ભમરા ભમરીઓ, કોતા બગ ખડમાકડી એ ॥ ૧૧ ॥ એમ ચૌરિન્દ્રિય જીવ, જે મે દુહવ્યા, તે મુજ મિચ્છામિ દુક્કડ એ, જળમા નાખી જાળ, જળચર દુહવ્યા, વનમા મૃગ સતાપીયા એ ॥ ૧૨ ॥ પીડ્યા પખી જીવ, પાડી પાસમા, પોપટ ઘાલ્યા પાંજરે એ, એમ પચેન્દ્રિય જીવ, જે મે દુહવ્યા, તે મુજ મિચ્છામિ દુક્કડ એ ॥ ૧૩ ॥

ઢાલ-ત્રીજી.

(વાણી વાણી હિતકારીજી-એ દેશી.)

ક્રોધ લોભ ભય હાસ્યથીજી, બોલ્યાં વચન અસત્ય; કૂડ કરી ધન પારકાંજી, લીધાં જેહ અદત્ત રે-જિનજી! -મિચ્છામિ દુક્કડં આજ, તુમ સાખે મહારાજ રે -જિનજી; દેઇ સારૂં કાજ રે-જિનજી, મિચ્છામિ દુક્કડં આજ ॥ ૧ ॥ દેવ મનુષ્ય તિર્યંચનાંજી, મૈથુન સેવ્યાં જેહ; વિષયારસ લંપટપણેજી, ઘણું વિડંબ્યો દેહ રે ॥ જિનજી૦ ॥ ૨ ॥ પરિગ્રહની મમતા કરીજી, ભવે ભવે મેલી આથ; જે જિહાં તે તિહાં રહીજી, કોઈ ન આવી સાથ રે ॥ જિનજી૦ ॥ ૩ ॥ રયણી ભોજન જે કર્યાંજી, કીધાં ભક્ષ અભક્ષ; રસના રસની લાલચેજી, પાપ કર્યાં પ્રત્યક્ષ રે ॥ જિનજી૦ ॥ ૪ ॥ વ્રત લેઈ વિસારીયાંજી, વળી ભાગ્યાં પચ્ચખ્ખાણ; કપટ હેતુ કિરિયા કરીજી; કીધાં આપ વખાણ રે ॥ જિનજી૦ ॥ ૫ ॥ ત્રણ ઢાલ આઠે દુહેજી, આલોયા અતિચાર; શિવગતિ આરાધન તણોજી, એ પહેલો અધિકાર રે ॥ જિનજી૦ ॥ ૬ ॥

ઢાલ–ચોથી

(સાહેલડીની–દેશી)

પચ મહાવ્રત આદરો–સાહેલડી રે, અથવા લ્યો વ્રત બાર તો, યથાશક્તિ વ્રત આદરી–સાહેલડી રે, પાળો નિરતિચાર તો ॥ ૧ ॥ વ્રત લીધા સંભારીએ –સા૦, હૈડે ધરીય વિચાર તો, શિવ ગતિ આરાધન તણો–સા૦, એ બીજો અધિકાર તો ॥ ૨ ॥ જીવ સર્વ ખમાવીએ–સા૦, યોનિ ચોરાસી લાખ તો, મન શુદ્ધે કરી ખામણાં–સા૦, કોઈશું રોષ ન રાખ તો ॥ ૩ ॥ સર્વ મિત્ર કરી ચિંતવો–સા૦, કોઈ ન જાણો શત્રુ તો, રાગ દ્વેષ એમ પરિહરો–સા૦, કીજે જન્મ પવિત્ર તો ॥ ૪ ॥ સ્વામી સંઘ ખમાવીએ–સા૦, જે ઉપની અપ્રીત તો, સ્વજન કુટુંબ કરી ખામણાં–સા૦, એ જિનશાસન રીત તો ॥ ૫ ॥ ખમીયે ને ખમાવીએ–સા૦, એહિજ ધર્મનો સાર તો, શિવગતિ આરાધન તણો–સા૦, એ ત્રીજો અધિકાર તો ॥ ૬ ॥ મૃષાવાદ હિંસા ચોરી–સા૦, ધન મૂર્ચ્છા મૈથુન તો, ક્રોધ માન માયા તૃષ્ણા–સા૦, પ્રેમ

દ્વેષ પૈશુન્ય તો ॥ ૭ ॥ નિંદા કલહ ન કીજીએ–**સા૦**, કૂડાં ન દીજે આળ તો; રતિ અરતિ મિથ્યા તજો–**સા૦**, માયા મોહ જંજાળ તો ॥ ૮ ॥ ત્રિવિધ ત્રિવિધ વોસરાવીએ–**સા૦**, પાપસ્થાન અઢાર તો; શિવગતિ આરાધન તણો–**સા૦**, એ ચોથો અધિકાર તો ॥ ૯ ॥

ઢાલ–પાંચમી.

(હવે નિસુણો ઈહાં આવીયા એ–**એ દેશી.**)

જનમ જરા મરણે કરી એ, આ સંસાર અસાર તો; કર્યાં કર્મ સહુ અનુભવે એ, કોઈ ન રાખણહાર તો ॥ ૧ ॥ શરણ એક અરિહંતનું એ, શરણ સિદ્ધ ભગવંત તો; શરણ ધર્મ શ્રી જિનનો એ, સાધુ શરણ ગુણવંત તો ॥ ૨ ॥ અવર મોહ સવિ પરિહરી એ, ચાર શરણ ચિત્ત ધાર તો; શિવગતિ આરાધન તણો એ, એ પાંચમો અધિકાર તો ॥ ૩ ॥ આ ભવ પરભવ જે કર્યાં એ, પાપ કર્મ કેઈ લાખ તો; આત્મ સાખે તે નિંદીએ એ, પડિક્કમિએ ગુરૂ સાખ તો ॥ ૪ ॥ મિથ્યામત વર્તાવીયા એ, જે ભાખ્યાં ઉત્સૂત્ર તો; કુમતિ કદાગ્રહને વશે એ, જે ઉત્થાપ્યાં સૂત્ર તો ॥ ૫ ॥ ઘડ્યાં ઘડાવ્યાં જે ઘણાં એ, ઘરંટી હળ

હથિયાર તો, ભવ ભવ મેલી મૂકીયા એ, કરતા જીવ સંહાર તો ॥ ૬ ॥ પાપ કરીને પોષીયો એ, જનમ જનમ પરિવાર તો, જનમાંતર પોહોચ્યા પછી એ, કોણે ન કીધી સાર તો ॥ ૭ ॥ આ ભવ પરભવ જે કર્યાં એ, એમ અધિકરણ અનેક તો, ત્રિવિધે ત્રિવિધે વોસરાવીએ એ, આણી હૃદય વિવેક તો ॥ ૮ ॥ દુષ્કૃત નિંદા એમ કરી એ, પાપ કરો પરિહાર તો, શિવગતિ આરાધન તણો એ, એ છઠ્ઠો અધિકાર તો ॥ ૯ ॥

ઢાલ–છઠ્ઠી

(આધે તું જોયને જીવડા–એ દેશી.)

ધન ધન તે દિન માહરો, જિહાં કીધો ધર્મ, દાન શીયળ તપ ભાવથી, ટાળ્યાં દુષ્કૃત કર્મ ॥ ધન૦ ॥ ૧ ॥ શેત્રુંજાદિક તીર્થની, જે કીધી જાત્ર, જુગતે જિનવર પૂજ્યા, વળી પોષ્યાં પાત્ર ॥ ધન૦ ॥ ૨ ॥ પુસ્તક [1]જ્ઞાન લખાવીયાં, [2]જિણહર [3]જિન ચૈત્ય, [4]સંઘ ચતુર્વિધ

૧–જ્ઞાન ૨–જિન મંદિર ૩–જિન પ્રતિમા ૪–સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક અને શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘ–એ સાત ક્ષેત્ર

સાચવ્યાં, એ સાતે ક્ષેત્ર ॥ ધન૦ ॥ ૩ ॥ પડિક્કમણાં સુપરે કર્યાં, અનુકંપા દાન; સાધુ સૂરિ ઉવજ્ઝાયને, દીધાં બહુ માન ॥ ધન૦ ॥ ૪ ॥ ધર્મકાર્ય અનુમોદિએ, એમ વારોવાર; શિવગતિ આરાધન તણો, એ સાતમો અધિકાર ॥ ધન૦ ॥ ૫ ॥ ભાવ ભલો મન આણીએ, ચિત્ત આણી ઠામ; સમતા ભાવે ભાવીએ, એ આતમરામ ॥ ધન૦ ॥ ૬ ॥ સુખ દુઃખ કારણ જીવને, કોઈ અવર ન હોય; કર્મ આપ જે આચર્યાં, ભોગવીયે સોય ॥ ધન૦ ॥ ૭ ॥ સમતા વિણુ જે અનુસરે, પ્રાણી પુણ્યનું કામ; છાર ઉપર તે લીંપણું, ઝાંખર ચિત્રામ ॥ ધન૦ ॥ ૮ ॥ ભાવ ભલી પરે ભાવીએ, એ ધર્મનો સાર; શિવગતિ આરાધન તણો, એ આઠમો અધિકાર ॥ ધન૦ ॥ ૯ ॥

ઢાલ-સાતમી.

(રૈવતગિરિ હુચા, પ્રભુનાં ત્રણ કલ્યાણક-એ દેશી.)

હવે અવસર જાણી, કરી સંલેખન સાર; અણસણ આદરિયે, પચ્ચખી ચારે આહાર; લલુતા સવિ મૂકી, છાંડી મમતા અંગ; એ આતમ ખેલે, સમતા જ્ઞાન તરંગ

॥ ૧ ॥ ગતિ ચારે કીધા, આહાર અનંત નિઃશંક, પણ તૃપ્તિ ન પામ્યો, જીવ લાલચીયો રંક, દુલહો એ વળી વળી, અણસણનો પરિણામ, એહથી પામીજે, શિવપદ સંપદ ઠામ ॥ ૨ ॥ ધન ધન્નો શાલિભદ્ર, ખંધો મેઘ કુમાર, અણસણ આરાધી, પામ્યા ભવનો પાર, શિવ-મંદિર જાશે, કરી એક અવતાર, આરાધન કેરો, એ નવમો અધિકાર ॥ ૩ ॥ દસમે અધિકારે, મહામંત્ર નવકાર, મનથી નવિ મૂકો, શિવસુખ-ફલ સહકાર, એહ જપતાં જાયે, દુર્ગતિ દોષ વિકાર, સુપરે એ સમરો, ચૌદ પૂરવનો સાર ॥ ૪ ॥ જનમાંતર જાતા, જો પામે નવકાર, તો પાતિક ગાળી, પામે સુર અવતાર, એ નવપદ સરીખો, મંત્ર ન કો સંસાર, આ ભવ ને પરભવે, સુખ સંપત્તિ દાતાર ॥ ૫ ॥ જુઓ ભીલ ભીલડી, રાજા રાણી થાય, નવપદ મહિમાથી, રાજસિંહ મહારાય, રાણી રત્નવતી બેહુ, પામ્યાં છે સુરભોગ, એક ભવ પછી લેશે, શિવ-વધૂ સંજોગ ॥ ૬ ॥ શ્રીમતીને એ વળી, મંત્ર ફળ્યો તત્કાલ, ફણીધર ફીટીને, પ્રગટ થઈ ફૂલમાળ, શિવકુમારે

જોગી, સોવન પુરિસો કીધ; એમ એણે મંત્રે, કાજ ઘણાનાં સિદ્ધ ॥ ૭ ॥ એ દશ અધિકારે, વીર જિણેસર ભાખ્યો; આરાધન કેરો વિધિ, જેણે ચિત્ત માંહી રાખ્યો, તેણે પાપ પખાળી, ભવભય દૂરે નાંખ્યો; જિન વિનય કરંતા, સુમતિ અમૃત રસ ચાખ્યો ॥ ૮ ॥

ઢાલ–આઠમી.

(નમો ભવિ ભાવશુ–એ દેશી.)

સિદ્ધારથ રાય કુલ–તિલો એ, ત્રિશલા માત મલ્હાર તો; અવનીતલે તમે અવતર્યા એ, કરવા અમ ઉપકાર –**જયો જિન વીરજી એ ॥ ૧ ॥** મેં અપરાધ કર્યા ઘણા એ, કહેતાં ન લહું પાર તો; તુમ ચરણે આવ્યા ભણી એ, જો તારે તો તાર **॥ જયો૦ ॥ ૨ ॥** આશ કરીને આવીયો એ, તુમ ચરણે મહારાજ તો; આવ્યાને ઉવેખશો એ, તો કેમ રહેશે લાજ? **॥ જયો૦ ॥ ૩ ॥** કરમ અલુજણ આકરાં એ, જન્મ મરણ જંજાળ તો; હું છુ એહથી ઉભગ્યો એ, છોડાવ દેવ! દયાલ! **॥ જયો૦ ॥ ૪ ॥** આજ મનોરથ મુજ ફળ્યા એ, નાઠાં દુઃખ

દદીલ તો, તૂઠયો જિન ચોવીસમો એ, પ્રગટયા પુન્ય કલ્લોલ ॥ જયો૦ ॥ ૫ ॥ ભવે ભવે વિનય તુમારડો એ, ભાવ ભક્તિ તુમ પાય તો, દેવ! દયા કરી દીજીએ એ, બોધિબીજ સુપસાય ॥ જયો૦ ॥ ૬ ॥

— કળશ —

ઈહ તરણ તારણ સુગતિ કારણ, દુઃખ નિવારણ જગ જયો, શ્રી વીર-જિનવર ચરણ થુણતા, અધિક મન ઉલટ થયો ॥ ૧ ॥ શ્રીવિજયદેવસૂરિંદ-પટધર, તીરથ જંગમ એણી જગે, તપગચ્છપતિ શ્રીવિજય-પ્રભસૂરિ, સૂરિ તેજે ઝગમગે ॥ ૨ ॥ શ્રીહીરવિજય-સૂરિશિષ્ય વાચક,-કીર્તિવિજય સુરગુરુ સમો, તસ શિષ્ય વાચક-વિનયવિજયે, થુણ્યો જિન ચોવીસમો ॥ ૩ ॥ સયસત્તર સંવત ઓગણત્રીસે, રહી રાંદેર ચોમાસ એ, વિજય દશમી વિજય કારણ કીયો ગુણ અભ્યાસ એ ॥ ૪ ॥ નરભવ-આરાધન સિદ્ધિસાધન, સુકૃત લીલ-વિલાસ એ, નિર્જરા હેતે સ્તવન રચિયું, નામે પુન્યપ્રકાશ એ ॥ ૫ ॥

ચાર–શરણાં

: ૧ :

મુજને ચાર શરણાં હોજો, અરિહંત સિદ્ધ સુસાધુજી; કેવલી ધર્મ પ્રકાશિયો, રત્ન અમૂલખ લાધુજી ॥ મુજ૦ ॥ ૧ ॥ ચઉ ગતિ તણાં દુઃખ છેદવા, સમરથ શરણાં એહોજી; પૂર્વે મુનિવર જે હુવા, તેણે શરણાં કીધાં તેહોજી ॥ મુજ૦ ॥ ૨ ॥ સંસાર માંહે જીવને, સમરથ શરણાં ચારોજી; ગણી સમયસુંદર એમ ભણે, કલ્યાણ મંગલકારોજી ॥ મુજ૦ ॥ ૩ ॥

: ૨ :

લાખ ચોરાશી જીવ ખમાવીએ, મનધરી પરમ વિવેકોજી; મિચ્છામિ દુક્કડં દીજીએ, જિન–વચને લહીએ ટેકોજી ॥ લાખ૦ ॥ ૧ ॥ સાત લાખ ભુ દગ તેઉ વાઉના, દશ ચૌદ વનના ભેદોજી; ષટ્ વિગલ સુર તિરિ નારકી, ચઉ ચઉ (ચઉ) ચઉદે નરના ભેદોજી ॥ લાખ૦ ॥ ૨ ॥ મુજ વૈર નહી કેહશું, સહુશું મૈત્રી ભાવોજી; ગણી સમયસુંદર એમ કહે, પામીએ પુણ્ય પ્રભાવોજી ॥ લાખ૦ ॥ ૩ ॥

૩.

પાપ અઢારે જીવ પરિહરો, અરિહંત સિદ્ધની સાખેજી, આલોયાં પાપ છૂટીએ, ભગવંત એણી પેરે ભાખેજી ॥ પાપ૦ ॥ ૧ ॥ આશ્રવ કષાય દોય બંધના, વળી કલહ અભ્યાખ્યાનોજી, રતિ અરતિ પૈશુન્ય નિંદના, માયામોસ મિથ્યાત્વોજી ॥ પાપ૦ ॥ ૨ ॥ મન વચ કાયાએ જે કર્યાં, મિચ્છામિ દુક્કડં તેહોજી, ગણી સમયસુંદર એમ કહે, જૈનધર્મનો મર્મ એહોજી ॥ પાપ૦ ॥ ૩ ॥

૪

ધન ધન તે દિન મુજ કદી હોશે, હું પાળીશ [illegible] ॥ ધન્ય૦ ॥ ૧ ॥ [illegible] ॥ ધન્ય૦ ॥ ૨ ॥ [illegible] ॥ ધન્ય૦ ॥ ૩ ॥

卐 સજ્ઝાય-સંગ્રહ. 卐

મહાસતી સીતાજીની સજ્ઝાય.

જનક-સુતા હું નામ ધરાવું, **રામ** છે અંતરજામી, પાલવ મ્હારો મેલને પાપી, કુળને લાગે છે ખામી- **અડશો માંજો ॥** માંજો માંજો માંજો-અડશો માંજો ॥ મ્હારો નાહલીયો દુહવાય-**અડશો૦ ॥** મને સંગ કેનો ન સુહાય-**અડશો૦ ॥** મ્હારૂં મન માંહેથી અકુળાય- **અડશો૦ ॥ એ આંકણી ॥** મેરૂ-મહીધર ઠામ તજે જો, પત્થર પંકજ ઉગે; જો જળધિ મર્યાદા મૂકે, પાંગળો અંબર પૂગે-**અડશો૦ ॥ ૧ ॥** તો પણ તું સાંભળને રાવણ, નિશ્ચય શીયલ ન ખંડુ; પ્રાણ હમારા પરલોકે જાવે, તો પણ સત્ય ન છંડું-**અડશો૦ ॥ ૨ ॥** કુણ ફણિધરનો મણિ લેવાને, હૈડે ઘાલે હામ; સતી સંઘાતે સ્નેહ કરીને, કહો કુણ સાધે કામ-**અડશો૦ ॥ ૩ ॥** પર દારાનો સંગ કરીને, આખર કોણ ઉગરીયો; ઉંડુ તો તું જોને આલોચી, સહી તુજ દહાડો ફરીઓ- **અડશો૦ ॥ ૪ ॥** જનક-સુતા હું જગ સહુ જાણે,

ભામંડલ છે ભાઈ, દશરથ-નંદન શિરે છે સ્વામી, લક્ષ્મણ કરશે લડાઈ-અડશો૦ ॥ ૫ ॥ હું ધણીયાતી પિયુ ગુણ ગતી, હાથ છે મ્હારે છાતી, રહે અળગો તુજ વયણે ન ચળુ, કાં કુળે વાયે છે કાતી-અડશો૦ ॥ ૬ ॥ ઉદયરતન કહે ધન્ય એ અબળા, સીતા જેહનુ નામ, સતીયો માહે શિરોમણિ કહિયે, નિત્ય નિત્ય હોજો પ્રણામ-અડશો૦ ॥ ૭ ॥

શ્રી રહનેમિ-રાજિમતીની સજ્ઝાય

(બાજી બાજી બાજી ભૂલ્યો બાજી-એ દેશી)

નાજી નાજી નાજી, છેડો નાજી, દેવરીયા મુનિવર છેડો નાજી; સંયમ વ્રત ભાંગે-છેડો૦, યાદવ કુળને ખાંપણ લાગે-છેડો૦ ॥ એ આંકણી ॥ અગ્નિકુંડમાં જે તનુ હોમે, પણ વંકુ વિષ નવિ લેવે, જે અગંધન કુલના ભોગી, તે કેમ ફરી વિષ સેવે-છેડો૦ ॥ ૧ ॥ લોક હસે ને ગુણ સવિ નિકસે, વિકસે દુર્ગતિ બારી, એમ જાણીને કહો કોણ સેવે ?, પાપ-પંક પરનારી-છેડો૦ ॥ ૨ ॥ નવી વિનવે

સંયતીની સંગે, બોધિ-બીજ બળી જાવે; સાહિબ-બંધવ નામ ધરાવો, તો કિમ લાજ ન આવે?-છેડો૦ ॥ ૩ ॥ મૂરખ કોઈ દહી કરી ચંદન, છાર કોયલો લેવે; વિષય હલાહલ પાન નિકંદન, કુણ જીવવાને સેવે?-છેડો૦ ॥ ૪ ॥ રાજુલ બાલા વચન રસાલા, જેમ અંકુશે સુંઢાલા; ઈમ થિર કરી રહનેમિ પ્રગટ્યા, **જ્ઞાનવિમલ** ગુણ-માલા-છેડો૦ ॥ ૫ ॥

પાંચમી અન્યત્વ ભાવના.

[દુહા.]

ભવસાયર બહુ દુઃખ-જલ, જન્મ મરણ તરંગ;
મમતા તંતુ તિણે ગ્રહ્યો, ચેતન ચતુર માતંગ ॥ ૧ ॥
ચાહે જો છોડણ ભણી, તો ભજ ભગવંત મહંત;
દૂર કરે પર બંધને, જિમ જલથી જલકંત ॥ ૨ ॥

ઢાળ-પાંચમી

(કપૂર હુવે અતિ ઉજળો રે-એ દેશી.)

પાંચમી ભાવના ભાવીયે રે, જીવ! અન્યત્વ-વિચાર; આપ સવારથી એ સહુ રે, મિલીયો તુજ

પરિવાર ॥ સવેગી સુદર ! બુઝ મા મૂઝ ગમાર ॥ ૧ ॥ તારૂ કો નહિ ઇણ સસાર, તુ કેહનો નહિ નિરધાર ॥ સવેગી૦ ॥ ૨ ॥ પથ શિરે પથી મળ્યા રે, કીજે કિણહીશુ પ્રેમ ? રાતિ વસે પ્રહ ઉઠી ચલે રે, નેહ નિવાહ કેમ ? ॥ સવેગી૦ ॥ ૩ ॥ જિમ મેળો તીરથે મલે રે, જન જન વણજની ચાહ, કે ત્રોટો કે ફાયદો રે, લેઈ લેઈ નિજ ઘર જાય ॥ સવેગી૦ ॥ ૪ ॥ જિહા લગે જેહના સગ રે, તિહા તે દાખે નેહ, સૂરીકાતાની પરે રે, છટકી દેખાડે છેહ ॥ સવેગી૦ ॥ ૫ ॥ ચૂલણી અગજ મારવા રે, કૂડું કરે જતુ-ગેહ, ભરત બાહુબલિ ઝુઝિયા રે, જૂઓ જૂઓ નિજના નેહ ॥ સવેગી૦ ॥ ૬ ॥ શ્રેણિક પુત્રે બાધીયો રે, લીધુ વડું શ્રી રાજ, દુ ખ દીધુ બહુ તાતને રે, દેખો સુતના કાજ ॥ સવેગી૦ ॥ ૭ ॥ ઇણ ભાવતે સિર-પદ લહે રે, શ્રી મરૂદેવી માય, શીવ-વિષ્ય કેવલ લહ્યુ રે, શ્રી ગૌતમ-ગણરાય ॥ સવેગી૦ ॥ ૮ ॥

કર્મની સજ્ઝાય.

સુખ દુઃખ સરજ્યાં પામીએ રે, આપદ સંપદ હોય; લીલા દેખી પરતણી રે, રોષ મ ધરજો કોય રે—પ્રાણી, **મન નાણો વિખવાદ,** એ તો કર્મ તણા પરસાદ રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૧ ॥ ફળને આહારે જીવીઆ રે, બાર વરસ વન રામ; **સીતા રાવણ** લેઈ ગયો રે, કર્મ તણાં એ કામ રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૨ ॥ નીર પાખે વન એકલો રે, મરણ પામ્યો રે મુકુંદ; નીચતણે ઘર જળ વહ્યાં રે, શીર ધરી **હરિચંદ્ર** રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૩ ॥ **નલે દમયંતી** પરિહરી રે, રાત્રિ સમય વન બાલ; નામ ઠામ કુલ ગોપવી રે, **નલે** નિરવાહ્યા કાલ રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૪ ॥ રૂપે અધિક જગ જાણીએ રે, ચક્રી **સનતકુમાર;** વરસ સાતસેં ભોગવી રે, વેદના વિવિધ પ્રકાર રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૫ ॥ રૂપે વળી સુર સારિખા રે, **પાંડવ** પાંચ વિચાર; તે રણવાસે રડવડ્યા રે, પામ્યા દુઃખ સંસાર રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૬ ॥ સુર નર જસ સેવા કરે રે; ત્રિભુવનપતિ

વિખ્યાત, તે પણ કર્મે વિટબીયા રે, તો માણસ કેઈ માન રે—પ્રા૦ ॥ મ૦ ॥ ૭ ॥ દોષ ન દીજે કેહને રે, કર્મ વિટંબન હાર, દાન મુનિ કહે જીવને રે, ધર્મ સદા સુખકાર રે—પ્રા૦ મ૦ ॥ ૮ ॥

તપની સજ્ઝાય

કીધાં કર્મ નિકંદવા રે, લેવા મુગતિનુ દાન, હત્યા પાતિક છૂટવા રે, નહિ કોઈ તપ સમાન ॥ ભવિક જન ! તપ કરજો મન શુદ્ધ ॥ ૧ ॥ ઉત્તમ તપના યોગથી રે, સુર નર સેવે પાય, લબ્ધિ અઠ્ઠાવીશ ઉપજે રે, મન-વંછિત ફલ થાય ॥ ભવિક૦ ॥ ૨ ॥ તીર્થંકર પદ પામીએ રે, નાસે સઘળા રોગ, રૂપ લીલા સુખ સાહિબી રે, લહીએ તપ સંજોગ ॥ ભવિક૦ ॥ ૩ ॥ તે શું છે સંસારમાં રે, તપથી ન હોવે જેહ, જે જે મનમાં કામીએ રે, સફલ ફલે સહી તેહ ॥ ભવિક૦ ॥ ૪ ॥ અષ્ટ કર્મના ઓઘને રે, તપ ટાળે તતકાલ, અવસર લહીને એહનો રે, ખપ કરજો ઉજમાળ ॥ ભવિક૦ ॥ ૫ ॥ બાહ્ય અભ્યંતર જે કહ્યા રે,

તંપના બાર પ્રકાર; હોજો તેહની ચાલમાં રે, જેમ **ધન્નો** અણગાર ॥ **ભવિક૦** ॥ ૬ ॥ **ઉદયરત્ન** કહે તપ થકી રે, વાધે સુજસ સનૂર; સ્વર્ગ હોવે ઘર આંગણું રે, દુર્ગતિ જાયે દૂર ॥ **ભવિક૦** ॥ ૭ ॥

વૈરાગ્યની સજ્ઝાય.

ઉંચાં મંદિર માળીયાં, સોડ વાળીને સૂતો; કાઢો કાઢો એને સહુ કહે, જાણે જન્મ્યો જ નહોતો **-એક રે દિવસ એવો -આવશે** ॥ ૧ ॥ **એ આંકણી** ॥ મન સબળો૭ સાલે; મંત્રી મળ્યા સવિ કારમા, તેનું કાંઈ ન ચાલે ॥ **એક રે૦** ॥ ૨ ॥ સાવ સોનાનાં રે સાંકળાં, પહેરણુ નવ નવા વાઘા; ધોળું રે વસ્ત્ર એના કર્મનું, તે તો શોધવા લાગા ॥ **એક રે૦** ॥ ૩ ॥ ચરૂ કઢાઇઆં અતિ ઘણાં, બીજાનું નહિ લેખું; ખોખરી હાંડી એના કર્મની, તે તો આગળ દેખું ॥ **એક રે૦** ॥ ૪ ॥ કેનાં છોરૂ? ને કેનાં વાછરૂ!, કેનાં માય ને બાપ?; અંત કાળે જવું જીવને એકલું, સાથે પુણ્ય ને પાપ ॥ **એક રે૦**

। ५ ॥ સગી રે નારી એની કામિની, ઉભી ટગમગ જૂવે, તેનુ પણ કાંઈ ચાલે નહિ, બેઠી તુસકે રૂવે ॥ એક રે૦ ॥ ૬ ॥ વહાલા તે વહાના શુ કરે, વહાના વળાવી વળશે, વહાલા તે વનના લાકડા, તે તો સાથેજ બળશે ॥ એક રે૦ ॥ ૭ ॥ નહિ નાપો નહિ તુંબડી, નથી તરવાનો આરો, ઉદયરતન પ્રભુ ! ઈમ ભણે, મને પાર ઉતારો ॥ એક રે૦ ॥ ૮ ॥

આપ સ્વભાવની સજ્ઝાય

આપ સ્વભાવમા રે, અવધૂ સદા મગનમે રહેના, જગત જીવ હે કરમાધીના, અચરિજ કછુઅ ન લીના ॥ આપ૦ ॥ ૧ ॥ તુ નહીં કેરા કોઈ નહીં તેરા, ક્યા કરે મેરા મેરા, તેરા હૈ સો તેરી પાસે, અવર સબ અનેરા ॥ આપ૦ ॥ ૨ ॥ વપુ વિનાશી તુ અવિનાશી, અબ હૈ ઈનકા વિલાસી વપુ સગ જબ દૂર નિકાસી, તબ તુમ શિવકા વાસી ॥ આપ૦ ॥ ૩ ॥ રાગ ને રીસા દોય ખવીસા, એ તુમ દુઃખકા દીસા, જબ તુમ ઈનકુ દૂર કરીસા તબ તુમ જગકા ઈસા ॥ આપ૦ ॥ ૪ ॥

પરકી આશા સદા નિરાશા, એ હે જગજન પાસા; વો કાટનકું કરો અભ્યાસા, લહો સદા સુખવાસા ॥ આપ૦ ॥ ૫ ॥ કબહીક કાજી કબહીક પાજી, કબહીક હુવા અપભ્રાજી; કબહીક જગમેં કીર્ત્તિ ગાજી, સબ પુદ્‌ગલકી બાજી ॥ આપ૦ ॥ ૬ ॥ શુદ્ધ ઉપયોગ ને સમતા ધારી, જ્ઞાન ધ્યાન મનોહારી; કર્મ કલંકકું દૂર નિવારી, જીવ વરે શિવ નારી ॥ આપ૦ ॥ ૭ ॥

શરીર અને ધનની વિનશ્વરતાની સજ્ઝાય.

કાયા માયા દોનું કારમી–પરદેશી રે, કબહું અપની ન હોય–મિત્ર પરદેશી રે; ઈનકો ગર્વ ન કીજીયે–પર૦, છિનમેં દિખાવે છેહ–મિત્ર૦ ॥ ૧ ॥ જેસો રંગ પતંગકો–પર૦, છીનમેં ફીકો હોય–મિત્ર૦ ॥ મણિ માણેક મોતી હીરલા–પર૦, ત્રાણુ શરણુ નહીં કોય–મિત્ર૦ ॥ ૨ ॥ જિસ ઘર હય ગય ઘુમતે–પર૦, હોતે છત્તીસ રાગ–મિત્ર૦ ॥ સો મંદિર સૂનાં પડ્યાં–પર૦, બેસણુ લાગા કાગ–મિત્ર૦ ॥ ૩ ॥ મણિ માણેક મોતી પહેરતી–પર૦, રાજા હરિશ્ચંદ્ર

ધ્રગનાગ-મિત્ર૦ ॥ એક દિન એસા હુઈ ગયા-પર૦, પગ-વરકી પનીહાગ-મિત્ર૦ ॥ ૪ ॥ હાવે પર્વત નોનતે-પર૦, કતે નગપતિ સેવ-મિત્ર૦ ॥ સો બી નગ મન ચલ ગએ-પર૦, તેરી કૃપા જિનની અમેવ-મિ૦ ॥ ૫ ॥ છો કે મદિર માનીઆ-પર૦, કર તે જિનનુ રાગ-મિત્ર૦ ॥ વો નિકી ક્ર નોચના-પર૦, લગમી ઈન તન આગ-મિત્ર૦ ॥ ૬ ॥ જૂઠો સબ સસાર હૈ-પર૦, સુપનેમ સન ખેલ-મિત્ર૦ ॥ નગ કહે તાસ સમજકે-પર૦, કર તે પ્રભુસુ મેલ-મિત્ર૦ ॥ ૭ ॥

લઘુતા-ગુણદર્શક-પદ-(સજ્ઝાય.)

(રાગ-મિયાગ અથવા તોડી)

[1]લઘુતા મેરે મન માની, લહી ગુરુગમ ગાન નિશાની-લઘુતા૦ ॥ મદ અષ્ટ જિનોને ધારે, તે દુર્ગતિ ગયે બિચાર, દેખો જગતમેં પ્રાની, દુ ખ લહત

1-નમ્રતા ૨-જાત મદ-જાતિ મદ બળ મદ, રૂપ મદ, જ્ઞાન મદ, લાભ મદ, કુળ મદ, શ્રુત મદ, અને ઐશ્વર્ય મદ ૩-જીવો.

અધિક અભિમાની ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૧ ॥ [૧]શશિ સૂરજ બડે કહાવે, તે રાહુકે [૨]વશ આવે; તારાગણ લઘુતા ધારી, [૩]સ્વર્ભાનુ [૪]ભીતિ નિવારી ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૨ ॥ છોટી અતિ [૫]જોયણુગંધી, લહે [૬]ખટરસ સ્વાદ સુગંધી; [૭]કરટી મોટાઈ ધારે, તે [૮]છાર નિજ શિર [૯]ડારે ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૩ ॥ જબ [૧૦]બાલચંદ હોઈ આવે, તબ સહુ જગ દેખણુ [૧૧]ધાવે; પુનમ દિન બડા કહાવે, તબ ખીણકલા હોઈ જાવે ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૪ ॥ [૧૨]ગુરૂવાઈ મનમેં વેદે, નૃપ [૧૩]શ્રવણ નાસિકા છેદે; અંગમાંહે લઘુ કહાવે, તે કારણુ ચરણુ પૂજાવે ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૫ ॥ [૧૪]શિશુ રાજધામમેં જાવે, સખી હીલ મીલ [૧૫]ગોદ ખીલાવે; હોય બડા જાણુ નવિ પાવે, જાવે તો શીષ કટાવે ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૬ ॥ અંતરમદભાવ [૧૬]વહાવે, તબ ત્રિભુવનનાથ કહાવે; ઇમ **ચિદાનંદ** ગુણ ગાવે, રહણી વિરલા કોઉ પાવે ॥ **લઘુતા૦** ॥ ૭ ॥

૧-ચંદ્ર. ૨-રાહુથી ગ્રસાય. ૩-રાહુ. ૪-બીક. ૫-કીડી. ૬-છ રસ. ૭-હાથી. ૮-કચરો. ૯-નાંખે. ૧૦-બીજનો ચંદ્ર. ૧૧-દોડે. ૧૨ મ્હોટાઇ. ૧૩-કાન. ૧૪-બાળક. ૧૫-ખોળામાં. ૧૬-દૂર કરે.

શ્રીમઙ્ગલાષ્ટકમ્.

મઙ્ગલ ભગવાન્વીરો, મઙ્ગલ ગૌતમ પ્રભુ,
મઙ્ગલ સ્થૂલભદ્રાદ્યા, જૈનો ધર્મોઽસ્તુ મઙ્ગલમ્ ૧
નાભેયાદ્યા જિના સર્વે, ભરતાદ્યાશ્ચ ચક્રિણ,
કુર્વન્તુ મઙ્ગલ સીરિ-વિષ્ણુન પ્રતિવિષ્ણુવ ૨
નાભિ-સિદ્ધાર્થભૂપાદ્યા, જિનાના પિતર સમે,
પાલિતાઽખણ્ડસામ્રાજ્યા, જનયન્તુ જય મમ ૩
મરૂદેવા-ત્રિશલાદ્યા, વિખ્યાતા જિનમાતર,
ત્રિજગજ્જનિતાનન્દા, મઙ્ગલાય ભવન્તુ મે ૪
શ્રીપુણ્ડરીકેન્દ્રભૂતિ - પ્રમુખા ગણધારિણ,
શ્રુતકેવલિનોઽન્યેઽપિ, મઙ્ગલાનિ દિશન્તુ મે. ૫
બ્રાહ્મી-ચન્દનબાલાદ્યા, મહાસત્યો મહત્તરા,
અખણ્ડશીલલીલાઢ્યા, યચ્છન્તુ મમ મઙ્ગલમ્ ૬
ચક્રેશ્વરી-સિદ્ધાયિકા - મુખ્યા શાસનદેવતા,
સમ્યગ્દૃશા વિઘ્નહરા, રચયન્તુ જયશ્રિયમ્ ૭
કપર્દિ-માતઙ્ગમુખ્યા, યક્ષા વિખ્યાતવિક્રમા,
જૈનવિઘ્નહરા નિત્ય, દેયાસુર્મઙ્ગલાનિ મે. ૮

યો મઙ્ગલાષ્ટકમિદં પટુધીરધિતે,
પ્રાતર્નરઃ સુકૃતભાવિતચિત્તવૃત્તિઃ;
સૌભાગ્યભાગ્યકલિતો ધુતસર્વવિઘ્નો,
નિત્યં સ મઙ્ગલમલં લભતે જગત્યામ. ૯

શ્રીગૌતમાષ્ટકમ્.

શ્રીઇન્દ્રભૂતિં વસુભૂતિપુત્રં, પૃથ્વીભવં ગૌતમ-ગોત્રરત્નમ્; સ્તુવન્તિ દેવાઃ સુર–માનવેન્દ્રાઃ, સ ગૌતમો યચ્છતુ વાઞ્છિતં મે ॥ ૧ ॥ શ્રીવર્દ્ધ-માનાત્ ત્રિપદીમવાપ્ય, મુહૂર્ત્તમાત્રેણ કૃતાનિ યેન; અઙ્ગાનિ પૂર્વાણિ ચતુર્દશાઽપિ, સ ગૌતમો૦ ॥ ૨ ॥ શ્રીવીરનાથેન પુરા પ્રણીતં, મન્ત્રં મહાનન્દ-સુખાય યસ્ય; ધ્યાયન્ત્યમી સૂરિવરાઃ સમગ્રાઃ, સ ગૌત-મો૦ ॥ ૩ ॥ યસ્યાઽભિધાનં મુનયોઽપિ સર્વે, ગૃહ્-ણન્તિ ભિક્ષાભ્રમણસ્ય કાલે, મિષ્ટાન્નપાનામ્બરપૂર્ણ-કામાઃ, સ ગૌતમો૦ ॥ ૪ ॥ અષ્ટાપદાદ્રૌ ગગને સ્વશક્ત્યા, યયૌ જિનાનાં પદવન્દનાય; નિશમ્ય તીર્થા-

તિવય સુરેભ્ય, સ ગૌતમો૦ ॥ ૫ ॥ નિ-પચ્ચસદ્
ખ્યારાતતાપસાના, તપ કૃતનામપુનર્ભવાય, અક્ષીણલ
બ્ધ્યા પરમાન્નદાતા, સ ગૌતમો૦ ॥ ૬ ॥ સદક્ષિણ
ભોજનમેવ દેય, સાધર્મિક સઙ્ઘસપર્યયેવ, કેવલવસ્ત્ર
પ્રદો મુનીના, સ ગૌતમો૦ ॥ ૭ ॥ શિવ ગતે ભર્તરિ
વીરનાથે, યુગપ્રધાનત્વમિહૈવ મત્વા, પટ્ટાભિષેકો
વિદધે સુરેન્દ્રૈ, સ ગૌતમો૦ ॥ ૮ ॥ ત્રૈલોક્યબીજ
[1]પરમાત્મબીજં, સજ્જ્ઞાનબીજં પરમેષ્ઠિબીજં, યન્નામ
મન્ત્ર વિદધે સુરેન્દ્રૈ, સ ગૌતમો૦ ॥ ૯ ॥ શ્રીગૌતમ
સ્યાષ્ટકમાદરેણ, પ્રબોધકાલે મુનિપુઙ્ગવા યે, પઠન્તિ તે
સૂરિપદં સદૈવા-ડડનન્દં લભન્તે સુતરાં ક્રમેણ ॥ ૧૦ ॥

ચિયવાનતનુ સ્તવન

લબ્ધિવન્ત ગૌતમગણધાર, બુદ્ધિએ અવિકા
અભયકુમાર, પ્રહ ઉગીને કરી પ્રણામ, ચિયળાવતના
લીજે નામ ॥ ૧ ॥ પહેલા નેમિજિનેશ્વરરાય,

૧-પરમેષ્ઠિબીજં, સદ્જ્ઞાનબીજં જિનરાજબીજં, યન્નામ ચોક્ત વિદધાતિ સિદ્ધિં, સ ગૌતમો૦ ॥ આ પ્રમાણે પાઠભેદ પણ દેખાય છે.

બાળ-બ્રહ્મચારી લાગું પાય; **બીજા જંબૂકુંવર** મહાભાગ, રમણી આઠનો કીધો ત્યાગ ॥ ૨ ॥ **ત્રીજા સ્થૂલભદ્ર** સાધુ સુજાણ, કોશ્યા પ્રતિબોધી ગુણખાણ; **ચોથા સુદર્શન શેઠ** ગુણવંત, જેણે કીધો ભવનો અંત ॥ ૩ ॥ **પાંચમા વિજય શેઠ** નર-નાર, શિયળ પાળી ઉતર્યા ભવપાર; એ પાંચેને વિનતિ કરે, ભવ-સાયર તે હેલા તરે ॥ ૪ ॥

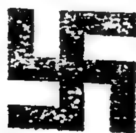
નોંધ-આ સ્તવનાવળીનો ઘણો ભાગ છપાઈ ગયા પછી કેટલાક ધર્મપ્રેમી સજ્જનોની, નીચે આપવામાં આવતા સ્તવનને દાખલ કરવા માટે સૂચના થતાં છેવટના ભાગમાં પણ તેને સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે શ્રી નયસુન્દરજી કૃત-**શત્રુંજય** ઉદ્ધારની બાર ઢાળો છે તે પૈકીની **આ પાંચમી** ઢાળ છે. અને આ સ્તવનાવળીના ૧૦૫ મા પેજમાં છપાયેલ-'**સાંભળી જિનવર મુખથી સાચું**,' **આ તેની ચોથી ઢાળ છે.**

ઢાળ–પાચમી

(કનક કમલ પગલા ઠવે એ–એ દેશી.)

નયરી અયોધ્યાથી સંચર્યા એ, લેઈ લેઈ રૂદ્ધિ અશેષ–ભરતનૃપ ભાવસ્યું એ, શત્રુંજય યાત્રા રંગભરે એ, આવે આવે ઉલટ અંગ–ભરત૦ ॥ ૧ ॥ આને આવે રૂષભનો પુત્ર, વિમલગિરિ યાત્રાએ એ, લાવે લાવે ચક્રવર્તિની રૂદ્ધિ–ભરત૦ ॥ મંડળીક મુગટ–બદ્ધ ધણા એ, બત્રીસ સહસ નરેશ–ભરત૦ ॥ ૨ ॥ ઢમ ઢમ વાજે દદ્દસ્યું એ, લાખ ચોરાશી નિશાન–ભરત૦ ॥ લાખ ચોરાશી ગજ ગુરી એ, તેને જાતિ પલાણ–ભરત૦ ॥ ૩ ॥ લાખ ચોરાશી રથ ભલા એ, રૂસભ વોરી સુદમાન–ભરત૦ ॥ ચપળ ઝાંઝર સોના તણા એ, કોટે નેતન ઘુઘરમાલ–ભરત૦ ॥ ૪ ॥ બત્રીસ સહસ નાટક સહી એ, સવા લાખ સની દલ–ભરત૦ ॥ દીવીધરા પાંચ લાખ કલા એ, સોળ સહસ મેવે યક્ષ–ભરત૦ ॥ ૫ ॥ દશ ક્રોડી આલમ–ધણી એ, પાયક છનું ક્રોડ–ભરત૦ ॥ ચોસઠ સહસ અંતેઉરી

એ, રૂપે સરખી જોડ–ભરત૦ ॥ ૬ ॥ એક લાખ સહસ અઠ્ઠાવીશ એ, વારંગના રૂપની આલી–ભરત૦ ॥ શેષ તુરંગમ સવિ મલી એ, કોડી અઢાર નિહાલી–ભરત૦ ॥ ૭ ॥ ત્રણ કોડી સાથે વ્યાપારીઆ એ, બત્રીસ કોડી સૂઆર–ભરત૦ ॥ શેઠ સાર્થવાહ સામટા એ, રાય રાણાનો નહી પાર–ભરત૦ ॥ ૮ ॥ નવ નિધિ ચૌદ રયણશ્યું એ, લીધો લીધો સવિ પરિવાર–ભરત૦ ॥ સંઘપતિ તિલક સોહામણું એ, ભાલે ધરાવ્યું સાર–ભરત૦ ॥ ૯ ॥ પગે પગે કર્મ નિકંદતા એ, આવ્યા આવ્યા આસન્ન ઠામ–ભરત૦ ॥ ગિરિ દેખી લોચન ઠર્યાં એ, ધન્ય ધન્ય શત્રુંજય નામ–ભરત૦ ॥ ૧૦ ॥ સોવન ફૂલ મુક્તાફલે એ, વધાવ્યા ગિરિરાજ–ભરત૦ ॥ દીએ પ્રદક્ષિણા પાગથીએ એ, સિધ્યાં સઘળાં કાજ–ભરત૦ ॥ ૧૧ ॥



સાંજના પ્રતિક્રમણ બાદ સામાયિક પાળ્યા પછી ભાવવાની ભાવનાના ઘણે સ્થળે બોલાતા દુહામાંના કેટલાક દુહા

અરિહંત અરિહંત સમરતા, નાવે મુક્તિનું રાજ,
જે નર અરિહંત સમરશે, તેહનાં સરશે કાજ ૧

સુતાં બેસતાં ઉઠતાં, જે સમરે અરિહંત,
દુઃખિયાનાં દુઃખ ભાંજશે, લહેશે સુખ અનંત. ૨

આશ કરો અરિહંતની, બીજી આશ નિરાશ,
જેમ જગમાં સુખિયા થયા, પામ્યા લીલ વિલાસ. ૩

ચેતન તે ઐસી કરી, જૈસી ન કરે કોય,
વિષયારસને કારણે, સર્વસ્વ બેઠો ખોય. ૪

જો ચેતાય તો ચેતજે, જો બુઝાય તો બુઝ,
ખાતાં સૌ ખાઈ ગયે, માથે પડશે તુજ ૫

મુનિવર ચૌદ હજારમાં, અધિક-ધન્ના મોઝાર,
વીર-જિણંદ વખાણીયો, ધન્ય ધન્નો અણગાર. ૬

પચ્ચા તો પરખ્યો નહિ, દદ્દો કીધો દૂર;
લલ્લાશું લાગી રહ્યો, નન્નો ખડો હજૂર. ૭

સમકિત પામે જીવને, ભવ ગણતીયે ગણાય;
જો વળી સંસારે ભમે, તો પણ મુક્તે જાય ૮

સમકિત વિણ નવ પૂરવી, અજ્ઞાની કહેવાય;
સમકિત વિણ સંસારમાં, અરહો પરહો અથડાય. ૯

વીર-જિનેશ્વર સાહિબો, ભમિયો કાળ અનંત;
પણ સમકિત પામ્યા પછી, અંતે થયા અરિહંત. ૧૦

જ્ઞાન સમું કોઈ ધન નહિ, સમતા સમું નહિ સુખ;
જીવિત સમ આશા નહિ, લોભ સમું નહિ દુઃખ. ૧૧

સ્વામીના સગપણ સમું, અવર ન સગપણ કોય;
ભક્તિ કરો સ્વામી તણી, સમકિત નિર્મળ હોય. ૧૨

પુણીયા શ્રાવકને નમું, વીરે વખાણ્યો જેહ;
દોકડા સાડા બારમાં, સ્વામી ભક્તિ કરેહ. ૧૩

વિઘ્ન ટળે તપ-ગુણ થકી, તપથી જાય વિકાર;
પ્રશંસ્યો તપ-ગુણ થકી, વીરે ધન્નો અણગાર. ૧૪

કર્મ ખપે તપ જોગથી, તપથી જાય વિકાર,
ભાવ મગળ તપ જિન કહ્યો, શિવ-સુખનો દાતાર ૧૫
શીયે સદગતિ પામીયે, શીલે સુધરે કાજ,
શીલે સુર નર-સંપદા, શીલે શિવપુર-રાજ ૧૬
જિન-પ્રતિમા જિન-મદિર, કચનના કરે જેહ,
બ્રહ્મવ્રતથી બહુ ફળ લહે, નમો નમો શીયળ સુદેહ ૧૭

આમેષ્વસિદ્ગો મરીચિરમર પોદ્રા પરિવ્રાટ્ સુર,
મસારો બહુ વિશ્વભૂતિરમરો નારાયણો નારકી,
સિંહો નૈરયિકો ભવેષુ બહુશચક્રી સુરો નન્દન
શ્રીપુષ્પોત્ત ન્રિ-ત્રિશિકાવતુ ભવાદ્ વીરશ્રીવોળ્કર ૧

શ્રીશાન્તિનાથજિન-સ્તુતિ:

યસ્યોપસર્ગાઃ સ્મરણાત્પ્રયાન્તિ,
વિશ્વે યદીયાશ્ચ ગુણા ન માન્તિ;
યસ્યાઙ્ગલક્ષ્મ્યા કનકસ્ય કાન્તિઃ,
સઙ્ઘસ્ય શાન્તિં સ કરોતુ શાન્તિઃ ।। ૨ ।।

* * * *

શ્રીપાર્શ્વનાથજિન-સ્તુતિ:

વિશ્વશ્રીશિરસો વિભૂષણવિધૌ દિવ્યેન્દ્રનીલપ્રભઃ.
શશ્વચ્છસ્યપરમ્પરાપ્રસરણે નિર્મોઘમેઘોપમઃ;
સંસારાધ્વનિ ખિન્નભવ્યમનસાં વિશ્રામસાન્દ્રદ્રુમઃ,
પાર્શ્વો ભાવસુખં તનોતુ ભગવાંસ્તાપાપહારી જિનઃ

* * * *

ઉપસર્ગાઃ ક્ષયં યાન્તિ, છિદ્યન્તે વિઘ્નવલ્લયઃ;
મનઃ પ્રસન્નતામેતિ, પૂજ્યમાને જિનેશ્વરે ।। ૧ ।.

* * * *

સર્વમઙ્ગલમાઙ્ગલ્યં, સર્વકલ્યાણકારણમ્;
પ્રધાનં સર્વધર્માણાં, જૈનં જયતિ શાસનમ્. ૨